महाकविपुष्पदन्तविरचितं

अपभ्रंशभाषानिबद्ध

# रामायणम्

( Printed Separately from the Mahāpurāṇa Vol. II. )

विक्रमाब्दा १९९६ ]

[ खिस्ताब्दा १९४०

मूल्यं सार्धरूप्यकद्वयम्

# SUMMARY

**LXIX–LXXIX** These eleven samdhis narrate the story of the eighth set of Baladevas etc and are popularly known as the Rāmāyaṇa, Paumacariya, or Padmapurāṇa The story of the Rāmāyana is so well known that it need not be reproduced here fully, But there are some factors in the Jain version which have to be brought to the notice of the general reader Rama and Laksmana in their previous births were sons respectively of king Prajāpati and his minister and were named Candracūla and Vijaya In youth they were intimate friends and carried off Kuberadatta the wife of a merchant named Śridatta The king got a report about this affair got angry with them and ordered his minister to take them to the forest and kill them The minister took them to the forest but instead of killing them showed them to a Jain monk Mahabala by name who told the minister that these youths were destined to be Baladeva and Vasudeva in their third birth They then became monks and practised penance Candracula once saw Suprabha Baladeva and Purusottama Vasudeva on their way and formed a hankering that he should have a similar fortune in his next birth Both the young monks after death were born as gods named Manicula and Suvarnacūla In their next birth they were born as sons to king Daśaratha by his queens Subala and Kaikeyi Suvarnacula (Vijaya in his former birth) becoming Subala s son named Rāma and Manicula (Candracula in his former birth) becoming Kaikeyi s son named Laksmana

According to the Jain version Sita is the daughter of Ravana a Vidyadhara and Mandodari As it was predicted that Sita would bring calamity on her father she was put into a box and left buried in a field She was discovered by a farmer while ploughing his fields was brought to king Janaka who adopted her as his daughter He gave her in marriage to Rāma

Once Narada came to Ravana and told him that Rama married the beautiful Sita who was really fit for him This created a desire in the mind of Ravana to have Sita Ravana then sent Candramukhi (better known as Śurpanakha) to Sita to ascertain her mind but she failed in her mission

Ravana thereupon went in his celestial car to the forest where Rāma and Sita were then enjoying pleasures asked Marica to assume the form of a golden deer and to tempt the mind of Sita to have it While Rama was away in search of the golden deer Ravana carried off Sita to Lanka

Rama made a careful search for Sita but did not get any trace of hers Daśaratha at this juncture dreamt a dream which indicated that Sita was carried off by Ravana While Rama was thinking how he should proceed to search Sita Sugriva and Hanumat came to Rāma to seek his aid for Sugriva to get his place in the kingdom of his brother Vāli In the course of their conversation Hanumat promised to Rāma that he would obtain the news of Sita Hanumat then went to Lanka Assuming the form of a bee he entered the palace of Ravana searched it and at last found Sitā in the garden being coaxed by Rāvana to yield to his desires Ravana however did not succeed in his attempt to win her She did not look at him Mandodari came there and recognised Sitā to be her daughter and comforted her After her departure Hanumat saw Sita convinced her

that he was the messenger of Rama and conveyed to her his message Hanumat then returned to Rāma and told him that he saw Sita in the garden of Ravana Before Rāma undertook marching against Rāvana he sent Hanūmat as a messenger to ascertain if Rāvana would return Sita peacefully but Ravana insulted Hanumat

In the meanwhile Laksmana fought with Vali killed him and gave his kingdom to Sugriva Rama and Laksmana practised fasts to acquire the magic lores which would enable them to fight successfully with Ravana Vibhisana his brother did not like Rāvana s behaviour left him and came over to Rama. Then there was a fight between Rāma and Rāvana in which Laksmana killed Ravana After his death Rāma placed Vibhisana on the throne of Lanka Laksmana thereafter became the Ardha-cakravartin After enjoying the kingdom he died and went to hell Rama grieved over the death of his brother renounced the world became a monk and attained emancipation.

## LXIX

मुणिसुव्वयजिणतित्थि तोसियसुररामायणु ॥
हरिहलहरगुणथोत्तु जं जायउ रामायणु ॥ छ ॥

### 1

णियबुद्धिपवित्थरु णउ रहमि लइ त पि किं पि एवहिं कहमि ।
णिव्वाहमि भरहब्भत्थियउ परिपालमि पडिवण्णउ थियउ ।
कलिकालें सुट्ठु गलत्थियउ जणु दुज्जणु अण्णु वि दुत्थियउ ।
सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु किर कैवण लीह चिरकइहिं सहु ।
कइराउ सयभु महायरिउ सो सयेणसहासहिं परियरिउ ।
चउमुहहु चयारि मुहाइ जहिं सुकइत्तणु सीसउ काइं तहिं ।
महु एक्कु त पि मुहु खंडियउ विहिणा पेसुण्णउ मंडियउ ।
मइ छदु ण लक्खणु भावियउ अप्पउ जाणि हासउ पावियउ ।
बुहहियवइ जइ वि ण पइसरमि धिट्ठत्तें तइ वि कव्वु करमि ।
महु खमउ भडारी विउससह आयण्णहु रहुवइरायकह ।

घत्ता—सुकइपयासियमग्गि मणि दहमुहु वि चमक्कइ ॥
रामधम्मगुणसद्दि अमुहु पिसुणु कहि ढुक्कइ ॥ १ ॥

### 2

जिणचरणकमलभसलें झुणिउ मइ एउ णिरत्थु वि रणुरुणिउ ।
सुइपेसलु कण्णविइण्णसुहु वियसावियमाणिणिडिंभमुहु ।
सैइ लग्गइ चित्ति वियक्खणहु जसु रामहु पोरिसु लक्खणहु ।
वइदेहिसइत्तणु भूसियउ जलबिंदु व पोमपत्ति थियउ ।

---

**1** १ P °बुद्धिइ वित्थरु २ P भरहअब्भत्थियउ ३ P कमण ४ AP चिरु कइहिं ५ A सुयणसहासें, A सुयणसहासेहिं ६ P सीसइ ७ P चक्कवइ ८ A समुट्ठ

**2** AP °भमरें २ AP एत्थु ३ A लइ ४ P पोमवत्ति

---

**1** 1 °सुररामायणु सुरस्त्रीगण स्त्रीजनो वा 2 रामायणु रामचरितम्, 4 *b* पडिवण्णउ अङ्गीकृतम् 6 *b* चिरकइहिं चिरकविभि 7 *a* सयभुमहायारउ स्वयभू महाचाय, दीहरसमासणाल सद्ददल अत्थकेसरग्घविय । बुहमहुयरपीयरस सयभुकव्वुप्पल जयउ 8 *a* चउमुहहु चतुमुखनाम्न कवे 9 *b* पेसुण्णउ मडियउ दुर्जनत्व कृतम् 12 *a* विउससह विद्वज्जनसभा 13 सुकइ° सुकवि वानरश्च, दहमुहु रावण, चमक्कइ बिभेति 14 रामधम्मगुणसद्दि रामस्य धर्मगुणयोवर्णने, रामस्य वा धर्मो धनुस्तस्य गुणो दोरस्तस्य शब्दे टङ्कारे अमुहु पिसुणु अमुखा खरदूषणादय

**2** 2 *a* कण्णविइण्णसुहु कर्णयो वितीर्णसुखम् 4 *a* वइदेहि° सीता

मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ आसयगुणेण कव्वु वि सहइ ।
जं विरइउं भरहमहमईहिं अम्हारिसेहिं जगि जडकईहिं ।
जं जगि पसिद्धु सीयाहरणु जं अजणेयगुणवित्थरणु ।
जं विडसुग्गीवरायमरणु जं तारावइअब्भुद्धरणु ।
जं लवणसमुद्दसमुत्तरणु जं णिसियरवसहु खयकरणु ।

घत्ता—भरहहु भत्तिभरासु बहुरसभावजणेरउ ॥
त आहासमि जुज्झु रांवणरामहु केरउ ॥ २ ॥

## 3

जिणचरणजुयलसणिहियमइ आउच्छइ पहु मगहाहिवइ ।
णिरु ससयसल्लिउ मज्झु मणु गोत्तमगणहर मुणिणाह भणु ।
किं दहमुहु सहु दहमुहहिं हुउ किं जम्मे गरुयउ तासु सुउ ।
जो सुम्मइ भीसणु अतुलबलु किं रक्खसु किं सो मणुयं खलु ।
किं अंचिउ तेण सिरेण हरु किं वीसणयणु किं वीसकरु ।
किं तहु मरणावह रामसर किं दीहर थिर सिरिरमणकर ।
सुग्गीवपमुह णिसियासिधर किं वाणर किं ते णरपवर ।
किं अज्ज वि देव विहीसणहु जीविउ ण जाइ जमसासणहु ।
छम्मासइं णिद्दं णेय सुयइ किं कुंभयण्णु घोरइ सुयइ ।
किं महिससहासहिं धउ लहइ लइ लोउ असच्चु सव्वु कहइ ।
वम्मीयवासवयणिहिं णडिउ अण्णाणु कुमग्गकूवि पडिउ ।

घत्ता—गोत्तम पोमचरित्तु भुवणि पवित्तु पयासहि ॥
जिह सिद्धत्थसुएण दिट्ठउ तिह महु भासहि ॥ ३ ॥

५ A °समुद्दह उत्तरणु ६ P भत्तियरासु ७ AP रामण°

**3** १ P कि जम्मं २ AP सो सुम्मइ ३ A मणुबकुलु ४ AP णेय णिद्द ५ APT पउम°

5 *b* आसयगुणेण आश्रयगुणेन स्थानमाहात्म्येन 7 *b* अजणेय° हनूमान् 8 *a* विडसुग्गीवराय° बालिनरेन्द्रस्य, *b* तारावइ° मूलसुग्रीव 9 *b* णिसियर° राक्षसा

**3** 1 *b* पहु श्रेणिक 3 *a* दहमुहु रावण किं दशभिर्मुखैर्जनित; *b* जम्मि गरुयउ तासु सुउ इन्द्रजित् किं रावणाद्वरिष्ठ 4 *b* खलु स्फुटम् 5 *a* तेण रावणेन 6 *a* मरणावह मरणकरा, *b* सिरिरमण° लक्ष्मणः 7 *a* णिसियासिधर तीक्ष्णखड्गधरा 9 *b* सुयइ स्वपिति 10 *a* धउ तृप्तिम् 11 *a* वम्मीय° वाल्मीकि, वास° व्यास, णडिउ वञ्चित 12 पोमचरितु रामचरितम् 13 सिद्धत्थसुएण श्रीवीरेण

## 4

ता इंदभूइ गंभीरझुणि    सेणियराहु कहइ कहइ मुणि ।
इह भरहि भवोवहारिणिलइ    कुल्लियकणियारवउलतिलइ ।
मायंदगोंदगोंदलियसुइ    महमहियकलमकेयारहुंइ ।
णिप्पीलिउच्छुरससलिलवहि    सतुट्ठपुट्ठपथियणिवहि ।
मलरहिय मलयदेसतरइ    रयणउरि भवणरुइहयसरइ ।
तहिं वसइ पयावइ पयधरणु    जें दंडें जित्तउ जमकरणु ।
जें सत्थें जित्त सरासइ वि    जें बुद्धिइ जित्तउ भेसइ वि ।
जें रिद्धिइ जित्तउ सुरवइ वि    जें भोएं जित्तउ रइवइ वि ।
तहु रायहु णयणसुहावणिय    ण बाणावलि मयणहु तणिय ।
रूवेण सरिच्छी उव्वसिहि    गुणवंत कंत कंति व ससिहि
सुउ चंदचूलु चंदु व उइउ    सिसु मतिमित्तु तेण वि लइउ ।

घत्ता—सो विजयकु पंसिद्धु ण ससिरवि गयणगणि ॥
बेण्णि वि सह खेलंति बद्धणेह घरपंगणि ॥ ४ ॥

## 5

तरुणीकडक्खोहविक्खेवमूढाइ    जोव्वणसिरीए सरीराहिरूढाइ ।
णिण्णट्ठवप्पिट्ठणिक्किट्ठतुट्ठीइ    घोराण जाराण चोराण गोट्ठीइ ।
ण तावसा के वि अरहंतदिक्खाइ    ते बे वि ण चरंति रायस्स सिक्खाइ ।
अण्णम्मि तंव्वासरे तम्मि णयरम्मि    णिद्धणजणे दिण्णबहुदविणणियरम्मि ।
गोत्तमवणिंदेण वइसवणघरिणीइ    जायस्स कलहंस्स ण चारुकरिणीइ ।
विण्णाणवंतस्स संसारसारस्स    सिरिदत्तणामस्स वणिवरकुमारस्स ।
करधरियभिंगारचुयवारिधारेण    णियधीय रमणीय दिण्णा कुबेरेण ।
बालेण बालालयं झ त्ति गंतूण    णमिऊण जय देव देव त्ति बोत्तूण ।

4 १ AP सइ २ A मयावहारि ३ A °कणियार° ४ A मायदगोच्छ°, P मायदगोंदि° ५ A केयारहुए ६ A °उच्छु° ७ A बुद्धे ८ P रूए ९ P omits पसिद्धु

5 १ A कडक्खेवविक्खोह°, P °कडक्खोहविक्खेय° २ A °बुद्धीइ ३ AP ता वासरे ४ A णविऊण

4 2 *a* भवावहारिणिलइ सर्वज्ञस्थानभूते 3 *a* मायदगोंद° आम्रवृक्षसमूह, °गोंदलियसुइ °शब्दितशुके 5 *a* °उच्छुरस° इक्षुरस 5 *b* भवणरुइहयसरइ सौधशोभाभिर्हता तिरस्कृता शरत्कालशोभा यस्मिन् 7 *a* सत्थें शास्त्रेण, *b* भेसइ बृहस्पति 8 *b* रइवइ मदन 11 *a* चंदचूलु भवि व्यत्क्रमण, उइउ उदित

5 1 *a* °कडक्खोहविक्खेवमूढाइ कटाक्षसमूहविक्षेपमूढया 4 *a* तव्वासरे तस्मिन् वासरे एकस्मिन् दिने. 8 *a* बालालयं चन्द्रचूलगृहम्

केणावि पावेण रइरइसवुत्तीइ   रूव वरं वण्णियं वणियउत्तीइ ।
रेहतराईववलदीहणेत्ताइ   ती[5] सणिहा का कुबेराइदत्ताइ ।
त सुणिवि सिरु धुणिवि विद्धत्थ[6]धम्मेण   सवरिवि वियड तुर कूरकम्मेण ।
वणिभवणि पइसरिवि बहुसहसहा[7]एण   हित्ता कुमारी घराणाहजाएण ।
रोवंति वेवंति वरइसहत्थाउ   [8]णट्ठाउ णारीउ विलुलंतवत्थाउ ।

घत्ता—णिव परितांहि भणंत[9] पुरि अण्णाउ कुमारहु ॥
गय तरुसाहाहत्थ वणिवर रायदुवारहु ॥ ५ ॥

## 6

आउच्छिउ राए पउरयणु   विण्णवइ णवंतु तसंततणु[1] ।
तुह तणुरुहु परदविणइ हरइ   परिणियउ कलत्तु ण उव्वरइ ।
पइ[2]सरउ भडारा वियणु वणु   अण्णेत्तहि जीवउ जाउ जणु ।
ता राए पुरवरतलवरहु   आएसु दिण्णु असिवरकरहु ।
सिरकमलु विलुचवि णिट्ठुरहु   पेसहि तणुरुहु वइवसपुरहु ।
अण्णाणु णायविद्धंसयरु   खलु सो[3] किं वुच्चइ रज्जधरु ।
जो दुट्ठु कट्ठु णिद्धम्मयरु   सो खडमि हउ अप्पणउ करु ।
हियउल्लउ दुक्खें सल्लियउं   ता पउरें मंतिहिं[4] बोल्लियउ ।

घत्ता—णंदणु हणहु ण जुत्तउ जइ सो मणहु ण रुच्चइ ॥
गिरिदुग्गमि कंतारि तो[5] दूरंतरि मुच्चइ ॥ ६ ॥

## 7

पहु भणइ जाउ किं तेण महु   हउ णंदमि चिरु धम्मेण सहुं ।
गुणदूसणु अप्पपससणउ   तवदूसणु मिच्छावसणउ ।
णडदूसणु णीरसं[1]पेक्खणउ   कइदूसणु कव्वु अलक्खणउ ।

---

५ A थी सणिहा ६ A विद्धत्थकामेण ७ A °सहावेण ८ P तट्ठाउ ९ AP भणता

**6** १ AP तसतमणु २ A परसरणु, P पइसरइ ३ P किं सो ४ A महिवइ ५ A ता

**7** १ AP णीरसु

---

10 *a* रेहतराईव° शोभमानकमलम्, *b* ती स्त्री, सणिहा सदृशी, कुबेराइदत्ताइ कुबेरदत्तया 11 *b* तुरं शीघ्रम् 12 *a* बहुसहसहाएण बहुभिः सहैः समर्थैः सह 13 *a* वेवंति वेपमाना कम्पमाना

**6** 2 *b* परिणियउ कलत्तु परिणीता स्त्री 3 *a* पइसरउ प्रविशतु, वियणु वणु विजनं वनम् 7 *a* कट्ठु निन्द्य 9 मणहु चित्तस्य

**7** 2 *a* अप्पपससणउ आत्मप्रशंसनम् 3 *b* अलक्खणउ व्याकरणरहितम्

घणदूसणु सढ्ठखलयणभरणु वयदूसणु असमजसमरणु ।
रइदूसणु खरभासिणि जुवइ सुहिदूसणु पिसुणु विभिण्णमइ ।
सिरिदूसणु जइ सालसु णिवइ जणदूसणु पाउ पत्तकुगइ ।
गुरुदूसणु णिक्कारणहसणु मुणिदूसणु कुसुइसमब्भसणु ।
ससिदूसणु मिगमलु मलिकसणु कुलदूसणु णंदणु दुव्वसणु ।
घत्ता—लइ जं तुम्हइ इट्ठु मइ वि तं जि पडिवण्णउ ॥
आइवि कुलवुड्ढेहिं बालहइ उत्तरु दिण्णउ ॥ ७ ॥

## 8

किं परकलसु उद्दालियउ उज्जलु अप्पाणउ मइलियउ ।
किं बप्प सुदप्प कुसगु किउ परयारचोरकीलाइ थिउ ।
कुद्धउ पिउ एवहिं को धरइ तुम्हारउ जीविउ अवहरइ ।
तं णिसुणिवि सिसु चवंति गहिरु अत्थवु णिवारइ को मिहिरु ।
को रक्खइ आवंतउ मरणु जगि कासु ण ढुक्कइ जमकरणु ।
कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ वइवसदंततरि पइसरइ ।
मंतीसें करपल्लवधरिया सुय बेण्णि वि किंकरपरियरिया ।
तरुवरविलग्गचलदवदहणि पइसारिय बेण्णि वि गिरिगहणि ।
गणणाहहु हयवम्महबलहु दक्खविय णवंत महाबलहु ।
रायागमणायवियाणएण कुच्छियमइ धाडिय राणएण ।
परमेसर ए णर भव्व जइ वर एवहिं तुहु उद्धरहि तइ ।
घत्ता—दुम्मइमलमइलेहिं कुअरिहिं कहिं जाएवउ ॥
भणि भवियव्वु भयंवत एहि काइं पावेवउ ॥ ८ ॥

## 9

मुणि भणइ एत्थु दिहि करिवि तवे होहिंति सीरि हरि तइयभवे ।
णामेण रामलक्खण विजई तं णिसुणिवि जाया तरुण जई ।

२ A सइ खलयर° ३ AP असमजसु ४ A °भसणु ५ A जि

**8** १ A सदप्पु २ A उदयतु ३ AP °पल्लवि धरिया ४ AP णमंत ५ AP कुमरहिं ६ P भयवतहि

**9** १ P विहि

4 *a* सढ° सर्वत्र वक्रहृदया, *b* असमजसमरणु सशल्यमरण आत्मघातो वा 6 *a* सिरि° राज्यलक्ष्मी, *b* पाउ पापम् 7 *b* कुसुइसमब्भसणु मिथ्याशास्त्राभ्यास 8 *a* मिगमलु मृग एव मल

**8** 2 *b* परयार° परदारा 4 *b* अत्थवु अस्त गच्छन्, मिहिरु सूर्य 5 *b* जमकरणु रोग 10 *a* रायागम° नीतिशास्त्रम्, *b* कुच्छियमइ कुमती द्वौ पुत्रौ 12 कुअरिहिं कुमाराभ्याम्

**9** 1 *b* सीरि हरि बलदेवो वासुदेवश्च

गउ मति णिहेलेणु पय णवइ णरणाहहु वइयरु विण्णवइ ।
वसुहाहिव तणुरुह गिरिविवरि आरण्णि णिहिय वणवासिघरि ।
कासु वि सकम्मउग्गुग्गमहो तणुदुक्खलक्खविहिसंगमहो ।
विसहाथियदुंडणमुडणइ पचिंदियदप्पविहडणइ ।
णिवणयणइ मुक्कंसुयजलइ ओसासिचाइ व सयदलइ ।
हा हा मइ रूसिवि किं कियउ किं बालजुयलु दुक्खें हयउ ।
अइरहसें किज्जइ कज्जरइ आ सा णिद्दहइ ण कासु मइ ।
मणु मतें परियाणिवि पइहि अक्खिउ जिह पासि णिहिय जइहि ।
जिह दोहिं मि लइयउ तवचरणु ता जायउ तायहु सिसुकरुणु ।
कोमलतणु णीसारिवि घरहु णदण पट्ठविवि वणतरहु ।
घत्ता—उहु बुहणिदिरु रज्जु रज्जु जि पाउ णिरुत्तउ ॥
रज्जमएण पमत्तउ ण मुणइ जुत्ताजुत्तउ ॥ ९ ॥

## 10

णियगोत्तिउ णियकुलि सणिहिउ वणु जाइवि राए तवु गहिउ ।
भरहेण व अहिवंदिवि रिसहु पणवेवि महाबलु मुणिवसहु ।
गउ मोक्खहु अक्खयसोक्खमइ थिउ णाणदेहु णिव्वाणपइ ।
सग्गाउरहु बहि कयधम्मकिसि आयावणजोए बालरिसि ।
थिय जइयहु तइयहु माहि जिणिवि महसूयणु समरगणि हणिवि ।
सुप्पह पुरिसोत्तम दिट्ठ पहि सासिचूलें चिंतिउ हियथरहि ।
दीसइ णरणाहहु जेरिसउ महु होउ पहुत्तणु तेरिसउ ।
मुउ सणंकुमारु हुउ रिसि विजउ सुरु णामु सुवण्णचूलु सदउ ।
कमलप्पहि विमलविमाणवरि णिवतणउ मणिप्पहि अमरघरि ।
मणिचूलु देउ जायउ पवरि कलहसु व विलसइ कमलसरि ।
घत्ता—ज अणिमाइगुणेहि बहुंविहवेण णिउत्तउ ॥
त दिवि दीहरु कालु बिहिं मि दिव्वु सुहु भुत्तउ ॥ १० ॥

२ A णिहेलणि पइ ३ A °उग्गाग्गमहो ४ A °दिहिं° ५ AP डडण° ६ P मुडणहो ८ AP णिड्डहइ ९ A पइविय १० AP पमत्तु ११ AP मुणइ

**10** १ AP णियणत्तिउ २ A दिट्ठि ३ A मुए ५ AP सणकुमारे ५ A बहुविहतवेण

4 *b* वणवासि° मुनयो मिल्ला वा 5 *a* सकम्मउग्गुग्गमहो स्वकमण उग्र रौद्र उदयस्तस्मात् 7 *b* ओसासित्ताइ अवश्यायावसिक्तानि 9 *a* अइरहसें अतिरभसेन उत्सुकेन 10 *a* पइहि राज्ञ

**10** 4 *a* कयधम्मकिसि कृतधर्मकर्षणौ 5 *a* जइयहु इत्यादि पूर्वं यदा काले अनन्तजिन तीर्थे चन्द्रचूलेन सुप्रभपुरुषोत्तमौ चतुर्थबलकेशवौ मार्गे दृष्टौ 6 *b* हिययरहि मनोरथे 8 *b* सदउ दया सहित 9 *b* णिवतणउ चन्द्रचूल

## 11

सरवरमरालचंचक्खियभिसइ इह भरहवरिसि कासीविसइ ।
जहिं सालिरमणकीलाहरइं जहिं सालिधण्णछेत्तंतरइं ।
जहिं सालिकमलछण्णाइं सरइं जहिं सालिहियाइं व अक्खरइं ।
सिसुहंसपयइं मयरंदरइ गोहणइं चरंतइ पइ जि पइ ।
रोमंथंतइं संतुट्ठाइं दीसंति हरियतणपुट्ठाइं ।
उच्छुरसु जंतणालीलहसिउ दक्खारसु पिज्जइ मुहरसिउ ।
ओयणु सीयलु दहिओल्लियउ फणिवेल्लिपत्तपत्तलि थियउं ।
जहिं जिम्मइ पहियणहिं पवहि देसियढक्कारिअपणरवहिं ।
ओहामियअलयाउरिसिरिहिं अणभरियहि वाणारसिपुरिहिं ।
तहिं दसरहु दसदिसिणिहियजसु णिवसइ णिउ जियरिउ थिरु सवसु ।

घत्ता—कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ ॥
जो इक्खाउहि वंसि णरवइरूढिइ आयउ ॥ ११ ॥

## 12

करगेज्झु मज्झु उत्तुंगथणि तहु सुबल णाम वल्लह घरिणि ।
सिविणंतरि पेच्छइ उग्गमिउ रवि सहसकिरणु णहयलि भमिउ ।
ससि कुमुयकोसवित्थारयरु गज्जंतु जलहि जुज्झियमयरु ।
सुविहाणइ कंतहु भासियउ तेण वि तहु गुज्झु पयासियउ ।
तुह होसइ तणुरुहु सीरहरु हलि चरमदेहु ण तित्थयरु ।
अण्णहिं दिणि सग्गहु अवयरिउ सुरु कणयचूलु उयरइ धरिउ ।
मघरिक्खयदि णीरयदिसिहि फग्गुणि तमकालिहि तेरसिहि ।
देविइ णवमासहिं सुउ जणिउ तणुरामु रामु राएं भणिउ ।
करिवरलोहियपक्खालियउ सिविणंतरि सीहु णिहालियउ ।

11 १ A °चालियभिमए २ P रोमथतइ पसुसतुट्ठाइ ३ AP वाराणसि° ४ A °रूढिं आयउ

12 १ A सुकल २ AP रमणि ३ AP सुउ ४ A उयरे P उवरें ५ A °रिक्ले चदे, P °रिक्खि इंदे ६ P °पक्खालियउ ७ P सुविणतरि

11 1 *a* °चक्खियभिसइ °आस्वादितपद्मिनीकन्दे 2 *a* सालिरमणकीलाहरइं स्त्रीपुरुषयुक्तक्रीडागृहाणि 3 *a* सालिकमल° सभ्रमराणि कमलानि, *b* सालिहियाइं लक्ष्मीलिखितानि 4 *a* मयरंदरइ मकरन्दरजसि, *b* पइ जि पइ पदे पदे 8 *a* पवहि प्रपायाम् 11 दोसायरु चन्द्र, दोषाणामाकरश्च

12 1 *a* करगेज्झु मुष्टिग्राह्यम् 7 *a* मघरिक्खयदि मघानक्षत्रस्थे चन्द्रे, णीरयदिसिहि निर्मलदिशायाम् 8 *a* तणुरामु शरीरेण उज्ज्वल 9 *a* °पक्खालियउ लिप्त.

माहहु मासहु सियपडमदिणि सविसाहि असाहिउ पहु भुवणि।
मणिचूलु देउ दसरहरयइ सुउ अवरु वि जायउ केक्कयइ।
ओहउ लक्खणलक्खकियउ सो ताएं लक्खणु कोक्कियउ।
घत्ता—बेण्णि वि ते गुणवंत भुयबलतासियदिग्गय ॥
णाइ सियासियपक्ख पत्थिवगरुडहु णिग्गय ॥ १२ ॥

## 13

रेहंति बे वि बलएव हरि ण तुहिणगिरिंदंजणसिहरि।
ण गंगाजउणाजलपवह ण लच्छिहि कीलारमणवह।
ण पुण्ण मणोरह सज्जणह ण धम्मवियारण दुज्जणह।
अवरोप्परु णिरु णिम्मच्छराह तेरहबारहसवच्छराह।
सहसाइ बिहिं मि णिद्देसियइं परमाउसु जइवरभासियइं।
पण्णारहचावइ तुंगतणु ते सत्थु सुणंति गुणंति घणु।
पुरबाहिरि उववणसंठियहु विद्धंतहु जयउक्कंठियहु।
अवलोइवि रामहु सरपसरु मउ चेय मुयंति ण वइरि सरु।
करि आउहु जं लक्खणु धरइ तहु परपहरणु जि ण संचरइ।
घत्ता—कपइ महिसचारें ससरसरासणहत्थह ॥
सक्कइ जमु जमदूउ को णउ तसइ समत्थह ॥ १३ ॥

## 14

रिसहाहिवसंताणाइयह सिरिभरहसयररायाइयह।
सब्बापरिवज्जिय पुरिस गय अहमिंद वि जहिं कालेण मय।
तहिं अण्णेहु कहिं जीवियकहइ लइ अत्थमियइ पत्थिवसहइ।
सव्वत्थसिद्धि हरिसेण गइ दिणमाणें वरिसहं सहसइं।
सुयसुहदिणाउ जायविजइ पुण्णइ पंचुत्तरवरिससइ।

८ AP सविसाहु ९ AP भवणि १० P जायउ अवरु वि

**13** १ AP तुहिणगिरिंद णीलसिहरि २ A °जलपवाह, P °जलणिवहु ३ A °रमणगाह, P °रवणवहु ४ A णिद्देसियउ ५ A भासियउ ६ A जम

**14** १ A अण्ण वि कहिं, P अण्णहिं कि २ A अइ अत्थमिए, P लइ अत्थमिए ३ P दिणमाणइ ४ A सहासरुए, P °सहसि हुए ५ AP °दिणाउ जाएवि लए

10 *b* सविसाहि विशाखानक्षत्रयुक्ते 14 सियासियपक्ख शुक्लकृष्णपक्षौ

**13** 1 *b* °अंजणसिहरि नीलपर्वत २ *b* कीलारमणवह क्रीडारमणमार्गौ 8 *b* सरु शब्द बाण वा 10 ससर बाणयुक्तम्

**14** 3 *b* पत्थिवसहइ पार्थिवसभया, 5 *a* सुयसुहदिणाउ पुत्रोत्पत्तिदिवसात्

अमुरिंदें विद्धसियसयरि दहरहु पहु उज्झाणयरि ।
परियाणिवि तणयहु तणउ बलु हुउ महियलि सयलु वि खलु विबलु ।
सहु पुत्तहिं जायधरारइहिं सुपरिट्ठिउ पहु णियसंतइहिं ।
तहिं सुहु णिवसतहु णरवइहि उप्पण्णाउ संतोसु व जइहि ।
अण्णेक्कहि भरहु पसण्णमणु अण्णेक्कहि घरिणिहि सत्तुहणु । 10
महिवइ सपुण्णमणोरहहिं चउहिं वि जणेहिं परबलमहहिं ।
सोहइ पुत्तहिं सकयायरहिं ण भूमिभाउ चउसायरहिं ।

घत्ता—मिहिलाणयरिहि ताम णामें जणउ णरेसरु ॥
पसुवहकम्में सग्गु चिंतइ जण्णहु अवसरु ॥ १४ ॥

## 15

महु मेरउ रक्खइ को वि जइ वसुहासुय दिज्जइ तासु तइ ।
तं णिसुणिवि मंतें जंपियउ जसु णामें तिहुयणु कंपियउ ।
सो जासु ण जाउहाणु गहणु जसु लहुवभाइ महु महमहणु ।
सो रक्खइ धुवु काकुत्थु तिह खेयरहिं ण हम्मइ होमु जिह ।
ता राए पेसिय दूयवर गय ते बहुपाहुडलेहकर ।
उज्झहि दसरहहु णिवेइयउ आलिहियउ पण्णउ वाइयउ ।
जो रक्खइ अद्धर परमकिय तहु दिज्जइ ण पच्चक्ख सिय ।
णामेण सीय वेल्लहलभुय किर कहु उवमिज्जइ जणयसुय ।
तं बुद्धिविसारएण भणिउ इहरत्ति परत्ति चारु मुणिउ ।
कउकरणुं णिहालणु रक्खणु वि लइ रक्खउ राहउ लक्खणु वि । 10

घत्ता—कारावय होआयार हुणिय पसु वि देवत्तणु ॥
जेण लहंति णरिंद तं करि जण्णपवत्तणु ॥ १५ ॥

६ AP दसरहु ७ A सुपइट्ठउ ८ A महिला°

**15** १ A णाउहाणु २ A रक्खइ बधुसमेउ 3 A पाहुड लेवि कर ४ P णिवेवियउ ५ A अद्धुर परमरूअ P अद्धर परमकिय ६ AP सिय ७ P करुणु ८ A कारावय होयारहुणिय, P कारावयहोआयारि

6 *a* असुरिंदें इत्यादि इय कथा अग्रे कथयिष्यते 9 *b* जइहि यते 10 *b* सत्तुहणु शत्रुघ्न 11 *b* परबलमहहि शत्रुमर्दनसमर्थैः 12 *a* सकयायरहिं स्वेषु द्रव्येषु ज्ञानिषु वा कृत आदरो यै पुत्रै, सागरपक्षे तु स्वकीयै आकरै

**15** 1 *a* महु मखो यज्ञ, *b* वसुहासुय सीता 2 *a* मंतं मन्त्रिणा 3 *a* जाउहाणु राक्षसो रावण, *b* महमहणु मधुसूदन 4 *a* काकुत्थु राम 6 *b* पण्णउ पर्णं पत्रम् 7 *a* परमकिय परमक्रिया, *b* सिय लक्ष्मी 8 *a* वेल्लहल° कोमलौ 9 *a* बुद्धिविसारएण दशरथमन्त्रिणा 10 *a* कउ° क्रतुयज्ञ, *b* राहउ राघवो राम 11 कारावय यज्ञे धनव्ययकारिण, होआयार होतार पण्डितवत्त्वय कर्तार, हुणियपसु घातित पशुरपि यज्ञेन कृत्वा देवत्वं प्राप्नोति

## 16

अ जुंजिवि सग्गहु सयरु गउ लइं सवणहिं तणयहिं मुक्करउ ।
त णुव रक्खिज्जइ किज्जइ वि भावें वित्थारहु णिज्जइ वि ।
अणि धम्ममूलु वेउ जि कहिउ सो जेहिं महापुरिसहिं गहिउ ।
ते हुति देव विब्बंभधर लहु पेसहि कुलसरहंसवर ।
एक्केवि जण्णु सा घणथणिया सिसु परिणउ सुय जणयहु तणिया ।
ता अइसयमइणा ईरियउ पइ बप्प असच्चु वियारियउ ।
सुणि भारहि चारणजुयलि पुरि जिणधम्मपहाउज्झियविहुरि ।
तहिं अत्थि सुजोहणु दिण्णविहि महएवि तासु णामें अतिहि ।
सुय सुलस सुलक्खण जहिं जि जहिं दीसइ भडारी तहिं जि तहिं ।
तहि णिरुवमु रूउ गुणग्घविउ णिउणें विहिणा कहिं णिम्मविउ ।

घत्ता—णउवेयालियछत्तबद्दिणग्गोसाऊरिउ ॥
ताहि सयवरु आउ सयरु राउ हक्कारिउ ॥ १६ ॥

## 17

सो कोसल मेल्लिवि णीसरिउ पहपरहरि मज्जणि सचरिउ ।
दप्पणि अवलोइउ सिरपलिउ णवचंपयतेल्लें विच्छुलिउ ।
रायण वुत्तु किं परिणयणु एवहिं किं छिप्पइ तरुणियणु ।
थेरत्तणि परिहउ पेम्मविहि विसहिज्जइ वर तवतावसिहि ।
ता तहु धाइइ किसोयरिइ पडिवयणु दिण्णु मंदोयरिइ ।
सियकेसें सयरु दीसिहइ तुंह सिरिहरि सपय पइसिहइ ।
तें वयणें महिवइ पुणु वलिउ गरुडद्धउ णहयलि परिघुलिउ ।
दियवेहिं पराइउ त णयरु ससुरग्गइ सथुउ णिवसेयरु ।

---

16 १ A जुंजवि, P हुजेवि २ AP णिव ३ A कज्जइ व ४ A णिज्जइ व ५ A महिउ ६ P परणउ ७ AP अवलोइय मारइ तहिं जि तहिं ८ AP सयरगउ

17 १ A पहु पुरिवहि २ AP सिरि पलिउ ३ A पेम्मणिहि ४ AP तहु ५ A णिउ सयरु, P णिउ सगरु

---

16 1 *a* जुंजिवि कारयित्वा, *b* मुक्करउ मुक्तपाप 2 *b* वित्थारहु णिज्जइ विस्तार नीयते 6 *a* अइसयमइणा अतिशयमतिमन्त्रिणा 7 *a* चारणजुयलि नगरस्य नामेदम्, *b* °उज्झियविहुरि °त्यक्तदुःखे. 11 °छत्त° छात्रा

17 1 *b* पहपरहरि प्रभा परामुत्कृष्टां धरति यो दर्पण स प्रभापरधर, अथवा प्रभां माहात्म्यं परेषां हरतीति, मज्जणि स्नानावसरे, सचरिउ प्रतिबिम्बितम् 2 *b* विच्छुलिउ म्रक्षितमभ्यक्तम्. 3 *b* छिप्पइ स्पृश्यते 4 *a* परिहउ परिभव 6 *b* सिरिहरि श्रीगृहे

आइवि धाइइ मंदोयरिइ सइ दिण्ण कण्ण सुन्छोयरिइ ।

घत्ता—कण्णइ गुणसंदोहे हियवउ सयारि णिहित्तउ ॥
मायइ विहसिवि ताम अवरु पडुत्तरु वुत्तउ ॥ १७ ॥

## 18

सुणि देसि सुरम्मइ सहलवणि पोयणपुरि धणपरिपुण्णजणि ।
बाहुबलिणराहिववसतइहि जायउ महु बधु कुलुण्णइहि ।
तिणपिंगु तासु पिय सुजसमइ वीणारव ण मणासियहु रइ ।
तहि तणउ तणउ ण कुसुमसरु तरुणीयणलाइयविरहजरु ।
महुपिंगु णामु तुह मेहुणउ सुइ अच्छइ आयउ पाहुणउ ।
अण्णेत्तहिं म करहि रमणमइ तुह जोग्गु जुवाणउ सो जि लइ ।
णियभाइणेज्जु वरु इच्छियउ अण्णेक्कु असेसु दुगुछियउ ।
सासुयइ पइत्तु समोरियउ पडिवक्खागमणु णिवारियउ ।
अण्णेक्कें सयरहु साहियउ ज आहरणेहिं पसाहियउ ।
ज कण्णारयणु समहिलसिउ त दुलहु वहइ विहिवसिउ ।

घत्ता—अतिहीदेविहि बधु जो तिणपिंगलु राणउ ॥
महुपिंगलु तहु पुत्तु आयउ मयणसमाणउ ॥ १८ ॥

## 19

देहिति तासु सुय जाहि तुहु ता पहुणा जोइउ मतिमुहु ।
गुरु चवइ एउ किर कित्तडउ महु तिहुयण सरिसव जेत्तडउ ।
जइ णउ परिणावमि कण्ण पइ तो मतित्तणु किउ काइ मइ ।
इय भणिवि कव्वु कइणा विहिउ वरलक्खणु दलसचइ लिहिउ ।
त कासु वि कहिं मि ण दावियउ मजूसहि तेण छुहावियउ ।

---

६ AP णिहित्तउ

**18** १ A णाउ तसु पेहणउ २ A अण्णहे तहे ३ A रमणरइ ४ A सवारियउ, P सवारियउ

**19** १ A कित्तलउ, P केत्तडउ २ A तिहुवणु सरिसउ

---

9 *b* दिण्णकण्ण कर्णो दत्त, सुलसया सगरगुणा श्रुता

**18** 4 *a* तहितणउ तणउ तस्या सबन्धी तनय पुत्र 5 *a* मेहुणउ मातुलपुत्र, *b* पाहुणउ प्राघूर्णक 6 *a* अण्णेत्तहिं अन्यत्र सगरादौ 7 *a* भाइणेज्ज भ्रातृपुत्र, *b* अण्णेक्कु अद्वितीय 8 *a* सासुयइ मातुलान्या अतिथिदेव्या, पइत्तु प्रयत्न, *b* पडिवक्खागमणु प्रतिपक्षस्य सगरस्यागमनम्

**19** 2 *a* कित्तडउ कियन्मात्रम्, *b* सरिसव जेत्तडउ सर्षपमात्रम् 4 *b* दलसंचइ पत्रसपुटे 5 *b* छुहावियउ निक्षिप्तम्

बहुवण्णविचित्तचीरेंणिहिउ णिवउववणमहियलि संणिहिउ ।
हलियहिं हलि हत्थु जेत्थु णिहिउ जहिं खुडु भूभाउ समुल्लियउ ।
कउं वहियतणकट्ठयरहिउ जहिं पग्गहि धवलु परिग्गहिउं ।
प्रावारिय कम्मु करंति जहिं णंगरि मजूस विलग्ग तहिं ।
आयड्ढिवि णीय णिहेलणहु दक्खालिय पहुहि सुजोहणहु ।
उग्घाडिय पोत्थउ जोइयउं अण्णेक्कें भल्लउं वाइयउ ।

घत्ता—वियवरवेसें दुक्कु कई पच्छण्णु सरायइ ॥
वरइत्तहु सामुहु भासइ कोमलवायइ ॥ १९ ॥

## 20

काणकुंटपिंगलाहं अधमूयपंगुलाह ।
णिद्धणाह णिब्बलाहं बुद्धिहीणवेंभलाह ।
माणलज्जवज्जियाह रोयभावणिज्जियाह ।
कुट्ठणट्ठकाययाह छिण्णपाणिपाययाह ।
णीयकम्मकारयाह इत्थिडिंभमारयाह ।
णिग्घिणाह णिद्दयाह साहुकम्मणिंदयाह ।
वड्ढमाणदुज्जसाह दुक्कुलाह सोलसाह ।
वुड्ढकुच्छियगयाह दीणभावण गयाहं ।
गोत्तविसचत्त जा वि दिज्जए ण कण्ण सा वि ।

घत्ता—मंडवमज्झि विवाहि पिंगलु जो पइसारइ ॥
सो विहवत्तणु दुक्खु णियधीयहि वित्थारइ ॥ २० ॥

## 21

ता सो महुपिंगलु लज्जियउ गउ चामरछत्तविवज्जियउ ।
एक्किल्लउ ल्हिक्किवि वधवह लग्गउ दहदुविहह जिणतवह ।

३ A चीरु णिहिउ ४ AP समुल्लिहिउ ५ A omits this foot ६ P adds after this वंसालग्गा रइ णिरु गहिउ ७ A लग्गलि, P लग्गलि ८ A कइकयपच्छण्ण

**20** १ A °विब्भलाह, P °विंभलाहं २ A दुज्जणाइं ३ A दुम्मुहाह ४ A कुच्छियारयाह ५ A वइसारइ ६ P omits सो

**21** १ AP एक्कल्लउ

7 *a* हलियहिं कर्षकैः, *b* समुल्लियउ समुल्लिखितः 8 *b* पग्गहि प्रग्रहे रश्मौ, धवलु बलीवर्दः 9 *b* णंगरि लाङ्गले हले 12 कइ स एव मन्त्री, सरायइ रागपूर्विकया वाचा. 13 सामुहु लक्षणम्

**20** 2 *b* °वेंभलाह विह्वलानाम्

**21** 2 *a* ल्हिक्किवि तिरोभूत्वा.

सेवइ हरिसेणगुरुहि पयइं णिक्खवइ अणंतइं दुक्कियइं ।
एत्तहि सो सयरु वि बालियइ वरु लइउ सयंवरमालियइ ।
अणुहुजिवि तहिं णयणसुरउ पुणु आमेल्लेप्पिणु सासुरउं ।
उज्झाउरि आइवि पाणपिउ सिरि सुलसइ सहु भुंजतु थिउ ।
महुपिंगु भडारउ कहिं मि पुरि पइसइ भिक्खहि चउवण्णघरि ।
जो तावेक्कें विप्पें कहिउ सामुद्दु असेसु सलक्खहिउ ।
रिसिसीलु पण अवलंबियउ लच्छीमुहु काइ ण चुंबियउं ।
अवरेक्कें ता तहिं भासियउ पइ लक्खणु किं किर णिरसियउं ।

घत्ता—मुणि पोयणपुरि राउ होंतउ पहु महीसरु ॥
गउ सुलसावरयालि चारणजुयलउ पुरवरु ॥ २१ ॥

## 22

पिउससुय परिणइ जाम किर ता सयरमतिकयकवडगिर ।
पोत्थइ वित्थारिवि दक्खविय विवरिवि बहुसहसमग्गविय ।
सासुयससुरहं मणु हारियउ हुहु पिंगदिट्ठि णीसारियउ ।
अप्पुणु पुणु खलु वरइत्तु थिउ तेणेयहु दुक्खणिहाणु किउ ।
त णिसुणिवि हियवइ कुद्धु जइ जिणदेसिउ तवहलु अत्थि जइ ।
पाविट्ठु दुट्ठु खलु खुद्दमइ मइ पुरउ हणेव्वउ सयरु तइ ।
रिसि रोसु भरतु भरतु मुउ असुरिंदहु वाहणु देउ हुउ ।
सो सट्ठिसहसमहिसाहिवइ किं वण्णमि महिसाणीयवइ ।

घत्ता—जिणवरधम्मु लहेवि खमभावें परिचत्तउ ॥
खणि सम्मत्तु हणेवि सुरदुग्गइ संपत्तउ ॥ २२ ॥

## 23

पुणु तक्खणि असुरें जाणियउ जिह कव्वु करेप्पिणु आणियउ ।
जिह मामिहि मामहु हित्त मइ जिह पिंगें पडिवण्णी विरइ ।

२ A अणुहुजहि, P अणुभुजिहि ३ AP पइसरइ ४ A जा ता विप्पें एक्कें ५ A मुणि

**22** १ A दिक्खविय २ A °णिहाउ

5 *b* आमेल्लेप्पिणु त्यक्त्वा, सासुरउ श्वशुरकुलम् 7 *b* चउवण्णघरि चतुर्वर्णानां गृहा यत्र पुरे 12 सुलसावरयालि सुलसाया विवाहकाले

**22** 1 *a* पिउससुय पितृभगिन्याः पुत्री 2 *b* विवरिवि विस्तारीकृत्य 4 *a* खलु दुर्जन 7 *a* भरतु स्मरन् 7 *b* °अणीयवइ सेनापति

जिह गहिय तणूयरि मयगइ तिह एवहिं धुउ पावमि कुगइ ।
सहु मतिहिं साकेयाहिवइ कहिं एवहिं वच्चइ लद्धु लइ ।
इय चिंतिवि तबिरलोयणउ आयउ सो सालंकायणउ ।
मुहकुहरविणिग्गयवेयझुणि हिंसालउ दूसियपरममुणि ।
सुलसावइजीवियसिरिहरहु तहिं तासु महाकालासुरहु ।
आयउ सहाउ जो दुम्मयहु आयण्णहु तहु कइ पव्वयहु ।
उत्तुंगसउहधरणियलधरि एत्थेव खेत्ति सोवत्थिपुरि ।
विस्सावसु राणउ विमलजसु तहु सिरिमइदेविहि पुत्तु वसु ।

घत्ता—णामें खीरकलंबु दियवरु सत्थवियारउ ॥
तासु चट्टु वसु जाउ पव्वउ अवरु वि णारउ ॥ २३ ॥

## 24

सहुं सीसहिं सो परमायरिउ एक्कहिं दिणि काणणि अवयरिउ ।
अब्भावयासणिट्ठवियणिसि उवविट्ठउ दिट्ठउ तेत्थु रिसि ।
उज्झाएं पणविवि पुच्छियउ भवियव्वमग्गु सुणियच्छियउ ।
तीहिं वि दियवरछत्तहं तणउ आहासइ मुणि पणट्ठपणउ ।
वसु पव्वय णारयधरणियलि पडिहिंति दो वि कयजण्णफलि ।
जिणणाणसुणिच्छउ मणि वहइ णारउ सव्वत्थसिद्धि लहइ ।
तं णिसुणिवि गुरु उव्विग्गमणु आयउ पुरु थिउ भूसिवि भवणु ।
खेल्लंतु दिएसें घाडियउ अण्णहिं दिणि लट्ठिइ ताडियउ ।
कपतदेहु सुहदाइणिहि वसु विसइ सरणु उज्झाइणिहि ।

घत्ता—पत्थिवि रक्खिउ ताए कंत म तासहि बालउ ॥
पत्थिवपुत्तु सुसीलु कमलगब्भसोमालउ ॥ २४ ॥

23 १ A अच्छइ लइ जइ २ P त चिंतिवि ३ A कयकव्वयहु ४ AP उत्तुंग° ५ A सावत्थपुरि, P साविथ्यिपुरि

24 १ A तेण २ A भवियण्पु मग्गु ३ A °णाणि विणिच्छउ, P °णाणु विणिच्छउ ४ A उव्विण्णमणु ५ AP पीडियउ ६ A लट्ठे ताडियउ

23 3 *a* तणूयरि कृशोदरी 5 *a* सालंकायणउ सालङ्कायणनामा विप्ररूपः 8 *a* सहाउ सहायः, *b* आयण्णहु आकर्णयत 12 चट्टु शिष्यः

24 1 *a* परमायरिउ परमाचार्यः 2 *a* अब्भावयास° अभ्रावकाशे माले 3 *a* उज्झाएं उपाध्यायेन, *b* सुणियच्छियउ सुष्ठु निरीक्षितः 5 *a* णारयधरणियलि नरकभूमौ 8 *b* लट्ठिइ यष्ट्या 10 पत्थिवि प्रार्थनां कृत्वा

## 25

धरणिहि वयणें वरु ओसरिउ सिसु चवइ माइ पइ गुरु धरिउ ।
महु उप्परि एतउ कुडमणु भणि पव्वहिं विज्जउ वरु कवणु ।
त णिसुणिवि इज्जइ भासियउ महुं पुत्त चित्तु संतोसियउ ।
जइयहुं मग्गहि तइयहुं जि वरु तुहुं देज्जसु धवलवलूहभरु ।
थिउ लेंतें संतें पीणभुउ विस्सावसुणा कमि णिहिउ सुउ ।
सहुं सहयरकिंकरहिं रमइ अवरहिं दियहुल्लइ वणि भमइ ।
पक्खिउलु णहंगणि पक्खलइ पहु पेक्खइ तं तहिं पडिखलइ ।
णीरूवु ण णहयलु परु धरइ पक्खलणहु कारणु संभरइ ।
इय चिंतिवि तेण विमुक्कु सरु धणुगुणु आयड्ढिवि पिंछधरु ।
आयासफलिहमउ खंभु हुउ उच्छलिवि बाणु धरणियलि गउ ।
परिमट्ठउ हत्थें जाणियउ उक्खाइवि भवणहु आणियउ ।
तहु खंभहु उप्परि हरिगीढि सइ चडियउ कंचणमयइ पीढि ।

घत्ता—आसणु चलइ ण किं पि जणु जणु जणवइ पयडइ ॥
धम्में णियसच्चेण वसु गयणाउ ण णिवडइ ॥ २५ ॥

## 26

अण्णेक्कहिं वासरि विविहहलु णारय पव्वय गुरुगिरिगुहिलु ।
चवकउ कलाउ ण जलि करइ पच्छाउहपायहिं ओसरइ ।
पत्तइ तिंत्ताइ मयूरियह सरिवारिपवाहाऊरियह ।
इय तेण कज्जु परिहच्छियउ पुणु मित्तहु वयणु णियच्छियउ ।
कइ णीलकंठ सुविचिंतियउ भणु पव्वय मोरिउ केत्तियउ ।
सो ण मुणइ ण भणइ पहि चरइ विहसेप्पिणु णारउ वज्जरइ ।

---

25 १ AP भणु २ A एमहिं ३ AP वउ ४ P पडिवलइ ५ AP धणुगुणि ६ AP थभु ७ A हरिवीढि, P हरिहि गीढि ८ वाढि

26 १ A ता एक्कहि २ AP गय गिरिगुहिलु ३ P पच्छामुह° ४ A सिंताइ ( तिंताइं ? )

---

25 3 *a* इज्जइ उपाध्यायभार्यया 4 *b* °बलूढभरु अतिशयेन महान् 5 *b* कमि संतानक्रमे 6 *b* दियहुल्लइ दिवसे 8 *b* पक्खलणहु स्खलनस्य, संभरइ स्मरति विचारयति 9 *b* आयड्ढिवि आकृष्य 10 *a* °फलिहमउ स्फटिकमय 11 *a* परिमट्ठउ परामृष्ट स्पृष्ट 12 *a* हरिगीढि सिंहोच्चलिते सिंहधृते, सिंहासने इत्यर्थ 14 गयणाउ आकाशात्

26 1 *a* विविहहलु नानाफलयुक्तम्, *b* गुरुगिरिगुहिलु महागिरिगह्वरम् 2 *a* चंदकउ मयूर, *b* पच्छाउहपायहिं पश्चात्पादै 3 *a* तिंत्ताइ जलार्द्राणि, *b* सरिवारि° नदीजलस्य 5 *a* कइ णीलकंठ कति मयूरा

सिहिणीउ सरु इह एक्कु सिहि　　ओसरिउ सरहु जो पिंछणिहि ।
बहुबुद्धिगहीरें पीलुरय　　पयलंतपेम्मजलसित्तरय ।
पयमग्गें जाणिय हत्थिणिय　　अवर वि आरूढणियवणिय ।
पुच्छिवि पच्छइ पुरि पइसरिवि　　गउ तक्खणि मच्छरु मणि धरिवि ।

घत्ता—अक्खइ मायहि गेहि णिरु ताए सताविउ ॥
हउ ण पढाविउ किं पि णारउ चारु पढाविउ ॥ २६ ॥

## 27

सो जाणइ अम्मि अलिट्ठाइं　　वणि मोरिंगियइं अदिट्ठाइं ।
करिकरिणिहिं पयचिंधइं कहइ　　ता बभणि रोसु चित्ति वहइ ।
सहुं कंतें पयडियगरहणउ　　विरइउ कोणीहलकलहणउ ।
पइं काइं वि पुत्तु ण सिक्खविउ　　परडिंभु जि सत्थमग्गि थविउ ।
तं णिसुणिवि भट्टें घोसियउ　　अलिककह केणुववेसियउ ।
मयरद्धयधमीणाहरणु　　हंसह वि खीरजलपिहुकरणु ।
सुउ तेरउ सुंदरि मंदु जडु　　णारउ पुणु ससहावेण पडु ।
इय पभणिवि पिट्ठें मेस कय　　सुय भासिय जणणें णवियपय ।
ए बच्छ लएप्पिणु तरुगहणि　　पइसारिवि दूरु पविमुक्कजणि ।
जहिं को वि ण पेक्खइ धुत्तु मुणिवि　　तहिं आवहु बिहिं वि कण्णु लुणिवि ।
तं णिसुणिवि जाइवि विविणपहि　　पच्छण्णें थाइवि रुक्खरहि ।
कर मउलिवि जोइणि का वि थुय　　पव्वइण उरब्भहु कण्ण लुय ।

घत्ता—इयरें पइसवि दुग्गें चिंतिउ वद्दिवायर ॥
इह णियंति पसु पक्खि किंणर जक्ख णिसायर ॥ २७ ॥

## 28

जहिं गच्छमि तहिं तहिं अत्थि परु　　जइ णरु णउ तो पेक्खइ अमरु ।
किह कण्णं उरब्भहु कत्तरमि　　घरु गपिणु तायहु वज्जरमि ।

---

५ AP ओसरइ　६ AP मणि मच्छरु

**27**　१ AP अदिट्ठाइं　२ AP कोलाहल°　२ AP परिमुक्कजणि　३ AP कण्ण　४ AP जायवि णिसुणिवि　५ AP वियणवहि　६ AP आइवि　७ A किवायर

**28**　१ AP कण्णु

---

7 *a* सिहिणीउ मयूर्यै, *b* सरहु जलात् 8 *a* पीलुरय गजरता, *b* °पेम्मजल° शुक्रम्, °रय धूलि

**27**　1 *a* अलिट्ठाइं अकथितानि, *b* मोरिंगियइं मयूराणामिङ्गितानि चिह्नानि 3 *b* कोणीहलकलहणउ कोपरघातकलहं रात्रौ करोति 5 *b* अलिककह भ्रमरवकानाम् 6 *a* °मीणाहरणु मत्स्याहार, *b* °पिहुकरणु पृथक्करणम् 11 *a* विविणपहि अरण्यमार्गे, *b* रुक्खरहि एकान्ते रहस्ये कुहरे वा. 12 उरब्भहु मेषस्य

गय बेण्णि वे पेसणु अप्पियउ    णारयकिउ चारु वियप्पियउ ।
विप्पेण वुत्तु हलि हसगइ    अवलोयहि तुहुं णंदणहु मइ ।
जहिं गम्मइ तहिं असुण्णु णिलउ    पसुसवणइ किह विराइउ विलउ ।
सुरगुरु वि समाणु ण णारयहु    लइ पहु वि ओग्गउ गुरुंवयहु ।
सुय घरिणि वि तासु समप्पियइ    वसुराए सहुं अंपिवि पियइं ।
तवचरणु जिणागमि संचरिवि    थिउ मुउ थिउ दिव्ववोंदि धरिवि ।
बहुकालें विहिं वि हेउभरिउ    पारद्धु विवाउ पवित्थरउ ।
णारउ अर्यं जव तिवरिस चवइ    त पव्वउ वयणु अइक्कमइ ।
अय पसु भणतु सो वारियउ    अवरेहिं बुहेहिं णीसारियउ ।
गउ मच्छरेण थरहरियतणु    सपत्तउ णीलतमालवणु ।
घत्ता— तहिं दियवरवेसेण पव्वएण सो दिट्ठउ ॥
असुरसुईउ पढतु तरुतलि सिलहि णिविट्ठउ ॥ २८ ॥

## 29

मणेपणयपसगुप्पायणउ    तें तासु कयउ अहिवायणउ ।
वुड्ढेण वि पडिअहिवाउ किउ    पुणु वुत्तु होउं तुज्झु जि विणउ ।
सुय आयउ जाणिउ किं ण पइ    चिरु खीरकलवें अवरु मइ ।
दोहिं मि सुभउमु गुरु सेवियउ    सत्थत्थु असेसु वि भावियउ ।
आयउ किर जोइहुं तासु मुहुं    ता पवसिउ सो सुउ दिट्ठु तुहुं ।
लइ जण्णमहाविहिकारियह    सहसाइ सट्ठि पसुवहरियह ।
सयराहराय अब्भुद्धरहि    मेंह माहियलि कारावहि करहि ।
हउ कर्चुइ अज्जु परइ मरमि    णियविज्जइ पइ जि अलकरमि ।
दियतरुणिं ता तहु इच्छियउ    त विज्ञावाणु पडिच्छियउं ।
पुरदेसह घल्लिउ मारि जरु    पहु को वि गवेसइ सतियरु ।
गय बेण्णि वि त कोसलणयरु    दोहिं वि सबोहिउ णिउं सयरु ।
घत्ता—हुंणिवि तुरग मयग दणुए दाविय मायइ ॥
कुडलमउडफुरत दिट्ठ देव णहमायइ ॥ २९ ॥

२ A गुरुयरहु ३ AP सुउ ४ AP बहुकालहिं ५ AP पवित्थरिउ ६ A अइजव

**29** १ A मणे २ A त तासु ३ P अभिवायणउ ४ A पडिपणिवाउ ५ AP होइ ६ A °कयंवें ७ A महु ८ A कचु अजु ९ P तें विज्ञा° १० AP णिउ सगरु ११ A हणवि १२ A °मडल°

**28** 5 *a* असुण्णु णिलउ न शून्य निलय स्थानम्, *b* पसुसवणइ मेषकर्णयो 6 *b* गुरुवयहु उपाध्यायपदस्य 8 *b* दिव्ववोंदि देवशरीरम् 9 *a* हेउभरिउ हेतुभृत युक्तिपरिपूर्ण, *b* विवाउ विवाद 14 असुरसुईउ असुरश्रुती

**29** 1 *a* मणेत्यादि चित्ते स्नेहप्रसङ्गोत्पादकम्, *b* अहिवायणउ अभिवादनम् 2 *a* पडिअहिवाउ प्रत्यभिवादनम् 5 *a* जोइहुं द्रष्टुम् 6 *a* जण्णमहाविहिकारियह यज्ञमहाविधिकर्तॄणाम्, *b* पसुवहरियहं पशुवधकर्तॄणाम् 7 *b* मइ यशम् 8 *a* कचुइ वृद्ध 12 हुणिवि अग्नौ हुत्वा.

## 30

अप्पाणउ तहिं जि[1] हुणावियउ देवत्तु णहगणि दाविय उ।
सत्तक्खिणिहिसेइ[2] चउपयह णिट्ठियइ सट्ठिसहसइ मयह।
मायारएण जणु मोहियउ सतीइ सुहेण पयासियउ।
हारावलिरुइराजियथणिय सुलसा वि तेण हुयवहि हुणिय।
गोसवि णियजणणि वि अहिलसिय सउँयामणिमहि[3] महर वि रसिय।
विप्पह वभणिवरगु विहिउ महुणा लित्तउ जीहइ लिहिउ।
बहु चविय घुसेणेव जड अवलोयवि होमिज्जंत[4] भड।
घरु जाइवि तणु घल्लिवि सयणि पहु सोयइ हा हा मिगणयणि।
हा सुलसि काइं मइ तुज्झु किउ किह जीवियव्वु[5] णिड्डहिवि णिउ।
तों[6] तहिं जि पराइउ पवरजइ पुच्छइ पणामु विरइवि णिवइ।
किं धम्मु भडारा पसुवहणु किं सव्वजीवदयसंगहणु।

घत्ता—त णिसुणिवि करुणेण तेण मुणिंदें वुत्तउ॥
होइ अहिंसइ धम्मु हिंसइ पाउ णिरुत्तउ॥ ३०॥

## 31

पेहु जणइ[1] पच्चउ दुक्खवहि अप्पाणउ किं मुहिइ खवहि।
रिसि भासइ णहयलरंगणडि तुह सत्तमि दिणि णिवडिहइ तडि।
णिवडेसहि णरइ[2] मं भंति करि किं सग्गुं[3] जंति पसुं[4] खंत हरि।
त राए रइयणरावयहु आवेप्पिणु अक्खिउ पावयहु[5]।
तेण वि बोल्लिउ मलपोट्टलउ किं जाणइ सवणउ विट्टलउ।
असुरिंदें दरिसिय देवि णहि विउणारउ लग्गउ पुणु वि महिं[6]।

30 १ P तहि तो २ P णिहिसह ३ P सोयामणि° ४ A होमिज्जति ५ A जीवियस्थु ६ P तो

31 १ A पइ जणइ सच्चउ २ A ण ३ AP सग्गि ४ A पसु खंति ५ AP पव्वयहु; but Γ पावयहु ६ A महि, P महो

30 1 *a* अप्पाणउं सालङ्कायनेन स्वजीवोऽग्नौ क्षेपितः 2 *a* सत्तक्खि° अग्नि:, चउपयहं चतुष्पदानाम् 5 *a* गोसवि गोवधयज्ञे *b* सउयामणिमहि सौत्रामणीयज्ञे, महर मदिरा 6 *b* °वरगु योनिः 12 करुणेण कारुण्येन

31 1 *a* पच्चउ प्रत्यक्षम्, *b* मुहिइ मुधैव 2 *a* °णडि नटी, *b* तडि विद्युत्, 3 *b* पसु खंत हरि मृगादीन् खादन्त सिंहा 4 *a* रइयणरावयहु रचिता नराणामापदो येन, *b* पावयहु पर्वतस्य 6 *a* देवि सुलसा, *b* विउणारउ द्विगुण.

सो असणिणिहाँए घाइयउ वालुयपहमहि सपाइयउ ।
भणु पावें को व ण मारियउ रिउणा आहवि पच्चारियउ ।
ज पिंगलु हुउ पइ दूसियउ ज णियकरु कण्णइ भूसियउ ।
जं वरलक्खणु महु कयउ छलु भुजहि पवहिं तहु तणउ फलु ।

घत्ता—पुणु असुरें णहमग्गि मायारूवें हरिसियइं ॥
सा सुलस वि सो सयरु बिण्णि वि मंतिहिं दरिसियइं ॥ ३१ ॥

## 32

ता खद्धकद्देण सह तवसिविंदेण ।
गउ णारओ सेउ त णयरु साकेउ ।
तेणुत्तु दियसीह पव्वय दुरासीह ।
वणयरइ मारंतु अट्टियइ चूरंतु ।
चम्माइ छिंदंतु वम्माइ भिंदंतु ।
इसिदिट्ठु सुपसत्थु जइ वेउ परमत्थु ।
तइ खग्गु किं णेय जज्जाहि कुविवेय ।
जइ पोरिसेओ वि णउ होइ भणु तो वि ।
वण्णज्झुणी गयणि किं फुरइ णरवयणि ।
अक्खरइं कहिं बिंदु कहिं अत्थु कहि छंदु ।
कयमणपयत्तेण विणु पुरिसवत्तेण ।
कहिं छेउ कहिं वेउ कहिं णाणु कहिं णेउ ।
कहिं गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु ।
वेयम्मि कहिं हिंस दिय गिलियपरमंस ।
हिंसाइ कहिं धम्मु जड मुयहि तुहु छम्मु ।
कत्तार दायार जण्णस्स णेयार ।
जहिं होंति होयार सुरणारिभत्तार ।
तो सूणगारा वि मीणावहारा वि ।
पसुखद्धबद्धा वि ।
अमरा ण किं होंति[5] जइ जण्णि णिवडंति[6] ।

७ P °णिवाए ८ AP सपाइयउ ९ P जीयवि

**32** १ A तवसविंदेण २ AP देउ ३ A अविचार, PT अवियार ४ AP omit this foot. ५ AP add after this किं दुग्गई जंति ६ A णिवडत

7 *a* असणिणिहाए अशनिघातेन 8 *b* रिउणा कालासुरेण 10 *a* छलु वञ्चना

**32** 2 *a* सेउ श्वेत आवासे कृत्वा ( सौधे ) 3 *a* तेणुत्तु नारदेन उक्तः, *b* दुरासीह दुराशा चेष्टा 8 *a* पोरिसेओ पौरुषेय 11 *a* कयमणपयत्तेण कृतमन प्रवर्तनेन, *b* °वत्तेण वक्त्रेण.

पसु सग्गु गच्छंति[7] ।
दीसंति सकयत्थ तो अप्पय तत्थ ।
होमेविं[8] मंतेहिं सहुं पुत्तकंतेहिं ।
गम्मिज्जए सग्गु भुंजिज्जए भोग्गु ।
घत्ता—अलमट्टियचम्मेण दब्भें सुद्धि कहेप्पिणु ॥
भट्टें खद्धउ मासु खगमिगकुलइं वहेप्पिणु ॥ ३२ ॥

## 33

जइ लद्धउ विप्प पवित्तु जलु तो किं ण जायउ मुत्तु मलु[1] ।
जइ गंगाण्हाणु जि[2] दुरियहरु तो झस वि लहंति वि मोक्खु[3] परु ।
जइ मट्टियमंडणि तमु गलइ तो कोलु विमाणें संचरइ ।
जइ हरिणाइणु धम्मुज्जलउ तो हरिणउलु जि जगि अग्गलउ ।
किं बंभणु उत्तमु तुहुं कहहि तं मारिवि[4] मासगासु महहि ।
जइ दब्भें[5] पुण्णु पवित्थरइ तो किं[6] मयउलु भवि संसरइ ।
तं गत्तिंदियहुं दब्भे जि चरइ किह इंदविमाणि ण पइसरइ ।
गोफंसणपिप्पलफंसणइं सुत्तुट्ठियाहं घयदंसणइं ।
जइ पाउ हणंति हुत पउर तो वसहकायराया वि सुर ।
किं बहुवें पुणु वि मंति भणइ जो परु अप्पाणउ[7] समु गणइ ।
णिग्गंथु णियत्थु वि परिभमउ छुडु मोहुं लोहु[8] मच्छरु समउ ।
सो पावइ तं सिद्धत्तु[9] किह रसविद्धु धाउ हेमत्तु जिह ।
घत्ता—हिंसारंभु वि धम्मु वयणु असच्चु वि सुंदरु ॥
जेंणु[10] धुत्तहिं दढमूढु किज्जइ कालउ पडुरु ॥ ३३ ॥

## 34

जवहोमें संतियम्मु कहिउ[1] जं तं पइ छेलएहिं गेहिउ ।
अय जव जि पयारिय हुंति णउ पइ लंघिउ तायहु वयणु कउ ।

---

७ A गच्छंत ८ A होमेहिं

**33** १ AP मुत्तमलु २ A वि ३ A सोक्खु ४ P मरिवि ५ AP दब्भु ६ A किं ७ AP अप्पाणें ८ AP लोहु मोहु ९ A सिद्धतु १० AP जगु

**34** १ P कहिउ

---

21 *b* तत्थ यज्ञे 22 *a* होमेवि हुत्वा 25 मासु मांसम्, वहेप्पिणु हत्वा

**33** 2 *a* दुरियहरु पापविनाशकम् 3 *a* मट्टियमंडणि मृत्तिकया शरीरलेपने, *b* कोलु सूकर 4 *a* हरिणाइणु हरिणचर्म, *b* अग्गलउ श्रेष्ठम् 9 *b* वसहेत्यादि वृषभाणा गोशरीरस्पर्शात् काकानां पिप्पलस्पर्शात् 11 *a* णियत्थु निर्वस्त्र परिधानरहित 12 *a* सिद्धत्तु सिद्धत्वम्, *b* हेमत्तु सुवर्णत्वम्

**34** 1 *b* छेलएहिं छागेषु 2 *a* पयरिय उप्ता

गिरि घोसइ गुरुणा पिसुणियउ तें तेइयहु वसुणा णिसुणियउं ।
ता णारउ पव्वउ रुद्दंधय तावस साविलिथहि झ त्ति गय ।
पव्वयजणणिइ अब्भत्थियउ वरकालु पहु पहु पत्थियउ ।
जइ सुअरहि भासिउं अप्पणउ तो थवहि वयणु भाइहि तणउं ।
त अम्महि भासिउ परिगणिउ अय जव ण होंति तेण वि भणिउ ।
ज थविउ असच्चु सुदुच्चरिउ त सघरु धरायलु थरहरिउ ।
महिकंपें ठाणहु विहडियउ आयासहु आसणु णिवडियउं ।
णहंफलिहखभचुउ चूरियउ वसु चुण्णु चुण्णु मुसुमूरियउ ।

घत्ता—णियमित्तहो मरणेण पव्वउ थिउ विच्छायउ ॥
पडियउ णरयणिवासि वसु असच्चु सजायउ ॥ ३४ ॥

## 35

पुणु दणुए मायाभाउ किउ वसु दाविउ सग्गविमाणि थिउ ।
ता सयरमति आणंदियउ मूढेहिं जणु किं णिंदियउ ।
पुणु तेण वि रायसूउ रइउ दिणयरदेवें खयरें लइउ ।
णिवमासहोमु विद्धसियउ महकालवियभिउ णासियउ ।
णारयहियउल्लउ तोसियउ अमरारें पुणरवि घोसियउ ।
मा णासहि पव्वय कहिं मि तुहु मतीसर माणहि अमरसुहु ।
जिणबिंबइ चउदिसु थवहि तिह खेयरविज्जाउ ण पंति जिह ।
ता तें सिट्ठउ तेहउ करिवि गय णरयविवरि बिण्णि वि मरिवि ।
महिसिंदें लोयहु भासियउ अप्पाणउ वइरु मइ साहियउ ।
देहिहि दुक्खावहु धम्मु कहि पलु खज्जइ पिज्जइ मज्जु जहिं ।
तेवचरणें जालिवि मयणपुरि णारउ अहमिंद विमाणवरि ।
अज्ज वि अच्छइ जिणगुण महइ अइंसयमइ दमरहासु कहइ ।

२ A त ३ A रुद्दवय ४ A भासिउप्पणाउ ५ A महिकपइ ६ A वियडियउ ७ A फलिहमउ खमु धुउ चूरियउ

**35** १ P °त्रिवाणि २ AP जि ३ A लविउ ४ A णरयघोरि ५ AP तवजलणें ६ A विमाणु धरि, P विवाणुवरि ७ AP इय सयमइ

3 *a* गिरि पर्वत, पिसुणियउ कथितम् 4 *a* रुद्दधय रुद्राक्षचिह्नास्तापसा 5 *a* अब्भत्थियउ समुख्य प्रात 6 *a* सुअरहि स्मरसि, *b* भाइहि पर्वतस्य 10 *b* मुसूमूरियउ चूर्णं सजात

**35** 3 *b* लइउ भक्त स्वीकृत 4 *a* णिवमासहोमु नृपमासहोम, *b* महकालवियभिउ महिषासुरविजृम्भितम् 5 *b* अमरारें दैत्येन महिषासुरेण 9 *a* महिसिंदे दैत्येन महिषेन्द्रेण 10 *a* देहिहि जीवस्य 11 *b* विमाणवरि विशिष्टे विमाने

घत्ता—भरहकुमारजणेर हो हो जण्णु किं किज्जइ ॥
जगमहंतु अरहंतु पुप्फदंतु पणविज्जइ ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रामलक्खणभरहसत्तुहणुप्पत्ती
णाम जंगणिवारण णाम एक्कूणहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥ ६९ ॥

८ AP ण ९ A रामभरहलक्खण° १० A जण्णणिवारण ११ A एकसत्तिमो, P णवसट्ठिमो

13 भरहकुमारजणेर भरतकुमारपित हे दशरथ

# LXX

आयण्णिवि मतिसुहासियेइं मिच्छादसणु णिट्ठिउ ॥
दसरहहियउल्लउ मेरुथिरु जिणवरधम्मि परिट्ठिउ[3] ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

अवरेहिं मि अरुहि णिहितु चित्तु सथुउ समति कल्लाणमित्तु ।
चमुवइणा मारियपरबलेण पत्थतरि उत्तु महाबलेण ।
तवारवारु सो जण्णु जाउ णिव जोयहि णियेणदणपयाउ ।
झसमुसलगयासणिधणुहरेहि जिप्पति ण जिप्पति व परेहिं ।
विण्णाणणाणणयविहयमोहु ता राए आउच्छिउ पुरोहु ।
भणु भणु तणयह महिरयणरिद्धि त गमणे होइ ण होइ सिद्धि ।
ता वुत्तु णिमित्तवियक्खणेण जहिं जाइ रामु सहु लक्खणेण ।
तहिं तहि गोमिणि समुहिय थाइ दामोयरु मुइवि ण पउ वि जाइ ।
ए अट्ठम मइ णिसुणिउ पुराणि सठिय सलायपुरिसाहिठाणि ।
जगतावणु रावणु रणि हणेवि महि भुजिंहिंति खग्गे जिणेवि ।
बलएव जणद्दण सुय ण भति दससदणु पुच्छइ विहियसति ।

घत्ता—महु कहहि पुरोह लद्धविजउ भुवणत्तयविक्खायउ ॥
दहगीउ दसासापत्तजसु केण सुंपुण्णे जायउ ॥ १ ॥

## 2

जसु आसकइ जमु वरुणु पवणु तहु पयहु भणु सियचिंधु कवणु ।
ता कहइ विप्पु महुरइ गिराइ सुणि धादइसडहु पुव्विल्लभाइ ।
आरामगामसदोहसोहि खरदडसडमडियसरोहि ।
रभतगोउलावासरम्मि जवणालसालिजवछेत्तसोम्मि ।
गोवालबालकीलाणिवासि तहिं सारसमुच्चइ णाम देसि ।

1 १ A °सुहासियउ २ AP णिट्ठियउ ३ AP परिट्ठियउ ४ P णिबणदण° ५ A °णय विहियमोहु, P °णयणिहियमोहु ६ AP णिसुणिउ मइ ७ P भुजिहति ८ A omits लद्धविजउ ९ A दहगीव, P दसगीउ १० P सपुण्णे

2 १ P कमणु २ AP °कीलणणिवासि

1 1 °सुहासियइ सुभाषितानि सुवचनानि 5 *a* तंबारवारु नरकद्वार क्षयम्, *b* °पयाउ °प्रताप.. 7 *a* °विहयमोहु °विहताज्ञान 10 गोमिणि लक्ष्मी

2 1 *b* सियचिंधु श्रियो निमित्त चिह्न वा 3 *b* खरदड° कमलानि, °सरोहि तडागसमूहे 4 *a* रभत° शब्द कुर्वन्त

णायउरि अत्थि णरदेउ राउ वंदिवि अणंत गुरु वीयराउ ।
संतइहि थवेप्पिणु भोयदेउ जइ जायउ मेल्लिवि बंधहेउ ।
विज्जाहरु पेच्छिवि चवलवेउ णहयलि आवंतु विचित्तकेउ ।
बद्धउ णियाणु महु जम्मि होउ एहउ मणहरु खेयरविहोउ ।
सुररमणीरमणविलाससग्गि मुउ उप्पण्णउ सोहम्मसग्गि ।
इह भरहवरिसि वेयड्ढसेलि गयणग्गलग्गमणिमोहमेलि ।
दाहिणसेढिहि हयवइरिजीउ पुरि मेहसिहरि पहु सहसगीउ ।

घत्ता—उव्वेयउ केण वि कारणिण अंतरंगि णिरु जायउ ॥
कलहणउ करिवि सहु बंधवहिं सो तिकूडगिरि आयउ ॥ २ ॥

## 3

लग्गइ अकंडि दुव्वयणकंडु मउलाविज्जइ सुहि तेण तुंडु ।
किं किज्जइ पिसुणणिवासि वासु तहिं गम्मइ जहिं कंदरणिवासु ।
तहिं गम्मइ जहिं तरुवरहलाइं तहि गम्मइ जहिं णिज्झरजलाइं ।
तहि गम्मइ जहिं गुणणिरसियाइं सुव्वंति ण खलयणभासियाइं ।
इय चिंतिवि घत्तिवि दुट्ठसंक काराविय राएं णयरि लंक ।
उप्परिथियगिरिहत्थिहिं विहाइ चलियधयहत्थहिं णडइ णाइ ।
ण सण्णइ एहिं जि पुणु वि एम किं सग्गें मइं जोयंतु देव ।
सिहरें ण भिंदिवि विउलमेह ससि पावइ किं घरतेयरेह ।
जोयइ पुत्तलियाणयणएहिं ण हसइ फुरंतहिं रयणएहिं ।
परिवित्थारिवि कित्तीमुहाइं दावइ पारावयरवसुहाइं ।

घत्ता—जहिं चंदसाल चंदसुहय चंदकंतिजलु मेल्लइ ॥
कामिणिपयपहउ असोयतरु उववणि वियसइ फुल्लइ ॥ ३ ॥

३ A खेयरहु होउ ४ A °वरिस° ५ A °मऊह° ६ AP णिउ

**3** १ AP °वरफलाइं २ AP सुम्मंति ३ A पावियदुट्ठसंक ४ A °हत्थिय विहाइ ५ A जोयंति ६ AP सिहरेहि वि ७ AP णीलमेह ८ A °रवसुहाइं P °रयसुहाइं ९ A °पयहयउ

6 *a* णायउरि नागपुरनगरे 7 *b* बंधहेउ पापबन्धकारणम् 9 *a* जम्मि आगामिभवे, *b* °विहोउ विभोग ऐश्वर्यम् 11 *b* °मोहमेलि किरणसंघाते 13 उव्वेयउ उद्विग्न कलुषित 14 सो सहस्रग्रीव.

**3** 1 *a* अकंडि अप्रस्तावे, °कंडु बाण, *b* सुहि सुहृद 4 *a* गुणणिरसियाइं गुणच्छेदकानि 7 *a* सण्णइ संज्ञया 8 *b* घरतेयरेह गृहतेजस शोभाम् 10 कित्तीमुहाइं कीर्तिमुखानि शिखराण्येव 11 चंदसाल शिरोगृहमाच्छादितोपरितनभूमि, चंदसुहय चन्द्रकिरणैर्हता 12 °पयपहउ पादप्रहत

## 4

सा पुरि परिपालिय तेण ताव गय वरिसहं वीससहास जाव ।
सयगीउ खगाहिउ पववीस थिउ विद्दवतु णाणामहीस ।
णिद्दलिवि वइरि भूभंगभीस पण्णासगीउ मुउ जिइवि वीस ।
दसपंचसहासइं वच्छराहं सठिउ पुलत्थि राइयधराहं ।
सुंदरि तहु पणइणि मेहलच्छि सा पेच्छइ घरि पइसंति लच्छि ।
अक्कग्गि चडिउ चंडसुमालि सिविणंतरंति परिगलियकालि ।
आहासिउ दइयहु फलपयासि णरदेव देव थिउ गब्भवासि ।
सभूयउ सयणहं सुहु जणंतु ण बहुरूविणिवम्मियरणमंतु ।
णिवरूवें आणदु व पयाहं आवासु व णहयरसंपयाहं ।
घत्ता—कुलधवलु धुरंधरु दहवयणु जायउ मायहि जइयहुं ॥
मंदरगिरिदुग्गु पुरंदरिण महु भावइं किउ तइयहं ॥ ४ ॥

## 5

णवतरणि व सुरकुमुयायराहं पडिमल्लु व गज्जियसायराहं ।
कढिणकुसु ण दिग्गयवराहं मणमत्थइ सूलु व अरिवराहं ।
ण मत्तभमरु णंदणवणाहं ण कामवासु तरुणीयणाहं ।
पवहंतमहासरिजलगलत्थु महिमहिहरसंचालणसमत्थु ।
वण्णेण गरलभसलउलकालु आयवणयणु पडिवक्खकालु ।
जायउ जुवाणु जमजोहजूरु दुद्दसणु ण मज्झण्णसूरु ।
ण विसमविसकुरु विसविसिसु ण पलयकालु हुयवहु पलित्तु ।
तज्जियदासि व भउ धरइ चरइ जसु असिधारइ धर मरइ तरइ ।
जसु सत्तसत्तसहसाइं आउ वरिसहं जो सुव्वइ वज्जकाउ ।

---

4 १ AP तीउसहास २ AP ओहामियरूवे जाइ लच्छि ( A जायलच्छि ) ३ P पडिगलिय° ४ AP णरदेउ देउ ५ A भावहि

5 १ A कुमुयावराहं २ AP मणि मत्थय ३ AP कामबाणु ४ A ण सविसु विसकुरु विसपसित्तु P1 ण समविसमकुरु K records a p समविसमकुर ५ P करइ डरइ ६ P °धारहि

---

4 4 *b* राइयधराहं राजिता धरा येषु वर्षेषु 6 *a* चंडसुमालि सूर्ये *b* परिगलियकालि गलितरात्र्यवसरे, प्रभाते इत्यर्थ

5 1 *a* °तरणि सूर्य 2 *b* मणमत्थइ चित्ते मस्तके च 3 *b* कामवासु कामपाश 6 *a* जमजोहजूरु यमभटाना चरक 7 *a* विसमविसकुरु विसपसित्तु विषमविषस्याङ्कुरो विषेण विषिक्तश्च, समविसमकुर इति पाठे सह मया लक्ष्म्या वर्तन्ते इति समा राजान तेषा विषयाङ्कुर, विगत सम उपशम कोप तस्याङ्कुरो वा 8 *a* भउ धरइ भय धरति, *b* धर भू पृथ्वी

घत्ता—जसु भउँप रवि ण अत्थवइ चदु व चंदणाहिल्लउ ॥
फणि पुरिसरूवु परिहरिवि हुउ दीहदेहु कीडुल्लउ ॥ ५ ॥

## 6

खयरेण कण्ण इच्छियजएण मंदोयरि तहु दिण्णी मएण ।
आरुहिवि चारु पुप्फयविमाणु सहु कंतइ णहयलि विहरमाणु ।
रययायलि अलयावइहि धीय विज्जासाहणि सजमविणीय ।
जोइवि मणिवइ झाणाणुलग्ग मइ रायहु मयणवसेण भग्ग ।
पारद्धु विग्घु परिगलियतुट्ठि उववाससोसकिसकायलट्ठि ।
बारहसवच्छरपीडियंगि कुद्धी कुमारि ण खयभुयंगि ।
णासिउ बीयक्खरलीणु झाणु इहु खगवइ चिंधे जाउहाणु ।
महु बप्पु होउ मइ रण्णि हरउ आयामि जम्मि महु कज्जि मरउ ।
णिक्किउ विरत्तु विवरीयचित्तु जाणिवि रोसग्गिउ रत्तणेत्तु ।
गउ दहमुहु खेयरि मरिवि कालि थिय मंदोयरिगब्भंतरालि ।

घत्ता—उप्पण्णी धीय सलक्खणिय कंपावियकेलासहु ॥
ण लंकाणयरिहि जलणसिह णाइ भविस्ति दसासहु ॥ ६ ॥

## 7

दिणि पडिउ जलिउ उक्काणिहाउ अप्पपरि जायउ णरणिहाउ ।
महि कंपइ जंपइ को वि साहु किह चुक्कइ एवहिं पुहइणाहु ।
एयइ धीयइ सभूइयाइ खज्जेसइ णाइ विसूइयाइ ।
खयकालें ढोइय मरणजुत्ति वणि णिज्जणि घिप्पइ कहिं वि पुत्ति
सुइसुहहराउ विहुणियसिराउ आयण्णिवि णेमित्तियगिराउ ।

७ AP जसु रवि ण भइयए अत्थमइ

6 १ मंदोवरि २ A °विलीय ३ A महिवइ ४ P झाणेणुलग्गा ५ A °कायजट्ठि ६ P खए भुयगि ७ A हरइ ८ A मरइ ९ P रोसें इगिउ रत्तु णेत्तु

7 १ A ताइ वि, P तासु वि २ A °सुहयराउ

10 अत्थवइ अस्त याति

6 1 *b* मएण मयनाम्ना असुरेण 3 *a* अलयावइहि धीय अलकापुरीनरेन्द्रस्य पुत्री 4 *b* मइ मतिश्चित्तम् 6 *b* खयभुयगि कालसर्पिणी 7 *a* बीयक्खरलीणु बीजाक्षरलीनम्, *b* जाउहाणु राक्षस 9 *a* णिक्किउ निष्कृप 10 *a* खेयरि मणिवती खेचरी 12 भविस्ति मरणहेतु

7 1 *a* उक्काणिहाउ उल्कासमूह, *b* अप्पपरि स्वयमेव, णरणिहाउ नरशब्दो हाहाकार. 3 *b* विसूइयाइ विषूचिकया वमनेन 5 *a* सुइसुहहराउ कर्णसुखहरा:

खगभूगोयरसिरिमाणणेण मारियउ[३] पवुत्तु दसाणणेण ।
किं गरलवारिभरियइ[४] सरीइ किं सविसकुसुममयमंजरीइ ।
बंधवयणहियवियारणीइ किं जायइ धीयइ वइरिणीइ ।
णवकमलकोसकोमलयराउ उद्दालिवि मंदोयरिकराउ ।
णिम्माणुसि काणणि घिवहि तेम पाविट्ठ दुट्ठ णउ जियइ जेम ।

घत्ता—त णिसुणिवि[५] तें मारीयएण भणिय देवि वररूवउ ॥
तुह गब्भि भडारी[६] थीरयणु गोत्तखयकरु हूयउ ॥ ७ ॥

## 8

मुइं[१] मुइ दहमुहखयकालदूय तें होंतें होसइ अवर धूय ।
बाहोपवाह[२]ओहालियणयण ता तरुणि चवइ ओहुल्लवयण ।
मारीयय णवतरुफलरसद्दि कीलतपक्खिरमणीयसद्दि ।
घल्लिज्जंसु[३] कत्थइ पुत्ति तेत्थु रविकिरणु ण लग्गइ देहि जेत्थु ।
अह एयइ काइ जियंतियाइ कूरइ णियतायकयंतियाइ ।
गिरिदारणीइ किं गिरिणईइ हो हो किं एयइ दुम्मईइ ।
आलिहिउं पत्तु मच्छरकराल[४] रावणदेहुब्भव[५] एह बाल ।
बहुदुक्खजोणि बंधुहु असीय सुविसुद्धवंस णामेण सीय ।
इय भासिवि मंजूसहि णिहित्त सहु रयणहि वरराईवणेत्त ।
दहगीवजीवरक्खणकएण णिय णिविसें[६] णहि मारीयएण ।
बप्पयधवचंदण[७]चूयगुज्झि बहि मिहिलाणयरुज्जाणमज्झि ।

घत्ता—मंजूसइ सहु छणयंदमुहि सरिसरणिज्झरसीयलि ॥
ण रहुवइसिरिलयकंदसिरि णिक्खय सुय धरणीयलि ॥ ८ ॥

## 9

गउ विज्जापुरिसु णहंतरेण तिक्खें महि दारिय लंगलेण ।
आरामुहच्छित्तधुरंधरेण मंजूस दिट्ठ पामरणरेण ।

३ A मारीयउ वुत्तु　४ A गरुडवारि°　५ A णिसुणत मारियएण　६ P भडारिए वीरयणु

**8**　१ A मुय मुय　२ A बाहप्पवाह°　३ A घल्लिज्जइ　४ P अच्छर°　५ P रावण°　६ A णिवसें　७ AP धवचंदण°

7 *a* सरीइ नद्या　9 *a* °कोमलयराउ कोमलतरात् हस्तात्　11 वररूवउ विशिष्टरूप स्त्रीरत्नम्

**8**　1 *a* मुइ मुञ्च, *b* तें होंतें राज्ञा जीवता　2 *a* बाहापवाह° बाष्पप्रवाह, °ओहलिय° ज्ञपिते, *b* ओहुल्लवयण म्लानमुखी　5 *b* °कयंतियाइ यमरूपया　8 *a* असीय संतापकारिणी अलक्ष्मीर्वा　10 *b* णिविसें निमिषेण

**9**　1 *a* विज्जापुरिसु मन्त्री　2 *a* आरामुहच्छित्त° हलारामुखाकृष्टा, *b* पामरणरेण कर्षकेण

धणवालहु अप्पिय तेण णीय रायालउ राए दिट्ठ सीय।
वाइवि वइयरु बुज्झिय विणीय णियपियहि दिण्ण पडिवण्ण धीय।
वड्ढइ परमेसरि दिव्वदेह ण बीयायदहु ताणिय रेह।
ण ललिय महाकइपयपउत्ति ण मयणभावविण्णाणजुत्ति।
ण गुणसमग्ग सोहग्गथत्ति ण णारिरूवविरयणसमत्ति।
लायण्णवेल्ल ण जलहिवेल सुरहिय ण चंपयकुसुममाल।
थिर सुहव ण सप्पुरिसकित्ति बहुलक्खण ण वायरणवित्ति।
घत्ता—असवेल्लि व अट्ठमराहवहु अमरदिण्णकुसुमंजलि॥
पुरि वड्ढिय जणयणरिंदसुय रामणरामहु णाइ कलि॥ ९॥

## 10

पयकमलहु रत्तत्तणु जि होइ इयरह कह रंगु वहंति जोइ।
गुप्फह पुणु गूढत्तणु जि चारु इयरह कह मारइ तिजगु मारु।
जंघाबलेण आयउ अजेउ इयरह कह वग्गइ कामएउ।
णालोइउ जाणुहु संधिठाणु इयरह कह संधइ कुसुमबाणु।
ऊरूयलचिंतइ हयसरीर इयरह कह जालधरियसार।
कडियलु गरुयत्तणगुणणिहाणु इयरह कह गरुयहु महइ माणु।
गंभीरिम णाहिहि णवर होउ इयरह कह णिवडिउ तहिं जि लोउ।
पत्तलउ उयरु सिंगारु करइ इयरह कह मुणिपत्तत्तु हरइ।
सकयत्थउ मुट्ठिहि मज्झु खीणु इयरह कहं दंसणि विरहि रीणु।
वलियाहि तीहिं सोहइ कुमारि इयरह कह तिहुयणहिययहारि।
घत्ता—रोमावलिमग्गु मणोहरउ कण्णहि केरउ संघइ॥
इयरह कह सिहिणसिहरिसिहरु मयरकेउ आसंघइ॥ १०॥

9 १ A सीय २ AP रायालइ ३ AP बीयाइंदहु ४ A °समग्गि ५ A लायण्णवण्ण ६ P सुरहिय णवचंपय° ७ P सुप्पुरिस° ८ A ण रामह रावण कलि, P रावणरामह णाइ कलि

10 १ A गुप्फह, P गुप्पह २ A omits पुणु ३ A जण्णुहि, P ज तुहु ४ AP गरुयत्तणु. ५ A मुट्ठहि ६ AP कह विरहें विरहि

4 *a* वाइवि वयरु वाचितो व्यतिकर पत्रम्, *b* णियपियहि वसुधाया, पडिवण्णधीय पुत्रिकात्वेन प्रतिपन्ना 5 *b* °बीयायंदहु द्वितीयाचन्द्रस्य 6 *a* °पयपउत्ति पदप्रयुक्ति 7 *b* ° विरयणसमत्ति विरचना निर्माण तस्या समाप्ति परमोत्कर्ष 10 अट्ठमराहवहु अष्टमबलभद्रस्य

10 1 *b* इयरह इतरथा अन्यया योगी कथमेतस्या दर्शने राग वहति 5 *b* जालधरियसार जालधरी कदली असारा 8 *b* °पत्तत्तु पात्रता 11 संघइ श्लाघते 12 सिहिणसिहरिसिहरु स्तन॰ गिरिशिखरम्, आसंघइ आश्रयति

## 11

देविहि थण रइरसपुण्णकुंभ इयरह पुणु कामतिसाणिसुंभ ।
भुय मयणपाससकास गणमि इयरह कह मणबंधणु जि भणमि ।
कंधरु बंधुरु रेहाहिं सहइ इयरह कह कंबु रसतु कहइ ।
तवउ विवाहरु हरइ चक्खु इयरह कह तग्गहणेण सोक्खु ।
दियदित्तिइ जित्तइ घत्तियाइ इयरह कह विद्धइ मोत्तियाइ ।
मुहससिजोण्हइ दिस धवल थाइ इयरह कह ससि झिज्जतु जाइ ।
लोयणहिं वि दीहत्तणु जि जुत्तु इयरह कह पत्तइ जणमणतु ।
भालयलु वि अद्धिंदु व वरिट्ठु इयरह कह तहु मयणासु दिट्ठु ।
कोंतलकलाउ कुडिलत्तु वहइ इयरह कह माणववदु वहइ ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणिय सीय काइ वण्णिज्जइ ॥
रक्खेवि जण्णु जणयहु तणउ रामें धुवु परिणिज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

ता कुलजयलच्छिसुहावहेण पेसिय णियतणुरुह दसरहेण ।
बलणाहें समउ महाबलेण परिवारिय चउरंगें बलेण ।
गयं ससुरणयर सुर सणर तसिय चलवलिय मयर मयरहरल्हसिय ।
भड रहें करि तुरियं तुरग चलिय दसदसिवह पक्खहिं णाइ मिलिय ।
घरु आयेंहं मामें कुसलु कयउ पंगणि जयमंगलु तूरु हयउ ।
गय कइवय दियह मणोरहेहिं हा पहु वेहाविउ पसुवहेहिं ।
चलपववण्णधयधुव्वमाणु मडउ णिहित्तु जोयणपमाणु ।
दिज्जइ दीणह आहारदाणु घिप्पइ कपतह मृगह प्राणु ।
खज्जइ मासु वि किज्जइ विहाणु महु मिट्ठउ पिज्जइ सोमपाणु ।

---

**11** १ AP वह २ A कबुरु ३ A कंठ रसतु ४ A इररह ५ A धवरि ६ AP खिज्जतु ७ AP मयणासु ८ A कुडिलतु ९ P माणवविदु १० A परणिज्जइ

**12** १ A गउ २ A सुरसेण्ण तसिय, P सुर सण्णर तसिय ३ AP करि रह ४ A तुरय ५ आयउ ६ AP पगणि ७ A मगलतूरु, P मगलतरु ८ AP मणोहरेहि ९ AP मिगह पाणु

---

**11** 3 *b* कबु रसतु शख शब्दायमान 5 *a* दियदित्तिइ दन्तकान्त्या, घत्तियाइ तिर स्कृतानि 6 *a* थाइ तिष्ठति, भवति 7 *b* जणमणतु लोकमन पर्यन्तम् 8 *b* मयणास मृगनाशो मदनाशश्च 9 *b* वहइ इति

**12** 3 *a* सुर सणर तसिय तयो प्रयाणे नरसहिता सुरा अपि त्रासप्राप्ता *b* मयर मत्स्या, मयरहरल्हसिय समुद्राद्बहि पतिता 6 *b* वेहाविउ अनुरञ्जितो गृद्धि वा नीत 9 *a* विहाणु यज्ञविधि

इय णिव्वत्तिउं कउ रिसिएहिं मणु को ण वि खद्धउ सोसिएहिं ।
हिंसाइ धम्मु पावासवेण अण्णहिं वासरि जयजयरवेण ।

घत्ता—धणुकोडिचडावियघणगुणहु दरिसियवइरिविरामहु ॥
णियधीय सीय णवकमलमुहि जणए दिण्णी रामहु ॥ १२ ॥

## 13

चउदेहिं धरिय करि हलहरेण ण विज्जुल धवलें जलहरेण ।
ण तिहुयणसिरि परमप्पएण ण णायवित्ति पालियपएण ।
ण चंदें वियसिय कुसुममाल गोविंदें ण सिरि सारणाल ।
दुव्वारवइरिवारणभुएण सहु सीयइ सहु केक्कयसुएण ।
अच्छइ दासरहि सुहेण जाम पिउणा णियदूयउ पहिउ ताम ।
आणिउ विणीयपुरि सीरधारि सकलत्तु सभाउ दुहावहारि ।
अहिसिंचिवि जिणपडिमउ घएहिं दहियहिं दुद्धहिं धारापएहिं ।
णिव्वत्तिय जिणपुज्जा महेण सिसुणेहें तूसिवि दसरहेण ।
अवराउ सत्त कण्णाउ तासु दिण्णाउ मुसलकरपहरणासु ।
सोलह तहु महिलच्छीहरासु अलिकुवलयकज्जलसामलासु ।
गभीरधीरसाहसधणाह रइयउ विवाहु दोह मि जणाह ।
कोणाहयतूरइं रसमसति मिहुणाइ मिलतइं दर हसति ।
समाणवसइं सयणइं णडति पिसुणइं चिंतासायरि पडति ।

घत्ता—काणीणहु दीणहु देसियहु दिण्णइं दाणइं लोयहु ॥
तहि समइ पराईउ महुसमउ ण विवाहु अवलोयहु ॥ १३ ॥

## 14

सोहइ वसतु जगि पइसरतु अहिणवसाहारहि महमहतु ।
महुकारि व महु धारहि सवतु हेमतपहुत्तणु णिट्ठवतु ।

१० A णिव्वित्तिउ ११ A दाणगुणहु, P धणुगुणहु

**13** १ A पालियवएण ५ P कुमुयमाल ३ AP पिहिउ ४ P धारवएहि ५ A समसमति ६ AP पराइयउ

10 *a* रित्तिएहि ऋत्विग्भि 11 *a* पावासवेण निन्द्यमद्येन 12 °घणगुणहु °निबिडदोरस्य

**13** 2 *b* णायवित्ति न्यायवृत्ति, पालियपएण राज्ञा ३ *b* सारणाल कमलेन सहिता 4 *b* केक्कयसुएण लक्ष्मणेन 5 *b* पहिउ प्रेषित 6 *a* विणीयपुरि अयोध्यायाम् 7 *b* धारापएहिं धाराजलै 10 *a* महिलच्छीहरासु लक्ष्मणस्य 12 *a* कोणाहय° कोणो वीणादिवादन तेन हतानि 15 महुसमउ वसन्त

**14** 1 *b* °साहारहिं आम्रै 2 *a* महुकारि व कल्पालीव कलालीव, महुधारहिं सवतु मकरन्दो माक्षिक मद्य च तस्य प्रवाहै, *b* हेमन्त° शीतकाल

णियच्छियइ दसदिसु पहवंतु  अंकुरफुरंतु पल्लवचलंतु ।
सारंतु सुवाविहि वारिचीरु  दावंतु णीलसेवालतीरु ।
खरकिरणपयाउ वि णेसरासु  अवरु वि दीहत्तणु वासरासु ।
पयडंतु असोयहु पत्तरिद्धि  मोक्खयहु दुफग्गुणमोक्खसिद्धि ।
वउलहु वउ सुच्छायउ करंतु  वणलच्छिहि ओसासुय हरंतु ।
तिलयहु दलतिलयविलासु देंतु  वेल्लीकामिणियहं रसु जणंतु ।
वल्लहकामुयवम्मह हणंतु  कणयारफुल्लरयधूसरंतु ।
माणिणिहिं माणगिरि जज्जरंतु  हिंडिरभसलावलिगुमुगुमंतु ।
उत्तगमल्लि दियहइ गमंतु ।
मंदारकुसुमरयमहमहंतु  रमणाहिलासविब्भमु भमंतु ।

घत्ता—जो मोणें चिरु सचरइ वणि सो सपइ महुसेविरु ॥
कलकोइलुं पुण वि पुण वि लवइ मत्तउ को ण पलाविरु ॥ १४ ॥

## 15

वज्जइ वीणा पिज्जइ पाण  पियमाणुसचित्त साहीण ।
गिज्जइ महुर सत्तसराल  दढपेम्म पसरइ असराल ।
परिमलपउर पोसियरामं  बज्झइ फुल्लियमल्लियदामं ।
गधंकयबयछडयावियारे  णेवरकलरवणच्चियमोरे ।
सुप्पंइ दवणयविरइयगेहे  पुप्फत्थरणे भमियदुरेहे ।
सधइ कामो कुसुमखुंरप्प  णासइ तावसतवमाहप्प ।

14 १ A फुरत २ A °ललतु ३ AP °सेवालणिरु ४ AP °पयाउ दिणेसरासु ५ A सच्छायउ ६ AP ओससुय ७ AP कणियार° ८ AP उत्तुगमल्लि ९ AP add after this मज्जंत पक्खिकुलचुमुचुमतु K writes it but strikes it off १० AP read this line as रमणाहिलासविब्भम भमतु ( A रमणीहि विलासविभमि भमतु ), मायदकुसुमरयमहमहतु ११ A °कोकिलु

15 १ A गधकडबय° २ AP णउर° ३ A सुप्पय° ४ P °खुरुप्प

4 *a* सारतु सुवाविहि वारिचीरु सुवापीना जलमेव चीरु वस्त्रमुत्सारयन् 5 *a* णेसरासु सूर्यस्य 6 *a* मोक्खयहु दुफग्गुणमासरिद्धि मोक्षकनामा वृक्षविशेष , तस्य फाल्गुनमासे पत्राणि क्षरन्ति, तेन कारणेन फाल्गुनमासस्तस्य वृक्षस्यानिष्ट , तन दु फाल्गुन कथ्यते तस्य फाल्गुनस्य मोक्ष विनाश कुर्वन् वसन्त 7 *a* वउ वपु शरीरम् *b* ओसासुय अवश्याय एव अश्रूणि 8 *a* तिलयहु तिलकवृक्षस्य दलेषु पत्रेषु तिलकविलास ददत् 11 *a* उत्तगमल्लि मल्लि वृक्षविशेष तस्य दिनै गमयन्, स वृक्षस्तदा काले न विकसति किं त्वग्रे 13 महुसेविरु मधुनो मद्यस्य मकरदस्य च सेवक

15 2 *b* असराल अपर्याप्तम् 3 *a* पोसियराम पोषिता प्रचुरीकृता रामा स्त्रियो येन 4 *a* गधेत्यादि श्रीखण्डादिगधद्रव्यस्य कर्दमक समूह तेन कृतार्द्रछटाविकारे पुष्पगृहे लतामण्डपे, *b* णेवर° नूपुरम् 5 *a* सुप्पइ शयन क्रियते, दवणय° दमनकपुष्पम् 6 *a* कुसुमखुरप्प कुसुमबाणम्

अणुणिज्जइ रूसंति पियल्ली दाविज्जइ कवप्पसुहेल्ली ।
सरजलकेलीसित्तसरीरो जतविमुक्कसकुंकुमणीरो ।
तिम्मंइ पणइणिसुहुमकडिल्लो दिट्ठावयवैवूढरसिल्लो ।
कुवलयमालाताडणललियँउ फुल्लपलासैदुमेहिं पज्जलियउ ।
इच्छामाणियकंताकंतो एव वियंभइ जाम वसंतो ।

घत्ता— ता दसरहपयपंकय णविवि विहसिवि रामें वुच्चइ ॥
सताणकमागय तुह णयरि वाणारसि किं मुच्चइ ॥ १५ ॥

## 16

णासिज्जइ किं सो कासिदेसु सुणि ताय रायसत्थोवएसु ।
गुरुगय णियगय णिव दुविह बुद्धि बुद्धीइ पचविह मंतसिद्धि ।
दीसंति जाइ सच्छिद्दवेरि सा मंतसत्ति साहंति सूरि ।
विहुरे वि हु अणिहालियदिसेण उच्छाहसत्ति पुणु पोरिसेण ।
पहुसत्ति कोसंदडेहिं देव पयइ विणु मंहियलु वहइ केव ।
जाणेवाँ अवर अलद्धलाह चत्तारि उवाय धैरत्तिणाह ।
बोल्लिज्जइ पहिलारउ जि सामु पियवयणु जीवजणियाहिरामु ।
बीयउ पुणु सीकिज्जति किञ्च समाणिवि वइरिविरत्त भिञ्च ।

घत्ता—ते थद्ध लुद्ध अवमाणाणिहि भीरु कहंति विवक्खहु ॥
णियरायहु केरउ दुच्चरिउ वियँलियपहु परिरक्खहु ॥ १६ ॥

## 17

उवदाणु वि हरि करि हेमें रयणु दिज्जइ जइ लब्भइ को वि सयणु ।
अवयारु देसपुरगामडहणु सो दडु भणंति वरारिमहणु ।
जिप्पंति हरिस मय कोह काम रिउ माण लोह दुक्कम्मधाम ।

५ A णिम्मिय° P तिम्मिय° ६ P °वयवसुवुड्ढरसिल्लो ७ A ललिओ ८ A °दुमेहिं ण जलिओ, P °दुमेहिं ण जलियउ ९ A इच्छिय° P इच्छए

**16** १ A कोसु दडेहि २ A जाणेव्वा, P जाणेव ३ AP धरित्तिणाह ४ A वियडिय°

**17** १ AP हेमु

9 *a* तिम्मइ आर्द्रीक्रियते, °सुहुमकडिल्लो सूक्ष्म कटीवस्त्रम् *b* °वूढ° धृतो वर्धित

**16** 1 *b* रायसत्थोवएसु नीतिशास्त्रोपदेश 2 *a* गुरुगय गुरुगता आहार्या 3 *a* सच्छिद्दवेरि सच्छिद्रो वैरी 4 *a* विहुरे वि कष्टेऽपि, सकटेऽपि, अणिहालियदिसेण किंकर्तव्यतामूढत्वरहितेन 8 *a* सीकिज्जति स्वीक्रियन्ते, किच्च कृत्या भेद्या *b* वइरिविरत्त शत्रुविरक्ता 10 परिरक्खहु माहात्म्यरक्षणस्य

**17** 2 *a* अवयारु अपकार 3 *b* रिउ अभ्यन्तरशात्रव

जउ वक्खाणिउ इच्छियजएण साधि वि मित्तत्तणसगएण ।
सावहि णिरवहि इच्छति के वि पट्टणइ वत्थु वाहणइ लेवि ।
विग्गहु विरइज्जइ दोसदुट्ठु दोसेण होइ बधु वि अणिट्ठु ।
आसणु गुरु कहइ असक्ककालि अवरोहि विउलि रण्णतरालि ।
जाणु वि सलाहु परिवारपोसि किज्जइ वज्जियदुदुहिणिघोसि ।
जा किर विग्गहसधाणवित्ति त दोहीअरणु[2] ण का वि भति ।
जहि ण वहइ णियकरहत्थियारु असरणि रिउसेव वि किं ण चारु ।
णरवइ अमच्चु जणठाणु दड्ढु धणु दुग्गु[3] मित्तु सगामचड्डु ।
सत्त वि पयइउ हवति जेण उज्जउ णउ मुच्चइ ताय तेण ।

घत्ता—त णिसुणिवि जणसतावहर ताए चावविहूसिय ॥
ण जलहर[4] बे वि धवल कसण सुय वाणारसि पेसिय ॥ १७ ॥

## 18

णियतायपसायपसण्णभाव सविणय पणमत[1] विमुक्कगाव ।
देहच्छविदूसिय[2]रवियरोह जुवरायत्तणसिरिलद्धसोह ।
मणिमउडसुपट्टा[3]लिंगियग ण सुरमहिहर उत्तग[4]सिग ।
सेविज्जमाण णरखेयरेहिं विज्जिज्जमाण चलचामरेहिं ।
जोइज्जमाण जणवयजणेहिं पेल्लिज्जमाण कामिणिथणेहिं ।
अलिकसणपीयणिवसणणिउत्त सुदर सुवलाकेक्कयहि पुत्त ।
दियहेहि बधु ते जत जत रमणीय[5]पएसहिं थत थत ।
पहचोइय गय सुहजणणपत्त वाणारसि[6] बिण्णि वि वीर[7] पत्त ।
धयमालातोरणमगलेहि दहिदोवहिं[8] सियकलसुप्पलेहिं ।
णाणाणायरियहि दीसमाण पइसति[9] णयरि ण कामबाण ॥

घत्ता—जणु बोल्लइ दसरहजेट्ठसुउ इहु[10] ससहोयरु आवइ ॥
कच्चीकलाव गुप्पंतु[11] पहि पुरणारी[12]यणु धावइ ॥ १८ ॥

२ A दोहीकरणु, P दोहीअरुणु ३ A दुग्ग मित्त ४ A जलहर धवल व त्रि कसण

**18** १ A पणवत, P णयवत, K records a p णयवत २ A °भूसिय° ३ P सुप्पहा° ४ AP उत्तुंग° ५ P रवणीय° ६ P वाराणसि ७ P धीर ८ A दहिदूवहि ९ A पयमति १० A एहु सहोयरु ११ A गुप्पति पहे १२ AP पुरे णारी

4 A जउ जय 7 *a* आसणु दुर्गाश्रयणम् 8 *a* जाणु गमनम् सलाहु श्लाघ्य *b* वज्जियदुदुहिणिघोसि प्रच्छन्नतया शत्रूपरि गम्यते 9 *a* विग्गहसधाणवित्ति स्वल्पो विग्रह स्वल्पश्च सधिरिति मिश्रत्वं द्वैधीकरण कथ्यते, सधानपूर्वको विग्रहो द्वैधीकरणम् 10 *b* असरणि रिउसेव यदा शरण न दृश्यते तदा रिपोरपि सेवा क्रियत 11 *a* जणठाणु राष्ट्रदेश , *b* धणु कोश 12 *a* पयईउ प्रकृतय , *b* उज्जउ उद्यम

**18** 2 *a* दूसियरवियरोह °तिरस्कृतरविकिरणसमूहौ , *b* °सिग °शिखरौ 5 *a* जोइज्जमाण विलोक्यमानौ 6 *a* अलीत्यादि कृष्णपीतवस्त्रयुक्तौ 8 *a* °पत्त °वाहनौ 9 *b* °दोवहिं दूर्वाभि 10 *a* णायरियहि नागरिकै

## 19

क वि मेल्लइ कोंतलफुल्लदामु णीससइ का वि जोयंति रामु ।
काइ वि थणजुयलउ विहलु गणिउ हो एउ ण लक्खणणाहहिं वणिउ ।
क वि दावइ कंकणु का वि हारु क वि ऊरुयलु क वि मुहवियारु ।
पयलतउ क वि परिहाणु धरइ क वि कड्ढदिट्ठि जोयंति मरइ ।
क वि सिंचइ पेम्मजलेण भूमि क वि चिंतइ एवहिं घरु ण जामि ।
जइ इच्छइ कह व धरिसिसामि तो जियमि माइ सच्चउ भणामि ।
दारें भत्तारु ण जाहु देइ पायारु किं पि अंतरु करेइ ।
मणि का वि विसूरइ चंदवयण तलहत्थि ण जाया मज्झु णयण ।
ण तो जोयमि उब्भिवि करग्ग गच्छंतु सुहय सुहसारमग्ग ।
कर मउलिवि सण्णइ का वि पोमु आवेसमि जावहिं सुवइ पोमु ।
क वि णेउरु पहि णिवडिउ ण वेइ क वि भिक्खायारिहि भिक्ख देइ ।
जोयंति रायसुयजुयलतोंडु अण्णेत्तहिं घल्लइ कूरपिंडु ।
घत्ता—क वि विहसिवि बोल्लइ चंदमुहि सीयइ काइ वउत्थउ ॥
जेणेहउ लद्धउ पइरयणु दरिसियकामावत्थउ ॥ १९ ॥

## 20

अण्णेक्कइ वुत्तउ जाहि माइ लग्गेज्जसु णाहहु तणइ पाइ ।
वयणें बहुणेहपवत्तणेण हरि आणहि मज्झु दूयत्तणेण ।
जइ एहु ण इच्छइ विउलरमणि तो मारइ मारु मरालगमणि ।
इय पुररमणीयणजूरणेण सज्जणह मणोरहपूरणेण ।
दहिअक्खयबहुसेसाउ लेवि रायालइ भाइ पइट्ठ बे वि ।
पियवयणें किं वि किं वि पाहुडेण किं वि दुव्वयणेण रणुब्भडेण ।
किं वि सुहिसबंधपयासणेण किं वि वसिकय वित्तिविहूसणेण ।
किं वि णेहें किं वि भुयबलिण वित्त वणवाल चंड मंडलिय जित्त ।

19 १ A मुणिउ २ A हो ३ AP उरयलु ४ A पयलंतु का वि ५ A मणि स विसूरइ क वि चंद° P मणि सुविसूरइ क वि चंद° ६ AP हलि हत्थि ण ७ A गच्छत P गच्छति ८ AP अण्णहिं सा घल्लइ ९ AP पयरयणु

20 १ AP सिद्धत्थक्खयसेसाउ २ A बलवाल

19 4 *b* कड्ढदिट्ठि अस्पन्दलोचना 7 *a* दारे इत्यादि द्वारं कान्त स्थित रामावलोकनार्थं गन्तु न ददाति 8 *b* तलहत्थि हस्ततले 9 *a* उब्भिवि कराग्रमूर्ध्वे कृत्वा *b* सुहसारमग्ग शुभस्य सुखस्य वा उत्कृष्टमार्गो 10 *b* जावहि सुवइ पोमु यस्या वेलाया पद्म स्वपिति 11 *a* णवेइ न जानाति 13 वउत्थउँ व्रतमाचरितम्

20 1 *a* माइ हे मात, हे दूति 2 *b* हरि लक्ष्मण 3 *b* मारु काम 8 *b* वणवाल भिल्लादिका

घत्ता—मयरहरहु मलु दूसणु जिणहु अमयहु विसु किं सीसइ ॥
गुणवंतहु दसरहतणुरुहहु दुज्जणु को वि ण दीसइ ॥ २० ॥

## 21

अच्छंति बे वि ते तेत्थु जाव    एत्तहि लंकहिं दहवयणु ताव ।
वरकणयवीढसंणिहियपाउ    सीहासणग्गि रायाहिराउ ।
अत्थाणि णिसण्णउ सामदेहु    अवइण्णु महिहि ण काममेहु ।
करचालियाइं चमरइं पडंति    कप्पूरपउरधूलिउ घुलंति ।
पाढय पढंति तहिं णड णडंति    वाइत्तताल तेत्थु जि घडंति ।
गिज्जंति गेय सरठाणलग्ग    णच्चंति असेस वि देसिमग्ग ।
पडिहारहिं अणिबद्धउ चवंतु    णियमिज्जइ लोउ वियारवंतु ।
विण्णप्पइ भण्णइ जीय देव    अमर वि करंति कमकमलसेव ।
घत्ता—दसकंधरु दुद्धरु धरियधरु तेयविहूसियदिसवहु ॥
जहिं अच्छइ भरहधरत्तिवइ पुप्फयंतसंकावहु ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सीयाविवाहकल्लाण णाम
सत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७० ॥

21 १ A P णवकणय° २ AP चलंति ३ A दुरंति ४ A देसमग्ग ५ P जणवइ
६ A धरियकरु ७ AP °धरित्तिवइ

9 मयरहरहु समुद्रस्य

21 3 *a* सामदेहु कृष्णवर्ण 6 *b* देसिमग्ग देशीभाषागीतानुसारेण 7 *a* चवंतु वदन्
प्रलपन् 9 °दिसवहु दिशा मार्ग 10 पुप्फयंतसंकावहु चन्द्रसूर्यभयजनक

## LXXI

णरसिर[1]करखंडणु कहिं त भंडणु पम भणतु जि संचरइ ॥
तहिं विप्पियगारउ आयउ[2] णारउ अत्थाणंतरि पइसरइ ॥ ध्रुवकं ॥ छ ॥

### 1

उद्धावद्ध[3]पिंगजडमडलु पोमरायरयणमयकमंडलु ।
तारतुसारहारपंडुर[4]तणु ण ससहरु णावइ सारयघणु ।
विमलफलिहमणिवलयालंकिउ ण असुं[5] पुरिसरूवु विहिणा किउ ।
दीसइ पतउं[6] रायहु केरउ[7] रणकायरभडभयइं जणेरउ ।
कडियलणिहियहेममयमेहलु हसणु भसणु सवसणु[8] सकलुसु खलु ।
सोत्तरीयउववीयउरज्जलु[9] हिंडणसीलु समीहियकलयलु ।
कयदेवगवत्थकोवीणउ जुज्झु अपेच्छमाणु णिरु झीणउ ।
दिट्ठउ रावणेण[10] पडिवत्तिइ वइसारिउ आसणि गुरुभत्तिइ ।
पुच्छिउ पहुणा परमणसूलउ कहहि वत्त को महु पडिकूलउ ।
तं णिसुणिवि संगामपियारउ आहासइ दढगीवहु णारउ ।

घत्ता—सुरगिरिसिरि णिवसइ महिहि ण विलसइ सवइ धणयहु तणउ धणु ॥
णिसि णिद्द ण पावइ सयमहु भावइ णावइ तुज्झु जि भीयमणु ॥ १ ॥

### 2

सिहि ण करइ तुहारउ भाणसु डहु वइवसु वइरिहि तुहु वइवसु ।
णेरिउ णेरियदिस[1] ता रुभइ जाव ण तुज्झु पयाउ वियंभइ ।
रयणायरु जं गज्जइ तं जडु तुहु जि एक्कु तइलोकि महाभडु ।
वाउ वाइ किर[2] तुह णीसासें वज्झइ फणिवइ तुह फणिपासें ।
चंदु सूरु किर तुह घरदीवउ सीहु वराउ वसउ वणि सावउ ।
ससुरु सणरु खगु जगु तुह बीहइ पर पइ जिणिवि एक्कु असु ईहइ ।

---

**1** १ AP णरकरसिर° २ A बोल्लइ णारउ P आइउ णारउ ३ P उद्धाबद्धु पिंगु जडमडलु ४ P पंडर° ५ A जसरूउ पुरिस विहिणा ६ A एतहो P एत्तउ ७ P केहउ ८ AP वसणु ९ A° उरजलु १० A रामणेण

**2** १ AP णेरियदेसि २ AP किह

---

**1** 4 *b* सारयघणु शरन्मेघ 6 *a* एतउ आगच्छन् 7 *b* सवसणु युद्धाशक्तियुक्त 10 *a* पडिवत्तिइ प्रतिपत्त्या स्वागतेन

**2** 1 *a* भाणसु सूपकारत्वम् *b* डहु भस्मीभवतु वइवसु यम 5 *b* सावउ श्वापद

दसरहतणउ मुसलहलपहरणु दूरमुक्कपररमणीपरहणु ।
परबलपबलसलिलवडवामुहु जासु भाइ रणरसवियसियमुहु ।
लक्खणु सुहडलक्खविक्खेवणु अण्णु वि जासु पंवरपीणत्थणु ।
जणए कण्णारयणु विइण्णउ तासु रूवि थिउ विहिणेउण्णउ ।

घत्ता—सा तुज्झु जि जोग्गी लयललियंगी हिप्पइ मड्डइँ किंकरह ॥
सुरसरि झसमुद्दहु होइ समुद्दहु णउ जम्मि वि पक्कयसरह ॥२॥

## 3

विप्फुरियाणणु ण पवाणणु त णिसुणिवि पडिलवइ दसाणणु ।
धीर विमुक्ककेर करिकरभुय खल बलपबल चवल दसरहसुय ।
रामसाम गयसाम सहोयर मारमि सुहड तुमुलि भूगोयर ।
हरमि घरिणि गुणमणिसचयखाणि अहिणवहरिणणयण मयणावणि ।
पभणइ णारयरिसि किं गावें रावण विहलें वीरपलावें ।
सरह सीह को वणि सघारइ काल कयत व वि को मारइ ।
चद सूर को खलइ णहगणि हरि बल को णिहणइ समरगणि ।
केसरिकेसछडा को छिप्पइ जाणइ केण णराहिव हिप्पइ ।
चवइ राउ विरइयअवराहह बालह वाणारसिपुरिणाहह ।
सिरकमलइ खडेसमि जइयहु तुहु वि तेत्थु आवेसहि तइयहु ।

घत्ता—तेलोक्कभयकर वइरिखयकर धणुगुणटकार जि झुणइ ॥
खेयरउरदारणि मह्नु सरधारणि रणि रामहु वम्मइ लुणइ ॥३॥

## 4

ता परियाणवि कलहहु कारणु अवसें होसइ एत्थु महारणु ।
गउ णारउ णियमणि सतुट्ठउ वीसपाणि मतणइ पंइट्ठउ ।

---

३ AP पीणपीवरथणु ४ AP ताहि ५ AI मडइ ६ P ससमुद्दहु

**3** १ AP रणपबल २ P रामण A °केसरसढ P °केसरमड ४ AP कि ५ AP थिप्पइ ६ AP वाराणसि° ७ A तइलोक°

**4** १ A परितुट्ठउ २ A P वइट्ठउ

---

8 *b* भाइ भ्राता 9 *a* °विक्खेवणु हन्ता 10 *b* विहिणेउण्णउ विधिनैपुण्यम् 11 मड्डइ हठात् 12 सुरसरि गङ्गा, झसमुद्दहु समुद्रस्य

**3** 2 *a* विमुक्केर अवधीरिता आज्ञा याभ्यां तौ 3 *a* रामसाम श्वेतकृष्णवर्णौ द्वौ, गयसाम सामवचनरहितौ, *b* तुमुलि रौद्रसंग्रामे 4 *b* मयणावणि कामभू 8 *b* जाणइ जानकी सीता, हिप्पइ ह्रियते 11 झुणइ कथयति

**4** 2 *b* वीसपाणि रावण

दुट्ठु अणिट्ठु विसिट्ठु णै सिट्ठउ मतिउँ मतु सबुद्धिइ दिट्ठउ ।
तणुलायण्णवण्णजलवाहिणि हिप्पइ रहुकुलणाहहु गेहिणि ।
मारिज्जंति भाइ ते भीसण भणु मारीयथ भणइ बिहीसण ।
त णिसुणिवि मारीए वुत्तउ परबहुरमणु णरिंद अजुत्तउ ।
परबहुरमणु धम्मणिल्लूरणु परबहुरमणु सयणसयजूरणु ।
परबहुरमणु कित्तिविद्धंसणु परबहुरमणु विमलकुलदूसणु ।
परबहुरमणु पराहवगारउ परबहुरमणु णरयपइसारउ ।

घत्ता—परयारु सुविट्टलु दुक्खह पोट्टलु दुग्गमु दुज्जसपरियरु ॥
बहुभवसंसारणु सिवगइवारणु पावासवविहिवासघरु ॥ ४ ॥

## 5

दुत्तरमोहमहण्णवि छूढउ परबहुरमणु करइ जो मूढउ ।
तुहु घेइ बहुसत्थत्थवियाणउ अण्णु वि सयलहि पुहइहि राणउ ।
जो पडिकूलु होइ सो हम्मइ परबहु पुणु सिविणि वि ण रम्मइ ।
भणइ दसाणणु जणसामण्णह जणए जाणिवि दिण्णी अण्णह ।
थीयणसारी णयणपियारी चपयगोरी हियैयावियारी ।
सेलसिहरसंचालणचडहिं सा अवरुडमि जइ भुयदडहिं ।
तो सक्यत्थु महारउ जीविउ तो मइ णरभवफलु सप्राविउँ ।
जइ तहि त मुहकमलु ण चुबमि तो अप्पाणउ काइ विडबमि ।
कम्मणिबंधणेण णिक्कज्जें किं महु महियलेण किं रज्जें ।

घत्ता—हरिणच्छिहि वत्तइ सुइसुहमेत्तइ उप्पाइउ मणि कलमलउ ॥
रइकायरु कपइ पुणु पुणु जपइ दहमुहु विरहविसंठुलउ ॥ ५ ॥

## 6

बुज्झवि अतरगु दहगीवहु वाय विणिग्गय मुहि मारीयहु ।
कामबाणसताणहिं भग्गउ जइ तुहु महिवइ सीयहि लग्गउ ।

३ AP वसिट्ठउ ४ AP मतिए

**5** १ AP सइ २ A °सावण्णह ३ AP हियमपियारी ४ AP omit सा A अवरुडिवि ५ AP सपाविउ ६ A णियकज्जें ७ A सुयसुह°

3 *a* विसिट्ठु ण सिट्ठउ विद्वान्मन्त्री न पृष्ट, *b* मतिउ मतु मन्त्र स्वबुद्ध्या मन्त्रित 10 परयारु परकलत्रम्

**5** 2 *a* घइ पादपूरणे 4 *b* जणए जनकेन राज्ञा 5 *a* थीयणसारी स्त्रीजनमध्ये उत्कृष्टा 9 *a* णिक्कज्जें निःकार्येण निष्प्रयोजनेन 10 वत्तइ वार्तया सुइसुहमेत्तइ कर्णसुखमात्रया, कलमलउ अरति 11 °विसठुलउ शिथिलगात्र

तो वि मयणु मग्गें माणेवउ रत्तविरत्तचित्तु जाणेवउं।[1]
त जाणिज्जइ विविहपयारें विडगुरुभासिएण सुयसारें।
असयवेसिजाइपरइत्थहु[3] इगियसत्तभावरसगुत्थहु।[4]
कामिणीउ जो महियलि जाणइ सो लक्काहिव रइसुहुं माणइ।
भद्द मद्द लय हसि चउत्थी चउविह महिलाजाइ पसत्थी।
भद्द भणमि सव्वगसुरूविणि[5] मद्द थूलगुरुपेढालत्थणि[6]।
लय दीहरतणु लय जिह पत्तल खुज्जी णारि मरालि समासल।
रिसिविज्जाहरजक्खपिसायह अस होंति रमणीसंघायह।
तावसि उज्जुय भुभुलभोली खेयरि मइराकुसुमरसाली।
जक्खिणि धणकणलोहपरव्वस अडण पिसल्ली भणिय सतामस।

घत्ता—सारमि मिगि रिट्ठिणि ससि धयरट्ठिणि महिसि खरी मयरि वि जुवइ॥
सत्तें दीसतें[10] रइसइकतें वसुविह कहिय णिसुणि णिवइ॥ ६॥

## 7

वच्छत्थलु थणकलसहिं पेल्लइ मारासि पिययमसगु ण मेल्लइ।
मिगि[1] णियधवदाणें मण्णइ तज्जिय तसइ गेउ आयण्णइ।
पुत्तहडदुक्खिणि वायसरव रिट्ठिणि ठाणु मुयइ रणभइरव।
ससि णिम्मीलियच्छि सुहभायण णिग्घिण परहरगासालोयण।
धयरट्ठिणि सररुहसरकीलिणि महिसि कराल रोसरसवालिणि।
खरि खेल्लति हसइ कहकहसरु सहइ पायपहर वि घल्लिउ करु।
मयरि मासगासिणि दढगाहिणि कयसाहस कुकम्मणिव्वाहिणि।

6 १ AP माणिव्वउ २ P जाणेवउ ३ A °जाप्पयजा P °जाइपयइत्थउ ४ A °रस गुइपउ ५ P adds after this णरवर मदा णिसुणि णियविणि ६ P जाणि थूलगुरुपोढविळासिणि ७ AP add after this णउ मविजइ सा वि यलक्खणि ८ AP भुभुरभोली T भुभुर° ९ AP वयरिट्ठिणि १० AP दीसन्ते

7 १ A मृगि णिवबधव°

6 4 *b* विडगुरु° कामाचार्य, सुयसारे कामशास्त्रेण 5 *a* असयइत्यादि हमकादिभिरुप लक्षितस्य, परइत्थहु परस्त्रीसमूहस्य सबधि रत्तविरत्त चित्तु इति सबध, *b* इगियत्यादि इङ्गितसत्त्व भावरसैरनुविद्धस्य 7 *a* भद्देत्यादि भद्रा मन्दा लता हसीति चतुर्विधा स्त्रीजाति 8 *b* °पेढालत्थणि विस्तीर्णस्तनी 9 *b* मरालि हसी, समासल मासला 11 *a* भुभुलभोली अव्युत्पन्ना *b* मइराकुसुम रसाली मद्ये पुष्पे चासक्ता 12 *b* अडण पर्यटनशीला 13 रइसइकत रतिग्रेव मती तस्या कान्तेन भर्त्रा कामेनेत्यर्थ, वसुविह अष्टविधा

7 2 *a* मण्णइ मानयति *b* तज्जिय भर्त्सिता 3 *a* पुत्तहड° पुत्रभाण्डम् 5 *b* रोसरसवालिणि रोषरसपालिनी निर्वाहकारिणी

सुणि देसीउ णिहिलदेसाहिव　　इह मालविणि होइ इच्छियसिव ।
ससहावें लपडि खरभासिणि　　वाणारसिसभव वणवासिणि ।
घत्ता — अब्बुइ जा कामिणि मथरगामिणि सा पहिलउ जि दव्वु हरइ ॥
दिणमेर णिबंधिवि रइरसु संधिवि पच्छइ सरकीलणु करइ ॥ ७ ॥

## 8

सिंधुवि पुणु पियगेयहु रप्पइ　　पाणु वि दविणु वि दइयहु अप्पइ ।
मायाबहुलु भाउ कोसलियहि　　लब्भइ रइगुणेण सिंघलियहि ।
दविडि दंतणहछेयहु सक्कइ　　अंधिणि णिब्भररयहु चमक्कइ ।
ललियालाव लाडि लइज्जइ　　उड्डि रमणविण्णाणें भिज्जइ ।
कालिंगी उवयारु पउंजइ　　रक्खसु सुक्कउ रक्खु वि रंजइ ।
सोरट्ठिय आउवणतुट्ठी　　गुज्जरि णिच्चसयज्जहु लट्ठी ।
अवरु महारट्ठी जइ रूसइ　　ता तहि धुत्तत्तणु पर दीसइ ।
कोंकणियहि जइ काइ वि दिज्जइ　　तो तं चिंतवंति सा खिज्जइ ।
दरिसियहरिसियवम्महलीलउ　　पाडलिउत्तियाउ करणालउ ।
करइ कि पि चंगउ ववमायउ　　पारियत्तपणइणि पुरिसाइउ ।
हिमवंती वि मतबीयक्खरु　　जाणइ जेण पडइ पायहि वरु ।
मज्झएसणारीउ कलालउ　　होंति राय सयदलसोमालउ ।
घत्ता — देससयजुत्तह जाइहि सत्तह सयलह पयइणिवासु किह ॥
गिरिसरिहिं[13]ठाणह अमरविमाणह मयरहरह तेलोक्कु जिह ॥ ८ ॥

२ AP मुणि　३ A अच्छए　४ AP सुरयकील

**8** १ AP सधवि　२ A पियगेहहु　P पियगइहु　३ AP पाणु　४ P वगेण　५ AP दिविडि　६ AP अधणि　७ AP पवज्जइ　८ AP सुक्सउ　९ P रुक्स　१० A भिजइ　११ AP जेहि　१२ AP मज्झदेस°　१३ AP °महि°

8 *a* देसीउ देशोत्पन्ना　*b* इच्छियसिव वाञ्छितसौरया　9 *b* वणवासिणि वनक्रीडा　10 अब्बुइ अबुदाचले　11 दिणमेर दिनमर्यादा विनसरया, सरकीलणु स्मरक्रीडा

**8** 1 *a* पियगयहु प्रियगीतश्रवणात् रप्पइ रज्यते　3 *a* दविडि द्राविडा　*b* चमक्कइ बिभेति　4 *b* उड्डि उद्रदशजा　5 *a* उवयारु उपचार　6 *a* आउवणतुट्ठी चुम्बनतुष्टा　*b* सयज्जहु लट्ठी स्वकार्ये दक्षा　8 *a* काइ वि किमपि तुच्छमपि　9 *b* करणालउ ऊर्वोरुपरि ऊरुनिवशन करण तच्छीला　10 *b* पुरिसाइउ पुरुषागत रत विपरात वा　12 *a* मज्झएसणारीउ देलीदेशोत्पन्ना, कलालउ कलायुक्ता　13 मत्तह अष्टभदसत्त्वानाम्, पयइणिवासु प्रकृतिरेव निवास स्थानम्　14 मयरहरह समुद्राणाम्

## 9

सा वि तिविह णरजम्मि णिबंज्झइ    पित्तसिंभमारुयहिं णिरुज्झइ ।
पित्तपयइ आरूसइ खणि खणि    सतोसेवी धुत्तें दिणि दिणि ।
गोरी बुद्धिवंत णहपिंगल    मउए किज्जइ सा रइभिंभेल ।
उण्णयसिहिणवरगु मुणेज्जसु    सीयलु तहि आलिंगणु देज्जसु ।
सीयलु गधु सेउँ पगुरणउ    सीयलु ताहि जि सुरयारुहणउ ।
सिंभपयइ सामल वण्णुज्जल    अहिणवकयलीकद्दलकोमल ।
दिट्ठइ दोसि णिरुत्तउ चुक्कइ    पुणु जम्मि वि ण समुद्दु दुक्कइ ।
सव्वें विणए दाणें घिप्पइ    इयरह पुणु तहि अगु ण छिप्पइ ।
रइजल पोंभल मउ सोणीयलु    णिप्पंडियध चारु तणुपरिमलु ।
आयविरणह सोहियकमकर    सुदरि साहारणसुरयायर ।
कसण फरस मरुपयइ विलासिणि    बहु आहार लेइ बहुभासिणि ।

घत्ता—करकढिणपहारहिं सद्दगहीरहिं पयडउ पडु विडु जइ रमइ ॥
परिभमेंणपरिक्खहि कालकडक्खहि ता कामग्गि ताहि समइ ॥ ९ ॥

## 10

जहि पयइइ पयइइ फुडु भिण्णी    सा तोंनडिय दाहि सकिण्णी ।
जिह पयंइउ तिह बिहि बिहि जायइ    असयसत्तइ मइ विण्णायइ ।
जाइउ देसिउ तिह मइ बुज्झउ    भाउ दुविहु अविसुद्धु विसुद्धउ ।
पहिलारउ सैवत्तिसहवासें    वयपरिणामें दीहँपवासें ।
आसकइ चामीयरलोहें    अंवरेहि वि कारणसदोहें ।
वहइ असुद्धभाउ णारीयणु    तेण वि वेयारिज्जइ जडँयणु ।
आलोयतह समुद्दु जोयइ    मुद्दु वियसाँवइ करयलु ढोवइ ।

9 १ A P विबज्झइ २ AP रइवंभल ३ AP उण्हय° ४ A सीउ ५ AP सीयलु सीयलु सुरयाहरणउ ६ APT णिप्पडियम्मु K णिप्पडियध but records a p णिप्पडियम्म इति पाठ सस्काररहित ७ AP °भवण ८ A ता

10 १ A पइओ २ P जणुउ ३ AP सवित्ति° ४ AP °पयासे ५ AP अवरेण ६ AP जडमणु ७ AP विहसावइ

9 3 *b* मउए मृदुत्वेन, रइभिंभल रतिविह्वला 4 *b* सीयउ मद मदम 5 *b* सेउ श्वेतम् 6 *b* सिभपयइ श्लेष्मप्रकृति, *b* °कदल° आर्द्राङ्कुर 8 *b* इयरह अयथा 9 *a* पोंभल प्रचुरम्, *b* णिप्पडियध दुर्गन्धरहिता 10 *b* साहारणसुरयायर साधारण मदनिष्ठुरत्वरहितसुरतादरा 11 *a* मरुपयइ वातप्रकृति 13 परिभमणपरिक्खहि परिभ्रमण आलिङ्गनचुम्बनकरणविशेषादिलक्षण परीक्षा चतुरत्व यस्या, कालकडक्खहि कालेन तुल्य कटाक्षो यस्या

10 1 *b* तोनडिय मिश्रा 4 *b* वयपरिणामे यौवनवयसा 6 *b* वेयारिज्जइ विकार्यते

सो वि देव विउसहिं पालिज्जइ बुद्धिइ सकिण्णत्तणु णिज्जइ।
मदु तिक्खु तिक्खयरु पउत्तउ सुद्धभाउ तिहिं भेयहिं वुत्तउ।
घत्ता—भल्लारउ णिवसणु रयणविहूसणु जोव्वणु णारिहिं हरइ मणु
तं पुणु पियदूए णियडीहूए मयणहुयासें डहइ तणु ॥ १० ॥

## 11

ता तहिं दूवि का वि पेसिज्जइ ताइ भावसभवु जाणिज्जइ।
इंगियहिं देहुब्भवलिंगहिं कयणिण्णेहसणेहपसंगहिं।
भुक्खइ भग्गी अण्णाहु लग्गी धणलपडि कयखलससग्गी।
गमणकख णिद्दालस मत्ती सुहिसोयाउर परगयचित्ती।
रुट्ठी णिट्ठुर कडुपलाविणि एही णउ सेविज्जइ भाविणि।
सीयं विसेसिं परकुलउत्ती एक्क वि एत्थु जुत्ति णउ जुत्ती।
तो वि जाउ चदणहि सुदेहिहि मणअवहरणु करउ वइदेहिहि।
ता पेसिय सो राए तेत्तहि तं वाणारसिपुरवरु जेत्तहि।
गय गयणगणेण सा खेयरि पडुरभवणावलि जोइवि पुरि।
जोयइ चित्तकूडु णदणवणु णं महिमहिलहि केरउ जोव्वणु।
घत्ता—महुधारहिं सित्तउ णावइ मत्तउ मलयाणिलसंचालिउ।
णवतरुवरसाहहि पसरियबाहहिं णं णच्चतु णिहालिउ ॥ ११ ॥

## 12

रुक्खमूलरोहियंधरायल कुसुमधूलिधूसरियणहयल।
कीलमाणसाहामयालय गयणलग्गतालीतमालय।
बिल्लचिल्लवेइल्लसइल हरिणदंतदरमलियकदल।
सच्छविच्छुलुच्छलियजलकण अयरुदेवदारुयहिं घणघण।
विडविणिहसणुग्गामियहुयवह सुरहिधूमवासियदिसामुह।

८ A सा वि ९ P तें पुणु १० AP दहइ

**11** १ सीलविसेसि २ AP राए सा ३ AP वाराणसि° ४ AP जोइय

**12** १ A सोहिय° २ AP वड्ढमाणहिंतालतालय ३ P °दरदरिय° ४ AP °धूव°

8 *a* सो वि अशुद्धभावोऽपि, *b* स कि ण्ण त्त णु सर्वथा अशुद्धस्वरूपता परित्याज्य शुद्धाशुद्धरूपत्व नीयते
10 भल्लारउ णिवसणु उत्तम वस्त्रम्

**11** 4 *b* सुहिसोयाउर सुहृच्छोकदुःखार्ता 7 *a* चदणहि शूर्पणखा, चन्द्रनखा द्वितीय नाम, सुदेहिहि सुष्ठुशरीराया

**12** 1 *a* °रोहिय° रुद्धम् 2 *a* °साहामय° मर्कटा 3 *a* °चिल्ल° चिञ्चा 4 *b* अयरु अगुरु कृष्णचन्दन 5 *a* णिहसण° निघर्षणम्

परिघुलतककेल्लिपल्लव पवणचलियमाहिलुलियमहुलव ।
बालवेल्लिविलएहिँ णवणव कीरकुररकारडकलरव ।
अलयवलयविलुलतअलिउल विविहकीलणावासपविउल ।
केयईरैउक्खुसियमाणव रमियखयरजक्खिददाणव ।

घत्ता—तहिँ पयडियभावइ बहुरसदावइ सिसुमाणिणिमणमोहणइ ॥
जणइच्छियकोमलि वरवण्णुज्जलि णाइ कव्वि सुकइहि तणइ ॥ १२ ॥

## 13

उग्गयचदणि उरगयचदणे उण्णयवदणि कयजिणवदण ।
लोहियकदइ सुहितरुकदा गुरुमाइदइ जियमाइदा ।
वड्ढियमोयइ कयरइमोया फुल्लामोयइ वियलियसोया ।
लग्गपियाले णिच्चपियाला कीलासेल धीर व सला ।
खगरावाले बहुरावाला सरकमलाले गुरुकमलाला ।
महुयरगीए मणहरगीयइ छाँहियसीयइ ते सहु सीयइ ।
बहुपुहईरुहि पुहइसमेया सिवए मिवढोइयरिउमेया ।
पइरिक्कामइ कामियकामा लक्खणरामइ लक्खणरामा ।

५ A °कारडकुलरव ६ A °रउ उक्खुसिय

**13** १ AP °चदणे २ AP °वदणे AP °कदए ४ AP °मायदए ५ AP °मोयए ६ P °सोया ७ P °पियाले ८ I वीर व मला, T वीर वमला वशा इला ययोस्तौ वशालो ९ AI °गीयइ १० A °गीया ११ AP छाही°, T छाहिय १२ A सीया १३ AP पयरिक्कीमए

6 *b* °महुलव °वसन्तलता यत्र 8 *a* अलयवलय° अलकवलयवत्, °अलिउल भ्रमरकुलम् 9 *a* °उक्खुसिय° त्रसित

**13** 1 *a* उग्गयचदणि उद्गतचन्दनवृक्षवन उरगयचदण हृदयलग्नचन्दनौ रामलक्ष्मणौ, *b* उण्णयवदणि उन्नतरक्तचन्दने 2 *a* लोहियकदइ रक्तकन्दे वने सुहितरुकदा सुहृद्वृक्षेषु मेघौ *b* गुरुमाइदइ प्रचुराम्रवृक्षे वने जियमाइदा लक्ष्मी किल चन्द्र कमले च वसति लक्ष्मीसहितचन्द्रसदृशा राजानः त जिता याभ्या तौ जितलक्ष्मीचन्द्रौ 3 *a* वड्ढियमोयइ मोचा कदलीवनम् तद्वर्धितं यस्मिन् कयरइमोया कृतरतिहर्षौ, *b* वियलियसोया विगलितशोकौ 4 *a* लग्गपियाले गगनलग्नचारवृक्ष णिच्चपियाला नित्य प्रियायुक्तौ भार्यायुक्तौ *b* कीलासले क्रीडागिरौ, वीरवसेला पर्वताविव धीरौ, अथवा वसेला वशा इला पृथ्वी ययोस्तौ 5 *a* खगरावाले पक्षिशब्दवति बहुरावाला बहु प्रचुर रा द्रव्य तस्य पालकौ, *b* सरकमलाले सरःकमलयुक्ते गुरुकमलाला गुरुक्रमयोर्लालकौ वाञ्छकौ 6 *a* महुयरगीए भ्रमरस्य गीतशब्दो यत्र, मणहरगीयइ मनोहरग्रीवया सीतया सह प्रविष्टाविति सबन्ध, *b* छाहियसीयइ छाहिका छाया शीतला यत्र वने 7 *a* बहुपुहइरुहि प्रचुरमहीरुहे वने पुहइसमेया लक्ष्मणस्य पृथ्वी नाम महादेवी तया सहितौ *b* सिवए शिवदे मौरयद वने सिवढोइयरिउमेया शिवाना शृगालाना दत्तरिपुमदसौ 8 *a* पइरिक्कामइ पइरिक्क प्रचुर अमय जल यस्मिन् वने, कामियकामा अनुभूतवाञ्छितार्थौ, *b* लक्खणरामइ लक्ष्मणा सारसास्त रामे रमणाय

णवणवणि छुडु छुडु जि पइट्ठा लकेसरवरबहिणिइ दिट्ठा ।
सहु अंतेउरेहिं कीलारय गहियणवल्लफुल्लमंजरिरय ।
घत्ता—कयकिसलयकण्णउ कुसुमरवण्णउ ण देविउ वणवासिणिउ ॥
दुमसाहंदोलणि उववणकीलणि लग्गउ रायविलासिणिउ ॥ १३ ॥

## 14

काइ वि जणणयणह रुच्चतिइ मोरें सहु सहासु णच्चतिइ ।
सोहइ कमलु दुवासिहिं धरियउ णालतालिपिंछविच्छुरियउ ।
णाइ कडु रइणाहहु केरउ दावइ सुरणरहियवियारउ ।
काइ वि समउ वि हसु चमक्कइ गइलीलाविलासि सो चुक्कइ ।
काहि वि छप्पउ लग्गउ करयलि जडु अप्पउ मण्णइ थिउ सयदलि ।
काहि वि णियडउ ण ओलग्गइ एणउ दीहकडक्खिउ मग्गइ ।
काइ वि उप्पलु सवणि णिहित्तउ कुम्माणउ ण णयणिहिं जित्तउ ।
कुवलयकिंकिणिमालाजुत्तउ काइ वि बद्धु वेल्लिकडिसुत्तउ ।
काइ वि जाइवि मंडुइ धरियउ कुसुमरएण रामु पिंजरियउ ।
सझाराए ण मयलछणु तेणं य सोहइ ण सारयघणु ।
जाइहुलु अण्णइ तहु ढोइउ अण्णइ सरसु वयणु सजोइउ ।
जाइवत किं जाइ भणिज्जइ जा महुयरसएहिं माणिज्जइ ।
तो वि भडारी सीमें वज्झइ अप्पकज्जि जणु सयलु वि मुज्झइ ।
घत्ता—सव्वगहि सुरहिउ वरमरुवउ पिउ रुणुरुटेप्पिणु धुत्तडिय ॥
मोग्गरउ मुएप्पिणु अगु धुणेप्पिणु तासुप्परि महुयरि चडिय ॥१४॥

१४ A उववण

**14** १ AP दुवामहि २ P दावइ ण सुर° ३ AP समउ हसु चम्मक्कइ ४ को माणउ त णयणहि ५ P मथइ K मत्थइ but corrects it to मड्डइ ६ AP तेण जि ७ A धुत्तलिया ८ AP जासुप्परि

9 *b* लकेसरवरबहिणिइ शूर्पणखया 10 *b* °रय रतौ 11 कयकिसलयकण्णउ कर्णे कृतकर्णपूरा कुसुमरवण्णउ पुष्पैर्मनोहरा

**14** 2 *a* दुवासिहिं द्वयो पार्श्वयो, *b* णालतालिपिंछविच्छुरियउ नालावसाने ये भ्रमरास्त एव पिच्छानि तैर्विस्फुरितम् 3 *a* कडु काण्डो बाण 4 *a* चमक्कइ गच्छति 5 *b* जडु मूर्खो भ्रान्त 6 *b* एणउ मृग 7 *b* कुम्माणउ म्लानम् 8 *a* कुवलयकिंकिणि° कुवलयान्येव किङ्किण्य 10 *a* मयलछणु चन्द्र 11 *a* जाइहुलु जातीपुष्पम् 12 *a* जाइवत कुलीना विशिष्टपुष्पजातिश्च, जाइ जातिपुष्पम् 13 *b* अप्पकज्जि आत्मन कार्य प्रयोजन यत्र वस्तुनि 14 सव्वगहिं डालशाखाभिः, मरुवउ मरुवक धुत्तडिय धूर्ता भ्रमरी 15 मोग्गरउ मोग्गरपुष्पम् तासुप्परि तस्य मरुवकस्योपरि

## 15

का वि कुंदकुसुमइं णियदंतहिं जोयइ दप्पणि समउ फुरंतहिं ।
बउंलु परिक्खइ णियतणुगंधें विंबीहलु अहरहु सबंधें ।
क वि फुल्लिउ साहारु णिरिक्खइ बाली हरिसाहारणु कंखइ ।
अपमाणु णवकलियइ मत्तउ खरसताउ ण मुणइ सइत्तउ ।
धरिउ ताइ रूसिवि मणदूसउ अग्गिवण्णु जायउ मुहि पूसउ ।
का वि उच्छुकरयल सुहकारिणि णावइ विसमसरासणधारिणि ।
का वि फुल्लमालउ सचोरइ सरु सरपंतिउ ण दक्खालइ ।
का वि पलासपसूयइं वीणइ केकयतणयहु पाहुडु आणइ ।
णिद्धइं रत्तइं कुडिलइं तिक्खइं णाइं वसंतमइंदहु णक्खइं ।
काइ वि कोइल कसण णिरिक्खिय पुच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय ।
सर्पहिं एहं वि बोल्लणसीली जणविरहाणलधूमें काली ।
एयहिं सहु महुरु महुरउ विसु दोहि मि हम्मइ पवासिउ माणुसु ।
जइ मेहु लक्खणु अज्जु रमेसइ ता हलि कलपलविउ सुहु देसइ ।

घत्ता — लयमंडव माणिवि कील समाणिवि कामभोयसंपण्णरइ ॥
णं करिवरु करिणिहि सहु णियघरिणिहिं सरि पइसंति णराहिवइ ॥१५॥

## 16

सीयापंजलिपाणियसित्तहु ण दप्पणयलि पुण्णपवित्तहु ।
दीसइ रामहु उरि णीलुप्पलु सोहइ ण छणचंदहु मयमलु ।
कसणें हरिणा का वि महासइ भित्ती ण महेण वणासइ ।

15 १ A ववलु २ K1 record in p अथवा हरियासायण चुम्बनम् २ AP मुहि जायउ ३ AP ण विसमसरम्मरा° ४ A °धोरिणि ५ AP सचालइ ६ AP सर ७ A केकइतणयहु, P केइयतणयहु ८ A अच्छिय अवइ विहसिय अक्खिय P अच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय ९ P एह जि १० AP बोलण° ११ AP मइ १२ A कलल्वियउ १ I omits ण

16 १ AP पाणियपंजलि° २ A छणयदहु P छणइंदहु

15 2 *a* बउलु बकुलपुष्पम् 3 *b* बाली तरुणी हरिसाहारणु वासुदेवेन सह बाहुयुद्धम् 4 *b* खरसताउ विरहोत्पन्नस्तीव्रताप सइत्तउ नि प्रपञ्चित 5 *b* अग्गिवण्णु रक्तवर्ण, मुहि मुखे, पूसउ शुक 6 *b* उच्छुकरयल इक्षुधृतकरा *b* विसमसरासण° कामधनु 7 *b* सरु स्मर काम 8 *a* °पसूयइं पुष्पाणि 9 *b* वसंतमइंदहु वसन्त एव मृगेन्द्र सिंहस्तस्य 12 *b* दोहिं मि द्वाभ्यामपि शुककोकिलाभ्यां हन्यते परदेश प्राप्तो नर 13 *b* कलपलविउ कोकिलाया मधुरशब्द 14 माणिवि भुक्त्वा, कील समाणिवि क्रीडा कृत्वा 15 सरि सरोवरे

16 1 *b* दप्पणयलि दर्पणसदृशे हृदये, निर्मले इत्यर्थ 3 *b* वणासइ वनस्पति.

ण रोमावलिअंकुर मेल्लइ   मुहकमलेण णाइ पप्फुल्लइ ।
क वि घणथणफलसपय दावइ   सुंदरि वेल्लि अणंगहु णावइ ।
सिंचिय सिंचिय हसइ सलीलउ   उच्छलंतकप्पूरकणालउ ।
काहि वि पियकरजलविच्छुलियहि   मुत्तजालु तुट्टउ कंचुलियहि ।
अल्लउँ परिहणु ढलिउ विहाविउ   लज्जइ सलिलि अंगु ल्हिक्काविउ ।
काइ वि महुमहकंतिइ कालिउ   रत्तउ सयदलु कण्हु णिहालिउ ।
सहियहु हसिवि कँहिवि वियप्पिउ   कण्णालग्गइ काइ वि जंपिउ ।
सिंचहि ललिय एह पोमावइ   विरहिणि जेण भडारा जीवइ ।
कुंकुमपिंडउ पयहि घल्लहि   एह देव वच्छयलें पेल्लहि ।

घत्ता—तं सुणिवि कुमारें माणवसारें एक्क धरिय चीरंचलइ ॥
अण्णेक्कहि जंतें दरविहसंतें मुक्कउ सलिलु थणत्थलइ ॥ १६ ॥

## 17

तं[1] हारावलि तिम्मिवि पडियउ   विहिणा किं णउ तेत्थु जि जडियउ ।
कहिं लब्भइ पियसंगें आयउ   काहि वि मणि उच्छेल्लउ जायउ ।
काइ वि वल्लहहत्थ गलत्थिय   देहतावहय ते ज्जि समत्थिय ।
णहँणिवडंत धरिय धवलामल   तोयबिंदु णावइ मुत्ताहल ।
का वि णियंबिणि णाहहु णासइ   वणि णिम्मज्जइ दूरहु दीसइ ।
सरि परिघोलिरु सण्हउ पड्डुरँ   पाणियछल्लि व कड्डइ अंबरु ।
का वि उरत्थलि चडिय उविंदहु   णावइ विज्जुल अहिणवकंदहु ।
पत्तिणिपत्तइ पेच्छिवि जलकण   हारु ण तुट्टउ अवलोइय थण ।
क वि हियउल्लइ विंभिय मंतइ   अलयह अलिहिं मि अंतरु चिंतइ ।
का वि ण इच्छइ जलपक्खालणु   कज्जलतिलयपत्तपक्खालणु ।

३ AP पफुल्लइ  ४ AP पुलए  K records a p पुलए  ५ A ण्हसिउ, P ल्हसिउ  ६ AP किण्हु  ७ A कह व  ८ AP एह ललिय  ९ A जम भडारा णीवइ

**17**  १ AP ण  २ P णिम्मिवि  ३ AP उच्छुल्लउ  ४ P °हत्थि  ५ AP °तावहर  ६ P णहणियडंत  ७ P पडरु  ८ AP तुट्टइ  ९ A जलपवालणु

7 *a* °विच्छुलियहि स्नापितायाः  8 *a* अल्लउ आर्द्रम्  9 *a* महुमहकंतिइ मधुमथनो हरिस्तस्य कान्त्या पद्मं कृष्णं जातम्  10 *b* कण्णालग्गइ कर्णे लगित्वा  12 *b* वच्छयलें वक्षःस्थलेन  14 जंतें जलयन्त्रेण

**17**  1 तिम्मिवि आर्द्रीकृत्य  २ *b* उच्छल्लउ उत्सुकत्वम्  3 *b* ते ज्जि तावेव हस्तावेव  5 *b* वणि जले  6 *a* सरि तडागे  सण्हउ श्लक्ष्णं सूक्ष्मम्, *b* पाणियछल्लि व जलस्य त्वचा इव अंबरु वस्त्रम्  7 *a* उविंदहु लक्ष्मणस्य, *b* अहिणवकंदहु कृष्णमेघस्य  8 *a* पत्तिणिपत्तइ पद्मिनीपत्रे  9 *a* विंभिय विस्मिता  मंतइ विचारयति  *b* अलयह चूर्णकुंतलानाम्  अलिहिं भ्रमरेषु

उड्डइ अंतरि करइंदीवरु		तहु णवणीलु व थिउ धारासरु ।
चवलरहल्लिजलोल्लियकेली		एम करेप्पिणु चिर जलकेली ।
घत्ता– सरि ण्हाइवि णिग्गय णावइ दिग्गय थणंयलघुलियहारमणिहिं ॥
पयलियरसधारहु तलि साहारहु सहु णिसण्णु णियपणइहिं ॥१७॥

## 18

णावइ सीयंसुरूवें णिज्जिय		विज्जाहरि तारुण्णें लज्जिय ।
तहिं अवसरि कंचुइ होएप्पिणु		सा चंदणहि तेत्थु आवेप्पिणु ।
जोयंइ सीय पसाहिज्जंती		कवि सकइ तिलउल्लउ देंती ।
भालयलहु कलंकु परि किज्जइ		एण ण महु हासउ दिज्जइ ।
का वि ण बंधइ मोत्तियकंठिय		कंबु पलोइवि णिहुणियं संठिय ।
का वि कवोलइ पत्तु लिहेप्पिणु		जूरइ कि पह पहयं णिहेप्पिणु ।
चिंतइ खेयरि माणिणिसुभह		उव्वसिगोरितिलोत्तमरंभह ।
रूवें सीयाए वि गुरुक्की		पुरिसह वम्महभल्लि व ढुक्की ।
हा हा हय किं कयउ पयावइ		दुक्कर रामणु जोइवि जीवइ ।
जासु एह कुलहरि कुलउत्ती		रिद्धि विद्धि तहु तहु जि थरित्ती ।
णिच्छउ होसंइ जित्तमहाहउ		धण्णउ पुण्णवंतु जगि राहउ ।
घत्ता—जरधवलियकेसइ कंपिरसीसइ मायारूवं भावियउ ॥
मणहरणवियड्डइ खेयंरिवुड्ढइ तरुणीयणु पहसावियउ ॥ १८ ॥

## 19

ता तहिं एक्क भणइ नृवरंण्णी		का तुहु कि कारणु अवइण्णी ।
हलि हलि कंचुइ काइ णियच्छसि		भणु भणु कि लिहिया इव अच्छसि ।

१० AP °णालु थविउ ११ P थणयलघुलिय°

**18** १ सीयारूवें P सीयासुरूवे २ A चंदणवि ३ P जोइय ४ AP कट्ठ ५ AP णिहुवीमठिय ६ AP णिहिय पिएप्पिणु ७ A उभसिगोरा° P उवसिमाणी ८ AP कयउ ९ A रावणु १० A कुलहर ११ A होसइ नहि जि महाजउ १२ A विसड्ढइ १ P खयरवुड्ढइ

**19** १ A णिग्वण्णी P णिवरण्णी

11 *b* तहु इन्दीवरस्य धारासरु धाराजलम् 12 *a* रहल्लि लहरी, कल्लोल 14 साहारहु आम्रवृक्षस्य

**18** 1 *b* विज्जाहरि शूर्पणखा 2 *a* कंचुइ वृद्धा *b* चंदणहि शूर्पणखा 3 *a* पसाहिज्जंती विभूष्यमाणा, *b* कवि पुष्पदन्त, सकइ उत्प्रेक्षते 5 *b* कंबु ग्रीवा, णिहुणिय निभृता निश्चला 6 *b* पह पहय णिहेप्पिणु प्रभा प्रहता दृष्ट्वा 7 *b* °गोरि पार्वती 9 *a* पयावइ ह हतविधे 11 *a* जित्तमहाहउ जितसंग्राम, *b* राहउ राम 12 वियड्डइ विदग्धया चतुरया

**19** 1 *a* नृवरण्णी राज्ञी *b* अवइण्णी अवतीर्णा आगता

त णिसुणिवि बोल्लइ मायारी हउ मायरि वणवालहु केरी ।
तुम्हहिँ परभवि ज मँउ चिण्णउ जेणेहउ जायउ लायण्णउ ।
लद्धा जेण णाह हलहर हरि जेण लच्छि पडी सवसुधरि ।
त मज्झु वि उवइसह वइत्तणु साहमि सवँसा ह वि जुवइत्तणु ।
ता त सीयइ भ त्ति दुगुछिउ महिलत्तणु किं किज्जइ कुच्छिउ ।
रयसलवासरि चडालत्तणु णउ पावइ णियवसपहुत्तणु ।
अण्णहि कुलि कत्थइ उप्पज्जइ वड्ढती अण्णेण जि णिज्जइ ।
सयणविओयवसेण रुयती बहलबाहबिंदुयइ मुयती ।
मतिकँज्जि णउ कासु वि भावइ जा जीवइ ता परवँस जीवइ ।
दूहउ दुट्ठु दुगधु दुरासउ अधु बहिरु बाहिलु अभासउ ।
असहणु अहणु कुडिलु जाणेव्वउ जो भत्तारु सो जि माणेव्वउ ।
घत्ता—जइ सइ चक्केसरु अहव सुरेसरु तो वि अण्णु णरु जणणसमु ॥
चिंतेव्वउ णारिहि कुलगुणधारिहि णउ लघेव्वउ गोत्तकमु ॥१९॥

## 20

विहवत्तणि पुणु सिरु मुडेव्वउ अप्पउ तवचरणेँ दडेव्वउ ।
रक्खइ पिउ अव्वँत्तसिसुत्तणि रक्खइ तूयँ पँइ पुणु पोढत्तणि ।
रक्खइ वुड्ढत्तणि तणुरुहु तिह ण करइ किं पि वि कुलविप्पिउ जिह ।
परवसाहिडण सयणाहारहु महिल ण मुच्चइ कारागारहु ।
वुड्ढिइ वुड्ढयालि णिब्भग्गिउ इज्झउ महिलत्तणु किं मग्गिउ ।
किज्जइ जिणवरिंदभासिउ तउ त मग्गिज्जइ जहिं णउ सभउ ।
रुहिररसावहु अट्ठियपजरु त मग्गिज्जइ जहिं ण कलेवरु ।
जहिं इंदियइ ण इच्छियकामइ जहिं सुव्वति ण जारह णामइ ।
त मग्गिज्जइ मोक्खमहासुहु त णिसुणिवि वुँड्ढहि मउलिउ मुहु ।
हियवउ भिण्णउ तक्खणि एयहि भरँइ सीलु को खडइ सीयहि ।
जाणियतच्चहि सच्चहि सतहि जहि एहउ वियप्पु गुणवतहि ।

२ P भासइ ३ AP वउ ४ AP रामसामि° ५ A मतकज्जि ६ P परवसि

**20** १ A डडेवउ २ A अच्चत्तसिसुत्तणि ३ AP तिय ४ AP पुणु पइ ५ A वुड्ढिइ ६ A भणइ, T भरइ चिन्तयति

3 *b* मायारि माता 4 *b* एहउ ईदृशम् 6 *b* साहमि साधयामि, सवसा स्ववशा, जुवइत्तणु स्त्रीत्वम् 8 *a* रयसलवासरि रजस्वलादिने 10 *b* बहलवाह° प्रचुरबाष्पम् 13 *a* असहणु ईर्ष्यालु अहणु निर्धन

**20** 2 *a* पिउ पिता 3 *b* कुलविप्पिउ कुललाञ्छनम् 5 *a* वुड्ढिइ वृद्धया त्वया, णिब्भग्गिउ निर्भाग्य भाग्यरहितम् 6 *b* जहिं यत्र मोक्षे सभउ सभवो जन्म 10 *b* भरइ स्मरति 11 *b* वियप्पु स्त्रीजन्मनिन्दालक्षणो विकल्प

तहिँ मइ धुत्तिइँ काइँ करेव्वउ पासहि हिंडिवि णवर मरेव्वउ ।
घत्ता—इय चिंतिवि सुंदरि णिवँसे णहयरि चवलगय गयणगणइ ॥
थिय मणियरणिम्मलि कणयधरायलि लंकाहिवघरप्रंगणइ ॥ २० ॥

## 21

अंजणसामहु लच्छिविलासहु णाविवि ताइ विण्णविउ दसासहु ।
देव दियंतदंतिदंतच्छवि- जसपसरणयर जगपंकयरवि ।
पइँ इच्छइ सा जइ सिहि सीयलु जइ ठाणाउ चलइ धरणीयलु ।
जइ णियमेण वसंति ण सायर जइ पडंति सिसिरयर दिवायर ।
जइ जिणु राएं दोसें छिज्जइ तो पइँ सीय खगिंद रमिज्जइ ।
तं णिसुणिवि दहवयणें वुच्चइ अवसु वि वसि किज्जइ जं रुच्चइ ।
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु गिरिमसिणत्तणु सहहि सइत्तणु ।
दूरयरत्थु सुणतह चंगउ पासि असेसु वि दरिसियभंगउ ।
हरमि सीय किं पउरपलावें ता सा पुणु वि कहइ सब्भावें ।
दहमुह एउ अजुत्तु अकित्तणु इय बोल्लंति संति मतित्तणु ।
घत्ता—वयणहि णिवारिवि असिवरु धारिवि सुरसमरओहि असंकियउ ॥
भरहद्धणरेसर सुरकरिकरकर गंपणु पुप्फयंति थियउ ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णारयआगमणं रावणमणखोहणं णाम एकहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७१ ॥

---

६ A धुत्तें ७ P णिविमे ८ AP °पगणइ

**21** १ A °दंतहो छवि २ A °पसरणनगवणपंकय P °पसरणपर ३ A इच्छइ पइ जइ सा P इच्छइ पइ सा जइ ४ A ससिरयर ५ A पय ६ AP गिरिए मइत्तणु ७ AP कहइ पुणु वि ८ P अखत्तणु ९ A °समरहि अस P समरउह अस १० I गमणु ११ AP रामणखोहण

---

13 णिवस निमेषेण

**21** 2 *b* °छवि जसपसरणयर शुभ्रयश प्रसरणकर 3 *a* जइ सिहि सीयलु चेदग्नि शीतल तर्हि सीता त्वा वाञ्छति *b* ठाणाउ स्थानात् 4 *b* सिसिरयर शिशिरकरश्चन्द्र 5 *a* छिज्जइ क्षीयते 6 *b* अवसु अवशमपि वस्तु 7 *a* °भइयइ °भयेन 8 *a* सुहिसयणत्तणु सुहृदा सुहृत्त्वं दूरस्थमेव श्रयते, *b* गिरिमसिणत्तणु गिरेमसृणत्वं कोमलत्वं रम्यत्वम् 9 *a* दूरयरत्थु दूरतरस्थानाम् 11 *b* बोल्लंति संति ब्रुवाणा सती 12 सुरसमरओहि असंकियउ सुरसमरसमूहाद भीत 13 पुप्फयंति पुष्पकविमानमध्ये

# LXXII

सइ मारीयएण पहु मुक्कदेसजइसजमु ॥
पुप्फविमाणे[1] थिउ गउ सीयहरणकयउज्जमु ॥ ध्रुवक ॥

## 1

कामबाणोहविद्धेण मुद्धेण णो किं पि आलोइय
ता विमाण विमाणे णहे राइणा तेण सचोइय ।
तारयाऊरियायासरुकासबद्धुज्जलुल्लोवय
हेमघंटाविसट्टतटंकारसंतासियासागय ।
चारुचंदक्कभाभारि माणिक्क[3]समुक्कगुच्छय
वाउधुव्वंतकेऊलयालोलणाइण्णदिक्चक्कय ।
तुंगसिंगग्गणिब्भिण्णणीलब्भसस्ब्बुधारोल्लिय
वोमपोमायरे हसवत्तम्मि पोम व पप्फुल्लिय ।
दिण्णधूव रयक्ख गवक्खतलवत्तभिंगाविय
पक्खिसेहीर[7]सारंगमायंगउक्किण्णरूवंकिय ।
बद्धसोहिल्लकप्पघिवुब्भूयपत्तावलीतोरण
इंदणीलसुकाल असीयसुसीयसुणिव्वारण ।
तेयवंत णहम्मि हर्म्मि तिल्लदिव्वत्थसोहावह
भम्मपिंग पलित्त व सत्तच्चिणा रंजियासावह ।
किंत्तिवेल्लीइ फुल्ल व सेय दसासालिणा माणिय
जायवेय कुधीरेण वीरेण[10] वाणारसी आणिय ।

घत्ता—दिट्ठउ तेत्थु वणु अण्णेक्क वि सीयहि जोव्वणु ॥
रावणु चिंतवइ विहि समसजोयवियक्खणु ॥ १ ॥

---

1 १ P °विवाणे २ P सीयाहरण ३ AP माणिक्कणिम्मुक° ४ A हसवतम्मि ५ P च पुप्फुल्लिय ६ AP गवक्खतलग्गत° ७ A °सीहीर° ८ AP °घिवुब्भूय° ९ P omits सुसीय° १० A धीरेण

---

1 2 °कयउज्जमु कृतोद्यम 3 आलोइय विचारितम् 4 विमाणे विगतमाने अनन्ते नभसि 5 तारयेत्यादि तारकापूरिताकाशसदृश बद्धोज्ज्वलचन्द्रोपकम् ( °वितानम् ) 6 °विसट्टतटकार सतासियासागय विसर्पत टकारा तै सत्रासिता दिग्गना येन 7 °चदक्कभाभारि मयूरपिच्छ सुवर्णे वा तस्य प्रभाधारि °गुच्छुक्कय °स्तबकम् 8 वाउधुव्वतकेऊलया° वातान्दोलितध्वजलता 9 °धारोल्लिय धारार्द्रम् 10 वोमपोमायरे गगनसरोवरे, हसवत्तम्मि सूर्यवति 11 रयक्ख रक्ताक्षमासक्तेन्द्रियम्, °भिगाविय °भृङ्गसहितम् 12 °सेहीर° सिंह 14 इदणीलसुकाल इन्द्रनीलकिरणकृष्णम्, असीयसुसीयसुणिव्वारण सूर्यचन्द्रकिरणनिषेधकम् 15 °दिव्वत्थ° दिव्यास्त्राणि दिव्यप्रहरणानि 16 सत्तच्चिणा अग्निना 17 दसासालिणा दशास्यो रावण स एव भ्रमरस्तेन 18 जायवेय जातवेगम्, कुधीरेण कुबुद्धिदायकेन

## 2

वणु दीसइ णच्चियणीलगलु  सीयहि जोव्वणु मणमीणगलु ।
वणु दीसइ णिम्मलभरियसरु  सीयहि जोव्वणु णिरु महुरसरु ।
वणु दीसइ सचरतकमलु  सीयहि जोव्वणु वरमुहकमलु ।
वणु दीसइ ललियलयाहरउ  सीयहि जोव्वणु बिंबाहरउ ।
वणु दीसइ कालालिंगियउ  सीयहि जोव्वणु सालिंगियउ ।
वणु दीसइ अलयतिलयसहिउ  सीयहि जोव्वणु विहलीसहिउ ।
वणु दीसइ फुल्लासोयतरु  सीयहि जोव्वणु परसोययरु ।
वणु दीसइ दुग्गउ कचुइहिं  सीयहि जोव्वणु घरकचुइहिं ।
वणु दीसइ तरुकीलतकइ  सीयहि जोव्वणु वण्णंति कइ ।
वणु दीसइ मूलणिरुद्धरसु  सीयहि जोव्वणु कयमयणरसु ।
वणु दीसइ वड्डियधवलवलि  सीयहि हारावलि धवलवलि ।
हियउल्लउ कामसरहिं भरिउ  लकालकारें सभरिउ ।

घत्ता—इय एयहिं तणउ णरु माणइ जो णउं जोव्वणु ।
मदिरु परिहरिवि रिसि होइवि सो पइसउ वणु ॥ २ ॥

## 3

अहो कयत्थो भुवणंतरे हली  महेलिया जस्स घरम्मि मेहली ।
पलोयए लोयणएहि समुह  मुहेण मल्हंति विउंबए मुह ।

2 १ A मणिणीलगलु २ A घरु ३ P °णिबद्धरसु ४ A वल्यिधवल ५ AP ण वि

3 १ P लोयणेहि २ A विओवए, P विउबए

**2** 1 *a* °णीलगलु मयूर, *b* मणमीणगलु मनोमत्स्यस्य ग्रहणे गलो लोहकण्टक 2 *a* °भरियसरु °भृतसरोवरम्, *b* महुरसरु मधुरशब्दयुक्तम् 3 *a* सचरतकमलु प्रवहज्जलम् 4 *a* ललियलयाहरउ मनोहराणि लतागृहाणि यस्मिन्वने *b* बिंबाहरउ बिम्ब पक्वतुण्डीरक तत्तुल्योऽधरोष्ठो यत्र यौवने 5 *a* कालालिंगियउ कालाश्च ते अल्यश्च तेषामङ्कित चष्टित यत्र *b* सालिंगियउ लक्ष्म्या चिह्नितमालिङ्गित वा 6 *a* अलयतिलयसहिउ अलमत्यर्थं तिलकवृक्षसहितम् *b* विहलीसहिउ विशेषेण हलीशस्य रामस्य हित सुखदम् 7 *b* परसोययरु परेषा शोककारकम् 8 *a* कचुइहि सर्पैः, *b* घरकचुइहि गृहमहल्लकैः 9 *a* °कइ कपय *b* कइ कवय 10 *a* °रसु जल पृथ्वी वा, *b* कयमयणरसु कृतकामरसम् 11 *a* वड्डियधवलवलि वर्धिता धवाश्च लवलयश्च दनलताश्च यस्मिन्, *b* धवलवलि धवला कण्ठे वलिता च 12 *a* कामसरहि कामबाणैः, *b* लकालकारें लङ्कायाः अलंकारभूतेन रावणेन, सभरिउ चिन्तितम्

**3** 1 *b* मेहली मैथिली सीता 2 *b* मल्हंति हर्षमाणा, विउबए चुम्बति

हरौमि पय कवडेण सपय　　करेइ मती महिणाहसपय ।
उयार मारीयय होहि त मओ　　खुरेहिं सिंगेहिं जवेण तम्मओ ।
कुकम्मए मतिवरो णिवेसिओ　　विचिंतिए हा विहिणा णिवे सिओ ।
जसो ण जाओ भुवणतमेरओ　　कह परत्थीरमणे तमे रओ ।
भणामि किं सिभजरे पय पिय　　तुलग्गमेय पहुणा पयपिय ।
तओ विसाएण वियारियगओ　　खणेण होऊण मओ तर्हि गओ ।
णिसण्णिया जत्थ धरासुया सई　　पिए मणो जीइ समप्पिओ सइ ।
कुरगओ बालतणकुरासओ　　सुयाहिरामकियरामरासओ ।
णियच्छिओ दिट्ठिमओ रवण्णओ　　विचित्तपिंछोहमऊरवण्णओ ।
महीरुहाए भणिय हिया सय　　इम मह लोयणलोलणासय ।
णरिंद हे राम पुलिदकायर　　रएणँ गतु धरिऊण कायर ।
अणेयमाणिक्कमय मय मह　　कुलीण दे देहि णियच्छिमो मह ।

घत्ता—णिसुणिवि प्रियवयणु सो रामें दीसइ केहउ ॥
सावउ चित्तलउ चलु मणु काउरिसह जेहउ ॥ ३ ॥

## 4

पविरलपएहिं लघतु महि　　लहु धावइ पावइ दासरहि ।
थोवतरि मणहरु जाइ जवि　　कह कह व करगुलि छित्तु ण वि ।
पहु पाणि पसारइ किर धरइ　　मायामउ मउ अग्गइ सरइ ।
दूरतरि णियतणु दक्खवइ　　खेलइ दरिसावइ मदगइ ।

३ AP हरेमि ४ A रमणतमेरउ ५ A नाइ ६ A लोयणलोयणासय ७ A रएण तुग ८ T णिय स्थियामह पश्याम्यह, पश्यामि तज ( उत्सव ? ) ९ AP पियवयणु

3 *a* सपय सप्रति इदानीम् महिणाहसपय महीनाथस्य सपदम् 4 *a* उयार उदार तत्वम्, मओ मृग, *b* तम्मओ त मयस्तदाकृति 5 *a* कुकम्मए कुत्सितकर्मणि, *b* णिवे नृपे सिओ सित श्वेतम् 6 *a* जसो ण जाओ यश शुक्ल न जातम् भुवणतमेरओ त्रिभुवनान्तमर्याद ( यश ) *b* तमे पापे, रओ रत 7 *a* सिभजरे पय पिय श्लेष्मज्वरे पय पीतम् *b* पयपिय प्रजल्पित कथितम् 8 *a* विसाएण वियारियगओ विषादेन खेदेन विकारिताङ्ग *b* मओ मृग 9 *a* धरासुया सीता, *b* जीइ यया सइ सदा 10 *a* बालतणकुरासओ बालतृणाङ्कुरभक्षक *b* सुयाहिरामकियरामरासओ श्रुतौ कर्णे अभि समन्ताद्रामयाङ्कितरामस्य शब्दो येन मृगेण, अथवा, सुयाहिराम आकर्णनाभिराम यथा भवत्येव कृतो रामस्य रास शब्दो येन मृगेण 11 *a* दिट्ठिमओ दृष्टिमृदु, रवण्णओ रमणीय, *b* °मऊरवण्णओ मयूरसदृशवर्ण 12 *a* महीरुहाए सीतया, हिया हे हित, सय स्वयमेव *b* लोयणलोलणासय मम नेत्रयो क्रीडाश्रय स्थानम् 13 *a* पुलिदकायर पुलिन्द्रकाणामादरो यत्र मृगे, *b* रएण गतु वेगेन गत्वा 14 *a* मह मह्य मम, *b* मह उत्सवभूतम् 16 सावउ श्वापदो मृग

**4** 1 *a* °पएहिं पादै 2 *a* जवि वेगवान् 5 *a* णवदूवा° नवदूर्वा

णवदूवाकंदकवलु भरइ   तरुवरकिसलयपल्लव चरइ ।
कच्छतरि सच्छसलिलु पियइ   वकियगलु पच्छाउहु णियइ ।
सुयचंचुघायपरियलियफलि   खणि दीसइ चपयचूयतलि ।
खणि वेल्लिणिहेलणि पइसरइ   अण्णण्णपएसहिं अवयरइ ।
ओहच्छइ अइकोड्डावणउ   लइ माणमि णयणसुहावणउ ।
इय चिंतिवि राहउ सचरइ   पसु पुणु धरणास तासु करइ ।
धरिओ वि करग्गहु णीसरइ   कहि वेसायणु कहिं णीसरइ ।
णिहइयहु किं करि चडइ णिहि   कहि कवडहरिणु कहि बधविहि ।

घत्ता—गउ गयणुल्ललिउ मिगु ण कुवाइहत्थहु रसु ॥
थिउ दसरहतणउ समणीससतु विभियवसु ॥ ४ ॥

## 5

भयणभूमिआयासगामिणो   मतिणा वि कहिय ससामिणो ।
दवदेव जयलच्छिसगमो   वचिओ रहुरायपुगमो ।
ता ससक्कतेल्लोक्करामणो   राम एव रूवेण रावणो ।
कासकुसुमसकासदेहओ   चावधारि ण सरयमेहओ ।
कसणवाससोहियणियबओ   हत्थणिहियमणिमयासिलिंबओ ।
झ त्ति जणयतणयासमीवय   आगओ क्याणगभावय ।
वइरिमाणणिम्महणसत्तिणा   भासिय कुसीलेण ण तिणा ।
दूरय पि मणपवणवेयय   पचवण्णमाणिक्कतेयय ।
आणिय मए हरिणपोयय   कुणसु देवि कीलाविणोयय ।
ता सईइ अवलोइओ मओ   ण सुदूसहो दुक्खसचओ ।

---

**4** १ AP °कमलु २ AP तरुवरपल्लवकिसलय AP पच्छामुह ४ AP °परिगलिय° ५ P °चूययलि ६ P पवेसहिं ७ P इहु अच्छइ ८ A णिद्दइयहु कहि कार P णिद्दइवहु करि कहि

**5** १ A गयणभूमि° I भवणभामि° २ A वणि जइहु रहुवसपुगमो P वणि पइहु रहुवस पुगमो ३ A समक° ४ P तइलोक° ५ AP °रावणो ६ A सिलंबओ ७ A °तावय ८ A कुसीलेण मतिणा ९ A दूरिय

---

6 *a* कच्छतरि वनमध्ये, *b* पच्छाउहु पश्चान्मुखम् 7 *a* सुयत्यादि शुकचञ्चुघातपरिगलितफले आम्राये 9 *a* ओहच्छइ एष तिष्ठति 10 *b* धरणास धारणाश्याम् 11 *b* वेसायणु वेश्याजन णीसरइ निःस्वाना दरिद्राणा रति क 12 *a* णिद्दइयहु निर्भाग्यस्य 13 रसु पारद 14 सम° श्रमेण विंभियवसु विस्मितस्य विस्मयस्य वश

**5** 1 *a* भयणभूमिआयास° नक्षत्रसमूहाधिष्ठानमाकाशम् 3 *a* °रामणो °आक्रन्दन 4 *a* °सकासदेहओ °उज्ज्वलशरीर 5 *b* °सिलिंबओ मृग 6 *b* °भावय अभिलाषणम् 7 *b* तिणा रावणेन 9 *a* हरिणपोयय हरिणबालकम्

विप्फुरततणुकिरणमालओ  विरहसिहि व वित्थिण्णजालओ।
विंभियाबलायाणमाणिया  रयणिगमणचिंधेण भाणिया।
घत्ता—पिए जरदिवसयरु अत्थगउ दीसइ रत्तउ ॥
जरजुण्णु वि तिजगि भणु अत्थइ को णासत्तउ ॥ ५ ॥

## 6

उज्झिऊण इंदियसम  सविमाण सिवियासम।
सव्वत्थ वि भेइ सिय  तीए तेण दासिय।
बुद्ध किं पि णव च ण  ण हु खलरइय वचण।
त धरणीयलरूढिया  अमुणती आरूढिया।
उववणवासविणिग्गय  अप्पाण हरिवरगय।
दहवयणेण विलासिणा  रिउकित्तीयविलासिणा।
तीए पुरओ दाविय  वइयालियसद्दाविय।
सा तुरिय लक णिया  वम्महधणुगुणकण्णिया।
सारमजुयमाणियवणि  सणिहिया णदणवणि।
माणवाहिराम गओ  दूरमुक्करामगओ।
पयडीकयससरीरओ  भूहरभेइसरीरओ।
इर भुवणयले विस्सुओ  रक्खकेउ महिवइसुओ।
घत्ता—कालउ दहवयणु णवमेहु व दुहयरु सीयइ ॥
पियविरहाउरइ दिट्ठउ कठट्ठियजीयइ ॥ ६ ॥

१० A भासिया

6 १ A भद्दासिय २ P तहु खल° ३ AP पुरउ ४ P वम्महु ५ AP इह

11 वित्थिण्णजालओ विस्तीर्णज्वाल 12 *a* विंभिया विस्मिता, अबला सीता अयाणमाणिया मायापुरुषमजानन्ती *b* रयणिगमणचिंधेण राक्षसध्वजेन रावणेन 13 पिए हे प्रिये 14 णासत्तउ न आसक्त

6 1 *a* इंदियसम इन्द्रियखेद शरीरश्रमम्, *b* सिवियासम शिबिकाकृति 3 *a b* बुद्ध किं पि णव च ण नव जम अपूर्वं विमान च ण एतत् ण हु न खलु बुद्धम्, *b* वचण मृगलक्षण वञ्चनम् 4 *a* धरणीयलरूढिया भूमण्डले प्रसिद्धा सीता 5 *b* हरिवरगय अश्वारूढम् 6 *a* विलासिणा विलासयुक्तेन, *b* रिउकित्तीयविलासिणा रिपुकीर्तिरेव अविला मेढिका, गड्डरिका इत्यर्थं, तस्या असिना खड्गेन 7 *b* वइयालियसद्दाविय वैतालिकशब्दवर्णितम् 8 *b* °कण्णिया बाणविशेष 9 *a* °वणि जले 10 *a* माणवाहिरामगओ मनुष्यरमणीयता प्राप्त *b* °रामगओ रामशरीरवेष, भूहरभेइसरीरओ भूधरभेदिनी चासौ सरिच्च तद्वद्रयो वेग शब्दो वा यस्य 12 *a* इर किल प्रसिद्धौ, *b* रक्खकेउ राक्षसध्वज, महिवइसुओ पुलस्तिपुत्र 14 कठट्ठियजीयइ कण्ठस्थितजीवितया सीतया

7

चित्तें मउलतें मउलियउ　　लोयणजुयलसुउ पयलियउ ।
आपडुरंसु गंडत्थलइ　　विलसिउ विलसिइ विरहाणलइ ।
कढकढकढंति ससहरपहइ　　अगइ लायण्णवारिवहइ ।
कों दिसि केणाणिय केंव कहि　　को पावइ एवहिं रामु जहिं ।
इय चिंतवंति मोहेण हय　　परपुरिसु णिहालिवि मुच्छ गय ।
पइवय परपइवयभगभय　　ण पवणें पाडिय ललिय लय ।
भत्तारविओयविसंठुलियं　　विहिवस सिलसकडि पक्खलिय ।
ण कामभल्लि महियलि पडिय　　ण बाउल्लिय कंचणघडिय ।
सुहिसुयरणपसरियवेयणिय　　सा जइ वि थक्क णिच्चेयणिय ।
परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ　　चल जारदिट्ठि कहि परिघुलइ ।

घत्ता—दढणिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण वियट्टइ ॥
मरणि समावडिइ परियरिविहि बिहि वि ण फिट्टइ ॥ ७ ॥

8

परदारलुद्धु ढुक्कतु खलु　　कि लज्जइ कहिं मि गामकमलु ।
रावण कि आणिय परजुवइ　　तरु चुयसिण्हसुएहिं रवइ ।
वणु णाइ करइ साहुद्धरणु　　हा पत्तउ णारिरयणमरणु ।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ　　पहु पउ अजुत्तु णाइ भणइ ।
इच्छइ दसासिरु पररमणिसुहु　　कणइल्लउ वंकिवि जाइ मुहु ।
ण सो वि णिवहु उ वेइयउ　　कोइल्लु विरयतु व आइयउ ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ　　वइदहि भडारा रमहि तइ ।
हंसावलि लवइ म लोयपिय　　मइ जेही तेरी किंत्ति सिय ।
मा मइलहि माणिणि एह तिय　　मा णासहि लकाउरिहि सिय ।
अबउ लोहियपल्लवललिउ　　ण णिवजण्णायसिहि जलिउ ।

7 १ I °जुउ जसुय २ A आपडुरत्थु ३ AP का ित्स ४ A विसंठुलिया ५ A सुहि सुअरण° P सुहसुमरण° ६ AP परियरविहि

8 १ P गमण २ A न सो ३ A कोक्किलु ४ A नेही किंत्ति

7 1 *a* मउलियउ नेत्रमपि मुकुलितम् ३ *a* कढकढकढंति अतिशयेन दहन्ति ससहरपहइ चन्द्रकिरणप्रहतानि अङ्गानि 6 *a* पइवय पतिव्रता 7 *b* सिलसकडि शिलासकटे प्रदेशे 8 *b* बाउल्लिय पुत्तलिका ९ *a* °सुयरण° स्मरणम् *b* णिच्चेयणिय अचेतना 10 *a* परिहाणु परिधान वस्त्रम् 12 परियरिविहि परिकरबन्ध

8 1 *b* गामकमलु श्वा पुच्छल कुक्कुर 2 *b* चुयसिण्हसुएहि च्युतोष्णाश्रुभि 4 *a* कण्णासण्णउ कर्णसमीपस्थ 5 *b* कणइल्लउ शुक 6 *a* णिवहु नृपात् 7 *a* महुमहणिहु मत्तेज सदृश, कृष्णमित्यर्थ , महहि वाञ्छसि 10 *a* अबउ आम्रवृक्ष , *b* °सिहि °अग्निना

चदणु पुणु विसहर दक्खवइ पडिवक्खबाणमाणु व थवइ।
रामाणीरमणकम्मतुरिउ खयरिंदें मणु मइँइ धरिउ।
घत्ता—परवस परमसइ जइ छिवमि करें यणु पेल्लिवि॥
अवरयारिणिय तो जाइ विज्ज मइ मेल्लिवि॥ ८॥

## 9

इय णिज्झाइवि पकयकरिहिं आएसु दिण्णु विज्जाहरिहिं।
जीवावहु भावहु केह वि तिह मइ इच्छइ सुंदरि अज्जु जिह।
ता तरलइ तारइ णाइणिइ चपयमालइ मदाइणिइ।
अविउलइ अबइ अबालियइ मयमत्तइ मल्हणसीलियइ।
पियछदइ णदइ णदिणिइ रइरुदइ चदइ चदिणिइ।
कप्पूरपूरपरिमलजलइ पल्हत्थियाइ हिमसीयलइ।
सीयहि अगगि रमति किह सीयइ रहुवइअगाइ जिह।
णियपत्थिवपेसणकारिणिहिं लहु विज्जिय चामरधारिणिहिं।
दहमुहवहदाइणि कालणिह सधुक्किय ण खयजलणसिह।
उट्ठिय परणरणिट्ठुरहियय सचिंतइ हा हउ किं ण मय।
घत्ता—हा रहुवसपहु हा लक्खण कहिं पइ पेच्छमि॥
दावहि ताव मुहु जावज्जु जि मरवि ण गच्छमि॥ ९॥

## 10

चउपासिहिं थियउ णियच्छियउ पुणु खयरपुराधिउ पुच्छियउ।
भणु भणु सदेहु मज्झु हुयउ णिवु कालउ जमु कि वा मणुउ।

५ पडिवक्खमाणमाणु व ६ AP खयरिदए ७ A मडइ ८ P ता जाइ विज्जु

**9** १ A कह व २ AP अवलोइय अब वालियए ३ AP रुइरुदइ ४ AP कप्पूरपउर° ५ A पइ कहिं पेच्छमि ६ AP मरेवि

**10** १ AP खयरि°

11 *b* थवइ स्थापयति 12 *a* रामाणी° रामभार्या 14 *a* अवरयारिणिय आकाशगामिनी, विज्ज विद्या

**9** 1 *a* पकयकरिहि कमलसदृशकरयुक्तानाम् 2 *a* जीवावहु जीवापयत, भावहु मा भावयन्तु, ममोपरि रुचि कारयन्तु इत्यर्थ 3 *a* तरलइ तरलानाम्न्या 6 *b* पल्हत्थियाइ आवर्जितानि 7 *a* अगगि शरीरावयवेषु, *b* सीयइ शीतलानि 9 *a* °वहदाइणि वधदात्री 10 *a* उट्ठिय सावधाना जाता

**10** 2 *a* णिवु युष्मन्नृप

पुरि पइ कवण किं जमणयरि तावेक्क पजपइ तहिं खयरि ।
जसु तलवरु जमु किर भणइ जणु जसु देइ णिच्च वइसवणु धणु ।
जसु इंदु वि सगरि थरहरइ जसु मारुउ घरकयारु हरइ ।
जसु वासइ वइसाणरु धुवइ दिक्करिउलु णामें मउ मुयइ ।
जसु अग्गइ णडइ सरासइ वि कुसुमजलि घिवइ वणासइ वि ।
जसु पगणि मेहहिं दिण्णु छडु जसु को वि णत्थि पडिमल्लु भडु ।
सो पयहि लकहि पहु पइ रावणु णामें तिहुवणविजइ ।
भत्तारु समिच्छहि माइ तुहु अणुभुजहि इच्छियकामसुहु ।
घत्ता—सामिणि राणियह णीसेसह होइवि अच्छहि ॥
महएवित्तणयहु परमेसरि पट्टु पडिच्छहि ॥ १० ॥

## 11

किं किज्जइ हरिणु अधीरमइ जइ लब्भइ सीहकिसोरु पइ ।
किं किज्जइ दीवउ तुच्छछवि जइ अधयारु णिट्ठवइ रवि ।
कि किज्जइ वाइसु जइ गरुलु सुपसण्णु होइ बहुबाहुरलु ।
किं किज्जइ खरु जइ दुद्धरहु पाविज्जइ कधरु सिधुरहु ।
किं किज्जइ पिप्पलु सलसलिउ जइ दीसइ सुरतरवरु फलिउ ।
किं किज्जइ राहउ मुद्धि तइ रावणमहिलत्तणु होइ जइ ।
ता सीयइ उत्तरु मणि थविउ पयइ अण्णाणिइ कि लविउ ।
जहिं ककु रायहसु व गणिउ परहु रुप्परुक्खु व भणिउ ।
जहिं गुणवतु वि दोसिल्लसमु तहि ज विरयति वयणविरमु ।
ते विउस पससिय विउसजणि णिक्खिवइ बुद्धि को मुक्खयणि ।
घत्ता—पेयहु तणउ मुहु वियसावइ को जगि चुबिवि ॥
इय चितिवि हियइ मोणव्वउ थिय अवलबिवि ॥ ११ ॥

२ A घरु कयारु ३ AP वत्थइ ४ A omits this foot ५ A इच्छिउ काम° ६ A महएविहि तणउ, P महएवीए पहुत्तणहु ७ A पट्टु

**11** १ A सीहु किसोरु २ AP वायसु ३ P गरल ४ AP सुरवरतरु ५ AP रामें ६ AP विउसयणि ७ A मुक्खमणि ८ A थिउ

5 *b* घरकयारु गृहकचवरपुञ्ज 6 *a* वासइ वस्त्राणि *b* मउ मदम् 7 *b* वणासइ वनस्पतिर्वन देवता 12 महएवित्तणयहु महादेवीत्वस्य महादेवीपदस्य

**11** 4 *b* सिधुरहु गजस्य 5 *a* सलसलिउ शब्द कुर्वाण कम्पमानो वा 6 *a* राहउ राम 8 *a* ककु बक 9 *b* विरयति वयणविरमु विरचयन्ति वचनविराम मौनम् 10 *a* विउस विद्वांस, *b* णिक्खिवइ प्रेरयति 11 पयहु प्रेतस्य मृतकस्य

## 12

जयजसरामहु रामहु तणिय णिसुणेसवि वत्त सुहावणिय ।
जइहु पेसियलेहेण सहु तइहु आहारपवित्ति महु ।
ण तो पुणु जिणवरिंदु सरणु सपज्जउ सल्लेहणमरणु ।
एत्तहि जक्खाहिवेंरक्खियउ पहवंतु फुरंतु णिरिक्खियउ ।
पहरणपरिपालें रक्खियउ पणवेवि दहगीवहु अक्खियउ ।
आउहसालहि खयरविसरिसु उप्पण्णउ चक्कु जणियहरिसु ।
ता णिवंह हियउ रोमंचियउ त जाइवि कुसुमहिं अंचियउ ।
णियमंतिहिं इय बोल्लिउ वयणु एवहि कहिं चुक्कइ दहवयणु ।
सभूयउ भवणि चक्करयणु आणिउ अण्णेक्कु वि मिगणयणु ।
ज त कलत्तु रामहु तणउ अप्पिज्जउ घणचक्कलथणउ ।
उप्पाउ णयरि भीयरु हवइ त णिसुणिवि णहयरिंदु लवइ ।
उप्पण्णु चक्कु सीयागमणि किं तुम्हहु अज्ज वि भंति मणि ।

धत्ता—छिंदिवि अरिसिरइ असिकपावियदेवासुरु ॥
भरहहु हउ जि पहु सिरिपुप्फयंतभाभासुरु ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सीयाहरणं णाम
दुसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७२ ॥

---

**12** १ AP जइयहु लक्खणरामहु तणिय २ AP जइयहु ३ AP तइयहु ४ K records a *p* आरक्खियउ इति पाठे आरे क्षित प्राप्त अराणा वा निवास ५ AP खररवि° ६ AP महिवइ वउ ७ A जोइवि ८ AP सुदरु पडिवज्जइ दह° ९ AP भवणि वि १० P अप्पिज्जइ ११ AP वहइ १२ AP छिंदमि १३ AP बहत्तरिमो

---

**12** 1 *a* जयजसरामहु जयश्च यशश्च ताभ्या रामस्य रमणीयस्य, *b* सुहावणिय क्षेमकुशला 4 *b* पहवंतु प्रभावत् चक्रम् 6 *a* खयरविसरिसु प्रलयकालसूर्यसदृशम् 10 *b* घणचक्कलथणउ घननिबिडस्तनम् 14 सिरिपुप्फयतभाभासुरु चन्द्रसूर्यवत्तेजा

# LXXIII

मायारउ किं माणिक्कमउ जो रहुसीहहु णडुउ ॥
महु णावइ भावइ सो हरिणु वइहु सरणु पइट्ठउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

दुवई—एत्तहि रामसामि मृगप[2]च्छइ गउ दूरतर वणे ॥
एत्तहि णीय सीय दहवयणें एत्तहि सोउ परियणे ॥ छ ॥

एत्तहि दिणति[3] अत्थइरिसाणु    सपत्तउ लहु अत्थमिउ भाणु ।
णरतिरियणयणपसरणु हरतु    चक्कउलहं तणुतावणु करतु ।
ण दिसइ लइउ रइरसणिहाउ    ण णिण्णेंहुउ रावणपयाउ ।
ण रइउ समुद्दें रयणसगु    ण महिइ गिलिउ रईरहरहगु ।
देउ वि वारुणिसंगेण पडइ    ण इय भणतु पक्खिउलु रडइ ।
गच्छतु अहोमुहु तिमिरमथु    ण दावइ णरयहु तणउ पथु ।
रामहु कलत्तु इह हित्तु जेण    जापसइ सो भग्गेण एण ।
गउ अत्थवणहु कदोट्टजूरु    करसहसेण वि णउ धरिउ सूरु ।

घत्ता—णिवडतु जतु हेट्ठामुहउ रवि किं एक्कु भणिज्जइ ॥
जगलच्छीमदिरणिग्गयहिं मदहि को रक्खिज्जइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—माणवभवणभरहखेत्तोवरि वियरणगामियवासरो ॥
सीयारामलक्खणाणदु व जामत्थमिओ दिणेसरो ॥ छ ॥

पच्छाइयसयलायासतीरु    ण सज्झारायकोसुभचीरु ।
णहसिरि परिहइ रंडिज्जमाण    दिणवइविओउ[3] अइअसहमाण ।
सिसुससि भग्गउ ण वलयखडु    मउलियउ कमलु ण ताहि तुडु ।

1 १ AP भावइ णावइ २ AP मिग° ३ A दियति K दिणति, corrects it to दियति but has a gloss दिनस्याते ४ AP णिहिउ ५ AP रामणभुय° ६ A रविरह°

2 १ A P जामत्थमिउ णेसरो २ A सझाराए ३ A °विओयअइ° ४ AP ण भग्गउ

1 1 किं माणिक्कमउ कथ रत्नमय सारभूत, अपि तु निसार 5 *a* अत्थइरिसाणु अस्ताचलतटम् 7 *a* रइरसणिहाउ रतिरससमूह 8 *b* °रहरहगु रथचक्रम् 9 *a* वारुणि° पश्चिम दिशा मद्य च 10 *a* तिमिरमथु सूर्य 12 *a* कदोट्ट° उत्पलम् 14 जगेत्यादि जगल्लक्ष्मीमन्दिर जगदेव पद्म तस्मान्निर्गते किरणै, अन्यत्र, जगति लोके लक्ष्मीगृहान्निर्गतै पुरुषै मदहिं जडै मन्दप्रतापैर्वा

2 1 माणवभवणभरह° नराणा गृह भरतक्षेत्रम् 3 *a* पच्छाइयसयलायासतीरु प्रच्छादितसकलगगनतट 4 *a* परिहइ परिधत्ते, रंडिज्जमाण वैधव्य प्राप्ता 5 *a* सिसुससि बालचन्द्र भग्नवलयखण्डमिव

विक्खिण्णउ पत्तु दियतपारु तारायणु णावइ तुट्टु हारु ।
गय णिसि उययायलकरिहि चडिउ तमवइरिणरिंदहु समरि भिडिउ ।
उग्गउ उण्णइ पहरेण पत्तु परिपालियखत्तु व रायउत्तु ।
दिणयरु विहडावियपउमसीउ सोहइ णावइ दहवयणु बीउ ।
ण सीयाविरहहुयासचडु ण तियसाणीकरघुसिणुपिंडु ।
ण दिसिकामिणिसिरि रत्तु फुल्लु ण खयररायतणुरुहिरतल्लु ।

घत्ता—हयसीयउ कयरण्णागमणु अइरत्तउ सउहाइयउ ॥
दीहरपहरीणें राहविण रवि परवारु व जोइयउ ॥ २ ॥

## 3

दुवई—पुच्छिउ तेण तेत्थु णियपरियणु बालमरालगामिणी ॥
कहि सा सीय भणसु भो लक्खण सइगुणरयणसामिणी ॥ छ ॥

त णिसुणिवि भायरु कहइ एव जावहिं तुहु गउ मृगमग्गि देव ।
जावहिं हउ अच्छिउ सरवराति तावहिं जि ण दिट्ठी उववणाति ।
विण्णवइ एव भिच्चयणु सव्वु कदइ उब्भियकरु गलियगव्वु ।
एवहिं जाणइ दीसइ जियंति जइ तो तुहु पुण्णाहिउ ण भंति ।
त णिसुणिवि मुच्छिउ पडिउ रामु जलसिंचिउ उट्ठिउ खामखामु ।
सीयलु विसु विसु व ण साति जणइ हरियदणु सिहिकुलु अगु छणइ ।
णलिणु वि सूरहु सयणत्तु वहइ सयणीयलि घित्तउ देहु डहइ ।
पियविरहु जलद्दइ सिहि व जलइ चमराणिलु तासु सहाउ घुलइ ।

घत्ता—सरु गेयहु वइरिविमुक्कसरु कव्वु कायकव्वासउ ॥
विणु सीयइ भावइ राहवहु णाडउ णाडयपासउ ॥ ३ ॥

५ APT विक्खिण्णउ पत्तदियतरालु ६ A दिसिकामिणिकररत्तु फुल्लु ७ AP हिय° ८ A सविहायउ, P सउहाइउ ९ P °पहरेण १० AP परिवारु वि जोइउ

3 १ A सयगुण° २ AP गउ तुहु मिग° ३ A सरवणति ४ P तइ ५ A विरहजलद्दइ ६ A सहासु

6 *a* विक्खिण्णउ विकीर्णो यत्र तत्र पतित, दियतपारु दिगन्तपर्यन्त प्राप्त 8 *a* उण्णइ पत्तु उन्नतिं प्राप्त 9 *a* °पउमसीउ पद्मानां शीत येन, अन्यत्र, वियोग प्रापिते रामसीते येन 10 *b* तियसाणी° इन्द्राणी 11 *b* °तल्लु तडाग 12 °रण्णा° आदित्यभार्या पक्षे अरण्यागमनम्, सउहाइयउ सम्मुख धावित सूर्य 13 परवारु परदार रावण इव

3 2 सइगुण° सतीगुणा 8 *a* विसु जलम्, विसु व विषमिव *b* सिहिकुलु अगु छणइ अग्निकुल अङ्ग दहति चन्दनकाष्ठजातित्वात् 10 *a* जलद्दइ जलार्द्रवस्त्रेण, *b* सहाउ सहाय सखा 11 कायकव्वासउ शरीरमासभक्षकम् 12 णाडउ नाटकम्, णाडयपासउ नाटकबन्धनम्

## 4

दुवई—जलि थलि गामि गामि पुरि घरि घरि गिरिकंदरणिवासए ॥
जोयेह कहिं मि घरिणि जइ जाणह बहुदुग्गमपवेसए ॥ छ ॥

अवियाणिउ जगि को कहइ कासु पेसिय किंकर दसदसु वि दिसासु ।
सइ काणणि रहुवइ हिंडमाणु पुच्छइ वणि मिगइ अयाणमाणु ।
रे हंस हंस सा हंसगमण पइ दिट्ठी कत्थेइ विउलरमण ।
चगउ चिम्मंकहु सिक्खिओ सि महु अकहंतु जि खल किं गओ सि ।
रे कुंजर तुह कुंभत्थलाइ ण मह महिलाइ थणत्थलाइ ।
सारिक्खउ लइयउ पउ काइ भणु कंतइ कहिं दिण्णाइ पयाइ ।
सारंग कहहि महु जणयधीय णयणहि उवजीविय पइ मि सीय ।
अलि घरिणिकेसणिद्धत्तचोर णिसि सररुहदलकयबंधणार ।
ण वियाणहि कंतहि तणिय वत्त रे णीलगीव घणरामवत्त ।
णच्चंति दिट्ठ भणु कहि मि देवि इयरह कहिं णच्चहि भाउ लेवि ।
रे कीर ण लज्जहि जंपमाणु जइ दिट्ठउ पइ मुद्धहि पमाणु ।

घत्ता—णिरु विरहें झीणउ दासरहि देविहि अज्जु जि सुच्चहि ॥
णीसेसजीवसंतावहर मेह दूअउ तुहु वच्चहि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—अइउक्कंठिएण धरणीसें सज्जणदिण्णजीयय ॥
ता दिट्ठ मयच्छिथणकुंकुमपिंजरु उत्तरीयय ॥ छ ॥

दीसइ वसग्गविलंबमाणु ण रिउँ गयगयणगणणिवाणु ।
ण दावइ कंतहि तणिय वट्ट इह दहमुहेंमारीयइ पयट्ट ।
ण उब्भिय सीयइ सइवडाय त लेप्पिणु किंकर झ त्ति आय ।

4 १ A जोवहु २ A वणमिगइ ३ A कत्थवि ४ P चिमकह ५ A ण महु महिलहि घणथणयलाइ ६ A किं ७ A घणरावमत्त, P घणरामपत्त, T घणरावमत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ ८ AP दूउ

5 १ AP °पिंजरि २ A ण रिउ गयणगणि णिज्जमाणु ३ AP °मारीयय

4 6 *a* चिम्मकहु गन्तुम् 9 *a* जणयधीय जनकपुत्री सीता, *b* उवजीविय सादृश्य प्रापिता 10 *a* °णिद्धत्त° स्निग्धकान्ति *b* °बधणार बन्धनयुक्त 11 *b* घणरामवत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ 13 *b* पमाणु वचनम्, चिह्नम

5 3 *b* °णिवाणु निदान कारण चिह्नम् 4 *a* वट्ट मार्ग, *b* पयट्ट प्रवृत्तौ गन्तुम् 5 उब्भिय ऊर्ध्वीकृता, सइवडाय सतीत्वपताका

आलिंगिउ रामें णीससेवि पुणु बाहुल्लइ णयणइं पुसेवि ।
जपिउ णिय सुंदरि खेयरेहिं मायाविएहिं रणदुद्धरेहिं ।
सहु लक्खणेण सदेहि छूदु जामच्छइ पहु किंकज्जमूढु ।
तावायउ दूयउ दसरहासु तें घित्तु पत्तु आलिहिउ तासु ।
उच्चाइवि त सहसा सिरेण इय वाइउ देवें हलहरेण ।
दसरहु जिणचरणभोयभसलु उवहसइ सुयहु णियदेहकुसलु ।
मइ दिट्ठउ सिविणउ हयविलासु हिय राहु रोहिणि सम्महरासु ।

घत्ता—एक्कल्लउ ससि णहयलि भमइ अवलोइवि अवहारिउ ॥
वज्जरिउ पहाइ पुरोहियहु तेण वि मज्झु वियारिउ ॥ ५ ॥

## 6

दुवई—जो दिट्ठउ विडप्पु सो रावणु जा णिसि पइ विलोइया ॥
रोहिणि तुहिणकिरणविच्छोइय सा तुह सुयविओइया ॥ छ ॥

परमत्थें जाणसु राय सीय अज्जु जि खयरिंदें घरहु णीय ।
जा हिप्पइ सो पुणरवि णिरुत्तु ता किज्जइ णियदेहहु पयत्तु ।
जें चक्कवट्टि पालइ सजीव भरहंतरालि छप्पण्ण दीव ।
ताहि सायरि लंकादीवु अत्थि अण्णु वि तिकूडु गिरि मणिगभत्थि ।
पुरि लंक राउ दहवयणु णाम णिय तेण सीय रामाहिराम ।
आयण्णिवि विसरिसविसम वत्त ते बे वि भरह सत्तुहण पत्त ।
हिंसततुरय गज्जतणाय सामंत सुहड दसदिसिहिं आय ।
आवेप्पिणु तणयासोक्खहेउ ससुरेण णिहालिउ रामपउ ।
दुम्मणु जोइवि रिउमद्दणेण गलगज्जिउ तेत्थु जणद्दणेण ।

घत्ता—रिउ जरकुरंगु महु आवडइ हउ हरि उद्धुयकेसरु ॥
जइ दुट्ठु दिट्ठिगोयरि पडइ तो मारमि लंकेसरु ॥ ६ ॥

४ P रणि दुद्धरेहिं ५ AP जिणकमलभोय° ६ A राहें ७ AP वियारियउ

**6** १ A सो २ A जो ३ उद्धयकेसरु

6 *b* बाहुल्लइ बाष्पैरार्द्राणि 8 *a* सदेहि छूढु सदेहे पतित 12 *b* राहु राहुणा, ससहरासु चन्द्रस्य 13 अवहारिउ अवधारित चित्ते धृतम्

**6** 1 विडप्पु राहु 2 सुयविओइया सुतवियुक्ता सीता 4 *a* जा यावत्, हिप्पइ आनीयते 5 *a* सजीव जीवसहिता, *b* छप्पण्ण दीव रत्नद्वीपसुवर्णद्वीपलङ्काद्वीपप्रभृतय 6 *b* मणिगभत्थि मणिकिरण 7 *b* रामाहिराम स्त्रीणां मनोहरा 9 *a* °णाय गजा 12 आवडइ आभासते, हरि सिंह

## 7

दुवई—सीयागुणविसेससभरणचुयसुयसित्तवसुमई ॥
उम्मोहिउ विओयविसघारिउ कह व णिवेहिं मेहिवई ॥ छ ॥
पिय[2]विप्पओयकद्दमणिमण्णु[3] जावच्छइ सेज्जायलि णिसण्णु ।
तावाय बेण्णि खग विमलदेह ण रामसासथिरकरणमेह ।
ण सीयामग्गपयासदीव बेण्णि वि पणवेप्पिणु थिय समीव ।
सम्माणिय हरिणा सणिसण्ण सुहिदसणरुहरोमचभिण्ण ।
बोल्लाविय बेण्णि वि दिव्वकाय कहु तुम्हइ किं किर एत्थु आय ।
त णिसुणिवि भासइ जेट्ठु खयरु खगदाहिणसेढिहि अत्थि णयरु ।
णामें किलिकिलु कलहससहिय जहिं विविहवास चोरारिरहिय ।
तहिं मेहु बलिंदु माणियपियगु तहु धण पियगेसुदरि पियगु ।
सामल सलोण उडुणिहणहालि तहि पढमपुत्तु णामेण वालि ।
हउ लहुयारउ सुग्गीउदेव अणवरउ करमि णियपियरसेव ।
घत्ता—ता तेत्थु मरतें पुरि पिउणा वालि रज्जि वइसारिउ ॥
हउ जुवराणउ कउ मइ जणणि दाइएण णीसारिउ ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—सुणि रायाहिराय हे हलहर मणिमयसिहरमदिरे ॥
तित्थु जि रयणसिहरि खगसेढिहि खणरुइकतपुरवरे ॥ छ ॥
विज्जाहरु णामें अत्थि पवणु लीलाणिहि वेयविजित्तपवणु ।
तहु अजण मणरजणवियार महएवि वूढसिंगारभार ।
इहु मेरउ सहयरु गयगईहि तहि जायउ गब्भि महासईहि ।
पाडिउ पहु भडु विज्जाणिकेउ अगि वुच्चइ एहु जि मयरकेउ ।
एक्कहिं दिणि कोक्किवि खयरलक्ख एए दिण्णी विज्जापरिक्ख ।

7 १ A वसुपई २ P has ता before पिय° ३ P °णिसण्णु ४ A पहु ५ AP पियगु सुदरि ६ A जणेण

8 १ A रमणिगणदित्तमदिरे, P रमणियसियमदिरे

7 3 a °विप्पओय° वियोग 4 b °सास °सस्य उच्छ्वासश्च, °मेह मेघो मेधा च 6 b °दसण रुह° दर्शनोत्पन्ना 7 b कहु केषाम् 9 b °वास आवासा गृहाणि 10 a मेहु मम पिता, माणिय पियगु भुक्तप्रियाशरीर, b धण भार्या, पियगु प्रियङ्गुरिव श्यामा 11 a उडुणिहणहालि नक्षत्रसहशनखपक्ति 14 मइ जणणि मृत पितरि, दाइएण भ्रात्रा

8 2 खणरुइकत° विद्युत्कान्तम् 3 b वेय° वेग 5 a गयगईहि गजगामिन्या

गिरिसिहरि णिवेसिउ एक्कु पाउ अण्णेक्कु दिण्णु उद्दडवाउ ।
दीहुत्तु पसारिउ गयउ ताम गयणंगणि ससि दिवसयरु जाम ।
पुणु रूवु धरिउ तसरेणुमेत्तु अणुमेत्तु मिलिवि खयरेहिं वुत्तु ।
पेक्खिवि सहायसाहसु अभेज्जु वालें महु दिण्णउ जउवरज्जु ।
कालें जतें त हित्तु पुणु वि आसकिवि तें सहु ण किउ रणु वि ।
गय बेण्णि वि जण माणिक्कचूडु समेयजिणालउ सिद्धकूडु ।
घत्ता—तसथावरजीवह दय करिवि धम्मि थवेप्पिणु अप्पउ ॥
तहिं देहिदेहदुहणासयरु वंदिउ जिणु परमप्पउ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—जय देविंदचंदखयरिंदफणिंदणरिंदपुज्जिया ॥
जय णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठट्ठारहदोसवज्जिया ॥ छ ॥
ण भोएसु कखा ण णिद्दा ण भुक्खा ।
ण तण्हा ण सोओ ण राओ ण रोओ ।
ण चाव ण वेरी ण ताण ण मारी ।
ण काय ण चेल ण सीस सिहाल ।
ण णिंदा ण थोत्त ण मुद्दापवित्त ।
ण हिंसाइ सग्गो ण सोंडालमग्गो ।
ण गोभूमिदाण ण वेओ पमाण ।
ण चम्मुत्तरीय ण जण्णोववीय ।
उरे णत्थि सप्पो मणे णत्थि दप्पो ।
पसूणतयाल करे णत्थि सूल ।
सिरे णत्थि गगा जडागोवियगा ।
भवाणी ण देहे रई णो सणेहे ।
पुरारी ण कामी तुम मज्झ सामी ।

२ P adds वि after अण्णेक्कु ३ A जुउविरज्जु P जुउवरज्जु

**9** १ AP °पुज्जिय २ AP °वज्जिय ३ AP पाओ ४ AP ताव ५ A ण काय सुचेलं, P ण काये सुचेल ६ AP ण मुद्दा ण वित्त ७ A ण सो जण्णमग्गो ८ AP ण वेउप्पमाण ९ A वसुत्तरीय १० P जडग्गोवियगा ११ AP सणाहे

8 *b* उद्दडवाउ उद्दण्डपात 11 *b* वालें वालिना, जउवरज्जु यौवराज्यम्

**9** 4 *b* रोओ रोग 5 *b* ताण हरवत्सुष्टिरक्षणम् 6 *a* ण काय सिद्धत्वादशरीर *b* सिहाल जटायुक्तम् 7 *b* मुद्दापवित्त मुद्रिका पवित्रीदर्भादिका 8 *a* सग्गो स्वर्ग, *b* सोंडालमग्गो कल्पपाल मार्ग 12 *a* पसूणतयाल पशूनामतकालम् 13 *b* जडागोवियगा जटाया गोपितगंगा 14 *a* भवाणी पार्वती 15 *a* पुरारी त्रिपुरशत्रु

जिणो मोक्खहेऊ भवभोहिसेऊ ।
घत्ता—जय परमणिरंजण जणसरण वीयराय जोईसर ॥
जलि पत्थरि पाणिइ धम्मु णउ तुहु जि धम्मु परमेसर ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—दिणयरु हरइ तिमिरु सलिलु वि तिस खगवइ विसवियभिय ॥
जिण तुह दसणेण खणि णासइ गुरुदुरिय णिसुभिय ॥ छ ॥
इय वदिवि जिणवरु सेस लेवि खणु एक्कु जाम तहिं थक्क बे वि ।
ता तेयवतु ण विज्जुदडु ण सुरवरसरिडिंडीरपिंडु ।
वियडजडजूडु विवरीयवाणि मणिरयणकमडलु दडपाणि ।
खणखणियमणियगणियक्खसुत्तु कोवीणकणयकडिसुत्तजुत्तु ।
ससहरु व विसाहारूढगत्तु असुरसुरसमरसणिहियचित्तु ।
सोत्तरियफुरियउववीयवतु ता दिट्ठउ णारउ गयणि एतु ।
अरहतु णवेप्पिणु सुहु णिविट्ठु अम्हहिं सभासणु करिवि दिट्ठु ।
तुहु जाणहि णिसुयसुयगरिद्धि पुच्छिउ पावेसहु किह सरिद्धि ।
मुहु वकइ सकइ वालि कासु को देसइ कुलरज्जावयासु ।
ता दाणवमाणवरणरएण विहसेप्पिणु बोल्लिउ णारएण ।
घत्ता—भो खेयरपहु भूगोयरु वि धुउ तिजगुत्तमु भावहि ॥
सेवहि रामहु पयपकयइ जइ तो कुलसिरि पावहि ॥ १० ॥

## 11

दुवई—अण्णु वि हरिणणयण णियपणइणि तासु दसासराइणा ॥
विरसियअमरडमरडिंडिमरवरिउबहुतासदाइणा ॥ छ ॥
दुक्खेण ण थाणइ दियहु रत्ति जो दावइ कतहि तणिय थत्ति ।

१२ P जगसरण

**10** १ AP विजदडु २ AP मणिरइय° ३ A °गलियक्ख° ४ A सहु ५ A विइसेविणु

18 पाणिइ जले

**10** 1 खगवइ गरुड, विसवियभिय विषविजृम्भितम् 2 णिसुंभिय चूर्णित सत् नश्यति 6 *a* गणियक्खसुत्तु गणितजपमाल 7 *a* विसाहारूढगत्तु विशाखानक्षत्रारूढश्चन्द्र पादुकारूढो नारद 13 खेयरपहु विद्याधरप्रभो

**11** 1 दसासराइणा दशास्येन रावणेन 2 विरसियेत्यादि विशेषेण रसित शब्दित स चासौ अमराणा डमरो भयानको डिण्डिमरव, तेन रिपुणा बहुत्रासदायिना

सो जाणमि जिह भमरहु सुगंधु तिह रामहु होसइ परमबंधु ।
लब्भइ मणोज्ञकज्जेण कज्जु सो देसइ तुंह सुग्गीव रज्जु ।
तं णिसुणिवि आया एत्थु राय जलयग्गिसिंगसणिहियपाय ।
ते णहयर पुज्जिय राहवेण संभासिय तोसिय माहवेण ।
हणुमंतें मग्गियपेसणेण जंपिउ णवजलहरणीसणेण ।
भो दसरहणंदण णंद णंद मा झिज्जहि सज्जणकुमुयचंद ।
णियरामालोयणकयपयत्त हउ आणमि सीयहि तणिय वत्त ।

घत्ता—सुग्गीवहु मुहु पप्फुल्लियउ मित्तवयणु पडिवण्णउ ॥
अहिणाणु लेहु अंगुत्थलउ रामें हणुयहु दिण्णउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—ता णविउ पयाइं हलहेइहि णवदलणालिणणिहमुहो ॥
उल्ललिओ णहेण पवणो इव चलगइ पवणतणुरुहो ॥ छ ॥
तओ तेण जंतेण दिट्ठो समुद्दो पधावंतकल्लोलमालारउद्दो ।
जलुम्मग्गणिम्मग्गबोहित्थवंदो अथाहंभपब्भारसंकंतचंदो ।
झसप्फोडफुट्टंतसिप्पीसमूहो णहुक्खित्तमुत्ताहलो भाणुरोहो ।
दिसादुक्कणक्कुग्गयंत करालो चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो ।
पवालंकुरुक्केरराहिल्लरूहो पगज्जंतमज्जंतमायंगजूहो ।
सुभीसो असोसो असेसंबुवासो विडिंदु व्व पीयाहरो ढंकियासो ।
सरीसंगतुंगत्तणालीढरिक्खो अलंकारओ कूलकीलंतजक्खो ।
करिंदो व्व गाढं गहीरं रसंतो अहिंदो व्व पायालमूले विसंतो ।
णरिंदो व्व धीरो समज्जायवंतो रिसिंदो व्व अंतोमलं णिग्गहंतो ।
गिरिंदो व्व रेहंतमाणिक्कमोहो सुरिंदो व्व देवासिओ दिण्णसोहो ।

11 १ A °कज्जाण कज्जु २ P तुम्हह ३ A पफुल्लियउ, P पहुल्लियउ

12 १ P has गउ before उल्ललिओ २ A झसुप्फाल° ३ P चलप्पत्थ° ४ A असेसो ५ AP °रिक्खो ६ AP वीरो

6 *b* जलयग्गिसिंग° मेघमस्तके 7 *b* माहवेण हरिणा

12 1 हलहेइहि हलप्रहरणस्य रामस्य 4 *a* °बोहित्थ° नौ *b* संकंतचंदो प्रतिबिम्बित चन्द्र 5 *a* झसप्फोड° मत्स्यानामास्फालन संघट्ट, °सिप्पी° शुक्तिका, *b* भाणुरोहो किरणरोध 6 *a* दिसादुक्कणक्कुग्गयंत दिशासु ढौकितनक्रैरुग्रक भीष्म अन्त मध्य यथा भवति तथा, *b* चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो ऊर्ध्वोच्छलित याघुटितवेलाविशाल 7 *a* °राहिल्लरूहो शोभमानतट 8 *b* पीयाहरो पीताधर, अ यत्र पीता व्याप्ता आसमन्ताद्धरा येन, ढंकियासो प्रच्छादितमुख प्रच्छादितदिशश्च 9 *a* सरीसंगत्तणाद्दि नदीसङ्गतुङ्गत्वेन स्पृष्टनक्षत्र, *b* अलंकारओ न विद्यते लङ्कायाः रवो विनाशो यस्मात् 12 *a* °मोहो °मयूख °किरण

घत्ता—गभीरु घोरु आवत्तइरु लीलाइ जि आसधिउ[7] ॥
ससारु व परमजिणेसरिण सायरु हणुए लघिउ[8] ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—खेयरिचरणघुसिणमसिणारुणरयणसिलायलामलो ॥
दीसइ तहिं तिकूडु गिरि दरितरुवियसियकुसुमपरिमलो ॥ छ ॥

लवतरत्तपत्तोहतबु गुरुसिहरालिंगियसूरबिंबु ।
वेलापक्खलणविसट्टकबु किणरसुदरिसेवियणियबु ।
णाइणिणेउरबहिरियदियतु णच्चियजक्खिणिरसभाववतु ।
करिमयकद्दमखुप्पतहरिणु गुमुगुमियभमिर[1]छप्परणसरणु ।
हिंडतकाले[2]णाहलकुडबु खेल्लंत[3]सरहसरहससिलिंबु ।
णउलउलफणिउलाढत्तसमरु चमरीमयचालियचारुचमरु ।
हरिकुजरकलहकलोल[4]वतु चुयरत्तलित्तमोत्तियफुरतु ।
दुमणियरगलियमहु[5]वारिथंभु सबरीपरियदणसुत्तडिंभु ।
हय[6]मुहकिलिकिंचियसद्दरम्मु महियरदुग्गमु णहयरह गम्मु ।

घत्ता—णावइ णिउणइ महिकामिणिइ पइ सग्ग[7]परिछदहु ॥
गिरिणियकरु उब्भिवि णिहिय तहि दाविय लक सुरिंदहु ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—परिहादारतोरणट्टालयधयजयलच्छिसगमा ॥
लकाणयरि दिट्ठ हणुमंतें[1] मणिपायारदुग्गमा ॥ छ ॥

दीहत्तें बारह जोयणाइ वित्थारें णव ह्यिलोयणाइ ।
बत्तीस विसालइ गोउराइ मोत्तियमरगयघडियइ घराइ ।
जहिं घुलइ रेणु कप्पूररेणु सुरतरु तरु धेणु वि कामधेणु ।

७ AP आसघियउ ८ AP लघियउ

**13** १ AP °भमिय° २ AP हिंडतकोल° ३ AP सछाइयतरुदलसूरबिबु ४ A °किलाल वतु ५ AP °महुपाणथिभु ६ AP हयमुहि° ७ पडिछदहु

**14** १ AP हणवतें

**13** 3 *a* °पत्तोहतबु पत्रसमूहेन ताम्र 4 *a* °विसट्टकबु °भग्नशख 6 *b* °भमिर° पर्यटनशीला, °सरणु गृहम् 7 *a* °णाहल° भिल्ला, *b* °सिलिंबु °बालक 9 *a* °कलहकलालवतु °कलहद्वारेण कल मनोज्ञ आलपन् वदन्, *b* चुयरत्त° च्युत रुधिरम् 10 *b* °परियदण° आन्दोलनम् 11 *a* °किलिकिंचिय° सुरतशब्द 12 सग्गपरिछदहु स्वर्गस्य प्रतिबिम्ब एति 13 गिरिणियकरु गिरिरेव निजहस्त

वणु णहवणु वेल्लि वि णायवेल्लि रणु रइरणु भल्लि वि मयणभल्लि ।
जरु विरहजरु जि णउ अत्थि अण्णु बहुवण्णचित्तु णउ चाउवण्णु ।
घरु सिरिघरु चोरें वि चित्तचोर बज्झंति केस रोवंति मोर ।
वउ णववउ रूवु वि णिरु सुरूवु रिसि खीणदेहु वम्महु विरूवु ।
रिणु तिलरिणु बंधणु पेम्मबंधु जलु चंदकंतजलु दलु सुगंधु ।
कामिणि खगकामिणि अलिवमालु धूमु वि कालागरुधूमु कालु ।
दीव वि जलंति माणिक्कदीव जीव वि वसंति जहिं भव्वजीव ।
गुणु जिणगुणु धम्मु अहिंसधम्मु फलु पुण्णफलु जि कम्मु वि सुकम्मु ।
किं वण्णमि भूमि वि भोयभूमि सामि वि दहमुहु खयरायसामि ।

घत्ता—एक्केक्कउ जो गुण संभरइ सो तहु अंतु ण पेक्खइ ॥
जंगसुदरत्तु लंकहि तणउ कवणु कईसरु अक्खइ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—कलरवु रुणुरुणतमाणिणिमुहमंडणु जणमणिट्ठओ ॥
छडयणरूवधारि ता पावणि रावणभवणि पइट्ठओ ॥ छ ॥

चक्केसरु वरलक्खणपसत्थु दिट्ठउ दहमुहु सीहासणत्थु ।
ण गिरिसिहरासिउ णीलमेहु पण्णारहचावपमाणदेहु ।
चामीयरवीढि णिहित्तचरणु बलवंतकालु बलहीणसरणु ।
विज्जिज्जइ चलचमरीरुहेहिं वण्णिज्जइ वरबंदिणमुहेहिं ।
गाइज्जइ सरगयभावएहिं सलहिज्जइ सुरणरसेवएहिं ।
दीसइ णवकप्पदुमफलेहिं माणससरवररत्तुप्पलेहिं ।
मउडग्गरयणमहियललिहेहिं पणविज्जइ सुरवइसणिहेहिं ।
चिंतइ मारुइ उव्विण्णचित्तु हा एण णिहित्तउ परकलत्तु ।

घत्ता—एसज्ज एउ एवड्डु कुलु तो वि कैयउ सकलंकणु ॥
हयविहि सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउ ढंकणु ॥ १५ ॥

---

२ AP विरहजूरु णउ ३ A बहुवण्णु चित्तु गउ वाउवण्णु, P बहुवण्णु चित्तु णउ वाउवण्णु ४ AP चोरु वि चित्तचोरु ५ A णिरूवु ६ A गुण जिणगुण ७ AP जगि सुदरत्तु

**15** १ A ओविण्ण° २ AP वि हित्तउ ३ P कय सकलकणु

---

**14** 6 *a* णहवणु नखव्रणम्, न तु कस्य शस्त्रघात 9 *a* वउ वपु वयो वा 10 *a* तिलरिणु स्नेहऋणम् 11 *a* अलिवमालु भ्रमरकोलाहल

**15** 1 जणमणिट्ठओ जनमनसि इष्ट 2 छडयण° भ्रमर 5 *b* बलवंतकालु बलवतां यम 11 एसज्ज एउ ऐश्वर्यमेतत्, सकलंकणु सकलङ्कत्वम् 12 ढंकणु आच्छादनम्

## 16

दुवई—पुणु णिवसवणपूरकत्थूरियपरिमलगहणकुसलओ ॥
दहमुह देहि सीय मा णासहि ण गुमुगुमइ भसलओ ॥ छ ॥

सो सइ जि कामु ण कामबाणु   तरणीबिंबाहरि ढुक्कमाणु ।
कोमलकरयलवारिज्जमाणु   चमराणिलेण पेरिज्जमाणु ।
थणजुयलि णाहिमंडलि घुलंतु   पिंछहि कवोलेपत्तइ दलंतु ।
कुडिलालयपंतिउ दरमलंतु   मुहकमलवासससासहु चलंतु ।
थिउ दारि सहइ ण इंदणीलु   थिउ भालि गहियवरतिलयलीलु ।
थिउ उरि पियपहरकिणकु णाइ   थिउ मणि सरसरपुंखु व सुहाइ ।
थिउ कण्णमूलि ण मम्मणाइ   बोल्लइ मणियाइं घणघणाइं ।
थिउ उरूयलि सहइ सुराहि   ण किंकिणि कामिणिमेहलाहि ।

घत्ता—सो महुयर वम्महु किं भणमि णारिहि वयणइं चुंबइ ॥
जाइवि स्वयरिंदहु रयणमइ कुंडलकमलि विलंबइ ॥ १८ ॥

## 17

दुवई—बुज्झिवि णयणवयणतणुलिंगहिं सीयारइवस गय ॥
दहवयण विमुक्कणीसासरुहाणलताविय गय ॥ छ ॥

गउ अलि पुरपच्छिमगोउरग्गु   आरूढउ जोयइ वणु समग्गु ।
दिट्ठी वणसिरि सहु खेयरीहि   सीय वि परिवारिय खेयरीहि ।
वणु देइ ससाहिंहि रामविरहु   सीयहि पुणु वट्टइ रामविरहु ।
वणि लोहियाउ पत्तावलीउ   सीयहि पुसियउ पत्तावलीउ ।
वणि पमयइं फलसार गयाइं   सीयहि झीणइं सारगयाइं ।
वणि पत्तहि तेत्तहि वेल्लिवलय   सीयहि थिय पसिढिल बाहुवलय ।
वणि खेल्लइ हरिसिज्जइ वि हसु   सीयहि वट्टइ जीवियविहसु ।

16 १ P भसलुओ २ A बिंबाहर° ३ A कवोलि ४ AP °मासवासहु ५ AP हारि ६ A भाइ P जाइ ७ AP विहाइ ८ AP मणियाइं व घण° ९ AP वत्तइं

17 १ P जोइय २ P झीणाइं

16 2 मा णासहि विनाश मा गच्छ 6 *a* कुडिलालय कुटिलालका *b* °सासहु °श्वासस्य 7 *b* भालि ललाटे 8 *a* पियपहरकिणकु भर्तृकरदत्तनखकणिका, *b* सरसरपुंखु स्मरबाणपुंखवत् 10 *a* सुराहि सुशोभमानाया

17 2 °णीसासरुहाणल° निश्वासोत्पन्नोऽग्नि 4 *a* खेयरीहि पक्षिणीभि 5 *a* ससाहिंहि स्वशाखाभि, रामविरहु रामाणां स्त्रीणां विशिष्टं रहः प्रच्छादनमेकान्तं वा 6 *b* पुसियउ परामृष्टा 7 *a* पमयइं मर्कटाः, *b* सारगयाइं सारभूतशरीराणि 9 *b* जीवियविहसु जीवितव्यविध्वंस.

वणि दिसमुहि सोहइ लग्गु तिलउ सीयहि णिडौलु णिलुहियतिलउ ।
वणि तरुवदइ रूढजणाइ सीयहि णयणइ विणयजणाइ ।
वणि साहारु जि मारइ पियत्थि सीयहि साहारु ण को वि अत्थि ।
भडसासि व बलविहडणविसण्ण जहिं अच्छइ परमेसरि णिसण्ण ।
त[४] सीसवितलु खगभमरु आउ ण वइदेहीजीवियहु आउ ।
घत्ता—पडिबिंबिउ दहहिं वि पयणहहिं आसण्णउ परिघोलइ ॥
सो छप्पउ सीयहि कमकमलु पसरियपत्तहिं लोलइ ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—सीयासावभाउ ण भीसणु ण हुयवहु समिद्धओ ॥
असरिससुहडचक्कचूडामणि पावणि मणि विरुद्धओ ॥ छ ॥
सीयहि केरउ दुचरित्तगहिउ तणुचिंधु पलोइवि रामकहिउ ।
णियहियवइ चिंतइ अजणेउ परणारिदेहसतावहेउ ।
मेरु मारमि अज्जु जि रणि दसासु गलि लायमि कालेकियतपासु ।
पइवय णीरय पइबद्धपणय वाणारसि पावमि जणयतणय ।
ण ण हउ दूयउ राहवेण पट्ठविउ मज्झु कि आहवेण ।
किंकरु पहुवयणुल्लघणेण णिंदिज्जइ हियकारि वि जणेण ।
अक्खमि भत्तारहु तणिय वत्त मा मरउ महासइ चारुणेत्त ।
इय चिंतिवि अवसरु मग्गमाणु जा णिहुयगउ थिउ कुसुमबाणु ।
अत्थमिउ सूरु ता उइउ चदु ण सीयहि दुहवल्लरिहि कदु ।
आपहु गडमडलि घुलतु तहु तेउ डहइ अग्गि व जलतु ।
अरुणच्छवि ण रामणहु कुद्धु णहसरि ण सियसररुहु विउद्धु ।
अहवा लइ ससहरु किं ण चारु णहसिरिकरदप्पणु अमयसारु ।

३ AP णिलाडि ४ P ते

**18** १ AP °भाव २ A दुचरित्तु ३ AP °देहु सताव° ४ P परु ५ AP कालकयत° ६ A सीयादुह°

10 *a* दिसमुहि दिशामुखे 12 *a* साहारु आम्रवृक्ष पियत्थि प्रियार्थिन, *b* साहारु साधार धीरत्वदाता 13 *a* बलविहडणविसण्ण बलस्य चातुरङ्गस्य बलभद्रस्य वा विघटन वियोजन वा 14 *a* सीसवितलु शिशपावृक्षतलम् 16 °पत्तहिं पक्षै

**18** 1 °सावभाउ °शापभाव २ असरिस° अनुपमा, पावणि हनूमान् 6 *a* णीरय निःपापा, पइबद्धपणय पतिबद्धस्नेहा 10 *b* णिहुयगउ निभृताङ्ग 11 *b* कदु कन्दो मेघो वा 13 *a* अरुणच्छवि उदये सति रक्तवर्णो भवति, *b* णहसरि नभसरसि, विउद्धु विकसितम्.

मिगमुद्दइ मुद्दिउ कतिपिंडु पियलेहहु केरउ ण करडु ।
मेहलियहि ण सतोसकारि खेयरणाहहु ण पाणहारि ।
घत्ता—जणलोयणणियरणिवासघरु सुहणिहि अमयकलालउ ॥
ससि सीयं वि रामणतणु डहइ ण खयसिहिसिहमेलउ ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—णं सहइ हसइ रसइ परु पुच्छइ माणिणिविसयसंगह ॥
ढकइ दोसणिवहु गुण पयडइ अहणिसु करइ सकह ॥ छ ॥
सिरु धुणइ कणइ णीसासु मुयइ सयणयलि पडइ अलियउ जि सुयइ ।
परिभमइ रमइ णउ कहिं मि ठाणि पियमित्तभवणि उज्जाणि जाणि ।
णायण्णइ गेउ मणोज्जवज्जु ण पउजइ किं पि वि रायकज्जु ।
णउ ण्हाइ ण परिहइ दिव्वु वत्थु णउ ढोयइ विविहाहारि हत्थु ।
णउ बंधइ णियसिरि कुसुमदामु णउ मण्णइ खगकामिणिहि कामु ।
ण विलेवणु सुरहिउ अंगि देइ विरहाउरु णउ अप्पउ विवेइ ।
णउ भूसइ तणु णउ महइ भोउ णउ रुच्चइ तहु एक्कु वि विणोउ ।
जहिं जाइ तहिं जि सो सीय णियइ वारिज्जइ दुक्की केण णियइ ।
अंधारए वि समुहउ घडिउ सीयहि मुहु पेक्खइ दिसहि जडिउ ।
पाणिउ वि पियइ सो तहिं ससीउ परवसु वट्टइ वीसद्धगीउ ।
करदीवदित्तु उववणहिं चलिउ पियविरहहुयासें णाइ जलिउ ।
घत्ता—जहिं अच्छइ णियडपरिट्ठियउ अजणतणुरुहु बालउ ॥
तहिं दहमुहु रइसुहु कहिं लहइ वम्महु जहिं पडिकूलउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—अह अणुकूलु होउ मयरद्धउ सीयहि सीलदूसण ॥
किज्जइ कहिं मि बप्प खज्जोए किं रवियरविहूसण ॥ छ ॥
थिउ सीयहि पुरउ खगिंदु केम णियमरणभवित्तिहि जीउ जेम ।

७ A मृग° ८ AP ण खेयरणाहहु ९ A सीउ, P सीयलु

19 १ A तसइ ण हसइ सरइ परु २ A दिव्ववत्थु ३ AP देहि ४ A णियडि परि°

15 *a* मिगमुद्दइ हरिणलाञ्छनेन 16 *a* मेहलियहि मैथिल्या 18 सीय वि शीतोऽपि, खयसिहिसिहमेलउ प्रलयकालाग्निशिखामेलापक

19 1 ण सहइ अन्य न सहते 2 सकह तस्या समीचीना कथाम् 3 *b* सुयइ स्वपिति 4 *b* जाणि वाहने 5 *b* विवेइ वेत्ति जानाति 12 *a* ससीउ शीतयुक्त सीतायुक्त च, *b* वीसद्धगीउ दशग्रीवो रावण

पभणइ सत्तमु दिणु जइ वि पत्तु　　　　पिइ तो वि ण किं सवरहि चित्तु ।
वित्थिण्णु मयरहरु कवणु तरइ　　　　तिमिगिलतंगिलगिलियगु मरइ ।
दुग्गमु तिकूडु गिरि कवणु चडइ　　　　कक्करि सयसक्करु होवि पडइ ।
पायालपरिह जणजाणियसक　　　　भूगोयरु पइसइ कवणु लंक ।
जइ चिंतहि कुलु तो तुहु जि कासु　　　　पोसिय जणए जणवयपयासु ।
जइ चिंतहि परिहउ तो सलग्घु　　　　हउ उत्तमु भुवणत्तइ महग्घु ।
जइ चिंतहि एवहिं रामपेम्मु　　　　तो तहु दसाणि तुंहु अण्णु जम्मु ।
जइ चिंतहि सिरि तो हउ जि राउ　　　　किं लग्गउ तुज्झु सइत्तवाउ ।
हलि वीणालाविणि मणविमद्दि　　　　महएवि महारी होहि भद्दि ।

घत्ता—हलि सीय महारइ खग्गजलि आहडलु वि णिमज्जइ ॥
आलिंगहि मइ सुललियभुयहि रामें किं किर किज्जइ ॥ २० ॥

## 21

दुवई—करिसिररत्तलित्तमोत्तियणियरचियकेसरालओ ॥
सतइ सीहि सीय ससहरमुहि किं रम्मइ सियालओ ॥ छ ॥

अच्छउ स रामु लक्खणु हयासु　　　　दसरहु वि महारउ ताम दासु ।
किं किज्जइ चरणविहूसणत्तु　　　　जइ लब्भइ हलि चूडामणित्तु ।
किंकरमहिलहि किं तणुगुणेण　　　　किं पाउयाहि मणिमडणेण ।
महु दासि वि तुहु महएवि होहि　　　　लच्छिहि एतिहि कोप्परु म देहि ।
उरयलु मेरउ लालउ विसत्थु　　　　मा मुसलेकिणाकिउ होउ हत्थु ।
अणुवसहु एहि महु पजलीइ　　　　मा सलिलु वहहि फणिचुभलीइ ।
महु खग्गघायलछणहरेण　　　　खंडें रहुवइसिरखप्परेण ।
मा वहउ विणेउर चरणजुयलु　　　　करमरि कालायसलोहणियलु ।
थिय सइ णियपियमलीणचित्त　　　　उत्तरु ण देंति पहुणा पउत्त ।

घत्ता—पइ सीइ अज्जु तिलु तिलु करमि भूयह देमि दिसाबलि ॥
पर पच्छइ दूसह होइ महु विरहजलणजालावलि ॥ २१ ॥

---

**20** १ A °तगिल° २ AP जणवए पयासु ३ AP हलि अण्णु

**21** १ AP कि किर गुणेण २ P मुसलु किणकिउ

---

**20** 4 *a* पिइ प्रिये सीते, सवरहि रामस्योपरि सकोचय 5 *b* तिमिगिलेत्यादि तिमिर्मत्स्यविशेषः स गिल्यते येन स तिमिगिलः, सोऽपि गिल्यते येन स तद्गिलः तेन गिलिताङ्गः 6 *b* कक्करि गिरिदन्ते, सयसक्करु शतखण्डः 8 *b* जणवयपयासु लोकप्रसिद्धिः 11 *b* सइत्तवाउ सतीत्ववातः

**21** 2 सतइ सीहि सिंहे विद्यमाने सति 8 *a* अणुवसहु एहि निवासं कुरु 9 *a* °लछणहरेण चिह्नधरेण 10 *a* विणेउरु विगतनूपुरम्, *b* करमरि हे दासि

## 22

दुवई—ता मंदोयरीइ दिण्णुत्तरु जपासि सुयणगरहिय ॥
किं तियसिंदवंदकंदावण रावण जुत्तिविरहिय ॥ छ ॥
हा पुरिस हुंति सयल वि णिहीण घरघरिणि जइ वि उव्वसिसमाण ।
कामेण तइ वि ते खयहु जंति परघरदासिहि लग्गिवि मरंति ।
कहिं काइहि रत्तउ रायहंसु कहिं खरि कहिं सुरकरिहत्थफंसु ।
कहिं भूगोयरि कहिं खेयरिंदु हा मयणजोग्गपरिणाणि मंदु ।
दीसइ विद्धसियतिमिरवंदु जिहं गगहि तिह वाहलहि चंदु ।
महिलतरु णर ण मुणंति किं पि कामुय करंति दुच्चरिउ जं पि ।
ता णियघरु गउ लज्जिवि दसासु मयसुय ढुक्की जाणइहि पासु ।
अवलोइय सीयाएवि ताइ ण जलहिवेल ससहरकलाइ ।
ण विउसमइइ सुकइत्तलील ण स ज्जि ताइ सुविसुद्धसील ।
ओलक्खिय पयजुयलच्छणेण जा चिरु घल्लिय णिंदिय जणेण ।
मजूसइ सहु कत्थइ वणंति सरिसरसीयलसिंचियदियंति ।
घत्ता—हा अँघडिउ घडिउ विहायएण इंदीवरदलणयणहु ॥
आणिय सा मेरी एह सुय कालरत्ति दहवयणहु ॥ २२ ॥

## 23

दुवई—जणणसुयाहिलासणियवइखयचिंतामउलियच्छिया ॥
मेइणियलि दड त्ति णिवडिय मंदोयरि दुस्सहदुक्खमुच्छिया ॥ छ ॥
पच्छाइय कामिणिकरयलेहिं सिंचिय सुयधसीयलजलेहिं ।
विज्जिय पडिचमरुक्खेवएहि आसासिय चंदणलेवएहिं ।
कह कह व देवि सज्जीव जाय भणु कासु अवच्छल होइ माय ।
मुहकुहरहु वियलिय महुर वाय हा सीय पुत्ति तुहु मज्झु जि जाय ।

22 १ A °परियाणि P °परिमाणि २ A तिमिरचदु ३ P omits जिह ४ P सुकइत्तणेण ५ P adds after this ण जिणवरधम्मु अहिंसणेण ६ P adds after this ण सुरसरीइ मयरहरलील ७ P अयडिउ

23 १ A जणणि २ A omits दुस्सह° ३ AP विजिय ४ A ण वच्छल

22 5 *a* काइहि काकभार्यायाम् *b* सुरकरिहत्थफंसु ऐरावणकरस्पर्श 6 *b* मयणजोग्गपरिणाणि कामशास्त्रपारज्ञान 7 *b* वाहलहि नगरजलवाहिन्याम् 9 *b* मयसुय मयराज पुत्री मन्दोदरी 10 *a* सीयाएवि सीतादेवी 11 *b* स ज्जि सा सीता एव 14 विहायएण विधात्रा

23 1 जणणसुयाहिलास° पितु पुत्रीवाञ्छा

हा विलसिउ किं विहिणा खलेण वोलीणु जम्मु दुक्कियफलेण ।
तुज्झुप्परि रत्तउ तायचित्तु हा दइवें विहुरतरि णिहित्तु ।
इय सोयभावणिम्मोयणाइं बाहुल्लकणोल्लइं लोयणाइं ।
पेच्छिवि सीयाइ सदुक्ख रुण्ण मंदोयरिथणणीसरिउ थण्ण ।

घत्ता—आसण्णइ थिइ विहवत्तणइ पत्तउ सीयइ जोइउ ॥
थण मेल्लिवि रामणगेहिणिहि हारु व खीरु पधाइउ ॥ २३ ॥

## 24

दुवई—णिम्मलसीलसलिलभरवाहिणि णिच्छइ णिययदेहए ॥
जाणइ तेण सीयदुद्धोहें जिणपडिमं व रेहए ॥ छ ॥

तं कि सीयलु रहुवइअसंगि णिवडंतु दुद्धु सिमिसिमइ अंगि ।
खगवइकंतइ पुणरवि पवुत्तु मा इच्छहि पुत्ति पुलत्थिपुत्तु ।
हउं जणणि तुहारउ जणणु एहु ता सीयहि रोमंचियउ देहु ।
वुत्तउ पइवयगुणादिण्णछाइ सच्चउ तुहुं मेरी माय माइ ।
सच्चउ दहमुहु महु होइ बप्पु णासिवि तहु केरउ दुव्वियप्पु ।
मइं पेसहि रामहु पासि ताम कुडि मेल्लिवि जाइ ण जीउ जाम ।
जणणीइ पबोल्लिउ रामरामि कुरु भोयणु पुत्तिइ मज्झधामि ।
आहारें अंगु अणंगधामु अंगें होंतें पुणु मिलइ रामु ।
इय भणिवि देवि गय णिययणिवासु हियवउ हरिसिउ अंजणसुयासु ।
महिवइभिच्चहं घल्लिवि रउद्दं चेयण चप्पंति महंत णिद्द ।
समरंगणि णिज्जियअरिवरेण लहु धरिउ वाणरायारु तेण ।

घत्ता— अविहियण्हाणहि णिरु णिरसणहि मलिणहि मइलियवत्थहि ॥
सो सीयहि रामविओइयहि गडयलासियहत्थहि ॥ २४ ॥

५ AP विहिणा कि ६ A वोलीणजम्मि, P वोली णुजम्मि ७ AP वाहबुकणोल्हइ ८ A सुदुक्खरुण्णु, P सदुक्खु रुण्णु ९ AP थण्णु १० P जाइयउ ११ P पधाविउ

**24** १ AP णिच्छिह २ A णियइ ३ AP सित्त तण दुद्धोहें ४ A जिणपडिबिंब ५ A तुहारी ६ P रामविलइयहि

9 *a* °णिम्मोयणाइं निगतमोदानि हर्षरहितानि, *b* बाहुल्लकणोल्लइं बाष्पकणार्द्राणि 10 *b* थण्ण दुग्धम् 11 विहवत्तणइ विधवात्व

**24** 1 णिच्छइ निःस्पृहा निजशरीरेऽपि २ जाणइ सीता, सीयदुद्धोहें श्वेतदुग्धप्रवाहेण 3 *a* रहुवइअसंगि राघवस्यासंगमे सति 4 *a* खगवइकंतइ मंदोदर्या 8 *b* कुडि शरीरम् 9 *a* रामरामि हे रामभार्ये 15 गडयलासिय° गण्डतलाश्रित

## 25

दुवई—लक्खणु पेक्खमाणु भारहियहि सेणिय पयइ दंतओ ॥
दुक्कई कइवरिंदु तहि णियडइ कइगुण अणुसरंतओ ॥ छ ॥

पत्तलवट्टुलयरतंबकण्णु णवकणयकंजकिंजक्कवण्णु ।
सिहिविप्फुलिंगवलपिंगलच्छु णीरोमभउहु ल्ववंतपुच्छु ।
ससिकंतिवंततिक्खग्गदंतु कयकरजुयलंजलि बुक्करंतु ।
अवलोइउ देविइ पमउ पंतु थिउ अग्गइ पयपंकय णमंतु ।
तेणंबेहि दाविउ दइयणेहु सहु अगुत्थलियइ घित्तु लेहु ।
परमेसरि मइं रंजियमणासु परियाणहि पुत्तु पहंजणासु ।
रामहु दूयउ हणुवंतणामु विज्जाहर वरु वीसमउ कामु ।
तुह विरहझीणु मायंगगामि पइ सुमरइ अणुदिणु रामसामि ।

घत्ता—णउ बोल्लइ ण परिग्गहि रमइ का वि णारि णालोयइ ॥
जोईसरु सासइ सिद्धि जिह तिह पइ पइं णिज्झायइ ॥ २५ ॥

## 26

दुवई—दहमुहकुइयचित्तु अवलोयइ असिझसपरसपहरण ॥
लक्खणु खणु वि माइ णउ मेल्लइ तुह कमकमलसुयरण ॥ छ ॥

ता सीयइ चिंतिउ णियमणेण णिल्लक्खण हउ इक लक्खणण ।
महु हयरामहु कहिं मिलइ रामु कहिं वाणरु कहिं भत्तारु णामु ।
कहिं वाणरु कहिं भिक्खु पत्तु आलिहियउ कहिं आणियउ पत्तु ।
परिचिंतिवि महु भोयणउवाउ रिउरइउ एहु मायासहाउ ।
जाणिवि वइदेहिहि अंतरंगु पुणु भासइ सुइसुहयरु अणंगु ।
सुणि रामदूउ हउ कह ण होमि गूढइं अहिणाणवयाइं देमि ।

25 १ A मणियइ २ A ढुक्कउ ३ P पुछु ४ AI ससिक्तर्कति ५ A तण तहि ६ AP दाविय° ७ A हणुमतु P हणवतु ८ P पइ पगइणि झायइ

26 १ AP °परसु° २ A सुमरण ३ AP भत्तार ४ P पारच्चिनइ ५ P आणिवि

25 1 भारहियहि भरतनामजनकस्यापत्य भारात तस्या सीताया वाण्याश्च, सणिय शनै 2 कइवरिंदु कविर्वानरश्च कइगुण कविगुणान् कपिगुणाश्च 3 *a* °वट्टुलयर° वतुल्तरौ 6 *a* पमउ प्रमुगो वानर 9 *b* वीसमउ विशतितम 12 पइ पति

26 1 °कुइय° कुपितम् 2 °सुयरण स्मरणम् 4 *a* हयरामहु हतरमणीयताया 8 *b* अहिणाणवयाइ अभिज्ञानपदानि

एक्कहिं दिणि पइ किउ पणयकोउ छिंकिउ राहवु अणुहुत्तभोउ ।
वलउल्लउ चँप्पिउ सहु करेण पइ णिद्धणाहणेहायरेण ।

घत्ता—हारावलि थणयलि सजमिय णयणइं वि सताविच्छइं ॥
पइ वियसियकुसुमइं सिरि कयइं पइजीवियणेवत्थइं ॥ २६ ॥

## 27

दुवइ—णियवइ चित्ति धरिवि पसरियजसु कउ मिसु णिसुउ रहुसुओ ॥
मंदिरपंजरत्थु जयजीवरवेण पसाइओ सुओ ॥ छ ॥

अभणतिइ रहुपहुजीयभद्दु पुणु रइउ तिलउ कुंकुमरसद्दु ।
थिरु चियउ सम्मवणि कणयवत्तु जइयहु थिउ पिउ उववणि रमंतु ।
णासाणालिहिं परिमलु पियंतु दलवेल्लहलउ वेल्लिउ णियंतु ।
फलघणथणाउ अकुरणहाउ फुल्लधयलीलालयसुहाउ ।
पल्लवकराउ महुरत्तियाउ णावइ वसंतरायहु तियाउ ।
तइयहं तुह मण ईसाविहिण्णु णाइद्धउ कंचुउ दइयदिण्णु ।
परिहिउ पणामवित्थारएण फुट्टउ पुल्लए गरुआरएण ।
परिपालियधम्मसउच्चसच्चु ता सायइ वुज्झिउ रामभिच्चु ।
करपल्लवेण पियलेहु गहिउ मेल्लेप्पिणु वाइउ कवडरहिउ ।
मणु पसरइ कर पसरंति णेय को जाणइ दुज्जयकम्मभेय ।
दूरत्थ वि गाढउ देवि खेमु णियकुसलवत्त हउ कहमि रामु ।
मणवासिणि दहरहरायसुण्हि लइ सव्वु चारु सरयंदजोण्हि ।

घत्ता—धीरी होज्जसु हलि जणयसुए भडरणरंगि भिडेप्पिणु ॥
ढोण्मी तुहु महु वधविण दससिरसीसु खुडेप्पिणु ॥ २७ ॥

६ A उक्किउ P उिक्किउ ७ A चंपिउ ८ P पयनीयिय

**27** १ A णियपइ २ P वारवि AP पसाहिओ ४ A अभणति परहु ५ A थवियउ P थविय ६ हलवेल्लिहल्लउ, P दलवेल्लहल्लउ ७ AP °घणघणाउ अकुरहणाउ ८ AP फुल्लधयणीलालयसुहाउ ९ AP मणु १० P °ेमावहिल्ल ११ A परहिउ १२ P वित्थारएण १३ A एण १४ A °सुण्ह १ A °जुण्ह

11 सताविच्छइं मकज्जलानि कृतानि 12 पइजीवियणेवत्थइं अविधवाभूषणानि

**27** 1 णियवइ निजपति राम कउ मिसु रामचन्द्रे मङ्गलशब्दोच्चारणव्याजं कृतं, णिसुउ नृपु मध्ये श्रुतो विख्यात, पक्ष नि अतिशयेन सुअ हे सुत 2 पसाइओ सुओ सभूषित शुक कीर 4 *a* चियउ स्थापितम्, ससवणि स्वकर्णे 5 *a* णासाणालिहि नासा एव नालिका तया, *b* °वेल्लहलउ कोमला 6 *b* फुल्लधयलीलालय° भ्रमरसदृशा अलका तै सुखा शुभा वा 7 *b* तियाउ स्त्रिय 8 *b* णाइद्धउ न परिन्तिम्, दइयदिण्णु भर्तृदत्तम् 11 मेल्लेप्पिणु उद्घाट्य 13 *a* खेमु आलिङ्गनम्

## 28

दुवई—अणुदिणु लच्छिणाहु पइ सुमरइ तसियकुरंगलोयणे ॥
झायवि तिजगसामि णिवसिज्जसु कइवय दियह परयणे ॥ छ ॥

तूसेप्पिणु सीयइ अद्दइउ ता कउ अगुलियहि अगुलीउ ।
कइ पुच्छिउ लघियविउलखयलु तेण वि अक्खिउ वित्ततु सयलु ।
विण्णविय देवि लइ भत्तु पाणु विणु तेण ण थक्कइ मणुयप्राणु ।
त तासु वयणु पडिवण्णु ताइ गउ पावणि सूरुग्गमि पहाइ ।
सीयासुदरिहि खगोयरीइ उवयरिउ चारु मदोयरीइ ।
अइरावयलीलागामिणीहि मज्जणउ भरिउ खगकामिणीहिं ।
पल्हत्थियाइ तत्तइ जलाइ किं ताविया जइ णिम्मलाइ ।
णियकुलु वि डहइ णिग्घिणु हुयासु कह खमइ विवक्खहि जणियतासु ।
तिल्मुक्के तेल्ले मुक्क केस विणु तिलसबधे सुहि वि वेस ।
किं पुणु धम्मिल्लय कुडिलभाव हरिणालणील हयभमरगाव ।

घत्ता—सण्हइ चोक्खइ ससहरसियइ राहवजससकासइ ॥
दीहरइ सुविउलइ सुहयरइ देविहि दिण्णइ वासइ ॥ २८ ॥

## 29

दुवई—थिय परिहिवि मयच्छि ण पसाहणु गेण्हइ पियविआइया ॥
ताव रसोइ सव्व तहि आणिय मदोयरि पराइया ॥ छ ॥

वदिवि जिणि मणि समसुहपयट्टि आसीण भडारी रयणपट्टि ।
कलहोयथालकच्चोलपत्त ण धरणिवीढि णक्खत्त पत्त ।
उण्हुण्हउ दिण्णउ पढमपेउ ण दाविउ दहमुहि विरहवेउ ।
ण तिक्खु मिट्ठु मल्दोसणासु ण भासिउ पग्मजिणेसरासु ।
पुणु दिण्णइ णाणासालणाइ ण दहमुहरइआसालणाइ ।
आणेप्पिणु घल्लिउ दीहु कूरु ण दहमुहि सीयाभाव कूरु ।
ढोइयइ ससूवइ रसवहाइ ण दहमुहि सीयारइवहाइ ।
उवणिय घियधार महासुयध दहमुहि सीयादिट्ठि व सुअध ।

28 १ A सुअरइ २ A परवण P परियण P रूमप्पिणु ४ AP मणुअपाणु ५ AP add after this आप्पर अगु अणगधामु, अगें होत पुणु मिलइ रामु ६ A ज्यासु ७ AP मस ८ A दीहयरइ

29 १ A परिहवि २ AP पराणिया ३ AP वदिवि निण मणि ४ AP घित्त ५ A दहमुह°

28 1 तसियकुरगलोयण चकितहरिणलोचने 2 परयण परजनमध्ये 5 a अद्दुईउ अद्वितीयम् 6 b पहाइ प्रभाते 10 a णियकुलु काष्ठम 11 b वस द्रोग्य

29 1 पसाहणु कुङ्कुमकर्पूरचदनादिमण्डनम् 2 पराइया प्रेषिता 5 a समसुहपयट्टि समतासुखप्रवर्तके 7 b °रइआसालणाइ °रत्याशाबधनानि 9 a ससूवइ शोभना दालिविशेषा रसयुक्ता 10 b सुअध अतिशयेनान्धा

णिण्णेहवतु णिरु मद्दु तक्कु   ण दहमुहि सीयामणवियक्कु ।
उवणिउ माहिसु दहि थड्डु गव्वु   ण दहमुहि सीयामाणगव्वु ।
उवणिउ बहुविहु बोराइपाणु   ण दहमुहरमणहु कोसपाणु ।
अइसरसइ भक्खइ चक्खियाइ   ण दहमुहि सर सइ भक्खियाइ ।
कइकव्वु व कयमत्तापवाणु   भोयणु भुत्तउ खीरावसाणु ।
अच्चवियउ पुणु मुद्धहि विहाइ   पाणिउ दिण्णउ दहमुहहु णाइ ।

घत्ता—पूयफलेण सचुण्णएण पत्तगुणेण समग्गउ ॥
तबोलराउ रामु व सइहि छज्जइ अहरविलग्गउ ॥ २९ ॥

## 30

दुवई—इय भुजेवि भोज्जु भूमीसुय सीलगुणवुवाहिणी ॥
थिय णदणवणति सीमंतलि सीरहरस्स गेहिणी ॥ छ ॥

एत्तहि हणुमतु वि पत्तु तित्थु   अच्छइ दुग्गतरि रामु जेत्थु ।
हा सीय सीय सकलुणु कणतु   णियकरयलेण उरु सिरु हणतु ।
बोल्लाविउ मारइ तें कयत्थु   मउडग्गचडावियउहयहत्थु ।
भणु किं दिट्ठउ सिसुहरिणणेत्तु   किं णउ कुमार मेरउ कलत्तु ।
कि मुच्छिउ णिवडइ जीवचत्तु   किं महु विरहें पचत्तु पत्तु ।
त णिसुणिवि हणुए उत्तु एव   दिट्ठी जाणइ जीवति देव ।
दिट्ठउ रावणु ण कालिकयतु   सीयहि सकामवयणाइ देंतु ।
दिट्ठी मदोयरि पिउ चवति   देविहि हियउल्लउ सथवति ।
अवरु वि दिट्ठउ आरामहतु   उप्पण्णउ चक्कु पहाफुरतु ।

घत्ता—सिरिमतु सरूवु वि दहवयणु सीयहि मणु णासघइ ॥
भरहुप्परिगामिय तेयणिहि पुप्फयतें को लघइ ॥ ३० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे सुग्गीवहणुवतकुमारागमण
सीयादसण णाम तिसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७३ ॥

६ A थड्डगत्तु ७ P मोराइपाणु ८ A कइमत्तावपाणु, I कयमत्तापमाणु ९ AP अचवियउ
**30** १ P सीसवयलि २ A हणवतु ३ A रुयतु ४ A उभयहत्थु ५ AP महाफुरतु
६ AP सुरूवु ७ P पुप्फयतु ८ A हणवतकुमारगमण णाम तिहत्तरिमो

12 गव्वु गव्यम् 13 *a* बोराइपाणु बदराम्लिकादिपानम् 14 *b* सर कामानुबद्धवचनादीनि स्मरसुखानि वा 15 *a* °मत्तापवाणु मात्राप्रमाणम् *b* खीरावसाणु दुग्धपानमवसाने कृतम् 16 *a* अच्चवियउ हस्तमुखप्रक्षालनम् 17 पूयफलेण पूगफलेन पवित्रफलेन च

**30** 2 सीरहरस्स हलधरस्य रामस्य 5 *a* कयत्थु कृतार्थ कृतप्रयोजन 11 *a* आरामहतु आराभिमहत् चक्रम् 12 णासघइ न आश्रयति नाकलयति नानुरञ्जयति च 13 पुप्फयत चन्द्रसूर्यौ

## LXXIV

परद्दु ण देइ मणु अवसें मउलइ सकलकहो ॥
फुल्लइ पउमिणिय करफसें कहिं मि मियकेहो ॥ ध्रुवक ॥

### 1

हेला—सीयादेवि देव दीहुण्ह णीससती ॥
सुअरइ तुह पयाइ भत्तारभत्तिवती ॥ छ ॥

सिरि व उविंदहु — सरि व समुद्दहु ।
मेत्ति व णेहहु — मोरि व मेहहु ।
भमरि व पोमहु — सति व सोमहु ।
करिणि व पीलुहि — करहि व पीलुहि ।
विउसि व छेयहु — हरिणि व गेयहु ।
णववणकंतहु — जेंव वसंतहु ।
सुअरइ कोइल — धीरत्तें इल ।
जिणगुण जाणइ — तिह तुह जाणइ ।
तुह सा राणी — खतिसमाणी ।
भव्वह रुच्चइ — खणु वि ण मुच्चइ ।
लक्खणचिंतइ — बहुजसवंतइ ।
वरकविरिसि व — धम्मपवित्ति व ।
समसपत्ति व — साहसथत्ति व ।
कुलहरजुत्ति व — जिणवरभत्ति व ।
णिरु परलोइणि — तुह सुहदाइणि ।
सा आणिज्जइ — रिउ मारिज्जइ ।

घत्ता—विरहहुयासहउ पियवत्तइ सुइवहढुकइ ॥
वियसिउ रामदुमु ण सित्तउ अमियझलकइ ॥ १ ॥

---

**1** १ A मयकहु २ P adds after this महि व णरिंदहु सइ व सुरिंदहु ३ A मित्तेव ४ A सोमहु ५ AP हिरि व सुसीलहि ६ AP णववहुकंतहु ७ AP read *a* as *b* and *b* as *a* ८ A °जसवतिइ ९ AP °कइ° १० AP add after this सज्जणमेत्ति व ११ AP अमय°

---

**1** 1 परद्दु चन्द्रस्य रावणस्य च मउलइ सकुचति 7 *b* सति शान्ति 8 *b* करहि व पीलुहि उष्ट्रीव पीलुवृक्षस्य 9 *a* छेयहु छेकस्य चतुरस्य 10 *a* णववणकंतहु नवीनवनेन कान्तस्य मनोहरस्य वसन्तस्य कोकिला यथा स्मरति 11 *b* इल भूमि 12 *b* जाणइ जानकी 15 *a* लक्खण चिंतइ लक्ष्मणचिन्तया, पक्षे व्याकरणचिन्तया 22 विरहहुयासहउ विरहाग्निना दग्ध , सुइवहढुकइ कर्णमार्गं प्राप्तया 23 अमियझलकइ अमृतधारया

## 2

हेला—गाढालिंगिऊण रामेण पवणपुत्तो ॥
सीयासगमो व्व हरिसेणेवं वुत्तो ॥ छ ॥

तुह समु किं भण्णइ अवरु णरु   अंजणिसुय तुहुं सुहिविहुरहरु ।
तुहुं मुहु मणकमलहु दिवसयरु   विरहावडणिवडणधरणतरु ।
जलु थलु णहयलु तुह गम्मु जहिं   वण्णेव्वउ सव्वु समत्तु तहिं ।
तहिं अवसरि रूसिवि अतुलबलु   सिरिणाहें जोइउ भुयजुवलु ।
बलएवहु पायपोमु णवइ   कोवारुणच्छु लक्खणु चवइ ।
मइ रवियरदारियतिमिरबलि   हणवंतु णेइ जइ गयणयलि ।
जइ सायरु सलिलु दुग्गु कमइ   जइ लंकाणयरिणियडि थवइ ।
तो कुंडलमंडियगंडयलु   तोडेप्पिणु दहमुहसिरकमलु ।
तुह गेहिणि देमि समेइणिय   णच्चावमि विड्डुर डाइणिय ।

घत्ता—दे आएसु महु सरु करउ गमणु साहेज्जउ ॥
कंताहरणरुहु फेडमि अज्जु जि वयणिज्जउ ॥ २ ॥

## 3

हेला—ता सीराउहेण उवसामिओ अणंतो ॥
ण केसरिकिसोरओ रोसविप्फुरंतो ॥ छ ॥

भडयणु णिहिलु वि ओसारियउ   पच्चगु मंतु अवयारियउ ।
सउवाउ अवाउ सहाउ धणु   मंतिउ महु किं वइरिहिं बलु कवणु ।
आरंभ कम्मफलसिद्धि किह   किह दइवु हवइ भणु मुणिउ जिह ।
तं णिसुणिवि मंगलेण कहिउ   णिव णिसुणि मंतु विगईरहिउ ।
दुग्गासिउ बलवंतु वि विजइ   खगराउ तिखंडधराहिवइ ।

2 १ AP हरिसेण एम वुत्तो २ AP अजणसुय ३ A °धरणि° ४ A माहउ, P माहड्ड ५ P हणुवंतु ६ T डावर भयानक सग्रामो वा, विड्डुर इति पाठऽप्ययमेवार्थ ७ AP सरु ८ AP कंताहरणु रुहो

3 १ A सउवायउ चाउ सहाउ नलु २ AP महु वइरिहि कवणु बलु

2 2 हरिसेणेव वुत्तो हर्षेण एवमुक्त 4 *b* विरहेत्यादि विरहकूपपतनधरणवृक्ष 5 *b* समत्तु समाप्तम् 6 *b* सिरिणाहें लक्ष्मणेन 7 *a* बलएवहु बलभद्रस्य रामस्य 9 *a* कमइ उत्तारयति 11 *a* समेइणिय मेदिनीसहिता, *b* विड्डुर भयानका 12 सरु स्मरो हनूमान् 13 °रुहु उत्पन्नम्

3 1 सीराउहेण हलायुधेन रामेण, अणंतो लक्ष्मण 4 *a* सउवाउ अवाउ उपायसहितोऽपाय 6 *a* मंगलेण मङ्गलनाम्ना मन्त्रिणा, *b* विगईरहिउ अन्यथात्वरहित

अइ सीय देइ रणि णब्भिडइ तो भल्लउ महु मणि आवडइ ।
त[3] विहसिवि सुग्गीवें भणिउ पइं रावणजीविउ किं गणिउ ।
हणुवंतु सहाउ हउ वि पबलु हरि पुण्णवंतु चालइ अचलु ।
विज्जउ पहरणइ वि चिंतियइं होहिंति मंतविहिमंतियइं ।
हलहर तुहु राणउ देव जहिं पडिवक्खु पसंसिउ काइ तहिं ।
धुउं लक्खणहत्थें रिउ मरइ णिद्दवहु दुग्गु काइ करइ ।
भो मगल मा किं पि वि भणहि तहु चक्कु कालचक्कु व गणहि ।

घत्ता—तेण जि तासु सिरु छिंदेव्वउ रणि गोविंदें ॥
दिणयरि उग्गमिइ किं पयडिज्जइ चंदें ॥ ३ ॥

## 4

हेला—उत्त रामसामिणा जइ अह महंतो ॥
लच्छीहरपसाहिओ पउरपुण्णवंतो ॥ छ ॥

णियदूउ तो वि तहु पट्टवमि उप्पिच्छु समत्थु व णिट्ठवमि ।
णिय सो कि देइ ण देइ वहु पेक्खहु किं बोल्लइ पुहइपहु ।
भणु कवणु वओहरविहिकुसलु जिणवरचरणारविंदभसलु ।
सुग्गीउ कहइ रिउछिंदणहु जेट्ठहु दससदणणंदणहु ।
गुणवंत अत्थि णर धरणियर ते जंति ण खे ण होंति खयर ।
सुकुलीणु अदीणु दीणसरणु अग्गि व सीहु व दूसहफुरणु ।
पक्किल्लउ भल्लउ सेल्लवहि रणि सरजालचियसव्विवहि ।
सूहउ सूरूउ गभीरु थिरु पडिवण्णसूरु तेयसि णिरु ।
णिट्ठुरह वि उप्पाइयपणउ हियमियमहुरक्खरजपणउ ।
किं वण्णमि सहयरु अप्पणउ दूयत्तजोग्गु अजणतणउ ।
ता रामें सचियणेहरसु पुरिसुण्णउ पोरिसकणयकसु ।
सुग्गीउ बधु बुद्धिइ गहिउ विज्जाहररायत्तणि णिहिउं ।

घत्ता—बंधिवि पट्टु सिरि हणुवंतु कियउ सेणावइ ॥
जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो जि धवलु णिहयावइ ॥ ४ ॥

३ AP ता ४ P मत तिहि ५ A धुवु ६ P तासु जि सिरु

**4** १ AP जइ वि अह २ AP किं सो ३ A णरवरणियर ४ AP एक्कल्लउ ५ AP विहिउ

8 *a* णब्भिडइ युद्ध न करोति 11 *b* °मंतियइं °मन्त्रितानि आराधितानि 15 तेण तेन चक्रेण

**4** 3 *a* उप्पिच्छु सैन्येन सह उच्छ्रित, णिट्ठवमि मारयामि 4 *a* वहु सीता 5 *a* वओहर° वचोहरो दूत 9 *a* सेल्लवहि भल्लधारके 10 *b* पडिवण्णसूरु अङ्गीकृतवस्तुनि सुभट, तेयसि तेजस्वी 13 *b* पुरिसुण्णउ पुरुषेषु मध्ये उन्नतो महान्, °कणयकसु °सुवर्णकषोपल 16 जोत्तिउ युक्त, णिहयावइ निहतापद

## 5

हेला—दिण्णा राहवेण हणुयस्स खयरगया ॥
रविगयविजयकुमुयपवणवेयया सहाया ॥ छ ॥

गरुयारइ मंतिकज्जि थविउ बलहद्दें मारुइ सिक्खविउ ।
आएज्जसु भवणु विहीसणहु परिपालियखत्तियसासणहु ।
बोल्लेज्जसु मिट्ठउ किं पि तिह अप्पावइ सीयापवि जिह ।
जइ सामें देइ ण दहवयणु तो पुणु भणु दुटु चडवयणु ।
अम्हहु विवरोक्खइ आउडिय ललियग चित्तविसिहि चडिय ।
अण्णाणें रइरहसेण णिय भण्णइ अप्पिज्जउ रामपिय ।
गोविंदमुक्कगुणमग्गणहिं दारियसरीरु संहु ससयणहिं ।
सोणियजलसित्तछत्तसहिउ मा होहि कयतणयरपहिउ ॥

घत्ता—बोल्लिउ लक्खणिण सूयँ सीय वसुधरि ढोयवि ॥
जइ दहमुहु जियइ तो जीवउ किंकरु होइवि ॥ ५ ॥

## 6

हेला—अहवा जइ ण देइ तो जाइँ किं जियतो ॥
मइ कुद्धेण हणुय णउ हणइ क कयतो ॥ छ ॥

तेलोक्कचक्कजूरावणहु इय जाइवि साहहि रावणहु ।
जइ तिण्णि वि एयउ देइ णउ तो तासु महु वि किर संधि कउ ।
जइ जुज्झइ तो कालाणलहु जइ णासइ तो पुणु काणणहु ।
पेसमि दहगीउ ण दूय जइ रहुवइपयजुवलु ण णवमि तइ ।
तो हँलि हरि जयसिरिवि चलिउ तणुभूसणमणियरसवलिउ ।
तारावलिहारावलिउरहि उत्तुगहि तुगपयोहरहि ।
पविमलपसण्णदिसवयणियहि चदक्कमणोहरणयणियहि ।
आहडलधणुउप्परियणहि रंजियविज्जाहरगणमणहि ।
णहलच्छिहि उवरि देंतु पयइ पडिसुहडहँ सजणतु भयइ ।

घत्ता—सत्तपतिदसणु वडवाणलजालाकेसरु ॥
वेलापुच्छचलु मणिगणणहु सीहु व भासुरु ॥ ६ ॥

5 १ AP खयरराया २ AP रविगइ° ३ P कुमुयचलवेयया ४ AP बलभद्दें ५ A भुवणु ६ AP चंडदडवयणु ७ A अम्हइ ८ A ललियगि ९ A सुहु सजणेहिं १० P omits छत्त ११ A सिय, P सीय

6 १ P कि जाइ २ AP हरि हलि ३ AP °सुहडहु ण जणतु

5 3 *b* मारुइ हनूमान् 7 *a* विवरोक्खइ विपरोक्षे 10 *b* °पहिउ पथिक

6 4 *a* तिण्णि वि एयउ श्री, सीता, भू, *b* कउ कृत 13 मणिगणणहु रत्नान्येव नखा यस्य

## 7

हेला—गमीरो सरमेरउ[1] गीढमयरमुद्दो[2] ॥
मारुइणा तुरंतेण लंघिओ समुद्दो ॥ छ ॥

भुवणतरालि विक्खायएण दीहें जलणिहिसरजायएण ।
तिसिहर[3]गिरिणालें उद्धरिउ पायार[4]कण्णियापरियरिउ ।
छुहधवलट्टालविउलदलु लच्छीमजीररावमुहलु ।
देउलहंसावलिपरियरिउ[5] कणयालयकेसर[6]पिंजरिउ ।
कामिणिमुहरसमयरदरसु जसपरिमलपूरियगयणदिसु ।
रावणरविकरविसावियउ देवाह वि भल्लउ भावियउ ।
वित्थरिय[7]कोसु सुभुयगपिउ कह णिउणें विहिणा णिम्मविउ ।
णहि जंतु जंतु मारुइभसलु सपत्तउ त लंकाकमलु ॥

घत्ता—जोयवि कुसुमसरु णारीयणु असेसु वि खुद्धउ ॥
कपइ णीससइ हसइ व बहुणेहणिबद्धउ ॥ ७ ॥

## 8

हेला—कंदप्प सुरूविण णिएवि चित्तचोर ॥
का[1] वि देइ सककण चारु[2]हारदोर ॥ छ ॥

क वि जोयइ दिट्ठिइ मउलियइ गुरु[3]याणि सलज्जदरमउलियइ ।
क वि चलियकडक्खहिं विवॅलियइ[4] क वि वियसियाइ क वि विलुलियइ ।
काहि वि गय तुट्टिवि मेहलिय क वि मुच्छिय धरणीयलि घुलिय ।

7 १ AP समेरउ, K सरमेरउ but records १ *p* अथवा समेरउ समर्याद , T सरमेरउ जलमर्याद , अथवा समेरउ समर्याद २ AP गाढमयरसद्दो ३ A णिसियर° ४ A पायालें ५ AP °हसावलिपंडुरउ, K पडुरिउ इत्यपि पाठ ६ A कणयायलकेसरि° ७ A वित्थारिय°

8 १ AP का वि हु देइ २ P चीरुहार° ३ A गुरुयण° ४ P विवालियइ

7 1 सरमेरउ जलमर्याद , गीढमयरमुद्दो यस्तमकरमुद्र 4 *a* तिसिहर° त्रिकूट., *b* पायारकण्णिया° प्राकार एव कर्णिका 5 *b* मजीर° नूपुरम् 6 *b* कणयालय° सुवर्णगृहम् 11 खुद्धउ क्षोभ प्राप्त

8 1 णिएवि दृष्ट्वा 3 *a* मउलियइ मुकुलितादिदृष्टीना लक्षण यथा। हिययब्भन्तरणिब्भरपहरिस परिपेल्लिया य जा दिट्ठी । परिमउलियवित्थारा मउला णामेण सा दिट्ठी ॥ १ ॥ जा रइणिब्भरा वियसिऊण पियदिट्ठिवच्चणपयट्टा । तद्दसणे सलज्जा लुलई मच्छो व्व सा लुलिया ॥ २ ॥ गुरुयणपुरओ लज्जकुसेण करिणि व्व रुद्धसचारा । जा वोलइ पियहुत्त कडक्खवलिय त्ति सा दिट्ठी ॥ ३ ॥ 5 *a* मेहलिय कटिमेखला.

काहि वि रइजलझलक्क झलियँ क वि उरयलु पहँणइ झिंदुलिय ।
काइ वि थणजुयलउ पायडिउ काहि वि परिहाणु झत्ति पडिउ ।
क वि भणइ पँहु हलि हूउ जहिं केहउ सो होही रामु तहिं ।
सइ सीय भडारी वज्जमिय ण सइत्तणावित्ति अइक्कमिय ।
हलि एहु वि पेच्छिवि पुरिसवरु जइ कह व महारउ एइ घरु ।
पायग्गें जइ थणग्गु छिवइ तंबोलु वि जइ उप्परि थिवइ ।
तो हउ सकय थी जगि जुवइ क वि पेम्मपरव्वस मूढमइ ।
अप्पाणु परु वि ण सभंवइ हा मुइय मुइय अणवउ चवइ ।

घत्ता—कामु हरंतु मणु पुरवरणारीसंघायहु ॥
वलइयउच्छुधणु गउ भवणु विहीसणरायहु ॥ ८ ॥

## 9

हेला—णियकुलकुमुयससहरो मुणियरायणाओ ॥
आओ तेण मण्णिओ अंजणगजाओ ॥ छ ॥

रयणुज्जलु आसणु घल्लियउ मणहारि समजसु बोल्लियउ ।
पाहुणयवित्ति णिस्सेसँ कय पुच्छिउ कहिं अच्छिय कहिं वि गय ।
किं किज्जइ किं किउ आगमणु तं णिसुणिवि पभणइ रइरमणु ।
गुणवंतु भत्तिभाउब्भवउ णयवंतु संतु महुरुल्लवउ ।
पइ जेहउ माणुसु जासु घरि किं सो लग्गइ परघरिणिकरि ।
लइ पत्थु विहीसण दोसु ण वि कालिंदिसलिलणिहदेहछवि ।
पत्थहि पउँलत्थि देउ तरुणि पायालि म णिवडउ णिक्करुणे ।

घत्ता—गिरि गिरियसरिसु गोप्पँउ जासु रयणायरु ॥
तें सहु कवणु रणु किं करइँ गव्वु तुह भायरु ॥ ९ ॥

५ AP गल्यि ६ A पहरइ ७ A हलि एहु ८ AP सकियत्थी ९ A सभरइ
१० AP मुयइ मुयइ

9 १ AP णीसेस २ A भाउत्तमउ ३ A पहुलच्छि देव ४ P गोप्पउ व जासु ५ A करइ तुहारउ मायरु

6 *a* °झलक्क धारा, झलिय स्नुता, *b* झिंदुलिय कामविह्वला 7 *a* पायडिउ प्रकटितम् 9 *a* वज्जमिय वज्रघटिता 10 *a* पुरिसवरु कामदेवरूपो हनूमान्

9 1 °रायणाओ °राजनीति 5 *b* रइरमणु कामो हनूमान् 8 *b* कालिंदि° यमुना 9 *a* पत्थहि त्वं प्रार्थय, पउलत्थि पौलस्त्यो रावण , देउ तरुणि सीता ददातु 10 गिरियय° कन्दुक ; गोप्पउ गोष्पदम्

## 10

हेला—दिट्ठादिट्ठकट्ठ पट्ठवउ रामणारी ॥
णहयरणाहमउडि मा पडउ पलयमारी ॥ छ ॥

अज्ज वि णारूसइ दासरहि    अज्ज वि ण खुहइ लक्खणउवहि ।
चउरासीलक्खधरायरह    कोडिउ पण्णास भयकरह ।
आहुट्ठ ताउ गयणेयरह    बलवंतह बहुपहरणकरहं ।
अज्ज वि खुब्भंति ण णृवबलइ    दुल्लघइ पडिबलघघलइ ।
अज्ज वि अप्पावहि सीय तुहु    मा पइसउ बघउ जमहु मुहु ।
मा डज्झउ लंक सतोरणिय    मा णिवडउ उयरवियारणिय ।
सरघोराणे गोविंदहु तणिय    दुद्धरधणुगुणरवझणझणिय ।
मा रिट्ठु रिट्ठलोहिउ रसउ    मा कालकियतु मासु गसउ ।
रायाणुएण ता भासियउ    पइ चारु चारु उवएसियउ ।
मज्झत्थु महत्थु सच्चवयणु    पइ मेल्लिवि को सुपुरिसरयणु ।
पइ मेल्लिवि को वि बुहाहिवइ    को जाणइ एही कज्जगइ ।

घत्ता—इय ससिवि सुयणु पोरिसकपवियसुरिंदहु ॥
गपि विहीसणेण दाविउ हणवतु खगिंदहु ॥ १० ॥

## 11

हेला—णविऊण दसासण तरुणिहिययहारी ॥
आसीणो वरासणे कुसुमबाणधारी ॥ छ ॥

पभणइ पहु जडकोड्डावणिय    किं विहिय सेव रामहु तणिय ।
हा कट्ठु कट्ठु कणए जडिउ    माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ ।
कहिं तुहु कहिं सो तुह सामि हुउ    भणु को ण विहाणवसेण चुउ ।
अह एण वियारें काइं महु    आओ सि काइं कहि कज्जु लहु ।
त णिसुणिवि पावणि पाडलत्रइ    विणओणयसिरु पुणु पुणु भणइ ।
भो पुप्फविमाणपुप्फभमर    भो सुरसुंदरिघल्लियचमर ।

10 १ P णिवबलइ २ P कालकयतु ३ AP हणुमतु

11 १ AP °कोडावणिय २ A कज्ज ३ A विणए णयसिरु

10 1 दिट्ठा दिट्ठ कट्ठ दृष्टमदृष्टमनुभूत कष्ट यया 2 °मउडि मुकुटे 3 *b* लक्खणउवहि लक्ष्मण एव समुद्र 5 *a* आहुट्ठ अधचतुर्था गयणेयरह खेचराणाम् 6 *b* °घघलइ विघ्नप्रायाणि 10 *a* रिट्ठु काक, रिट्ठ° रिष्टो रावण कृष्णवर्णत्वात्

11 3 *a* जडकोड्डावणिय जडाना कौतुकोत्पादिनी रामसेवा 4 *a* कट्ठु कट्ठ कणए जडिउ निन्द्य काष्ठ सुवर्णेन जटितम् 5 *b* विहाणवसेण विधिवशेन 7 *b* विणओणयसिरु विनयनम्रमस्तक

भो मंदरसुंदरकयभवण भो महिहरकंपावणपवण ।
भो देव दसास दसासगय जसधवलियजग रयणियरघय ।
लक्खणरामोयरणमियकमु अट्ठमु हलहरु रणरसविसमु ।
जसु णामें सकइ विसमु जउ किर कवणु गहणु तहु देव हउ ।
तें तुज्झ पासि हउ सपहिउ इय साहइ सो विणए सहिउ ।

घत्ता—आणिय सीय जइ तो णत्थि दोसु पुणु दिज्जइ ॥
हरिविक्कमहरिणा सहु तुरिय संधि रइज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

हेला—आरूढो गयाहिवे मोरु कुलमग्ग ॥
को मग्गइ रयधओ एलेयाण दुग्ग ॥ छ ॥

सायरु किं मज्जायहि सरइ महिवइ किं अण्णणारि हरइ ।
जइ दीवउ अंधारउ करइ तो किं पाहाणखडु फुरइ ।
जइ तुहु जि कुकम्मइं आयरहि मणु कुवहि वहतउ णउ धरहि ।
तो कासु पासि जणु लहइ जउ जहिं रक्खणु तहिं उप्पण्णु भउ ।
अण्णु वि णाणाविहदुक्खभरु परहरु इहरत्तपरत्तहरु ।
त णिसुणिवि लंकेसरु भणइ को रंडकहाणियाउ सुणइ ।
महु किंकरु ताव पढमु जणउ पुणरवि दसरहु दसरहतणउ ।
तहु दिण्णी हउ किं[2] किर खममि घरलजिय सीय किं[3] ण रममि ।

घत्ता—पुव्व पउत्त महु पच्छइ रहुणाहहु दिण्णी ॥
सो छिद्दिवि मृगेणं मइ आणिय णयणरवण्णी ॥ १२ ॥

## 13

हेला—मइ चित्तेण छित्तिया कह अणुहवइ रामो ॥
हो हो मयरंकेउणा पत्थु णत्थि सामो ॥ छ ॥

४ A सुदरमदर° ५ P °भमण ६ AP जगधवलियजस ७ AP पासु

**12** १ AP एडयाण २ AP किर किं ३ AP ण किं ४ P मिगेण

**13** १ AP मयरकेउणो २ A इत्थ णत्थि, P इत्थ अत्थि

9 *a* मंदरसुंदरकयभवण मन्दरे सुन्दरा कृता आवासा येन 10 *a–b* दसासेत्यादि दशसु दिक्षु गतेन यशसा धवलित जगद् येन 13 *b* विणए साम्ना 15 हरिविक्कमहरिणा सिंहपराक्रमेण रामेण

**12** 1 गयाहिवे गजाधिपे 2 को मग्गइ को मयूर मृगयते रयधओ पापान्ध कोपान्धो वा, एलयाण दुग्ग छालकाना विषम गड्डुरकाणा दुर्गं च मृगयते स गड्डुरकै कृत्वा स्वस्य रक्षा वाञ्छति 3 *a* सरइ चलति 7 *b* परहरु परकलत्रम् 10 *b* घरलजिय गृहदासी 12 छिद्दिवि छलयित्वा

**13** 1 छित्तिया स्पृष्टा 2 मयरकेउणा त्वया कामेन सह

ज चगउ त[3] तं अवठवइ किंकरु सुहत्तणु दक्खवइ ।
मणिकारणि मुहि कवलउ अहि वि जइ मग्गइ तो मग्गउ महि वि ।
सयडगु वि मग्गइ एउ खलु सो सपहि वट्टइ वूढछलु ॥
पुरि मग्गउ लग्गउ मज्झु रणि किं[4] अच्छइ तहिं हिंडतु वणि ।
तं णिसुणिवि सुंहु दुगुछियउ दूएण राउ णिब्भच्छियउ ।
णउं हसिउ देव पइ मण्णियउ केसवजपिउ णायण्णियउ ।
तृयँ सीय वसुधारि देइ जइ परमत्थें इच्छइ संधि तइ ।
सो लिहियउ तुह रूवु वि पुसंइ णियभायहु उवरोहें सहइ ।
हरि केंव वि[9] अम्हइ उवसमहु लकाउरि णेय अइक्कमहु ।

घत्ता—मुइ मुइ पइ तृयँ सुंहिणेहें कहइ कइद्धउ ॥
रावण वहइ पइं रणरंगि जणद्दणु कुद्धउ ॥ १३ ॥

## 14

हेला—ताव णिकुभ कुभ खरदूसणा विरुद्धा ॥
हणुहणुसद्ददारुणा मारणावलुद्धा ॥ छ ॥

कोवारुणणयण भणंति भड गोवाल बाल दढमूढ जड ।
मयरद्धय धुवु लज्जइ रहिउ किं झखहि ण जरेण गहिउ ।
खज्जोए किं रवि ढकियउ किं सायरु गरलें पकियउ ।
किं भमरें गरुडु झडप्पियउ कि दहमुहु अण्णें चपियउ ।
जेणेहउ बोल्लहि मुक्ख तुहु फोडिज्जइ तेरउ दुट्ठ मुहु ।
तुहु एक्कु सहाउ बीय पिसुणु सुग्गीउ वालिपावियवसणु ।
ते लक्खण राम दसाणणहु जइ कमि पडंति पचाणणहु ।
तो हरिणा इव चुकंति कहिं वाएण जंति गिरिवर त्रि जहिं ।
तहिं पत्तलु दलु पइ किं थविउ जइ पयजुयलउ देवहु णविउ ।
तो रामहु तुम्हह त सरणु ण तो आयउ एवहिं मरणु ।

घत्ता—हणुए बोल्लिउ रणु धरि बोल्लतह चगउ ॥
भडकलयलकलहि पइसतहिं कपइ अगउ ॥ ४ ॥

३ A त त अल्लवइ P त जि अवट्ठवइ ४ AP कहि अच्छइ ५ P सुद्धदुगु° ६ A जणहसिउ
७ AP सिय ८ AP लुहइ ९ A वियभइ १० AP तिय ११ सुहिणिहे

**14** १ हणहणसद्दें २ AP गरुलें ३ AP चप्पियउ

3 *a* अवठवइ अवस्थापयति राज्ञो निमित्त धरतीत्यर्थ 5 *a* सयडगु शकटाङ्गम् *b* वूढछलु धृतबल वञ्चन वा, 12 कइद्धउ हनूमान्

**14** 5 *a* खज्जोए खद्योतेन, *b* पकियउ दूषित

## 15

हेला—धणुजुत्ता भडा वि गज्जंति जेम मेहा ॥
तेम ण ते भिडंति वरिसंति सवणदेहा ॥ छ ॥

चिरु रिक्खपंतिसणिहणहहि रत्तउ हयगीउ सयपहहि ।
सरु ससरि तिविट्ठें समरि हउ मुउ सत्तमणरयहु णवर गउ ।
जिह सो तिह तुहु वि अणंगवसु लक्खणसरकड्ढियरुहिररसु ।
दहवयण मरेसहि आहयणि रइ किं ण करहि मेरइ वयणि ।
सीहा इव कुडिलचवलणहर ता उट्ठिय खग हलमुसलकर ।
गज्जंतु एंतु तिणसमु गणिउ मारुइणा सुहडसत्थु भणिउ ।
ढुक्कह सयलह सीसइ खुडमि तडिदंडु व पहुउप्परि पडमि ।
ता भासिउ मग्गपयासणेण अंतरि पइसेवि विहीसणेण ।
हम्मइ ण दूउ जंपउ विरसु जाणेसहु पोरिसु कणयकसु ।
असिसकडि धणुगुणरवमुहलि रिउहक्कारणमारणतुमुलि ।

घत्ता—राए भासियउ मा मेरउ विहि विहरेज्जसु[2] ॥
राहवलक्खणह संदेसउ एम कहेज्जसु ॥ १५ ॥

## 16

हेला—सरण सुरेवरस्स पइसरइ जइ वि काम ॥
तो वि अहं हणामि सहु किंकरेहिं राम ॥ छ ॥

धुवु पावमि भुक्खिउ कालेकलि तिलमेत्तइ खंडइ देमि[4] बलि ।
लक्खणहु सुलक्खणु अवहरमि बंदिग्गाहि पुहइदेवि धरमि ।
णयरिउ मंदिरणिज्जियससिउ गेण्हिवि कोसलवाणारसिउ ।
भडरुहिरमहासमुद्दि तरमि सुग्गीवहु गीवभंगु करमि ।
खलणीलहु णीलउ सिरु लुणमि कुमुयहु कुमुयप्पएसु वणमि ।
दसरहदसप्राणइ णिद्ववमि जणयहु जिउ जमपुरि पट्ठवमि ।

15 १ °चवल°, P °चटुल° २ AP वि रहेज्जसु

16 १ AP सुरवइस्स २ P हणेमि ३ P कालु कलि ४ AP देवि ५ A छुहिवि बे वि ६ AP वाराणसिउ ७ A °पाण विणिद्दवमि, P° पाण वि णिद्दवमि

15 2 सवणदेहा समणदेहा सजलदेहाश्च 3 *a* रिक्खपंतिसणिहणहहि नक्षत्रपंक्तिसदृशनखायाम्, *b* सयपहहि स्वयम्प्रभायाम् 6 *a* आहयणि सङ्ग्रामे 11 *b* जाणेसहु ज्ञास्याम 13 मा मेरउ विहि विहरेज्जसु विधि कर्तव्य मा गोप्य कुरु

16 1 काम अतिशयेन 4 *b* पुहइदेवी पृथ्वीदेवी सीता 7 *a* णीलउ कृष्णकेशयुक्तम्, *b* कुमुअप्पएसु नाभिकमलप्रदेशम् 8 *b* जिउ जीव

कुवहु कुवाहइ अट्ठियइ　जाणेज्जसु एवहिं णिट्ठियइ ।
कड्ढमि जंघाणलवस णलहु　ढोइयि छुहियहु ढढरउलहु ।
हणुंमत तुज्झु हणु गिद्ध जिह　भक्खति हणमि सगामि तिह ।
जआहि मित्तें मोक्कल्लियउ　ता पावणि णहयलि चल्लियउ ।
ता चिंत पइट्ठु विहीसणहु　को चुक्कइ कम्मंहु[11] भीसणहु ।
परमेसरु अद्धधरत्तिवइ　मारेव्वउ लक्खणेण णिवइ ।
तहु दुम्मणु मुहु अवलोइयउ　अप्पउ पहुणा पोमाइयउ ।

घत्ता—सभरहु एतु खल महु ते कुमुंणियदप्पहु[12] ॥
पुप्फयंत गयणे किं[13] समुहु थति विडप्पहु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे हणुमंतदूयगमण
णाम चउहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७४ ॥

८ AP णेय वि ९ A हणवंत १० P मित्त तुहु मोक्कलिउ ११ A कम्मविहीसणहु १२ AP कुमुणिव कंदप्पहो, T कदप्पहो कामस्य १३ A कह समुह थति, P किं सम्मु थति १४ AP दूयकज्ज

10 *a* जंघाणलवस जघानलिकाया वसाम्, *b* छुहियहु बुभुक्षितस्य, ढढरकुलहु राक्षससमूहस्य
16 सभरह भरतेन लघुभ्रात्रा, एतु आगच्छन्तु, कुमुणियदप्पहु कौ पृथिव्यां मुनितो ज्ञातो दर्पो यस्य
17 विडप्पहु राहो

# LXXV

पवणंजयसुयहु समागमणि ण हरि हरिहिं समावडिउ ॥
रहुवइआएसें कुइयमणु लक्खणु वालिहि अब्भिडिउ ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

हणुएण णवेप्पिणु भणिउ रामु भो णिसुणि भडारा हित्तरामु ।
दहवयणु ण इच्छइ संधि देव पर गज्जइ जिह वीहंति देव ।
सामहु णामें जो वेउ सामु सो णायण्णइ वण्णेण सामु ।
तं णिसुणिवि रोमंचिउ उविंदु गलगज्जइ हसियमुहारविंदु ।
रणि मारमि दससिरु कुंभयण्णु वणि लोहिउ दावमि कुंभयण्णु ।
असिधारइ दारमि कुंभिकुंभु दलवट्टमि हउं सि णिकुंभु कुंभु ।
जीवावहारि खरदूसणाहं दारमि उरु रहुवइदूसणाहं ।
पहरंति केम हत्थप्पहत्थ मइ मुक्कसरावलिछिण्णहत्थ ।
मारीयउ मारिहि देमि गासु मउ णिम्मउ रणि कासु वि खगासु ।
विद्धंसमि इंदइंदजालु अरिपुरु पलित्तु लग्गग्गिजालु ।
पेच्छेसहु कइवयवासरेहिं परबलु पच्छाइउ महु सरेहिं ।

घत्ता—मइं कुद्धें राहव सो जियइ जो तुह पयपंकय णवइ ॥
तुहु देव पयावें पसरतसिउ रवि वि णिरंतरु णउ तवइ ॥ १ ॥

## 2

तहिं अवसरि आयउ वालिदूउ वइसारिउ कज्जालाव हूउ ।
तें वुत्तु देव अविलंघधाम सीयासइवल्लह णिसुणि राम ।
खेयरचूडामणिघंडियपाउ अट्ठगु णवइ तुह वालिराउ ।

1 १ A वणलोहिउ २ AP जीवावहारु ३ A दावमि कयरहु°, I उरु महान्वक्षस्थल वा. ४ AP हत्थावहत्थ ५ A विद्धंसिवि ६ A इदइ इदजालु, P इदहो इदजालु ७ A पयावइसरतसिउ ८ AP णवि

2 १ AP भूउ २ A तो वुत्तु ३ A अविलंबधाम ४ A °चूलामणि° ५ AP °घिट्टपाउ.

1 1 हरि सिंह 2 कुइयमणु कुपितमना: 3 *b* हित्तरामु हृता रामा सीता येन स रावण 5 *a* सामहु इत्यादि सामस्य नाम्ना सामवेदस्यापि नाम नाकर्णयति 6 *a* उविंदु लक्ष्मण: 7 *b* कुंभयण्णु कुम्भैर्गणनीयम् 9 *b* उरु महान् वक्षःस्थल वा 12 *a* इंदइंदजालु इंद्रजित इन्द्रजालम्; *b* लग्गग्गिजालु लग्नाग्निज्वालम्.

2 3 *a* घडियपाउ °आरोपितपाद

अण्णु वि विण्णवइ पहुल्लवत्तु जइ इच्छहि मेरउ किंकरत्तु ।
तो णिद्धाडहि सुग्गीव हणुय रणभरु सहंति किं बालतणुय ।
णिवडंतु कूवि तिणधारि पडइ णग्गोहविलंबिरु उद्धु चडइ ।
गरुए सहु जायइ विग्गहेण विहडिज्जइ हीणपरिग्गहेण ।
तुह विरहखीण गुणवंत संत मारेप्पिणु रामणु हरमि कंत ।
दासरहि पजंपइ लक्क जाव महु समउ खगाहिउ एउ ताव ।
मयगिल्लंगल्लु मिसत्तहेउ करिवरु महामेहक्खु देउ ।
पच्छइ जं इच्छइ तं जि करमि अहुणा तहु सुकिउ काइं सरमि ।

घत्ता—लेइ इच्छउ केरउ महुतणिय कुंजरु ढोइवि गिरिसरिसु ॥
इय भासिवि राए पेसियउ लहु तहु दूए णियपुरिसु ॥ २ ॥

## 3

किलिकिलिपुरु पत्तउ दिट्ठु वालि तेयाहिउ ण चंडंसुमालि ।
मंतें पवुत्तु भो सच्छचित्त करि ढोइवि करि पहुसमउ जत्त ।
तूसंति राय सुद्धें मणेण ता भणइ वालि सथुउ अणेण ।
जेणाहवखंधइ भग्गएण कायरणरमग्गविलग्गएण ।
महु भीए कउ किक्किंधि वासु हा रामें पोसिउ पक्खु तासु ।
कहुयणि होइ पडुरिवें रेह मणगूढहु केरिय विस्ति एह ।
जुज्झेसइ सीरि सिलिम्मुहेहिं अणउत्तु वि जाणिज्जइ बुहेहिं ।
मग्गणउ धम्मु गुणु मुइवि जाइ सुग्गीवहु हणुयहु उवरि थाइ ।
इय चिंतिवि बोल्लिउ रायमंति भण्णइ ण देइ म्हो तुज्झु दंति ।
देसइ खयराहिउ असिपहारु तोडेसइ पइ सुग्गीवहारु ।

घत्ता—ता झ त्ति वओहरु णीसरिउ आयण्णिवि कण्णाविवरक्खरउ ॥
आहासइ बलणारायणहं रिउदुव्वयणपरंपरउ ॥ ३ ॥

६ A तणुवारि, P तणधारि ७ P णग्गोहि ८ A दीण° ९ A °गिल्लगिल्लमित्तत्त° १० AP करि वरु वि महा° ११ P पेच्छइ १२ A लइ इछउ, P सइ इच्छउ

**3** १ P °पुरि २ A खधें ३ A किउ ४ P पडुरिव ५ A मणगूढह केरी, P मणमूढहं केरी ६ A अणुउत्ति ७ P आयण्णिवि कण्णविरक्खरउ, P मुहविवर° श्रोत्रानिष्ट

4 *a* पहुल्लवत्तु प्रफुल्लवदन 6 *a* णिवडंतु इत्यादि कूपे पतन् तृणधारी तृणावलम्बक पुमान्पतत्येव, वटवृक्षावलम्बक पुनरूर्ध्वं चटति 10 *b* देउ ददातु 11 *b* सुकिउ उपकार, सरमि स्मरामि

**3** 2 जत्त यात्रा गमनम् 4 *a* आहवखंधइ सङ्ग्रामधुरायाम् 8 *a* मग्गणउ बाणो याचकश्च, 11 वओहरु दूत, कण्णविवरक्खरउ श्रोत्रानिष्टाक्षरा दुर्वचनपरंपरा

## 4

ता चिंताविउ मणि रामएउ एक्कु[1] जि सिहि अण्णु वि वायवेउ।
एक्कु जि रवि अण्णु जि गिंभयालु एक्कु जि तमु अण्णु जि मेहजालु।
एक्कु जि हरि अण्णु जि पक्खरालु एक्कु जि जमु अण्णु जि पुण्णकालु।
एक्कु जि विसि[2] अण्णु जि सविसदिट्ठि एक्कु जि सणि अण्णु जि तहिं मि विट्ठि।
एक्कु जि दहमुहु दुद्धरु विरुद्धु अण्णेक्कु तहिं जि बलिपुत्तु कुद्धु।
मित्तयणु खीणु बलवंत सत्तु पाणिट्ठु छुट्टु हित्तउ कलत्तु।
विरइज्जइ एवहिं कवणु मंतु णउ कुसलकारि एक्कु वि जियंतु।
ता विहसिवि बोल्लइ वासुएउ किं दीव जिणंति दिणेसतेउ।
केसरिकिसोरु किं मृग[3] छिवंति ते जगि जियंति जे पइं णवंति।
असमंजसु सज्जणपाणहारि परमेसर पच्छा कोवकारि।
सुहडत्ताणदियसुरवरालि[4] अच्छउ रावणु ता हणमि वालि।

घत्ता—मइ कुइइ[5] रणगणि ओत्थरिए भीरु महागिरिकंदरहु॥
मा चिंतहि राहव किं पि तुहु सूर जंति जममंदिरहु॥४॥

## 5

ता पहुणा पेसिउ तक्खणेण सुग्गीउ चलिउ सहु लक्खणेण।
साहणु पहि[1] उप्पहि णहि ण माइ गयघड मयवस मल्हंति जाइ।
हरि खुरखयरयहयभाणुदित्ति[2] रहं चक्कधारदारियधरित्ति।
चूरियभुयग चलविवलियग[3] भयकंपिय दिसमायग तुंग।
थिउ सिबिरु धरेप्पिणु दुग्गमग्गु उव्वेइउ[4] ससससारंगवग्गु।
आसोसियाइं सरिसरजलाइं णिल्लूरियाइं णवदुमदलाइं।
सिरणलिणारोहियणियकरेण अक्खिउ वालिहि केण वि चरेण।
दुद्धर[5]दीहरसुडालसोंडु रामें तुम्हुप्परि पहिउ दंडु।
पडिबलु गयणयलविलग्गतालि आवासिउ खइरवणंतरालि।

4 १ P एक्क वि २ A विसु ३ AP मिग ४ A सुरवमालि ५ A कुद्धइ, P कुइएण

5 १ P उप्पहि पहि २ AP ण णहि विलग्ग साहणसुकित्ति ३ AP चलवलियअग ४ A उव्वेयउ ५ AP दीहरदुद्धर°

4 1 *b* सिहि अग्नि, वायवेउ वायुवेग 3 *b* पुण्णकालु पूर्णमायु 4 *a* विसि सर्प 5 *b* बलिपुत्तु बलिपुत्रो वाली 6 *b* पाणिट्ठु प्राणेष्टम् 9 *a* छिवंति स्पृशन्ति 11 *a* °सुरवरालि सुरवरश्रेणि 12 ओत्थरिए उच्छ्रिते सति भीरु कातरा

5 5 *b* ससससारंगवग्गु शशमृगसमूह 7 *a* सिरेत्यादि मस्तकपद्मारोपितस्वहस्तेन, 8 *b* पहिउ प्रेषित 9 *b* खइरवणंतरालि खदिरवनमध्ये

घत्ता—सुग्गीवें सेविउ सीरधरु लद्धउ सहयरु चक्कधरु ॥
त णिसुणिवि रूसिवि सण्णहिवि णिग्गउ वालि खगाहिवइ ॥५॥

## 6

गंभीरतूरकोलाहलाइं सुग्गीववालिखेयरबलाइं ।
अब्भिडइं कयरणकलयलाइं सरपसरपिहियपिहुणहयलाइं ।
वणविर्यलियपिच्छिललोहियाइं पयघुलियतावलिरोहियाइं ।
मोडियरहाइं फाडियधयाइं आसियणहाइं तासियगहाइं ।
लुयदढगुडाइं हयगयघडाइं तोडियथडाइं पाडियभडाइं ।
खयपेक्खिराइं गयपक्खराइं चुयहरिवराइं कंपियधराइं ।
तुट्टच्छराइं बहुमच्छराइं मरणिच्छिराइं खणमुच्छिराइं ।
वंचियपराइं पहरणपराइं भयणिब्भराइं हयभयभराइं ।
ता तहिं रणंति पीणियकयंति सामंतकंति वेयालवंति ।
कंतीइ चंदु रिद्धीइ इंदु किलिकिलिपुरिंदु धाइउ खगिंदु ।
तें भणिउ भाइ रे रे अराइ विज्जाहराइं मेल्लिवि सजाइ ।
पहुमाणदट्टं खल दुव्विर्यट्टं वज्जियगुणट्टं सुग्गीव सट्टं ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु सेव महुतणिय बधुणिबधंइ तिलरिणइं ॥
पइसरिवि सरणु भूगोयरह जीवेसहि भणु कइ दिणइं ॥ ६ ॥

## 7

मा पावहि आहवि पाणणासु जज्जाहि पाव किक्किंधवासु ।
त वयणु सुणिवि सुग्गीउ चवइ पइ फेडिवि जइ मइ णाहिं थवइ ।
तो लक्खणु भूगोयरु णिरुत्तु अह ण तो पइ णिप्फलु पउत्तु ।
ते बे वि लग्ग विज्जाबलेण पुणु हुयवहेण पुणु पुणु जलेण ।
पुणु तरुवरेण पुणु मारुएण पुणु फणिणा पुणु विणयासुएण ।

---

५ AP सण्णिहिवि

6 १ A आभिट्टइं २ A° विहलिय° ३ AP फाडियधयाइं मोडियरहाइं ४ AP तासिय° ५ A °पेक्खराइं ६ A हियभय° ७ A °दट्टु ८ A दुव्वियट्टु ९ A गुणट्टु १० A सट्टु ११ मेल्लिवि सेवा १२ AP बधुणिबद्धइं

7 १ A णिरुत्तु २ AP मारुवेण

---

11 सण्णहिवि सन्नाहं कृत्वा

6 2 *b* °पिहु° विस्तीर्णम् 3 *a* वणवियलिय° व्रणविगलितम्, °पिच्छिल° जड सघनम् 7 *b* मरणिच्छिराइं मृत्युवाञ्छकानि 11 *b* सजाइ स्वजातीन् 13 तिलरिणइं स्नेहऋणानि 14 कइ कति

7 1 *a* आहवि रणे 5 *b* विणयासुएण गरुडेन

जुज्झिय बेण्णि वि पुणु भणइ जेट्ठु मइं कुद्धइ रक्खइ कवणु इट्ठु ।
ता भासइ तहिं राहवकणिट्ठु तुहुं ण मुणहि सिट्ठु अणिट्ठु विट्ठु ।
हउ विट्ठु देउ दसरहकुमारु हउ विट्ठु सवुट्ठट्ठियकुठारु ।
णउं दिण्ण हत्थि रे देहि घाय तुह पव्वहिं कुद्धा रामपाय ।
घत्ता—जइ जिणवरु सुमरिवि सतमणु चरहि सुदुद्धरु तवचरणु ॥
तो चुक्कइ महु रणि वइरि तुहुं जइ पइसहि रामहु सरणु ॥ ७ ॥

## 8

ता हसिउ पेंवलेण बलिरायपुत्तेण संगामपारंभपब्भारजुत्तेण ।
भूयरणरिंदस्स किं तस्स किर थामु तुहुं गणिउ जगि केण अण्णेक्कु सो रामु ।
जइ अत्थि सामत्थु ता मेरुगिरितुंगु मइं जिणिवि रणरंगि अवहरहि मायंगु ।
अक्खिवसि किं मुक्ख पक्खिद्धवरपक्ख किं कुणसि मइ कुद्धइ सुग्गीवि परिरक्ख
रत्तोवलित्तेहिं दरिसियपहारेहिं गुणधम्ममुक्केहिं वम्मावहारेहिं ।
मारणकइच्छेहिं दुज्जणसमाणेहिं ता बे वि उत्थरिय विप्फुरियबाणेहिं ।
कोडीसरत्तेणं णिव्वूढगावाइं छिण्णाइं चावाइं असभउहभावाइं ।
अण्णाइं गहियाइं अण्णाइं मुक्काइं विंधाइं रुद्दद्धयंदेहिं लुक्काइं ।
धावंत वेवंत सरभिण्ण हिलिहिलिय अतावलीखलिय महिवाढि रुलुंघुलिय
गयघायकडथडिय रह पडियजोत्तार भड भीम थिय बे वि संगामकत्तार ।
अब्भिट्ट ते वालि लक्खण महावीर थिरहत्थ सुसमत्थ सुरगिरिवराधीर ।
तडिदंडसरलेहिं तरलेहिं खग्गेहिं संचरणपइसरणणीसरणमग्गेहिं ।
खणखणखणंतेहिं उग्गयफुलिंगेहिं जिगिजिगियधारापराजियपयंगेहिं ।
घत्ता – रणसरवरि हयमुहफणजलि सोणियधाराणालचलु ॥
असिचंचुइ लक्खणलक्खणिण तोडिउ वालिहि सिरकमलु ॥८॥

३ AP दोण्णि ४ AP णो दिण्णु

**8** १ बालेण २ A अक्खवसि ३ A परपक्खु P परक्खु ४ A कोडीसरत्तेहि ५ AP रुद्दद्धयदेहि ६ A मुक्काइ ७ AP हय घुलिय ८ AP °कतार 9 A °धराधीर १० A सवरण° ११ A पराजिय° १२ AP असिधाराचंचुइ लक्खणेण

7 *a* राहवकणिट्ठु लक्ष्मण 7 *b* सिट्ठु साया लक्ष्म्या इष्टो वल्लभ, सा लक्ष्मीर्वा इष्टा यस्य, अणिट्ठु अनिष्टस्तव शत्रु विट्ठु विशेषेण इष्ट सुग्रीवस्य अहम् 8 *a* विट्ठु वासुदेव, *b* विट्ठु वीनामिष्टो गरुड, °अट्ठियकुठारु अस्थिकुठार

**8** 4 *a* अक्खिवसि आक्षिपसि उत्पाटयसि, *b* परिरक्ख परिरक्षाम् 5 *b* वम्मावहारेहिं मर्मापहारकै 6 *b* उत्थरिय युद्धार्थमुत्थितौ 8 *b* रुद्दद्धयदेहिं रौद्रार्धचन्द्रबाणै, लुक्काइ लुप्ता 10 *a* गयघाय° गदाघातेन 13 *a* उग्गयफुलिंगेहिं उत्पन्नाग्निकणै, *b* °पराजियपयगेहि पराजित पतङ्गै पराजितसूर्यै 15 असिचंचुइ खड्गचञ्च्वा, लक्खणलक्खणिण लक्ष्मण एव सारसस्तेन

## 9

फोडिवि रणि वइरिहि सिरकरोडि　किलिकिंलिपुरेण सहु गामकोडि ।
दिण्णी सुग्गीवखगाहिवासु　पवहु फुरणु भणु भुवणि कासु ।
मेल्लेप्पिणु लक्खणु लच्छिधामु　सुपसण्णु महाजसु जासु रामु ।
गाहियइं णियकुलचिंधइं वराइं　सीहासणछत्तइं चामराइं ।
पुरवरि घरि मंडलि णिहिय भिच्च　बहुबुद्धिवंत णिब्भिच्च सच्च ।
आरुहिवि महाघणवारणिंदु　सहुं सुग्गीवेण णरिंदचंदु ।
सपत्तु जणद्दणु पुण वि तेत्थु　णिवसइ वणंति बलहद्दु जेत्थु ।
तहु पायपणइ सीसें करेवि　लक्खणु सुग्गीव चवंति बे वि ।

घत्ता—महिरूढउ वारियसूरकरु कामिणिवेल्लिविलासधरु ॥
तुहु देव पयावहुयासणिण हेलइ दड्ढउ वालितरु ॥ ९ ॥

## 10

ता पिसुणमरणसंतोसिएण　मेल्लिवि तं उववणु ववसिएण ।
जित्ताहवेण सहु माहवेण　सुग्गीवें हणुवें राहवेण ।
किक्किंधपुरहु दिण्णउ पयाणु　संघट्टउं पहि जाणेण जाणु ।
महिणहयराह रिउरोहिणीउ　चलियउ चउदह अक्खोहिणीउ ।
मंडलिय मिलिय वियलियसंगव्व　दिस पत्तहिं छत्तहिं छइय सव्व ।
णहु दीसइ णउ छायउ धयहिं　हरिचरणपहयधूलीरएहिं ।
करताडिय गज्जइ गमणभेरि　भडहियवइ वड्ढइ वइरिखेरि ।
उण्णिद्दिय रामणगिलणमारि　गोविंद कडक्खइ लच्छिणारि ।
करिमयचिक्खिल्लद्दहि णिमण्णु　सदणसदाणिउ वहइ सेण्णु ।

घत्ता—हरिणीलें कुडें परियरिउ खगसारंगविराइयउ ॥
किक्किंधासिहरि णियवसधरु रामें रामु व जोइयउ ॥ १० ॥

9　१ P किलिगिलि°　२ A मल्लेप्पिणु　३ P लच्छिवासु　४ A चडाइं, P चलाइं
५ P महाघणुयारणिंदु

10　१ AP संघट्टिउ　२ A पहु　३ AP °सुगव्व　४ AP °दहि　५ A सदणि सदाणिए, P सदणसदाणिए

9　1 *a* °करोडि कपालम्　5 *b* णिब्भिच्च अव्यभिचारिण　7 *a* जणद्दणु लक्ष्मण'
*b* बलहद्दु बलभद्रो राम

10　1 *b* ववसिएण कृतोद्यमेन　5 *a* वियलियसगव्व विगलितस्वगर्वा　7 *b* °खेरि वैरक्षोभः　3 *a* उण्णिद्दिय जागरिता, *b* कडक्खइ कटाक्षेण विलोकयति　9 *a* °द्दहि ह्रदे　*b* सदणसदाणिउ अग्रेगनरथै सह रथान् बद्ध्वा आकर्षणं क्रियते　10 हरिणीलें गिरिपक्षे इन्द्रनीलमणिना, °सारंग° पक्षे सारभूतमङ्गं धनुर्वा　11 °सिहरि गिरि, रामु व स्वस्य आत्मा इव

## 11

पइसंतहिं हलहर[1]केसवेहिं अवरेहिं मि बहुभूगोयरेहिं ।
जहिं णिवसइ सो सुग्गीउ खयरु अवलोइउ तं किक्किंधणयरु ।
तोरणदुवारि सुपसत्थियाउ दहिअक्खयमंगलहत्थियाउ ।
णरचित्तसारधणे[2]सामिणीउ बोल्लंति परोप्परु कामिणीउ ।
हं[3]लि धवलउ कालउ कवणु रामु बिहिं रूवहिं किं[4] थिउ देउ कामु ।
कि एहुँ[5] जि एहु ण एहु एहु दीसइ वण्णंतरभिण्णदेहु ।
वररूवालुद्धइं जुंजियाइं अच्चंतपलोयणरंजियाइं ।
जणवयणयणइं कसणइं सियाइं णं हरिबलतणुछायकियाइं ।
घरु आया कहिं लब्भंति इट्ठ णियमंदिरु पडिवत्तीइ दिट्ठ ।
सिरपणमणण्हाणविलेवणेहिं देवंगहिं णिवसणभूसणेहिं ।
अविचिंतियसाहसकिंसितण्ह भावें समाणिय रामकण्ह ।
सुग्गीवें बेण्णि वि सामिसाल खलबलगलें[6]थल्लणबाहुडाल ।
तहिं दियहइं जंति किर कइ वि जाव संपत्तउ वासारत्तु ताव ।

घत्ता—घणगयवरि तडिकच्छकियइ चडिउ धरेप्पिणु इंदधणु ॥
वरिसंतु सरहिं पाउसणिवइ णं गिंभें सहुं करइ रणु ॥ ११ ॥

## 12

कायउलइं तरुघरि संठियाइं हंसइं सरमुं[1]यणुक्कंठियाइं ।
सरवर संजाया तुच्छणलिण दिसं[2]भाय वि णवकसणब्भमलिण ।
णच्चंति मोर मज्जंति कंक पंथिय बहंति मणि गमणसंक ।
चल चायय तण्हाहय लवंति पउरदरीउ जललउ पियंति ।
पवसियपियाउ दुहसल्लियाउ महमहियउ जाइउ फुल्लियाउ ।

11 १ AP केसवहलहरेहिं २ A °धणमाणिणीउ ३ A हरि ४ A थिउ किउ देउ ५ A एहु ६ A °गलत्थण°

12 १ A सरसुअणु° २ A दिसभीय वि ण कसण°

11 4 *a* णरचित्तसार° पुंसां चित्तमेव सार धनम् 5 *a* हलि हे सखि, *b* बिहिं रूवहिं द्वाभ्या शुक्लकृष्णाभ्याम् 7 *a* अच्चंतपलोयण° अत्यन्तप्रलोकनेन 8 *b* °तणुछायकियाइं शरीरशोभामयानि 8 *b* पडिवत्तीइ प्रतिपत्त्या गौरवेण 12 *b* गलथल्लण° गलहस्तदाने 14 घणगयवरि अभ्रपटलगजे, °कच्छ° वरत्रा

12 1 *a* कायउलइं काककुलानि, *b* °मुयण° मोचने 2 *b* णवकसणब्भमलिण नवीनकृष्णाभ्रेण मलिना 4 *a* चायय चातका, *b* पउरदरीय मेघसवधि 5 *b* जाइउ जातीलता..

दिसि पसरियकेयइकुसुमरेणु चिक्खिल्लें तोसिय किडि करेणु ।
वरिसंतें देवें भरिउ देसु जलु थलु सजायउ णिव्विसेसु ।
एक्कहिं मिलियाइं दिसाणणाइं पप्फुल्लकयंबइं काणणाइं ।
अवलोइवि रामु विसायगत्थु थिउ णियकओलि सणिहियहत्थु ।
घत्ता—घणु गज्जउ विज्जु वि विप्फुरउ णडउ सिहंडि वि मूढमइ ॥
विणु सीयइ पावसु राहवहु भणु किं हियवइ करइ रइ ॥ १२ ॥

## 13

पुणु सरउ पवण्णु सचंदहासु बाणासणकयरिद्धीपयासु ।
विमलासउ कुवलयभेयकारि बहुबंधुजीवदोसावहारि ।
परिसंताविय पोमंतरंगु ण रावणु दावियदुक्खसंगु ।
णउ रुच्चइ रामहु वड्ढमाणु पियविरहिउ किच्छें धरइ पाणु ।
ता सुग्गीवें वुत्तउ पहाणु केसव णिज्झायहि मंतझाणु ।
मेलावहि सीयारामकामु ता जाइवि सीयारामधामु ।
बलु लयलक्खा वरं दुण्णिरिक्ख चउदिसहिं णिउंजिवि देहरक्ख ।
वरवीर कोंतकरवालहत्थ उच्चारिवि थुइमंगल पसत्थ ।
कयरयणकिरणपरिहवविसुज्ज सिवघोसमहामुणिपडिमपुज्ज ।
पडिविज्जावारणि पुज्जणिज्ज कण्हें साहिय पण्णत्ति विज्ज ।
समेयमहीहरि सिद्धखेत्ति सुग्गीवें हणुवेण वि पवित्ति ।
गुरुयणविहीइ आराहियाउ णाणाविहविज्जउ साहियाउ ।
घत्ता—अण्णेक्कहिं अण्णहिं गिरिसिहरि भरहि भरेण पसिद्धियउ ॥
पणवंतिउ आयउ देवयउ पुप्फयंतरुइरिद्धियउ ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वालिणिहणण
रामलक्खणविज्जासाहणं णाम पंचहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥ ७५ ॥

३ AP दिसि पसरिउ ४ A चिक्खल्लें ५ AP °कलंबइं ६ P पाउसु
13 १ AP °जीवबंधु° २ AP पाणु ३ AP धर ४ AP परिहवियसुज्ज ५ AP विज्जा ६ A गिरिवरहे ७ P वालिणिहण

6 *b* किडि सूकर 9 *a* विसायगत्थु विषादग्रस्त 10 सिहंडि मयूर 11 पावसु मेघ
13 1 *a* सरउ शरत्काल सचंदहासु चन्द्रभासा चन्द्रदीप्त्या सह *b* बाणासण° बाणा असनाश्च वृक्षविशेषा, धनुश्च 2 *a* विमलासउ निर्मलदिश विशिष्टमलचित्तश्च, *b* कुवलयभेयकारि कुवलयस्य भेदकारि विकाशकारी राजा चन्द्रश्च 3 *a* °पोमंतरंगु पद्मस्य रामस्य चान्तरङ्गम् 6 *b* सीयारामधामु सीतायाः पृथिव्या आरामस्थानं शीतं वा आरामस्थानम् 9 *a* कयेत्यादि कृतो रत्नकिरणैः परिभवो विशेषेण सूर्ये यया प्रतिमया सा 10 *a* पडिविज्जावारणि शत्रुविद्यानिषेधिका 13 भरहि भरतक्षेत्रे

# LXXVI

राहवलक्खणहिं जयजयघोसेण जयाणउ ॥
उप्परि दहमुहहु आरूसिवि दिण्णु पयाणउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

मलेयमजरी—उट्ठिओ रउद्दो विविहतूरसद्दो भग्गवइरिधीरो ॥
चैलियसाहणाण तुरयवाहणाण कलयलो गहीरो ॥ छ ॥

सचैल्लंति रामि महि कपइ    धरभरणमिउ ण फणिवइ जपइ ।
गयपैयकुडिय कुहिणि मयपकें    दुग्गम भावइ कयजणसकें ।
रहरहगगइदारियविसहर    महिहर दलिय मलिय मय वणयर ।
पवणवसेण वलिय विलुलियधय    हयमुहफेणसलिलपसमियरय ।
वरभडथडचुण्णीकयमहिरुह    सेण्णाउण्ण सगयणासामुह ।
सोसिय सरि सर णिसुढिय जलयर    असिविप्फुरणगसिय ससिदिणयर ।
रसिय भपण णाइ रयणायर    थिय देविंद विसठुल कायर ।
देसु विलंधिवि रणरहसुब्भडु    खधावारु धरिवि जलणिहितडु ।
आवासिउ सचारिमभवणहिं    कताकतहिं रइरसरमणहि ।
असियसियारुणपीयलहरियहिं    सोहइ बहुदूसहिं वित्थरियहिं ।

घत्ता—सिमिरुँ सुहावणउ परतरुणीसोहाखडणु ॥
मेइणिकामिणिहि ण पचवण्णु तणुमडणु ॥ १ ॥

## 2

मलयमजरी—रयणकतिकत मयरकेउवत विजयलच्छिवास ॥
सायरस्स णीर ण विमुक्कमेर रोहिउ[1] दसास ॥ छ ॥

---

**1** १ AP मलयमजरी णाम २ AP °वइरिवीरो ३ P has कयपसाहणाण before चलिय, K gives कयपसाहणाण in margin and in second hand ४ A सचल्लतरामे ५ AP °खुडिय°, K gives खुडिता वा as *p* ६ AP चलिय ७ AP सिविरु ८ AP रडणउ ९ A पचजण्णु १० AP मडणउ

**2** १ A रोहिओ

---

**1** 1 जयाणउ जयस्य आनयन जयनशीलमित्यथ 6 *a* गयपयकुडिय गजपदै क्षुमिता कम्पिता खुडिता वा आकुलिता विषमोन्नता इत्यर्थ, कुहिणि मार्ग, मयपके मदजलकर्दमेन 7 *b* मय मृता 9 सगयणासामुह गगनेन सह दिशामुखानि आपूर्णानि 13 सचारिमभवणहि गच्छद्भि दूष्यादिभि, *b* कताकतहिं स्त्रीकान्तै

**2** 2 विमुक्कमेर विमुक्तमर्यादम्, रोहिउ रुद्ध छादितम्

गज्जिउ परबलु जुज्झु दिट्ठउं चारएहिं दहवयणहु सिट्ठउ ।
हणुमंतेण तरुणिकमणीए लहु णियभायरेण सुग्गीवें ।
रामु रामरमणीउ रमाहरु खग्गपसाहियसयलवसुधरु ।
अच्छइ सायरतीरि णिसण्णउ अज्जु कल्लि ढुक्कइ आसण्णउ ।
सज्जणु अहिणवजलहरणीसणु त णिसुणिवि विण्णवइ विहीसणु ।
विणैविवसु वरखयरपहुत्तणु भुवणभायणिम्मलजसकित्तणु ।
काएं लच्छि देव वि घरि किंकर कवणु गहणु तुह किर पायड णर ।
एतु ण एतुं होंतु बलदप्पिय सगरि तुह करवालझडप्पिय ।
णिहिल जंति तिमिरु व दिवसयरहु पइ होंतें कहिं दिहि रिउणियरहु ।
एक्कु जि दोसुं णवर परमेसर ज पइ वाहिय परणारिहि कर ।

घत्ता—पूरइ तित्ति ण वि रइ पसरइ वड्ढइ लगहु ॥
परवहुरत्तमणु परि वडइ दिणेहिं णियगहु ॥ २ ॥

## 3

मलयमजरी—मयणवणियचित्तो परपुरधिरत्तो मरइ साणुअधो ॥
पडइ णरयंरधे सत्तमे तमधे बद्धकम्मबधो ॥ छ ॥

विसहरसुरणरविरइयसेवहु धीरहु वसुसखाबलएवहु ।
हरिवाहिणिविज्जाहरवाहहु भीमगयाहलमुसलसणाहहु ।
वज्जावत्तसरासणहत्थहु दिज्जंउ घंरिणि देव काकुत्थहु ।
चक्कपसूइ ण चगउ दावइ लक्खणु वासुएउ महु भावइ ।
अण्णंहु किंकिधेसु ण रप्पइ अण्णहु कि रणि वालि समप्पइ ।
अण्णहु मारुइ किं घरु आवइ कि पण्णत्तिविज्ज परिधाँवइ ।
अण्णहु पचयण्णु किं वज्जइ अण्णु एव किं लच्छिइ छज्जइ ।
अण्णें धरणिधेणु किह बज्झइ गारुडविज्ज ण अण्णहु सिज्झइ ।

२ A रमणीयरमाहरु ३ AP विणमिवसुधर ४ A भवणभाविणिम्मल°, P भुवणभाइ णिम्मलु
५ A वर किंकर ६ A यतु ७ AP णवर दोसु

**3** १ A णरइरधे २ A °विज्जाहर° ३ A दिज्जइ ४ AP देव घरिणि ५ A अण्णु वि
६ A परिहावइ

3 *b* चारएहिं दूतै 5 *a* रामरमणीउ स्त्रीणा मनोहर रमाहरु लक्ष्मण 8 *b* भुवणभाय° भुवन भागेषु 9 *b* पायडणर सामान्यनरा 10 *b* °झडप्पिय प्रहता 12 *b* वाहिय क्षिप्ता अपहृता इत्यर्थ

**3** 1 °वणिय° व्रणितम्, साणुअधो सानुबध पुत्रकलत्रादिसहित 3 *b* वसुसखाबलएवहु अष्टमबलभद्रस्य 5 *b* काकुत्थहु रामस्य 6 *a* चक्कपसूइ द्वितीयचक्रप्रसूति 7 *a* रप्पइ रागं करोति 9 *a* पंचयण्णु पाञ्चजन्य

परभइ इह पर परिहवगारी अण्णु वि जाणइ धूयँ तुहारी ।
केवलिभासिउ देव ण चुक्कइ देहि बलहु जा णियइ ण ढुक्कइ ।

घत्ता—जंपइ दहवयणु भो जाहि जाहि जइ भीयउ ॥
पूरइ आहयणि भडु कुमयण्णु महु बीयउ ॥ ३ ॥

## 4

मलयमजरी—रे विहीसणुत्त किं तए अजुत्त मुयसु मेहिणिवास ॥
हीणदीणवेसो चरणघुलियकेसो जाहि रामपास ॥ छ ॥

हउ किं[2] पुणु परिवाडि[3] ण जाणमि जों ण समिच्छइ सा णउ माणमि ।
एण मिसेण दतपहविमलइ खुडमि रामलक्खणसिरकमलइ ।
तणुंसीयइ दतेंह[6] मलु फिट्टइ विणु सीयइ महु किं ण पयँट्टइ ।
ता पणवतु थतु हेट्ठामुहु कसणाणणु ण गब्भिणिउरुहु ।
छेउ णिहालिउ बधुंसणेहहु णिग्गउ बधवु गउ णियगेहहु ।
मतिमईहिं मतु अवलोइउ भायरेण मणु णिच्छइ ढोइउ ।
एउ रहसु खगिंदणिसुभउ जोँयउ णाइ कुलीरहु डिंभउ ।
हा रावणु जियतु णउ पेक्खमि परहु जति णियकुलसिरि रक्खमि ।
बलवतइ विवक्खि असहायहु तेंप्पएसु भल्लारउ रायहु ।
इय चिंततु णिसिहि णीसरियउ दिट्ठु समुद्दु तेण जलभरियउ ।

घत्ता—झिज्जइ चदु जइ तो सायँरजलु ओहट्टइ ॥
पडिवण्णउ गुरुहु आवइकालि ण फिट्टइ ॥ ४ ॥

## 5

मलयमजरी—जइ वि णिब्भवको देहए ससको तो वि एस चदो ॥
सायरस्स इट्ठो माणसे पइट्ठो कतियाइ रुद्दो ॥ छ ॥

हउ पुणु खलु चुक्कउ मज्जायहि बधुवइरि किं जायउ मायहि ।
इय जूरतु जाम णहि वच्चइ ता रामहु विसारि ससुच्चइ ।

७ P धीय ८ A हो जाहि

**4** १ A मइ णिवास २ AP पुणु कि ३ A पडिवाडि ४ A जो ५ A तणे सीयए ६ AP दसणइ ७ A पइट्टइ ८ A बंधसणेहहु ९ A एहु १० A जोयउ ११ P तप्पवेसु १२ A सायरु जलु १३ P adds वि after कालि

11 *a* पर परभवे 12 *b* बलहु रामस्य 14 आहयणि सग्रामे

**4** 1 महिणिवास भूग्रासम् 3 *a* परिवाडि अनुक्रमम् 5 *a* तणुसीयइ तृणसीतया (?) 11 *b* तप्पएसु तस्मिन् विपक्षे प्रवेश

**5** 1 देहए शरीरे, ससको शश अङ्करूपेण 4 *b* विसारि दूत

देव विहीसणु दसणु मग्गइ तुह चरणारविंदु ओलग्गइ ।
पेक्खु पेक्खु णाहि आयउ वट्टइ जिह पडिवण्णु णेहु णोहट्टइ ।
तिह हरि[1] करि तुहु बेण्णि वि पत्थिय तेण दसासविचित्ति अवहत्थिय ।
ता रामें सुग्गीवहु पेसणु दिण्णउ आणहु तुरिउ विहीसणु ।
गय ते तहिं[2] सो वि सुपरिक्खिउ णिरु णिब्भिच्चु मिच्चु ओलक्खिउ ।
आणेप्पिणु दाविउ हलधारिहि पणविउ दाणविंदकुलवइरिहि ।
तें समाणिउ रावणभायरु किउ सभासणु सहरिसु सायरु ।

घत्ता—चित्तु चित्ति मिलिउ जगि परु वि बंधु हियगारउ ॥
बंधु जि परु हवइ जो णिच्चु जि वड्ढियवइरउ ॥ ५ ॥

## 6

मलयमंजरी—पुरिससोक्खगाही अहियदेहवाही[1] तिव्वदुक्खवल्लिं[2] ॥
कुणइ कहि[3] वि आय सुण्णरण्णजाय ओसह सुंहेलिं[4] ॥ छ ॥

रावणरज्जदाणु वितिण्णउ रामें तांसु तिवायइ[5] दिण्णउ ।
गय कइवय वासर तहिं जइयहु हणुए वुत्तु हलाउहु तइयहु ।
दे आएसु[6] देव णउ थक्कमि एवहिं लंकहि समुहु ढुक्कमि ।
भीमें वाणररूवें वड्ढमि डहमि घरइ भडंभडणु[7] कड्ढमि ।
भंजमि वणइं लवलिदललवइं[8] फलणवियगइं पल्लवतवइं ।
ता दसरहसुएण परबलहर अरिकरिदंतघट्टदीहरकर[9] ।
कामरूवधर णावइ सुरवर तासु सहाय दिण्ण विज्जाहर ।
वाणरविज्जइ वाणर होइवि सयल वि गय लंकाउरि जोइवि ।
गयणविलग्गदेह गिरिपहरण बुक्करंत वग्गिय मग्गियरण ।
पुछवलयवलइयतरुवरसिल चरणचारचालियधरणीयल ।
छिव्वंरणास[10] दीहदंताणण पिंगलणयण छोहभीसावण ।
धाइय पत्त दसासहु पट्टणु मारुइणा जोइउ णदणवणु ।

घत्ता—हरिकररुहवणिउ आलग्गसुरहिणवचंदणु ॥
वणु मइु आवडइ ण लच्छिहि केरउ जोव्वणु ॥ ६ ॥

5 १ AP करि हरि २ AP तहिं जि सो

6 १ A °देववाही २ A दुक्खभल्ली P दुक्खवेल्लिं ३ AP कहिं वि ४ A सुहेल्ली ५ AP तासु वि वायइ ६ P देहाएसु ७ P भडसडणु ८ A विल्लदललवइ, P लवलिदलवतइ ९ P °करिकत° १० AP छिव्विर°

7 *a* हरि हे विष्णो

6 1 °सोक्खगाही सुखोद्दालक अहिय° न हित 2 सुहेल्लि सुखम् 3 *b* तिवायइ त्रिवारवचनेन 6 *b* भडभडणु कड्ढमि सुभटसंग्राममुत्पादयामि 13 *a* छिव्वरणास पृथुनासिका, *b* °छोह° क्रोध 15 हरिकररुहवणिउ विष्णुनखव्रणितम् 16 आवडइ भासते

## 7

मलयमजरी—रूढबालकंद देवदारुमद सूरकिरणवार ॥
दिण्णकुसुमवास दिव्वमिहुणवास जणियमयणसार ॥ छ ॥

इंदसरासणेण घणउलमिव णीलतमालणिद्धय ।
वणमजणसुएण लगूलें चउहिं वि दिसहिं रुद्धय ॥ १ ॥
सुरकरिसोंड[1]चडभुयदंडबलेण चलेण पेल्लिय ।
मोडियमहिरुहोहसघट्टणचुयचंदणरसोल्लिय ॥ २ ॥
कर[2]मरकडहकुडयकडय[3]डरवउड्डावियविहगय ।
भग्गणवल्लफुल्लपल्लवदलगयगुमुगुमियभिंगय ॥ ३ ॥
णिविड[4]वडालिचंदणुम्मूलणविहडाविय[5]रसायल ।
णिग्गयसविसफरुसफुक्कारभयकरसमणिफणिउल ॥ ४ ॥
चूरियवारचूय[6]चंवचिंचिणिसमिलवलीलवगय ।
पायाहयपलोट्टचपय[7]चंयदलव[8]ट्टियकुरंगय ॥ ५ ॥
दलियलयाणिवासणिण्णासियसुरवरखयररइसुह ।
सुकढिणकरतलप्प[9]मुसुमूरियकीलागिरिगुहामुह ॥ ६ ॥
पविमलमणिसिलायलुत्थल्लणदिग्गयजक्खकंतय ।
सरवावीणिबद्धविद्धंसियकीलासलिलजंतय ॥ ७ ॥
हयवित्थिण्णसाहिसाहा[10]चुंयबहुमहुबिंदुतवय ।
पडियकवित्थभग्गकिंणरकरवीणालग्गतुंवय ॥ ८ ॥
दूरुद्धरियविडविमूलुज्झियविवरणिलीणसावय ।
पडिरव[11]तसियरसियविवियाणणवाणरविरइयावय ॥ ९ ॥
खुडियतुंगमहुसिह[12]रुंडियहंसविमुक्कसद्दय ।
णिवडियणालिएरसालामलफलमालाविमद्दय ॥ १० ॥
घल्लियसुक्करुक्खसघट्टसमुग्गयजलणजालय ।
दड्ढपियंगुपिंगउच्छलियफुलिंगपलित्त[13]तमालतालय ॥ ११ ॥
मुक्कतिसूलसेल्लसरधोरणिसव्वलभिंडि[14]मालय ।
धाइयभिउडिभंगभीसावणभिंडिउज्जाणवालय ॥ १२ ॥

7 १ AP °चडसुडभुय° २ A करमरकुडयकडय, P करमरकुहडकुडयकडय° ३ AP °कडयडसरउड्डा° ४ A णिवडियडालि°, P णिवडवडालि° ५ AP °रसालय ६ AP °चविचिंचिणि° ७ AP °चपयरयदल° ८ P वट्टिय° ९ A °खरतलप्प° १० P omits बहु ११ AP रसियतसिय° १२ A °सिहरुड्डिय° १३ AP omit तमाल १४ A °भिडमालय

7 1 °मद प्रचुरम् 3 घणउलमिव मेघपटलवत्, णिद्धय स्निग्धकान्तिमत् 7 °कडयडरव° कटकटाशब्द 9 °वडालि° वटवृक्षश्रेणि, °वदण° रक्तचन्दन १२ °चपयचय° चम्पकवृक्षसमूह° 14 °करतलप्प° करप्रहार° 20 °विवियाणण° विकसितमुखा 25 °भिंडिमालय गोफणी.

घत्ता—विज्जाणिम्मियहिं अइभीमहिं मायारक्खहिं ॥
पावणि वेढियउ रावणणंदणवणरक्खहिं ॥ ७ ॥

## 8

मलयमंजरी—समरम्मि कुद्धा पमयएहिं रुद्धा वूढवीरमाणा ॥
मारिया अणेया जित्तहरिणवेया रक्खसा पलाणा ॥ छ ॥

अवर वि आया मायाणिसियर लउडिमुसुडिकुंतकपणकर ।
कुडिल वक्कमच्छर इच्छियकलि जलियजलणजालाकेसावलि ।
गुंजापुंजरत्तणेत्तुब्भड दाढाचंडतुंड पललपड ।
दीहदीहजीहादललालिर परबलघोलिर हूलिर खूलिर ।
ताह रणंगणि दावियरुड्डहिं लग्गा वलिमुह गिरिसिलखंडहिं ।
सरपुंखहिं भमरेहि व मंडिय जिह वणि तरु तिह ते रणि खंडिय ।
जिह वेल्लिउ तिह अंतइं छिण्णइं जिह पत्तइं तिह पत्तइं भिण्णइं ।
जिह ताडहलइं तिह रिउसीसइं पाडियाइं धरणीयलि भीसइं ।
जिह उज्जाणहु णट्ठइं चक्कइं तिह रिउरहवरि भग्गइं चक्कइं ।
जिह सर तिह विद्धंसिय रिउसर लंकाणयरि पइट्ठा वाणर ।
घरि घरि चडिय जलंतहि पुंछहिं णीसारियउ जलणु पिंगच्छहि ।
दड्ढइं णायरभवणसहासइं जालाहार व धाहामीसइं ।
घत्ता—लग्गउ वइरिपुरि हुयवहु हणुवंतें घित्तउ ॥
राहवकोवसिहि ण दुण्णयतणेण पलित्तउ ॥ ८ ॥

## 9

मलयमंजरी—छइयकेउसोहो णयणचारुरोहो जणियलोयवसणो ॥
चडइ गयणि धूमो रावणस्स भीमो दुज्जसो व्व कसणो ॥ छ ॥

धूमंतरि जालोलिउ जलियउ ण णवमेहमज्झि विज्जुलियउ ।

---

१५ AP अइभीयहिं

**8** १ A एम एहि रुद्धा २ AP °णेत्तरत्तुब्भड ३ AP जीहदीह° ४ A भमरिहि ण, P भमरहिं ण ५ AP पव्वइं, K पत्तइं and gloss वाहनानि ६ A रिउ रहे रहे, P रिउ रहवरे

**9** १ P चारुणेहो

---

**8** 1 पमयएहिं वानरैः, वूढवीरमाणा धृतवीराहंकारा 2 जित्तहरिणवेया जितहरिणवेगा, मृगवद्द्रष्टा इत्यर्थ 6 *a* दीहदीह° अतिदीर्घा 7 *b* वलिमुह वानरा 9 *b* पत्तइं वाहनानि 16 दुण्णयतणेण सीतापहरणरूपान्यायतृणेन, पलित्तउ प्रदीप्त

**9** 1 छइयकेउसोहो आच्छादितध्वजशोभ, अन्यत्र, तिरस्कृतकेतुर्ग्रहविशेष

पुणु वि ताउ सोहति पईहउ  ण चामीयरतरुवरसाहउ ।
सदाणियसीमंतिणिदेहउ  सिहिणा पसरियाउ ण बाहउ ।
घरसिरकलसु वलतें छित्तउ  सरिउणिवासु व पउलिवि घित्तउ ।
सहयरु छदगामि णउ मुणियउ  धउ परिघोलमाणु किं हुणियउ ।
उग्गु ण सज्जणपक्खु विहावइ  उड्डगामि किह परु सतावइ ।
गमणें जासु होइ काली गइ  तहु किर किं लब्भइ सुद्धी मइ ।
वरमदिरजडियइ माणिक्कइ  डहइ अछेयपहापइरिक्कइ ।
तेयवतु परतेउ ण इच्छइ  सइ जि पहुत्तणु विहवहु वछइ ।
डज्झतहिं चदणकप्पूरहिं  पउरसुरहिपरिमलवित्थारहिं ।
रयभमरइ उक्कोइयमयणइ  वासियाइ सयलइ दिसवयणइ ।
जिणवरवेसणिसेहकयत्थइ  दड्ढइ मउदेवगइ वत्थइ ।

घत्ता—घरदुवारु जलइ वरपोमरायविप्फुरियउ ॥
जालापल्लवेहिं ण दीसइ तोरणु भरियउ ॥ ९ ॥

## 10

मलयमजरी—दहमुहस्स कम्म मुक्कणायधम्म जाणिउ व कुद्धो ॥
उक्कबाणजाल मुयइ ण विसाल सिहि सिहासमिद्धो ॥ छ ॥

होमदव्वरासिउ सपत्तउ  तिलजवघयकप्पासहिं तित्तउ ।
हुरुहुरतु ण सति पघोसइ  दिज्जउ रामहु सीय महासइ ।
होउ सधि जीवउ महिमाणणु  भुजउ लच्छि अविग्घ दसाणणु ।
पत्तहि अग्गिजाल पवियभइ  पत्तहि वाणरविंदु णिसुभइ ।
माय ण पुत्तहहु समग्गइ  जणु हल्लोहलिहुउ कहिं णिग्गइ ।
भवणारोहणु करिवि अभग्गउ  ण वइसाणरु जोयहु लग्गउ ।

२ A चडते P बलवतें, but K वलते ज्वलता ३ A किंपरु ४ AP कहि ५ A परबलु पेक्खिवि णावइ थक्कइ ६ P °परिथक्कइ ७ P तेयमतु ८ A रइभवणइ ९ A जिणवरभवणणिसेह°, P जिणवर वेसणिवेस° १० P सरियइ

**10** १ A सित्तउ २ A दिज्जहो ३ A होइ ४ A अविग्घु ५ AP सामग्गइ

4 *a* पईहउ प्रदीर्घा 5 *a* सदाणिय° अग्निना बद्ध 6 *a* वलतं ज्वलता, *b* सरिउणिवासु स्वस्य अग्नेः रिपुः शत्रुर्जलं तस्य स्थानं कलशो घटः तेन प्रज्वाल्य क्षिप्तः 7 *a* सहयरु अग्नेर्मित्र वायुः 9 *a* काली कृष्णा 10 *b* अछेयपहापइरिक्कइ अच्छेद्यप्रभाप्रचुराणि 13 *a* रयभमरइ रता भ्रमरा येषु, उक्कोइयमयणइ उत्पादितकामानि 14 *a* जिणवरवेसणिसेहकयत्थइ नग्नत्वनिषेधकानि वस्त्राणि 16 भरियउ बद्धम्

**10** 3 *b* तित्तउ तृप्त 6 *a* पवियभइ प्रविजृम्भते 7 *a* पुत्तहहु पुत्र एव माण्डम्, समग्गइ संवृणोति

केत्तिय लंकाउरि मइ दड्ढी ण विडेण कामिणि दुवियड्ढी ।
बाहिरपुरवरु एम डहेप्पिणु कित्तिमणिसियरणिवरु वहेप्पिणु ।
वलिउ पडीवउ पावणि तेत्तहि णिवसइ ससिविरु राहउ जेत्तहि ।

घत्ता—भरहें लक्खणेण सहुं सीरपाणि अवलोइउ ॥
तेणजणहि सुउ सियपुप्फयतु पोमाइउ ॥ १० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णदणवणमोडण लंकाडाह
णाम छहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७६ ॥

६ A वलिउ ७ A ससिवस, P ससिवह ८ P omits लंकाडाह

9 *b* कामिणि दुवियड्ढी अचतुरा वेश्या 11 *a* पडीवउ प्रतीप पश्चात् 13 पोमाइउ प्रशंसित॰ श्लाघित

# LXXVII

वणु भजिवि पुरवरु णिद्दहिवि हणुइ णियत्तइ जयसिरिकामें ॥
अज्ज वि किं णावइ खयरवइ पुच्छिउ एम विहीसणु रामें ॥ ध्रुवक ॥

## 1

हेला—सो तेलोक्ककटओ सहइ किं पराण ॥
घणुगुणरवविंयभिय विलसिय सराण ॥ छ ॥

ता भणइ विहीसणु भयणिरीहु जइ गिरिवरकंदरि वसइ सीहु ।
तो करि कुरंग किं तेंहिं चरंति कायर तहु गंधेण जि मरंति ।
महिवइ लंकाहि जइ होंतु देव जीवंत पंति तो भिच्च केंव ।
तें जाणिउ तुहु वालिहि कयंतु रइवइसुग्गीवसहायवंतु ।
जसु भाइ अणंतु अणंतधामु सो विज्जइ विणु कहिं जिणमि रामु ।
इय चिंतिवि होइवि सुइसरीरु इंदइ णियरक्ख करेवि धीरु ।
आइच्चपायमहिहरि दसासु थिरु विरएप्पिणु अट्ठोववासु ।
अच्छइ विज्जासाहणपयत्तु णेरंतरु झाणारूढचित्तु ।
तं णिसुणिवि आढत्ताहवेण विज्जाहर पेसिय राहवेण ।
धाइय ते दुद्धर विग्घकारि हलमुसलसवालतिसूलधारि ।

घत्ता—णहि आइवि दिणयरचरणगिरि मायावाणरेहिं कयरावहिं ॥
वेढिउ विंझु व जलहरहिं गज्जणसीलहिं दरिसियचावहिं ॥ १ ॥

## 2

हेला—घोरणीलवण्णया छण्णगयणभाया ॥
आहूया घणाघणा मुक्कधीरणाया ॥ छ ॥

वाओलिधूलिबहलधयारु गंडगडिय पडिय पाहाणफारु ।

---

**1** १ P भुजिवि २ A हणुवणियत्तइ ३ A तिल्लोक्क°, P तइलोक्क° ४ A तहि किम चरति ५ AP जइ महिवइ लंकहि होंतु ६ P तो जाणिउ ७ AP णियरक्खणु करिवि ८ P °साहणि ९ A सबाणतिसूल°

**2** १ AP °वीर° २ P वाउधूलियबहल° ३ P गयघडिय°

---

**1** 1 हणुइ हनूमति, णियत्तइ निवृत्ते सति 5 *a* °णिरीहु निस्पृह निर्भय 8 *a* तें रावणेन, *b* रइवइ° हनूमान् 9 *a* अणंतु लक्ष्मण, अणंतधामु प्रचुरतेजा 10 सुइसरीरु पवित्रशरीर, *b* इंदइ इन्द्रजित् 11 *a* आइच्चपायमहिहरि आदित्यपादगिरौ 13 *a* आढत्ताहवेण प्रारब्धसंग्रामेण 14 *b b* °सवाल° करवालेन खड्गेन सह 15 दिणयरचरणगिरि आदित्यपादनामा पर्वत

**2** 2 आहूया सजाता, घणाघणा शब्दैर्निरन्तरा मेघा 3 *a* वाओलि° चक्रवाती वात्या

णिवडिय तडि फोडिय गिरिखयालु वरिसाविउ तक्खणि मेहजालु ।
जलु थलु महियलु जलभरिउ सयलु पइ ढोइउ आयसवलयणियलु ।
दरिसिउ मंदोयरिकेसगाहु भडु कुमयण्णु फणिबद्धबाहु ।
बधवसिरकमलइ तोडियाइ वच्छयलइं विउलइ फाडियाइ ।
कुद्धउ दसासु झाणाउ ढलिउ कहिं चदहासु पभणतु चलिउ ।
इदइणा कहिउं खगेसरासु परमेसर खगमायाविलासु ।
णीसेसु वियभिउ एहु ताव तुहु णियणियमपब्भट्ठु जाव ।
ता राए विज्जादेवयाउ णिज्झाइयाउ णिहियावयाउ ।
आयाउ ताउ पजलियराउ पेसणु महति पणमियसिराउ ।

घत्ता—भणु दसकधर धरणिधर हरहु जीउ अरिवरहु सणामहु ॥
अम्हइ बलवतइ हरिबलइ तसहु णवर रणि लक्खणरामहु ॥२॥

## 3

हेला—ता भणिय महेसिणा जाह जाह तुम्हे ॥
णियभुयजुयसहायया समरम्मि अम्हे ॥ छ ॥

सक्कहु सीरिहि लच्छीहरासु किं वसणि दीणु भण्णइ परासु ।
एत्तहि इदइ अब्भिडिउ ताह मायावियाह साहामयाह ।
आवट्टइ लोट्टइ जायमण्णु सघट्टइ फुट्टइ वइरिसेण्णु ।
दरमलइ थोट्टदुग्घोट्टथट्ट सूडइ विसट्ट पडिभडमरट्ट ।
पेरिखलइ वलइ हणु भणइ हणइ उल्ललिवि मिलइ रिउसिरइ लुणइ ।
रुभइ थभइ तरवारिधार णिहणइ विहुणइ पवरासवार ।
सीसक्कइ फोडइ तडयडत्ति मुसुमूरइ छत्तइ कसमसत्ति ।
असिवरइ खलतइ खणखणति कडियलकिंकिणिउ झुणुझुणति ।
पइसरइ तरइ कीलालवारि पडिवक्खहु पाडइ पलयमारि ।
इदइ णिरत्थ कयवूढगव्व आयासयलि गय पमय सव्व ।

४ P मोहजालु ५ A जलथलणहयल जलभरिय ६ A वणदेवयाउ ७ P आइयउ ८ P तसहु धरणे सहु लक्खण°

**3** १ A °दुग्घट्ट° २ AP साडइ ३ AP पडिखलइ ४ P णिहुणइ ५ AP खलखलति ६ AP किंकिणियउ रुणुरुणति ७ A पडयमारि ८ A पवय

4 *a* गिरिखयालु पर्वतानां क्षयकालो मेघ 5 *b* पइ पादे मन्दोदर्या 8 *a* ढलिउ च्युत 10 णियणियमपब्भट्ठु निजकनियमात्प्रभ्रष्ट 12 *b* महति श्लाघयन्ति 13 सणामहु प्रख्यातानाम् 14 तसहु भय कुर्म

**3** 3 *a* सक्कहु शक्नुम 4 *b* साहामयाह वानराणाम् 5 *a* जायमण्णु जातक्रोध 6 *a* थोट्ट° समर्था, °दुग्घोट्ट° दुर्धरा, *b* °मरट्ट गर्व 12 *b* पमय वानरा

घत्ता—विहुरि वि धीरु अविसण्णमणु ण चलइ किं पि सुहडहकारहु ॥
लक्केसरु लक्कहि गपि थिउ लघु सेमोडिवि गुरुरणभारहु ॥ ३ ॥

## 4

हेला—कयरिउविग्घविब्भमा कमियगगणभाया ॥
आया राममंदिर विविहखयरराया ॥ छ ॥

ता इच्छियणियणाहसिवेण हणुमंतें सुग्गीवणिवेण ।
गिरिसमेयसिहरसिद्धाओ अणिमाइहिं रिद्धिहिं रिद्धाओ ।
विज्जाओ परसाहणियाओ केसरिखगवइवाहिणियाओ ।
दिण्णाओ दुल्लघबलाण वीराण गोविंदबलाण ।
पण्णत्तीए रइय जाण रयणमय मणहारि विमाण ।
कूडकोडिसघट्टियचद दिव्व कइवयजोयणरुंद ।
भित्तिणिरूवियचित्ति सुरूव बद्धसिणिद्धचिंधचदोव ।
रणझणतमणिकिंकिणिजाल हेममय तोरणसोहाल ।
णाणाविहदुवाररमणीय पारभियसुरसुदरिगीय ।
आयण्णियणरखयरासीसो अक्खयदहिदोवचियसीसो ।
तत्थारूढो देवो रामो हरि हरिसिल्लो अजणसामो ।
दरिसियहयमुसलकुसपास भूगोयरसेण्णं णीसेस ।
चलिय गगणे खयराणीय सामिकज्जि परिछेइयजीय ।
णाणाहरणविहूसियदेह गयवरदतवियारियमेह ।

घत्ता—सदाणिय णंहि ससिदिवसयर पेल्लापेल्लि जाय खगरायहं ॥
धयछत्तचलतह चामरह हरिकरिरहवरभडसघायहं ॥ ४ ॥

९ AP ण विसण्णमणु १० AP समोडिवि

**4** १ AP गयण° २ AP °सिहरि सिद्धाओ ३ AP धीराण ४ A दिव्वा कइ° ५ A भित्तणिरूविय° ६ AP चित्तसरूव ७ AP रुणुरुणत° ८ P omits हरि ९ A °णहसलि° १० AP पेल्लावेल्लि ११ P जाइ

**4** 5 *a* परसाहणियाओ शत्रुसाधनीया, *b* केसरिखगवइवाहिणियाओ सिंहगरुड-वाहिन्य 7 *a* रइय जाण रचित विमानम् 8 *a* कूड° शिखराणि 9 *a* भित्तिणिरूवियचित्ति भित्तिलिखितचित्रेण, *b* °चिंधचंदोव ध्वजचन्द्रोपकम् 12 *b* °दोवचियसीसो दूर्वाञ्चितमस्तक 15 *a* खयराणीय खगसैन्यम्, *b* परिछेइय° सकल्पितम् 17 सदाणिय बद्धा, पेल्लापेल्लि सघट्ट

## 5

हेला—णवणिसियसणिहे णहयले चलतं ॥
मेयगलमयजले चल दीसए वहंत ॥ छ ॥

करिछाहिहिं जलकरिवर विलग्ग जलणर णरवरपडिबिंबभग्ग ।
धावंति मयर पलगिलणकाम झस सुसुमार गभीरथाम ।
सीमंतिणिपडिरूवइं णियंति जलदेवयाउ सीसइं धुणंति ।
उज्जलमोत्तियभायणधरेहिं पवणुद्धुयचलवीईकरेहिं ।
गज्जइ समुद्दु वाहरइ णाइ मरुकंपियगु भयवसु व थाइ ।
सायरु लंघिवि परिहरिवि सक वेढिय विज्जाहरणिवहिं लंक ।
किउ कलयलु रणतूरइं हयाइं भीरुहुं चित्तइं विहडिवि गयाइं ।
सत्त वि पायालइं थरहरंति उम्मग्गलग्ग सायर तरंति ।
विसहर भयरसवस विसु मुयंति कुंचियकर दिसकरि कुक्करंति ।
दिसइ णक्खत्तइं ढलढलंति झुल्लतइं णहि एक्कहिं मिलंति ।

घत्ता—वाइत्तयसद्दसमुच्छलेण सखोहणु जायउ तेल्लोक्कहु ॥
किं जाणहुं णहि तडि तडयडिय पडिउ बिंबु समियकहु अक्कहु ॥५॥

## 6

हेला—ता भुवणुत्तुरडिणिवडणे किं हुओ णिग्घोसो ॥
आहासइ दसाणणो गाढजायरोसो ॥ छ ॥

भायर किं सुम्मइ घोरु णाउ किं उड्डइ धूलीरयणिहाउ ।
दीसइ महिमंडलु महिहरेहिं णहयलु सछण्णउ णहयरेहिं ।
ता विहसिवि पभणइ कुंभयण्णु अवयरिउ देव पडिवक्खसेण्णु ।
हा हरि आढत्तउ जंबुएहिं वइवसु जीवहिं जीवियखुएहिं ।
सेरिहु मयमत्ततुरंगमेहिं पक्खिवइ खलियउ उरजगमेहिं ।

5 १ मयरायले जले, P मयरायलजले २ A °गलिण° ३ AP रणतूरइं ४ P भीरहु ५ A बुक्करंति, P कुकुवंति

6 १ A °त्तकडिणिवडणे P °त्तुरुडिणिवडणे २ A महियलेहिं, P महियरेहिं ३ A मयमत्तु

5 1 णवणिसियसणिहे नवीनखड्गसदृशकान्तिमति गगने 3 a करिछाहिहिं गजप्रतिबिम्बैः समुद्रजले गगने दृश्यमाने 4 a पलगिलणकाम मांसगिलने कामो वाञ्छा येषाम् 7 a वाहरइ व्याहरति आमन्त्रयतीत्यर्थ 8 a सक मयम् 10 b उम्मग्गलग्ग उन्मार्गलग्ना, तरंति वहन्ति 12 b झुल्लतइं दोलायमानानि 14 समियकहु मृगाङ्कसहितस्य चन्द्रसहितस्य

6 1 °उत्तुरडि° उतरडी इति भाषायाम् 3 a भायर हे कुम्भकर्ण 4 a महिहरेहिं भूगोचरैः 6 a आढत्तउ वेष्टित, जंबुएहिं शृगालैः 7 a सेरिहु महिष

किं तुज्झु वि उप्परि पत्ति सत्तु किं तुहुं वि समिच्छहि परकलत्तु।
लइ ढुक्कउ दीसइ विहिविहाणु भिडु एवहिं पीडिवि रणि किवाणु।
तं णिसुणिवि भणिउ दसाणणेण जीवंतें मइ पच्चाणणेण।
अरिहरिण मिलेप्पिणु किं करंति असिणहरखडप्पिय धुउ मरंति।
धंव पावउ भुक्खिय पलयमारि पहुणाविय लहु सण्णाहभेरि।
घत्ता—विरसतइ णरकरयलहयइ तूरइं णाइ कहंति दसासहु ॥
राहवहु सीय णउ दिण्ण पइं किं उक्कठिउ वइवसवासहु ॥ ६ ॥

7

हेला—कंचणकवयसोहिओ णवतमालवण्णो ॥
सण्णारायराइओ ण घणो रवण्णो ॥ छ ॥

सणज्झमाणु रिउतासणेण भडु सोहइ दिव्वसरासणेण।
असिविज्जुइ विमलइ विप्फुरंतु जीवियचर जीवणु अणहु दिंतु।
भडु को वि णिहालइ बाणपत्तु लइ पयहु एवहिं रिउ जि पत्तु।
भडु को वि पलोवइ तोणजुम्मु ण रणसिरिऊरूजुयलु रम्मु।
भडु को वि मुयइ सण्णाहभारु किं कासु वि रक्खइ लोहसारु।
कासु वि पइसरइ ण पुलइयंगि सो फुट्टइ पिसुणु व सुयणसंगि।
किं धणुणा कयबहुसंकएण चरणेण वि आहववंकएण।
भडु को वि भणइ हउं कोंतवाहु कोंतें वाहमि रिउरुहिरवाहु।
मायंगकुंभु णिहिकुंभु जेव हउं फोडमि अज्जु गयाइ तेव।
भडु को वि भणइ महिघत्तियाइ दक्खालमि थूलइ मोत्तियाइ।
अवरु वि करिरयणहं देमि हत्थु णियणिवरिणमेल्लावणसमत्थु।
घत्ता—दहवयणहु णिच्च विरत्तियहि को वि भणइ हियवउ संतावमि ॥
अणरसियहि सीयहि तणिय तणु राहवरत्तकुसुमइं रावमि ॥७॥

४ हुति ५ A ढुकइ ६ AP °णहयर° ७ A धुउ, P धउ, K धव and gloss तृप्तिम्

**7** १ P °उरूजुयरम्मु २ AP लोहभारु ३ A थाहमि ४ A °थाहु ५ A कुंभणिहि ६ P महिथत्तियाइ

9 *a* विहिविहाणु पूर्वार्जितम् 11 *b* असिणहर° खड्गनखा, °खडप्पिय प्रहता 12 *a* धव तृप्तिम्

**7** 2 °राइओ राजित शोभित 4 *b* जीवणु ग्रासवृत्ति जलं च 5 *a* बाणपत्तु बाणपुंखम्. 6 *a* तोणजुम्मु तूणीरयुगलम् 8 *a* पुलइयंगि पुलकितशरीरे गात्रत्राण न प्रविशति 9 *a* कयबहुसंकएण स्वकार्यक्षमनया कृता वधूना बहूनां च शङ्का येन 10 कोंतवाहु कुन्तधर, *b* °वाहु प्रवाह 14 अणरसियहि अरसिकाया अरक्ताया, रावमि रञ्जयामि रक्ता करोमि

## 8

हेला—आरूढा महासवारवाहिया तुरगा ॥
कवणसोरिसज्जिया चोइया मयगा ॥ छ ॥

पवणपहयंविलबियधयवड विविहजाणजपाणसकड ।
सयडचक्कविकरणपडिरव बद्धरोसभडभिउडिभइरव ।
विप्फुरतकरवालधारय हणु भणत दुक्कासवारय ।
पणवतुणवझल्लरिमहासर चिंधछत्तछण्णबरतर ।
चलियधूलिमइलियदिसामुह पलयकालकालग्गिसणिह ।
इक्कदणोइदतासण ण कयतरायस्स सासण ।
णिग्गय बल बहलकलयल रहियणहयल पिहियमहियल ।
तुमुतुमतरणरहसमद्दल जायय च पडिसुहडगोंदल ।
खग्गघायविच्छिण्णसीसय हुकरतभूभगभीसय ।
कोंतकोडिसघट्टपेल्लिय वणगलतकीलालरेल्लिय ।
विचलियतगुप्पतचरणय हयगयासणीदिण्णकरणय ।

घत्ता—पणवियराहवरामणपयइ सीयाकारणि अमरिसपुण्णइ ॥
अब्भिट्टइ गिरितरुवरकरइ मायावाणरणिसियरसेण्णइ ॥ ८ ॥

## 9

हेला—झसमुग्गरमुसढिहिं णिहयणरवरग ॥
आय दडसजुय दूरमुक्कभग ॥ छ ॥

रहिएहि रहिय तुरएहिं तुरय रणि रुद्ध एते दुरएहिं दुरय ।
पायालहि वरपायाल खलिय कमसचालेण धरित्ति दलिय ।
हरिखुरखणित्तखउ ण मरतु उट्ठिउ धूलीरउ पय धरतु ।

8 १ P °सारसज्जिया २ AP °पहयपविलबिय° ३ A पवणरुणय° ४ AP° दणुइदतासण ५ P गासण ६ A °मदल ७ P भीमय ८ AP विवलियत° ९ P गयसिणी°

9 १ A झसमुसलमुसुढिहिं णिहिय° २ A रहएहिं ३ AP यत ४ AP °सचारेण ५ A ण खउ मरतु

8 2 °सारि° पर्याणम् 6 *a* °तुणव° करटा वाद्यविशेष 9 *b* रहिय° छादितम् 12 *a* वण° व्रण, °कीलाल° रुधिरम् 13 *a* विचलियत° त्रुटितम् अन्त्रम्, *b* हयेत्यादि अश्वगजारोहकदत्तकरणकम् 15 गिरितरुवरकरइ वानरकरे गिरय राक्षसकरे वृक्षा

9 1 °मुसढि दण्डविशेष परिघायुध च 2 दडसजुय बलयोर्युद्धम् 3 *a* रहिएहिं रथिकै, *b* एत समुखमागच्छन्त, दुरएहिं गजै 4 *a* पायालहिं पदातिभि 5 *a* °खणित्तखउ खनित्रै खनित, *b* पय धरतु मरणभयादिव पूर्वं पादे लग्न

आयासि चडिउ ण पुहइपोंणु सतावि रतें पिहिउ भाणु ।
चवलेण छुद्धवसहु कएण णिवडंतु णिवारिउ ण धएण ।
दीसइ पहुरु कविलगु केव छत्तारविंदि मयरंदु जेव ।
खुप्पइ मयथिप्पिरि करिकवोलि भणु को ण विलग्गइ दाणसीलि ।
महुयरु पडिवक्खीहुयउ तासु किं पिच्छें फेडइ चियदिसासु ।
जंपाणि गवक्खहिं पइसरंतु पररमणियणत्थलि मंदं थंतु ।
रउ भावइ मेहु ण बीउ जारु तें छाइउ दहमुहबहुवियारु ।
असिसलिलि णिलीणु णं पंकु होइ चमराणिलेण उल्ललिवि जाइ ।
मउडग्गि पडंतु जि कुंडलासु धावइ मेहु व रविमंडलासु ।
मइलइ मंडलियह उरपएसु ढंकइ सियहारावलिविलासु ।

घत्ता—रयमेलउ मइलिवि भुवणयलु कलिकालेण समाणउ ॥
करिगिरिवणणिज्झरवियलियहि सोणियजलवाहिणियहि लीणउ ॥९॥

## 10

हेला—जा कोट्ट पलोट्टिय कवडवाणरेहि ॥
ता रविकित्ति णिग्गओ सहु सकिंकरेहिं ॥ छ ॥

तओ तेण भूमीससेणाहिवेण पिसक्कासणुम्मुक्कजीयारवेण ।
रहत्थेण सामत्थधत्थाहिएण तमोह व्व सारंगबिंबंकिएण ।
विहिज्जंतकधच्छिर छिण्णमुंड रसालुद्धभेरुंडखज्जंतरुंड ।
ललंतंतवेढंतथिप्पंतरत्त सदप्प खुरप्पोहछिज्जंतछत्त ।
भिडंत पडंत रुसारत्तणेत्त समुब्भूयपासेयधाराहि सित्त ।

६ AP आयासि चडिउ ७ AP °पाणु ८ A सताउ करतु विणिहिउ भाणु P सताव करत पिहिउ भाणु ९ P पडुर १० P मा खुप्पइ ११ P करिकणेलि १२ A को वि ण लग्गइ १३ A मदु १४ A णउ भावइ १५ P ण महु १६ A दहमुहमुहावेयारु १७ AP णउ १८ °गिरिवरणिज्झर°

**10** १ AP सह २ A धम्माहिएण ३ A सारगच्चिंधकएण ४ A °रुण्णच्छिर ५ A तुड ६ A खुरुप्पेहि, P खुरुप्पोह°

6 *b* सतावि र तापकारी, त रजसा 7 *b* धएण ध्वजेन 9 *a* मयथिप्पिरि मदक्षरणेन, करिकवोलि गजकपोले 10 *b* चियदिसासु व्याप्तदिग्वदनम् 12 रउ रज, *b* दहमुहवहुवियारु दशमुखवधूविकार 14 *b* मेहु व रविमंडलासु सूर्यस्य छादनार्थं अभ्रपटलमिव धावति 15 *a* उरपएसु हृदयप्रदेशम् 16 रयमलउ रजसमूह 17 करिगिरिवणणिज्झरवियलियहि गजा एव पर्वता तेषां व्रणनिर्झरणविगलितायां नद्याम्

**10** 1 कोट्ट दुर्ग, पलोट्टिय पातित 2 रविकित्ति रावणस्य सेनापति 3 *b* पिसक्कासण° धनु 4 *a* °धत्थाहिएण ध्वस्तशत्रुणा, *b* सारंगबिंबकएण चन्द्रेण 5 *a* °च्छिर विभेद्यमानम् 6 *a* °थिप्पंतरत्त क्षरद्रुधिरम् 7 *b* °पासेय° स्वेदबिन्दव

गइंदुग्गाढतग्गाभिजंतगत्तं दिसासु विसंत वसातुप्पलित्तं ।
गयाघट्टणुट्ठुग्गिजालापलित्तं थिरत्तेण साहारियासारमित्तं ।
समप्पतइच्छं सरुब्भिण्णवच्छं महाघायमुच्छाविणिम्मीलियच्छं ।
विरुज्झंतजुज्झतपाइक्कचक्कं सकोदंडकंडं कयं खंडखंडं ।
वराहिंदमाणेहिं बाणेहिं रुद्धं रणे रामएवस्स सेण्णं णिरुद्धं ।

घत्ता—तहु परबलु किमिणुं व ओसरिउ मग्गणवडु घुलंतउ पेक्खइ ॥
आवरणु करइ तणु सवरइ णवउ कलत्तु व अप्पउ रक्खइ ॥ १० ॥

## 11

हेला—ता विज्जाहराहिवो पउरकोवपुण्णो ॥
सणद्धो महाभडो अवि य कुंभयण्णो ॥ छ ॥

पहु कुंभु णिकुंभु अमेयसत्ति इवइ इदाउहु इदकित्ति ।
इंदीवरलोयणु इंदवम्मु इयदेहु सूरु दुम्मुहु अगम्मु ।
मइंघतु महामहु बुहमुहक्खु बलकेउ महाबलु धूमचक्खु ।
खरदूसणु मउ हत्थप्पहत्थु सणज्झइ भडयणु रणसमत्थु ।
असिधेणु व केण वि दढणिबद्ध परसासाहारहु किर पयद्ध ।
रणदिक्खहि थाइवि दिट्ठिरम्मु केण वि धरियउ गुणवंतु धम्मु ।
सधइ समाणसरकोडि केव परलोउ महइ वायरणु जेव ।
केण वि चिंतिवि णियंतूवहु कुसलु रिउकणकडणु कड्ढियउ मुसलु ।
केण वि असिवाणिइ णयण दिट्ठ मीणा इव बेण्णि रमंति इट्ठ ।
केण वि दरिसाविउ अद्धयंदु थिउ धरिवि णाइ णहभायछंदु ।

७ AP °घट्टणुत्थग्गि° ८ A धराहिंडमाणेहि ९ A विरुद्ध १० AP किविणु

**11** १ A पवर° २ P इंदधम्मु ३ P अमम्मु ४ P महुवतु ' A दढुणिबद्ध ६ AP पइद्ध ७ AP °णिवहु ८ AP णहभाइ चंदु, K णहभायचंदु but gloss साहश्य T णहभायछंदु नभोभागसाहश्य

9 *b* साहारियासारमित्तं माभीषिताधीरितसारमित्रम् 10 *a* समप्पतइच्छं सम्प्रामपूर्णेच्छम् 12 *a* वराहिंदमाणेहिं सपप्रमाणै दीर्घैं बाणै 13 किमिणु कृपणम्

**11** 1 पउर° प्रचुर 3 *b* इदाउहु इन्द्रायुधनामा 4 *b* इयदेहु इतदेहनामा 5 *a* बुह सुहक्खु बुधमुखाख्य 6 *b* मउ मय 7 *b* परसासाहारहु परधान्याहारे, परश्वासाहारे च, पयद्ध प्रयुक्ता 8 *b* गुणवंतु धम्मु धर्मो धनुश्च 9 *a* समाणसरकोडि समाना सजातीया सप्रमाणाश्च स्वरा बाणाश्च, *b* परलोउ सुभटपक्षे परलोप, व्याकरणपक्षे समान सवर्णे दीर्घो भवति परश्च लोप 11 *a* असिवाणिइ खड्गपानीये 12 णहभायछंदु नभोभागसाहश्यम्, नभोभागो हि अर्धचन्द्र खण्डचन्द्र धरति सुभटः पुनरर्धचन्द्र बाणविशेषमिति

संगामखेसकरणुक्कमेण केण वि हलु गेहिउ सविक्कमेण।
केण वि गेंहियउ फणिपासु सारु सोहइ णं सगरसिरिहि हारु।
घत्ता—मायगतुरगविमाणधयरहवरवाहणदूसचारें॥
सणद्ध कुद्ध जयलुद्ध भड उब्भड णिग्गय णयरदुवारें॥ ११॥

## 12

हेला—अमरसमरभरुव्वहो थिरकिणंकखधो॥
कुलधवलो धुरधरो वइरिबाहुबधो॥ छ॥
रयणणिम्मवियरयणियरधयमंयिरो
विक्कमेक्कमियमहिवलयगिरिसायरो।
पवणवइसवणजमवरुणबलभजणो
असुरसुरखयरफणितरुणिमणरजणो।
गरलतमपडलकालिंदिजलसामलो
सुरहिमयणाहिउच्छलियतणुपरिमलो।
कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो
सरलरत्तच्छिविच्छोहणिज्जियविसो।
वीरपरिहवपरो रइयरणपरियरो
मुक्कगुणरावधणुदडमडियकरो।
णिहिलजगगिलणकालो व्व ढुक्को सय
छलछण्णो महतो जणतो भय।
कढिणभुयफलिहसयलिंदकपावणो
कसणघणकरिवरारूढओ रावणो।
असमपरविसमसाहसणिही णिग्गओ
विमलकमलाहिसेयस्स ण दिग्गओ।
हरिकरिकमाहया हल्लिया मेइणी
रणरुहिरलपडी णच्चिया डाइणी।
कुलिसकुडिलकुरारावलीराइय
धगधगन्त पुरो चक्कमुद्धाइय।

९ P गहिउ विक्कमेण १० AP लइयउ ११ A सगरि

12 १ AP थिरु २ P विक्कमाक्कमिय° ३ AP धीर° ४ A °गलिण°

13 b स विक्कमेण निजपराक्रमेण 1) °दूसचारे दु सचारेण

12 8 सुरहिमयणाहि° सुरभिकस्तूरिका 10 °विच्छोह° क्षोभ, °णिज्जियविसो निर्जित वृषभ 15 सयलिंदकपावणो शैलेन्द्रकम्पकर 18 विमलकमला° निर्मललक्ष्मी 21 अकुराराबलीराइय अकुरवदाराश्रेणिशोभितम्

घत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडइ दावियकुलहमयवडघायइं ॥
धुलवट्टियहरिवरभडथडइ मुसुमूरियसामंतणिहायइ ॥ १२ ॥

## 13

हेला—विज्जाबलरउद्दइ जायगारवाण ॥
वाहियरहविमद्दइ सद्दरउरवाण ॥ छ ॥

जयकारियराहवरावणाह　　जयलच्छिरमणरजियमणाह ।
समुहागयाह सपसाहणाह　　जुज्झतइ दोह मि साहणाह ।
असिणिहसणसिहिजालउ जलंति　　गुडपक्खरपल्लाणइं जलंति ।
णीवंति ताइं वणरुहजलेण　　केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसकु पिहुपिंछफारु　　लग्गेउ ण गयवरगिरिहि मोरु ।
गडयलि विलग्गउ बाणपुंखु　　दीसइ ण छप्पउ दाणकखु ।
केण वि गयणगणि देवि करणु　　करिकुंभवीढि थिरु थविवि चरणु ।
लोट्टिवि आरोहु णिबद्धकोहु　　कोंडिछुरियइ पहणिवि घित्तु जोहु ।
अरिणरकरघल्लिय लउडिदडें　　चूरिय सदण सगामंचड ।
मणिजडिय पडिय मडा ग्गयमउड　　उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।
केण वि कासु वि पविमुट्ठिहयउ　　सीसक्कें सहु सिरु चुण्णु कयउ ।
गउ वियलियासु ककालसिद्धु　　कासु वि लोहियरसु रसिवि गिद्धु ।
उड्डेप्पिणु वच्चइ गयणमग्गु　　ण पोरिसु वण्णइ गपि सग्गु ।
तहिं अवसरि बहुतसिल्लएहिं　　जायवि कयजणमणसल्लएहिं ।

घत्ता—णिउ णिग्गउ भरहद्धाहिवइ चारहिं रामहु कहिउ वियारिवि ॥
थिउ ता रणदिक्खहि दासरहि पुप्फयतु जिणवरु जयकारिवि ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे राहवरावणबलसणहण
णाम सत्तहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७७ ॥

---

13 १ A चलति २ A पिच्छभारु ३ A उग्गउ ४ A देवि ५ A करि छुरियइ ६ P °दडि ७ P °चंडि ८ A बहुभत्तिल्लएहिं ९ A उभयबलभिडण, P उभयबलाभिडण

---

24 °णिहायइ समूहयो द्वयो सैन्ययो

13 1 °गारवाण °गर्वाणाम् 5 b गुड° गुड कुञ्जरसनाह 6 a वणरुहजलेण रुधिरेण 7 a परिमुक्कसकु परिमुक्तशङ्कु, शङ्कु सेल्लविशेष 13 a पविमुट्ठिहयउ वज्रमुष्ट्या हतम् 14 a वियलियासु नष्टाश, ककालसिद्धु कापालिक 16 a °तसिल्लएहिं चिन्तायुक्तै चरै. 17 भरहद्धाहिवइ रावण.

# LXXVIII

पडिभडकालाणलु जोइयभुयबलु विप्फुरंतु मच्छरि चडिउ ॥
महिकंरिणिकयग्गहु पसरियविग्गहु कण्डु दसासहु अब्भिडिउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

दुवई—पहय गहीर भेरि सिरिरमणीमाणियदेहलक्खणा ॥
सण्णज्झंति हणुव सुग्गीव महापहु रामलक्खणा ॥ छ ॥

माणिक्कसुजालविण्णासइं  चंदकवयचंदियसकासइं ।
आणियाइं कवयइं रहुरायहु  णउ विसंति रोमंचियकायहु ।
बाहुजुयलु पुलएण विसट्टइ  रिउसरीरबंधणइं व तुट्टइ ।
ओहवरोलहरिसपडहच्छहु  उरि सणाहु दिण्णु सिरिवच्छहु ।
माइ ण सीयहि मणि ण रावणु  फुट्टिवि गउ सयदलु ण दुज्जणु ।
सुग्गीवहु गीयहु रणभरधुर  णिहिय करंति काइं किर परणर ।
सण्णज्झंतु काइं सो सुज्झइ  हणुवंतु वि वम्महु जहिं बुज्झइ ।
तहिं जगु विंधिवि मारिवि मेल्लइ  अगउ अगइ वइरिहिं सल्लइ ।
दहियदोव्वसिद्धत्थयमीसिउ  सीमंतिणिकरघित्तउ सेसउ ।
विरसिउ जुज्झडिंडिमाडंबरु  बहिरिउ तेण विवरु दिसि अंबरु ।
मत्ति विजयपव्वइ सइं मोहउ  अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।
बलिपुत्तें तहु बलवित्थिण्णी  बिज्ज पहरणावरणि विइण्णी ।

घत्ता— सइं का वि पजंपइ किं पि ण कंपइ पियथम परबलु णिट्ठवहि ॥
हणु करिकुंभयलइं हिमकणधवलइं मोत्तियाइं महु पट्ठवहि ॥ १ ॥

## 2

दुवई—का वि पुरंधि भणइ किं बहुवें अणुदिणु हिययजूरण ॥
णियसिरपंकएण पिय फेडहि णरवइपियविसूरण ॥ छ ॥

---

1 १ A महिघरिणिकयग्गहु २ A महपहु ३ P आहवि रोल° ४ A फट्टिवि ५ P णियति ६ A जगु तहि ७ A अगउवगइ ८ A राहउ ९ A माहउ १० A धरणि विदिण्णी

2 १ AP °सिरकप्पिएण २ A °रिणविसूरण

---

1 2 °कयग्गहु कृताग्रह 5 *a* °विण्णासइ विन्यासानि, रचनायुक्तानि *b* चंदकवयचंदियसकासइं मयूरपिच्छचन्द्रकाकाराणि 6 *b* विसंति प्रविशन्ति 7 *a* विसट्टइ स्फुटति, *b* °सरीरबंधणइं शरीरावयवबन्धनानि 8 *a* °रोल° कोलाहल, °पडहच्छहु तूर्तस्य भूतस्य, *b* सिरिवच्छहु हरे 12 *a* अगउ सुग्रीवपुत्रोऽङ्गद 16 *a* बलिपुत्तें सुग्रीवेण

2 1 बहुवें बहुनोक्तेन 2 सिरपंकएण मस्तककमलेन, णरवइपियविसूरण रामप्रियायाः सीतायाः खेदम्.

का वि भणइ एत्तडउ करेज्जसु पउ पच्छामुहु णाह म देज्जसु ।
गयपडियागयपयपरिठवणें सहइ कइदु ण भडु भयगमणें ।
का वि भणइ ज मइ थणमंडिउ त[3] गयदंतहं संमुहुं उड्डिउ ।
किं वच्छयलु णाह णंदेसइ पुणु आलिंगणेसुहुं महु देसइ ।
का वि भणइ रणि म करि णियत्तणु सुयरिज्जइ पहुभूमिणियत्तणु ।
किं पुणु महिमंडलु त्तित्थिण्णउ इच्छियचायभोयसंपण्णउ ।
देज्जसु पत्थिवचिंतणिवारउ खग्गसलिलु वइरिहिं तिसगारउ ।
का वि भणइ पियचम पेयालइ वसतुप्पें रिउसीसकवालइ ।
हउं दीवउ बोहेसमि जइयहुं ओवाइउ महु पूरइ तइयहुं ।
का वि भणइ पडिएण वि पिंडें महिवि पिसल्लउ मासहु खंडें ।
कासु वि सिद्धहु आणइ थंभिवि पासि धरिज्जसु वायइ रुंभिवि ।
पइं मुए वि हउं णडिय रइच्छइ त परिपुच्छिवि आवमि पच्छइ ।

घत्ता—सुहवत्तहु वछहि णाह ण पेच्छहि चंडहि वेयालालियहि ॥
कयतुट्टिपरिग्गहु परकंठग्गहु खग्गलट्ठिपुण्णालियहि ॥ २ ॥

## 3

दुवई—तुह पयं सुवसय पियपम पणविण विणीय ॥
सज्जीय सरासण समरि हरउ वइरिजीय ॥ छ ॥

णवणवणु व णीलतालद्धउ णरवेसें ण सइ मयरद्धउ ।
दीसइ णीसरंतु रइयाहउ अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।

३ A ण गय° ४ P आलिंगणु सहु ५ A सुमरिज्जइ ६ A उववायउ ७ AP थविज्जसु ८ A आइवि
3 १ A पणविय

3 *b* पउ पाद 4 *a* गये त्यादि आद्याक्षरादन्त्याक्षर यावत् अन्त्याक्षरादाद्याक्षर यावत् एका ( ताह ? ) दश एव वर्णरचनाविशेषोऽभिमुखपराङ्मुखपददान च गतप्रत्यागतपदप्रतिष्ठापन तेन, *b* सहइ कइदु शोभते कवीन्द्र, न तु सुभट 6 *a* णंदेसइ नन्दिष्यति वर्धिष्यते 7 *a* णियत्तणु पश्चान्निवर्तनम् *b* पहुभूमिणियत्तणु राज्ञा पूर्वमुद्दालिता पश्चाद्दत्ता भू 8 *b* °चाय° त्याग 9 *a* पत्थिवचिंतणिवारउ रामचिन्तानिवारकम् *b* तिसगारउ तृषाकारकम् 10 *a* पेयालइ प्रेतालये श्मशाने 11 *a* बोहेसमि प्रज्वालयामि, *b* ओवाइउ उपयाचितकम् 12 *a* पिंडें शरीरेण, *b* महिवि पूजयित्वा 13 *a* आणइ आज्ञया, कमपि यन्तर त्व तव समीपे मरणावसरे रक्षे, यस्मात्स तव वार्ता मम कथयतीति भावार्थ 14 *a* मुए वि मृतेऽपि, णडिय कदर्थिता, रइच्छइ रतिवाञ्छया, *b* त पिशाचम्, आवमि पच्छइ पश्चादहमागच्छामि तव समीपम् 15 सुहवत्तहु वछहि हे नाथ त्व सुभगत्व कि वाञ्छसि चंडहि प्रचण्डाया, वेयालालियहि वेगेन लालिताया वाहिताया यष्टे 16 खग्गलट्ठिपुण्णालियहु पुंश्चल्या खड्गयष्टे परकण्ठग्रहण न पश्यसि

**3** 1 सुवसय सुवशोत्पन्न धनु, पणविण प्रणमनशीलम्, विणीय विज्ञातम् 2 सज्जीय सप्रत्यञ्चम् 3 *a* °तालद्धउ तालाङ्कम् 4 *a* रइयाहउ रचितसंग्राम

ण णवजलहरासिहरि ससंकउ ण अइरावइ इंदु अंसकउ।
णं जसु तिजगसिहरिपहुरतणु धम्मालोयलीणु ण मुणिमणु।
कयसरसोहउ णाइ मरालउ सूरपहाहउ णाइ मरालउ।
सीयाकखउ विरहुण्हें हउँ दाणालित्तपाणि ण दिग्गउ।
एत्तहि लक्खणु रोसवियभिउ ण रणसिरिथणकरु उब्भिउ।
लच्छीललणालोलणलोहिउ पचवण्णगरुडद्धयसोहिउ।
विजयमहीहरि कुंजरि चडियउ कालसलोणउ जणि आवडियउ।
मेहहु उवरि मेहु ण थक्कउ रिउहु णाइ जमदूयउ ढुक्कउ।
घत्ता – चोइयमायगइ चलियतुरगइ वाहियरहइ भयकरइ॥
सणिहियविमाणइ जरजपाणइ रोसुद्धाइयकिंकरइ॥ ३॥

## 4

दुवई—लग्गइ रामरामणाणवइ बलइ रसोविसालइ॥
णरमुहकुहरमुक्कहुंकारुद्दीवियबाणजालइ॥ छ॥

मुक्कमुसलहलपट्टिससेल्लइ पसरियपाणिधरियधम्मेल्लइ।
लुयकरसिरउरजण्हुयजुत्तइ मग्गणगणविच्छेइयछत्तइ।
कलिकेलासवाससतासइ वइरिविलासहासणिण्णासइं।
मायाभावगावविच्छारइ हुयवहवरुणपवणसचारइ।
किलिकिलिरवसोसियकीलालइ दिसिविदिसुट्ठउग्गवेयालइं।
मिलियदलियपक्कलपाइक्कइ वसकद्दमणिमण्णरहचक्कइ।
अतमिलतथतकायउलइ वालपूलणीलियधरणियलइ।
तणुवियलतसेयसित्तगइ पक्खिपक्खमरुहयसमसगइ।
मयगलमलणमलियधयसडइ हित्तारोहजाहकोदडइ।
सुरहरघिवणघित्तखयरिदइ खग्गकपकपावियचदइ।

२ AP मयकउ ३ AP आसकउ ४ A कयसरिसोहउ ५ AP वियालउ ६ A °कखउ ण उण्हालउ, P °कखउ विरहु उण्हाहउ ७ A adds after this अण्णेसतु रामु ण णिग्गउ, K also has this line but scores it off ८ A दाणविलित्त° ९ AP °विवाणइ

4 १ P रोसविसालइ २ P दिसिविदिसुट्ठियउग्ग° ३ P °पक्खल° ४ P °गलचलणमलिय°

5 *a* ससकउ चन्द्र 7 *a* °सर° बाणस्तडाग च, मरालउ हस *b* मरालउ मरो मल कृष्णत्व तस्य आलयो मेघ 8 *a* विरहुण्हें विरहोष्मणा, हउ हत 10 *a* °लोहिउ लोभिष्ठ

4 4 *a* °जण्हुयजुत्तइ जानुयुक्तानि, *b* °विच्छेइय° छिन्नानि 5 *a* कलि° यम, °केलास वास° शकर 8 *a* °पक्कल° समर्था 9 *a* °कायउलइ काककुलानि, *b* वालपूल° केशनिचय 10 *b* °समसगइ °अमसक्तानि 12 *a* सुरहर° विमानम्, °घिवण° पतनम्

घत्ता—असिवरु लएप्पिणु देहि भणेप्पिणु परबलि परिसक्कइ वियडु ॥
फरपत्तविहत्थउ को वि समत्थउ जुज्झभिक्ख मग्गइ सुहडु ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—को वि भेडु करेहिं णिहएहिं कमिहिं वि ढुकरतई ॥
कोक्कइ मालगासरसियाइ पिसायइ गयणि जंतइ ॥ छ ॥

को वि सुहडु मुउ करिदंततरि णावइ सुत्तउ णियजसपजरि ।
को वि सुहडु अद्धिंदें मंडिउं भूयहिं रुद्दु व णिविसु ण छंडिउ ।
को वि सुहडु सिरु पडिउ ण चिंतइ असिवरु अरिवरकंठहु घत्तइ ।
को वि सुहडु रत्तद्दहि ण्हायउ ससु सिरत्थु णिएप्पिणु आयउ ।
कायरदोसिण हुउं ण विहिण्णउ पहरणु दीवु धरिवि उत्तिण्णउ ।
को वि सुहडु परिवड्ढियसाहउ ण पारोहएहिं णग्गोहउ ।
रिउबाणहिं उब्भाइउ वट्टइ पखुत्तिण्णरुहिरु सिव चट्टइ ।
कासु वि सुहडहु गुज्झु ण रक्खइ कण्णालग्गु गिद्धु ण अक्खइ ।
पइ समुद्दु पत्थिववरिणि छूढउ लोहिउ णाइ कलतरि वूढउ ।
देहमासु वायसह विहित्तउ उत्तमपुरिसह पउ जि जुत्तउ ।
कासु वि अग्गि रहगु पइट्ठउ अब्भगब्भि रविबिंबु व दिट्ठउ ।

घत्ता—सवहेणोसारिवि अवर णिवारिवि जुज्झि वि मडु देहु छिवइ ॥
कासु वि सुरकामिणि लीलागामिणि माल सयवरि सइ घिवइ ॥ ५ ॥

---

५ AP करपत्त° ६ P मग्गइ जुज्झभिक्खइ

**5** १ P सुभडु २ A खडिउ ३ A रुदु व but gloss रुद्र इव ४ AP अरिवरणियरहु ५ A वण्णविहिण्णउ ६ A °सोहउ ७ A पखुत्तिण्णु, P पुखुत्तिण्णु ८ A समुद्दु ९ AP कलतरु १० AP उत्तिम° ११ A सरवहेण १२ P अवरउ वारिवि.

---

13 परिसक्कइ विजृम्भते 1 फरपत्तविहत्थउ खेटकभिक्षापात्रहस्त

5 1 करेहिं णिहएहिं हस्तैर्हतैश्छिन्नै, कमिहि पादै 4 a अद्धिंदें अर्धचन्द्रेण बाणेन 5 b घत्तइ क्षिपति 6 a रत्तद्दहि रक्तह्रदे b सिरत्थु शिरस्थम् 7 a विहिण्णउ विभक्त 8 a °साहउ शाखा कराश्च 9 a रिउबाणहि इत्यादि कोऽपि सुभट बाणैर्विद्ध पतित सन् वट वृक्षसदृशो दृश्यते, ये उपरि स्थिता बाणा ते वटस्य शाखा इव दृश्यन्ते ये अध स्थिता बाणास्तैर्जटाभि रिवोच्चलित इव दृश्यते b सिव शृगाली 11 a समुद्दु स्वमस्तकम् पत्थिववरिणि छूढउ पार्थिव ऋणविषये क्षिप्तम्, b कलतरि वूढउ व्याजे धृत रक्तम् 1, अब्भगब्भि मेघमध्ये 14 सवहेणोसारिवि शपथेन अन्या देवीस्तत्सार्थं निवार्य, जुज्झि वि सङ्ग्राममध्येऽपि मडु हठात्, देहु शवम्.

## 6

दुवई—जायइ संगरम्मि वरखयरकवालचुए वसारसे ॥
णरककालमहुरवीणासरगाइयरामसाहसे ॥ छ ॥

णवर जयसिरिहरो अरिहरिणहरिवरो ।
कुलकमलदिणयरो अणयजणभययरो ।
रणियगुणधणुरवो[1] जणियखलपरिहवो ।
अमियअमरिसवसो तिजगपसरियजसो ।
सयणुकसणियदिसो फणि व विसरिसविसो ।
कुइयवइवसणिहो सिहि व विलसियसिहो ।
थरहरियमहियलो धयपिहियणहयलो ।
करकलियपहरणो पवरबलजियरणो ।
दढकढिणथिर[2]करो पडिसुहडमयहरो ।

घत्ता—तिहुयणजूरावणु रूसिवि रावणु धाइउ रामहु समुहु किह ॥
णवमेहु व मेहहु सीहु व सीहहु दिसहत्थिहि दिसहत्थि जिह ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—ता करिकरसमाणकरकड्ढियगुणधणुदंडमंडलो[1] ॥
कणयपिसक्कपुंख[2]रुइराजियमणिमयकण्णकुंडलो ॥ छ ॥

उक्खयदुक्खलक्खतरुकंदहु इंदइ इंदसरिसु गोविंदहु ।
विडविचिंधु किक्किंधणिवासहु वालिकंठकंदलजमपासहु ।
णिद्दहु णियकुलभवणपईवहु भिडियउ कुंभयण्णु सुग्गीवहु ।
महिमहिहरचालणबलवंतहु रणि रविकित्ति वीरहणुवंतहु ।
खरकिरणु व तमतिमिरणिहायहु णलिणकेउ लग्गउ खररायहु ।
अगयभडु आहंडलकेउहि णावइ मुणिवरिंदु झसकेउहि ।
इववम्मु कुमुयहु दूसीलहु कयबहुदूसणु दूसणु णीलहु[3] ।
संदणचलण[4]वलणसप्फेडहिं लउडिघायजज्जरियकिरीडहिं ।

6 १ AP रणियधणुगुणरवो २ A °थियकरो
7 १ A °मडणो २ P °पुच्छरुइ° ३ A लीलहु ४ A दंसणचलण°

6 2 णरेत्यादि नरशरीरास्थितडतडाट एव वीणाशब्द 4 *b* अणयजणभययरो अनताना मनम्राणा भयकर 6 *a* अमिय° प्रचुर 7 *a* सयणु° स्वशरीरम्, *b* °विसो विष द्वेष्य 8 *a* कुइयवइवसणिहो कुपितयमसदृश, *b* °सिहो सिंह शिखा च 11 *b* °मयहरो मदहर

7 2 कणयपिसक्क° कनकबाणा 3 *a* उक्खय° उत्खनिता 4 *a* विडविचिंधु वृक्षध्वज कुम्भकर्ण. 7 *a* तमतिमिरणिहायहु महान्धकारसमूहस्य 8 *a* आहंडलकेउहि इन्द्रकेतो 10 *a* संदणचलण° रथचक्रम्, °सफेडहि °सस्फेटकै

वतिवतसंघट्टणघोरहिं सेलसिलायलखित्तपहारहिं ।
सव्वलमुसलकुलिसझसकोंतहिं भिंडिवालकरवालफुरंतहिं ।
घत्ता—रयछइयदियंतहिं भडसामंतहिं जुंज्झतिहिं खयरामरहिं ॥
सच्चूरियमउडहिं णिवडियसयडहिं महि मंडिय धयचामरहिं ॥७॥

## 8

दुवई—ता लंकाहिवेण हलहेइहि रिंछसुपिंछसज्जिया ॥
पंक्ख दुवीस तीस पण्णास सरा सहसा विसज्जिया ॥ छ ॥
धरियलोह तेण जि ते गुणचुय उज्जुय तेण जि ते मोक्खुज्जुय ।
चित्तविचित्त तेण ते थलयर पेहुणवंत तेण ते णहयर ।
धम्मविमुक्क तेण ते हयपर रोसवसिल्ल तेण ते दुद्धर ।
तिक्ख तेण ते वम्मुल्लूरण सहल तेण ते आसापूरण ।
रयगय तेण जि ते पलचक्खिर वहियजोह तेण जि जयकंखिर ।
दीहायार णाय ण आया पत्तदाण जिह सयगुण जाया ।
एंत णहंतें महंत भयंकर जिगिजिगंत पडिवक्खखयंकर ।
बाणहिं बाण हणिवि काकुत्थें रावणु विहसिवि भणिउ समत्थें ।
घत्ता—णियघरिणिहि अग्गइ सयणसमग्गइ घरि बाणासणु गुणिउ जिह ॥
भडरुहिररसारुणि आहवि दारुणि को विंधइ दहवयण तिह ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—हो हो जाहि जाहि तुहु णासहि धणुसिक्खाविवज्जिओ ॥
मा णिवडहि करालि कालाणलि लक्खणसरि परज्जिओ ॥ छ ॥
कहिं दिट्ठि मुट्ठि कहिं चावलट्ठि ।
कहिं बद्धु ठाणु कहिं णिहिउ बाणु ।
धणुवेयणाणु बुज्झहि पहाणु ।
गुरुगेहु गपि अण्णवउ किं पि ।

५ AP °करवाल मुयतहिं ६ A जुज्झिहिति

8 १ A हलएवहि २ A °सुपुछ° ३ A दुतीसवीस ४ A मोक्खजुय ५ AP पत्तदाणु.

9 १ P किह २ A बुज्झिउ ३ A अण्णमउ P अण्णविउ

8 1 हलहेइहि हलायुधस्य 3 *b* मोक्खुज्जुय मोक्षोद्यता 3 *b* सहल सफला फलयुक्ता 7 *a* रयगय रज पाप रयो वेगश्च तत्र तेन गता, *b* वहियजोह हतयोधा 8 *a* णाय नागा सर्पा, *b* पत्तदाण सुपात्रदानफलवन्त 9 *a* णहंतें नभोमध्येन 11 सयणसमग्गइ स्वजनपरिपूर्णे

9 5 *a* धणुवेयणाणु धनुर्वेदज्ञानम् 6 *b* अण्णवउ पुनरपि

पुणु देहि जुज्झु महु तुहु सुलज्जु ।
सीयावहार जज्जाहि जार ।
तहिं रणवमालि सुहडंतरालि ।
खरकरपवड्ढु वट्टोट्ठु रुट्ठु ।
णिट्ठवियदुट्ठु इंदइ पइट्ठु ।
ता कुद्धएण धूमद्धएण ।
ण जलियजाल ण विज्जुमाल ।
चलजलहरेण वरिसियसरेण ।
कयआहवेण तहु राहवेण ।
धगधगधगति उम्मुक्क सत्ति ।
वच्छयलि खुत्त रत्तावलित्त ।
ण रत्त वेस मुच्छाविसेस ।
पसवणु कुणति हियवउं लुणति ।

घत्ता—जं इंदइ जित्तउ कोवपलित्तउ तं दहमुहु ण खयजलणु ॥
ओत्थरिउ समत्थहिं णाणासत्थहिं दुज्जयपडिबलपडिखलणु ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—पभणइ णत्थि एण इंदइणा तुह णिहएण रणजओ ॥
भो भो राम राम मइ पहरहि सच्चोयहि महागओ ॥ छ ॥

हो हो एण सुट्ठु लज्जिज्जइ कुलसामिहिं किह असि कड्ढिज्जइ ।
तुहु वेढाविउ ताराकंतें अण्णु वि मुक्कंएण हणुवंतें ।
हउं देविंदें वि णउ छिप्पमि तुम्हहिं माणुसेहिं किं जिप्पमि ।
जाहि जाहि जा बंधवगत्तइं णउ णिवडंति खुरुप्पविहत्तइं ।
जाहि जाहि जा चक्कु ण मेल्लमि तुह सिरकमलु ण लुंचिवि घल्लमि ।
दप्पुब्भडभडवंदविमद्दें तं णिसुणेवि पवुत्तु बलद्दें ।
पररमणीथणसिहरणिरिक्खण मरु मरु खल अयाण दुवियक्खण ।
किं सीहेण सरहु दारिज्जइ पइं मि काइं लक्खणु मारिज्जइ ।

४ P reads this line as जज्जाहि जार, सीयावहार ५ P पघट्टु ६ A पविमुक्क ७ AP पसरणु

10 १ AP रणजुओ २ P मुक्कएण ३ A देविंदें णविउ छिप्पमि ४ AP विहडंति ५ P °भडविंद ६ A सिंहण ७ AP पाव

10 *a* °पवड्ढु प्रस्पृष्ट 11 *b* इंदइ इन्द्रजित् 15 *a* ण रत्त वेस रक्तवेश्यावत् 19 *a* पसवणु प्रस्रवण क्षरणम्

10 4 *a* ताराकंतें सुग्रीवेण 6 *a* बंधवगत्तइं लक्ष्मणगात्राणि

रूवविसेसपरज्जियमेणइ आमि जामि जइ अप्पहि जाणइ ।
जामि जामि जइ सेव समिच्छहि मह्नु पयपकय पणविवि अच्छहि ।

घत्ता—पइ रणउहि मारिवि भिच्च वियारिवि ढोइवि लक विहीसणहु ॥
बोल्लिउं पालेसमि हउ जाएसमि सहु सीयइ सणिहेलणहु ॥ १० ॥

## 11

दुवई—ता दसकधरेण मणिकुडलमडियगडपसय ॥
छिण्ण असिसुयाइ णवणिसियइ सीयाएविसीसय ॥ छ ॥

रूसिवि रामहु अग्गइ घित्तउ पुणु सखारु खलखुद्दें वुत्तउ ।
लइ लइ गहव घरिणि तुहारी एह ण होइ कया वि महारी ।
मुय पिय पेच्छिवि मुच्छिउ रहुवइ करपहरणु णिवडिउ ण विहावइ ।
सित्तउ हिमसीयलॅजलधारहिं आसासिउ चमरिरुहसमीरहिं ।
कह व कह व सजाउ सचेयणु कण्णामुहणिहित्तथिरलोयणु ।
ताव विहीसणेण विण्णत्तउ सीयामरणु ण देवँ णिरुत्तउ ।
खयरिंदेण दिट्ठतुहघाए इदियालु दरिसाविउ भाए ।
ता दहमुहेण भाइ दुब्बोल्लिउ पइ णियवसुम्मूलिवि घल्लिउ ।
घिणु अब्भासवसेण सरासइ गोत्तकलिइ लच्छि धुंधु णासइ ।
एउ ण चिंतिउ कुलविद्धसण दुम्मुह दुट्ठ कट्ठ दुद्दसण ।
पेंरह मिलेवि काइ किर लद्धउ पइ अप्पाणउ अप्पणु खद्धउ ।

घत्ता—आरुट्ठइ करिवरि चलपसरियकरि जो आसघइ बालतणु ॥
महिहरु मेल्लेप्पिणु महि लघेप्पिणु मरइ मणुउ सो मूढमणु ॥११॥

८ A °परिज्जिय° ९ A रणमुहि १० AP वोल्लिउ

**11** १ AP दहकधरेण २ AP असिसुयाइ मायामयसीयाएवि° ३ P वित्तउ ४ AP °सीययजल° ५ AP कतामुह° ६ A °णिहत्त° ७ AP होइ ८ AP इदजालु ९ A पइ णियकुलु उम्मूलिवि १० AP धुउ ११ A adds after this एवमेव अप्पउ सतासइ, K writes the line but scores it off १२ AP वइरिहि १३ A आरूढइ

11 *a* °परज्जियमेणइ तिरस्कृता मेनका यया, *b* जाणइ जानकी सीता 13 रणउहि रणमुखे

**11** 1 °गडएसय गण्डप्रदेशम् 2 असिसुयाइ असिधेनुकया, णवणिसियइ नवीन तीक्ष्णया, सीयाएविसीसय सीतादेवीमस्तकम् 5 *b* ण विहावइ न विभावयति, न जानातीत्यर्थ 9 *a* दिट्ठतुहघाए दृष्टत्वद्घातेन दृष्टत्वन्मरणेन, *b* इदियालु इन्द्रजालम्, भाए मम भ्रात्रा 11 *a* सरासइ गी, *b* गोत्तकलिइ गोत्रकलहेन 14 आरुट्ठइ रुष्टे सति, बालतणु बालतृणम्

## 12

दुवई—मई कुद्धेण रामु किं रक्खइ मइहणहणरवालए ॥
माइय आउ आउ जइ सक्कहि भिडु इह समरकालए ॥ छ ॥

त णिसुणेप्पिणु　　पहु पणवेप्पिणु ।
णवघणणीसणु　　भणइ विहीसणु ।
जइ पिउ जपहि　　सीय समप्पहि ।
णिवणयजुत्तहु　　दसरहपुत्तहु ।
होसि सहोयरु　　तो तुहु मायरु ।
सामि महारउ　　सयणपियारउ ।
ण तो लज्जमि　　णेउ पडिवज्जमि ।
तुज्झु सुहित्तणु　　दुज्जसकित्तणु ।
होइ असारें　　हद्धें जारें ।
भमियकबंधइ　　णिवडियचिंधइ ।
महिचुयलुयभुइ　　ता तहिं सज्जुइ ।
कयवीराहवि　　मेइणिराहवि ।
बहुदाराहवि　　लग्गउ राहवि ।
भीसणु रावणु　　परमारावणु ।
रजियसुरसह　　बे वि महारह ।
रणभरधुरखम　　बे वि सविक्कम ।
पडिहरि हलहर　　धवलियकुलहर ।
बे वि महाजस　　ण आसीविस ।
फणिकालाणण　　ण पच्चाणण ।
हिमसमतमतणु　　आयड्ढियधणु ।

घत्ता—कपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण ॥
सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण ॥ १२ ॥

12 १ A इउ २ P आसाविस ३ AP हिमतमसमतणु ४ AP मेल्लाविय°

**12** 2 भिडु संग्राम कुरु 6 *a* णिवणयजुत्तहु राजनीतियुक्तस्य 13 *a* महिचुयलुयभुइ महीपतितलूनभुजे 4 *a* कयवीराहवि कृतो वीराणामाह्वय स्पर्धाशब्दो यत्र *b* मेइणिराहवि मेदिन्या राधां शोभामवति रक्षतीति मेदिनीराधावस्तस्मिन्नीदृशे राघवे 15 *a* बहुदाराहवि बहुभ्यस्तौ दारार्थमाहवो यस्य, बहूनां दारण विदारण यस्मिन्नाहवे यस्य वा 16 *b* परमारावणु शत्रूणां मारक 17 *b* महारह संग्रामादनिवर्तकौ महारथौ 19 *a* पडिहरि रावण 22 *a* हिमसमतमतणु हिमवर्णो राम तमोवर्णो रावण 23 मेलावियअमरयण पुञ्जीकृतदेवगणौ युद्धदर्शनार्थम्

## 13

दुवई—रावण राम बे वि जुज्झंति सुरोसवसा महाभडा ॥
छुडु छुडु ढुक्क मुक्क बाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा ॥ छ ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइं छुडु छुडु धवलइं छत्तइं छिण्णइं ।
छुडु णररुंडखंडमंडिय महि छुडु गय घट्टिय लोट्टियै सारहि ।
छुडु सदण मुसुमूरिवि घल्लिय पडिमयगल मायगहिं पेल्लिय ।
छुडु छुडु रामु थामु जा दावइ जाव खगिंदु रहगु विहावइ ।
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु तावतरि पइट्ठु दामोयरु ।
पभणइ णिसुणि देव सीराउह वीर पउम चुंबियपउमामुह ।
राम राम रामामणहारण सुबलासुय अरिविंदवियारण ।
हउ किंकरु कढोरपिहुकरयलु भाइ तुज्झ पँविरोलियपरबलु ।
जीवमि जाम वइरिमारणविहि जगि रयणियरचिंधणिव्वतरुसिहि ।
ताव एउ पइ पहयविच्छुरियउ सइ करेण किं पहरणु धरियउ ।

घत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउ तेरउ हरि मुइ मुइ मइ आलग्गउ ॥
पविखरसरणहरहिं अविरलपहरहिं दारमि दहमुह मत्तगउ ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कल्लिउ बोल्लिउ तेण दहमुहो ॥
रे अपवित्त धुत्त परणारीरत्त म थाहि संमुहो ॥ छ ॥

विहिदुव्विलसिउ तुहु वि महीसरु ओसरु ओसरु मा सधहि सरु ।
कुद्धइ तुह दहमुह णहईवइ राहवरायपायराईवइ ।
अज्जु तुज्झु परमाउसु पुण्णउ जिह तृयरयणु कुसील ण दिण्णउ ।
मइ मुक्काइ वसास णियच्छहि तिह एवहिं पहरणइ पडिच्छहि ।
कयसमरेण गहियरिउजीवें तं णिसुणेवि वुत्तुं दहगीवें ।

13 १ AP सरोस° २ AP छुडु छुडु णर° ३ A लुटिय° ४ AP पडिमयग ५ A देव णिसुणि ६ AP कठोर° ७ A परितोलिय° ८ A जणरय°

14 १ A मोक्कलियउ २ AP तियरयणु ३ AP वुत्तउ

13 4 *b* घट्टिय सघट्टिता 5 *b* पडिमयगल शत्रुगजा 7 *a* वावरइ व्यापारं करोति, *b* दामोयरु हरिर्लक्ष्मण 8 *b* चुंबियपउमामुह चुम्बितलक्ष्मीमुख 9 *b* सुबलासुय हे सुबलादेवीपुत्र 10 *b* पविरोलिय° मथितम् 11 *b* रयणियरचिंध° राक्षसध्वजा 14 पविखरसरणहरहिं वज्रवत्कठिनशरनखै

14 4 *a* णहईवइं नखदीप्राणि, *b* °पायराईवइ पादकमलानि

तल्लरजलि कइलासु वि जलयरु अतुमगामि पवरु वि तरुवरु।
खलसुग्गीवरामणलहणुयहु तारकुंदकुमुयहु खगमणुयहु।
पयहु मज्झि तुहु मि महु भण्णहि तेण बप्प मइ रणि अवगण्णहि।
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउ मडु मयगमसयतरु जेहउ।
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइ पहु मेल्लेसइ मायासत्थइ।
चिंतहि तुहु पण्णत्ति जणद्दण लहु करि मायावाहण पहरण।

घत्ता—त तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिट्टउ दहमुहहु हरि॥
कइयणवयणुत्तिहि महणपवित्तिहि णाइ समुद्दहु सुरसिहरि ॥१४॥

## 15

दुवई—बेण्णि वि पीयवास बेण्णि वि णीलंजणगरलसामया॥
दोहिं मि कुलिसकक्कसकुलवस चोइय मत्तसामया ॥ छ ॥

बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व बाण।
रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ।
रावणेण अधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु।
रावणेण मेरु वड्डु लक्खणेण वज्जदड्डु।
रावणेण आसु आसु लक्खणेण सेरिहीसु।
रावणेण वारिवाहु लक्खणेण गधवाहु।
रावणेण चिञ्चिजाल लक्खणेण मेहमाल।
रावणेण दति दीहु लक्खणेण मुक्क सीहु।
रावणेण रक्खसिंदु लक्खणेण खेउविंदु।
रावणेण रत्तिणाहु लक्खणेण मुक्क राहु।
रावणेण मुक्कु रक्खु लक्खणेण दुण्णिरिक्खु।
पज्जलतु जायवेउ दिग्गयग्गलग्गतेउ।

घत्ता—सुरसमरसमत्थें विज्जासत्थें जेण जेण रावणु हणइ॥
पडिवक्खीहूए भासुररूवें त त लक्खणु णिल्लुणइ ॥ १५ ॥

४ A किकलासु I किक्लासु परेवक (?) अथवा किकालसु कुरुविल (?), K records a p अथवा किकलासु कुरुविलजीव न तु गजमत्स्यादय ५ P मयगसमयतरु

15 १ A कुलिसचक्कसकुस° २ A सेरिहासु T सेरिहेसु

8 *a* तल्लरजलि अल्पतडागे कइलासु करकंडुक कर्कट 11 *b* मयगमसयतरु गजमशकयो रिवान्तरम् 12 *b* पहु रावण 14 विहुणेप्पिणु आस्फाल्य 15 महणपवित्तिहि मथनप्रवृत्तियुक्तस्य जलधे मेरुरिव

**15** 2 मत्तसामया कृष्णवर्णौ गजौ 4 *a* णाउ सर्प *b* पक्खिराउ गरुड 7 *a* आसु शीघ्रम् आसु अश्व *b* सेरिहीसु प्रचण्डमहिष 8 *b* गधवाहु वायु 9 *a* चिञ्चिजाल अग्निज्वाला 11 *b* खेउविंदु क्षेमवृन्द पूजाहोमादिशान्ति 14 *a* जायवेउ अग्नि

## 16

दुवई—ता धगधगधगतु खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो ॥
खणि बहुरूविणीइ बहुरूवहिं उद्धाइउ दसाणणो ॥ छ ॥
गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि।
खेयरि अब्भिडंति पंवरामरि छत्ति विमाणि झाणि धइ चामरि।
चउद्दु मि पासहिं भद्द भीसावणु जलि थलि महियलि णहयलि रावणु।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु तिणयणगलतमालसणिहतणु।
गुंजापुंजसरिसणयणारुणु हणु हणु हणु भणंतु रणदारुणु।
अग्गइ पच्छइ चवलु धावइ मणहु वि पासिउ वेए पावइ।
गयकुंभयलइ पायहिं पेल्लइ झ त्ति दंत उम्मूलिवि घल्लइ।
परिभमंतकरिवरकरे वचइ रिक्खइ गेज्जावलिय णिलुचइ।
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ अतरसेणासणिय वियारइ।
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ कच्छोलंबिय घंटिय तोडइ।
असिणा दारइ मारइ मयगल घिवइ णहगणि चलमुत्ताहल।
घत्ता—भीमाहवचंडहिं दढभुयदंडहिं चप्पिवि हुंकरेवि धरइ ॥
करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णुं वि णीसरइ ॥१६॥

## 17

दुवई—फोडिवि आसवारसीसक्कइ सिरइ सकवयगत्तइ ॥
छिंदिवि पक्खराउ हय मारिवि परियाणइ विहित्तइ ॥ छ ॥
गयणयलि लग्गेवि कहकहरव हसिवि बहुरूविणी रामकेसवह गय तसिवि।
तो रक्खधयलक्खणा गुलुगुलंतेहिं रिउदुज्जया लोहदढमंढियदंतेहि।
णवजलहरेहि व जललव मुयंतेहिं चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं।
झणझणियमणिकिंकिणीसोहमाणेहिं अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहिं।

16 १ AP धगधगतु २ AP °रूवणीए ३ A पउरामरि, P पउरपवरामरि ४ P भीसा मणु ५ AP धावइ ६ A °करि वचइ ६ AP रिक्खें ७ AP घटउ ८ A भीमाउह ९ P °विहित्तु

17 १ AP तोडिवि २ A विहत्तइ ३ A तारखधय°, P तो रक्खधय ४ P °गढिय° ५ AP रुणुरुणिय° ६ A अणवरयपरिगलियकरडयलदाणेहिं

16 6 *b* तिणयणगल° रुद्रस्य कण्ठ 8 *b* मणहु वि पासिउ वेए पावइ मनस पार्श्वात् मनस सकाशादपि वेगेनागच्छति 10 *b* रिक्खइ तारका गेज्जावलिय ग्रीवाक्षुद्रघण्टिका 11 *a* सारिउ गजपर्याणानि, *b* अतरसेणासणिय सेनाया अन्तर्मध्ये ये आसनिन गजाश्वाद्यारूढा 15 करणहिं आवर्तनादिभि

17 2 परियाणइ पर्याणकानि 3 *a* कहकहरव हसिवि यथा भवत्येव हसित्वा

सोवण्णसारीणिबद्धचिंधेहिं करणासियागहियगयणाइगयेहिं ।
दंतग्गभिण्णग्गखगरहतुरंगेहिं भड बे वि थिय गयणि मायामयंगेहिं ।
ता मुक्क दहमुहिण पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय ।
तप्पंजरे छूढु तेणारिविद्दवणु अलिकसणु हयवसणु बीभंवणु सिरिरमणु
पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियरु जज्जरिवि हुंकरिवि णीसरिवि ।
जा वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहंगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ ।

घत्ता—णवचंदणचच्चिउ कुसुमहिं अच्चिउ रयणाराकिरणोहदलु ॥
ण रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—रूसंतेण तेण महुमहणमहाउहछेडे णिओइय ॥
तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिहं गयणे पधाइयं ॥ छ ॥

ता दिट्ठु णहि एंतु सहस त्ति णिवडंतु ।
धाराकरालेहिं करवालसूलेहिं ।
झसमुसलसेल्लेहिं वावल्लभल्लेहिं ।
अरिणरकयंतेहिं कंपणहिं कोंतेहिं ।
कयकण्हपक्खेण गवए गवक्खेण ।
कुमुएण कुंदेण चंदें महिंदेण ।
सत्तुहणभरहेण णीलेण सरहेण ।
सुग्गीवणामेण हणुवेण रामेण ।
पडिखलिउ णउ वलिउ अमरत्थु संचलिउ ।
रणसिरिहि कुंडलु व णवरविहि मंडलु व ।
जसवल्लरीदलु व भुयजुयलतरुफलु व ।
माणिक्कगणजडिउ लक्खणहु करि चडिउ ।

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ कण्हें लद्धउ तं णारउ णहि णच्चियउ ॥
आणंदरसोल्लिउ सिरिथणपेल्लिउ राउ रामु रोमंचियउ ॥ १८ ॥

७ A दंतग्गिणिब्भिण्णखग° ८ A दहवयण° ९ P छड्ढु १० A भीमवणु

**18** १ A करवालवालेहिं २ A °मुसलसल्लेहिं ३ A मयदेण ४ A omits this foot ५ A णहवडिउ ६ AP चक्कु ७ AA णच्चिउ ८ A रामु राउ ९ AP रोमंचिउ

7 *a* °सारी° गजपर्याणकम् 9 *b* °विसहरायार सर्पाकारा, णाराय बाणा 10 *a* तप्पंजरे नाराचपञ्जरे, *b* बीभवणु बीभत्सन, भयानक इत्यर्थः 12 *b* रहंगु चक्रम्

**18** 1 णिओइय नियोजित मुक्तम् 7 *b* गवए गवयराशा 11 अमरत्थु देवाधिष्ठित चक्रम् 16 रोमंचियउ हृष्ट., कृष्णेन लब्धत्वात्

## 19

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठि कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ॥
भामिवि चक्कु भणिउ गोविंदें विसरिस णिसुणि दसासिरा ॥ छ ॥

सवण तुरंग मयमुइयभिंग ।
करि गलियगंड मेइणि तिखंड ।
असि चंदहासु लंकाणिवासु ।
ससहरसमाणु पुप्फयविमाणु ।
वइदेहि देहि मा खयहु जाहि ।
तूसवहि रामु करि पयपणामु ।
जीवहि अतेउ कंतासमेउ ।
दट्ठाहरेण असिवरकरेण ।
असमंजसेण अमरिसवसेण ।
ता भणिउ तेण णिसियरधएण ।
पाइक्कतणय णिम्मुक्कविणय ।
तुम्हह वराय किं मज्झु राय ।
णियजीवधरणु सुग्गीवसरणु ।
पइसरहु जइ वि णउवरहु तइ वि ।
विगयावलेव देव वि अदेव ।
भडभिडणसंगि महु जुज्झरंगि ।
किं गणिउ रामु तुहु हीणथामु ।
जज्जाहि रंक मग्गतु लंक ।
लज्जहि ण केव हिय सीय जेव ।
अवराउ तेव परिचत्तसेव ।
रामाणियाउ रायाणियाउ ।
लेसमि छलेण णियभुयबलेण ।
इय भणिवि भीमु दुलघधामु ।
आबद्धकोहु मेल्लइ सरोहु ।

19 १ AP °मुइयसिंग २ P ससहरु ३ A कयपय° ४ A णउ उव्वरहु तइ वि, P णउ उव्वुरहो तइ वि ५ P adds after this णिण्णट्ठणामु, सगामकामु ६ A तुहु दिण्णधामु ७ A परिच्चिण्णसेव ८ P आबद्धु

19 2 दससिरा हे रावण 3 *b* मयमुइयभिंग मदेन मुदितभृङ्गा 4 *b* करि कुरु 9 *a* अतेउ निस्तेजा सन् 12 *b* णिसियरधएण राक्षसध्वजेन रावणेन 17 *a* विगयावलेव विगतगर्वा 22 A अवराउ अपरा ( स्त्रिय ), *b* परिचत्तसेव हे त्यक्तसेव राम 23 *a* रामाणिया रामसंबन्धिन्य , *b* रायाणियाउ राज्ञी 24 *a* लेसमि ग्रहीष्यामि 26 *b* सरोहु बाणसमूहः

ओइद्धचाउ रायाहिराउ ।
जाँ उग्गभाउ वीलवगीउ ।
ता तक्खणेण तहिँ लक्खणेण ।
णं खयपयंगु मुक्कउ रहंगु ।
आयउ तुरंतु धाराफुरंतु ।
अरितावणेण व रावणेण ।
भुयखलिउ जइ वि बैलि मड्डु तइ वि ।
वच्छयलि लग्गु को फिर ण भग्गु ।
णिवसिरिपमत्तु परणारिरत्तु ।

घत्ता—दहवयणहु केरउ दुहइ जणेरउ तिक्खइ धारइ सल्लियउ ॥
परघरिणीमदिरु हियउ असुदरु चक्कें फाडिवि घल्लियउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—ता दहवयणि पडिइ पडियइं सुरकुसुमइ सिरि उविंदहो ॥
हउ दुदुहि गहीरु जउ घोसिउ पसरिय दिहि सुरिंदहो ॥ छ ॥

ता सुहडेहिँ दिट्ठु रणमहियलु वणवियलियलोहियजलजजलु ।
भग्ग रहग रहहिँ सहु रहियहिँ फट्टधयग्गहिँ वसविरहियहिँ ।
चामर पडिय हस ण मारिय घुलिय जोह पडिजोहवियारिय ।
मोडियदडइ छत्तइ धवलइ दिट्ठइ णाइ अणालइ कमलइ ।
छिण्णगुणइ महिलुलियइ चावइ ण खलचित्तइ भगुरभावइ ।
धम्मगुणुज्झिय सुढिइ जुत्ता बाण रिसि व्व मोक्खुं सपत्ता ।
दाणवत मत्थयखणणुज्जय णावइ पिसुणँ सढ णिरु दुज्जय ।
कुडिल लोहणिम्मिय पडिअकुस दिट्ठा तुरय जत तोडियकुस ।
खलिणइ णिवडियाइ पल्लाणइ दिट्ठइ विहँडियाइ जपाणइ ।
दिट्ठइ णियकवोलँककालइ मासगासु लेंतइ वेयालइ ।
कडयमउडकोंडलँकडिसुत्तइ दिट्ठइ दसदिसासु पविहत्तइ ।

घत्ता—भडभालविणिहियइ विहिणा लिहियइ अचलइ भवियव्वक्खरइ ॥
जोइवि गयचम्मइ सदणँरम्मइ कावालिउ वायइ वरइ ॥ २० ॥

९ AP आइद्धचाउ १० AP जामुग्ग° ११ A वलवड्डु; P वलिवड्डु

**20** १ A रणि महियलु २ AP मोक्खु ण पत्ता ३ A °मयय° ४ A पिसुणसत्थु ५ A विहलियाइं ६ A °कवाल° ७ AP °कुडल° ८ P भडसाल° ९ A जोइवि १० AP दसणरम्मइं

34 *b* बलि बलवत्, मड्डु बलात्कारेण 37 °मदिरु °गृहभूत चित्तम्

**20** 3 *b* °लोहियजलजजलु लोहितस्य रक्तस्य तडाग 6 *b* अणालइ नालरहितानि 7 *b* भंगुरभावइ वक्राणि 9 *a* दाणवतेत्यादि गजा दानवन्त· तेषां मस्तकखननोद्यता अङ्कुशा, *b* सढ कपटत्वेन 10 *b* तोडियकुस त्रोटिततर्जका· 15 वायइ वाचयति

## 21

दुवई—पडिवारणविसाणजुयपेल्लियवच्छियमत्तवारणे ॥
होही रिउहु मरणु हरिहत्थें सीयाकारणे रणे ॥ छ ॥

तहिं हिंडतहिं विहिविच्छोइय  धरिणिहिं णियणियपिययम जोइय ।
काइ वि पिउ सरसयणि पसुत्तउ  दिट्ठउ णं रणलच्छिहि रत्तउ ।
काइ वि पिउ लुलियतहिं रुद्धउ  दिट्ठउ णं जमसकलबद्धउ ।
खंडखडु हुउ मुउ णोलक्खिउ  काइ वि पिउ पयखडें लक्खिउ ।
उज्जुपण पडिपण महाहवि  क वि अगुलियउ भजइ राहवि ।
का वि भणइ हलि जूरइ महु मणु  लक्खणेण महु रडालक्खणु ।
पायडियउ एवहिं किं किज्जइ  वर णियणाहें समउ मरिज्जइ ।
का वि भणइ णियणियइ ण याणिय  पहुणा गोत्तमारि कहिं आणिय ।
उज्झउ सीय सुविप्पियगारिणि  खलदइवें सजोइय वइरिणि ।
का वि भणइ उव्वसि पिउ मेल्लहि  रंभि तिलोत्तमि किं पि म बोल्लहि ।
कण्णावरु हुई णाहु महारउ  अत्थंकइ किह होइ तुहारउ ।
कासु वि सिवपयगमणविसेसें  समरदिक्ख दक्खालिय सीसें ।

घत्ता—ता तहिं मदोयरि देवि किसोयरि थण अंसुयधारहिं धुवइ ॥
णिवडिय गुणजलसरि खगपरमेसरि हा हा पिय भणंति रुयइ ॥२१॥

## 22

दुवई—हा केलाससेलसंचालण हा दुज्जयपरक्कमा ॥
हा हा अमरसमरडिंडिमहर हा हरिणारिविक्कमा ॥ छ ॥

हा भत्तार हार मणरंजण  हा भालयलतिलय णयणंजण ।
हा मुहसररुहरसरयमहुयर  हा रमणीयणणिलय मणोहर ।
हा खुहव सुरहियासिरसेहर  हा रिउरमणीकरकंकणहर ।
हा थणकलसविहूसणपल्लव  हा हा हिययहारि णिम्म णव ।
हा करफंसजणियरोमंचुय  आलिंगणकीलाभूसियभुय ।

21 १ A पेल्लिवि २ P हरिअत्थें ३ AP सरसयणइ सुत्तउ ४ P खडखड ५ P लक्खियउ ६ A उज्जुएण ७ A झूरइ ८ A पहु ९ A अच्छइ कह वि, P अथकए किह

22 १ P जणरंजण २ A बुहसररुह° ३ AP रमणीमण° ४ A हालिंगण°

21 1 °विसाण° दंता 3 *a* °विच्छोइय वियोग प्रापिता 5 *a* लुलियतहिं लुलितैरन्त्रैः जाले 6 *b* पयखडें पादखण्डेन 7 *a* उज्जुएण सरलेन 13 *b* अत्थक्कइ इदानीं एवमेव वा 14 *a* सिवपय° शृगालीपद मोक्षस्थान च

22 2 हरिणारिविक्कमा हे सिंहपराक्रम 3 *a* हार मनोज्ञ

पेसलवयेंणविहियसभासण हा माणसिणिमाणविणासण ।
हा पचेंदियविसयसुहावह हा पिय पूरियसयणमणोरह ।
हा लंकाहिव खेयरसामिय देव गंधमायणगिरिगामिय ।
हा मंदरकंदरकयमंदिर विब्भपोमसरपोमिंदिंदिर ।
पइं विणु अज्ज दसास ज जिज्जइ त परदुक्खसमुद्दु सहिज्जइ ।
हा पिययम भणतु सोयाउरु कवइ णिरवसेसु अतेउरु ।

घत्ता—ता णियकुलभूसणु दुक्कु बिहीसणु तहिं तक्खणि सुविसण्णमइ ।
जगकाणणमाणणु भडपखाणणु जहिं णिवडिउ लंकाहिवइ ॥२२॥

## 23

दुवई—अप्पउ रयणकिरणविप्फुरियइ छुरियइ हणइ जावहिं ॥
जीविउ विहवंतु कयसंतिहिं मंतिहिं धरिउ तावहिं ॥ छ ॥

हा हा कयउ कम्मु मइ भीसणु णियतणु पहणिवि रुवइ बिहीसणु ।
अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ अज्जु किंति दसदिसहिं ण वियरइ ।
जयसिरि पत्ते अज्जु विहवत्तणु गयउ अज्जु पहु सत्तिपवत्तणु ।
अज्जु इंदु भयवसहु म गच्छउ अज्जु चंदु सहु कंतिइ अच्छउ ।
अज्जु तिव्वु णहि तवउ दिणेसरु अज्जु सुयउ णिच्चिंतु फणीसरु ।
अज्जु जलणु जालेंउ वित्थारउ वइवसु अज्जु सइच्छइ मारउ ।
णेरिउ अज्जु रिंछु आवाहउ दिक्करिउल्लु मा कासु वि बीहउ ।
अज्जु वरुणु अप्पाणु पसंसउ अज्जु वाउ उववणइ विहुंसेंउ ।
अज्जु कुबेरु कोसु मा ढोयउ अज्जु कामु अप्पाणउ जोयउ ।
भायर पइ गइ णारयठाणहु अज्जु णयरि णवउ ईसाणहु ।

घत्ता—पइ मुइ धरणीसर खगपरमेसर सुरवर्इ जयदुंदुहि रसउ ॥
तुयँ राहवचंदहु सूर्य गोविंदहु अज्जु णिरकुंस उरि वसउ ॥ २३ ॥

---

५ AP विहियवयण° ६ A °पोमदिंदिर

**23** १ A विप्फुरियइ २ AP अज्जु पत्त ३ A जालावित्थारउ ४ A विहुंजउ ५ A णारयगमणहु ६ A सुरवइ ७ AP तिय ८ AP सिय ९ A णिरकुसि

---

8 *a* पेसलवयण° मनोहरवचनम् 12 *a* जिज्जइ जीव्यते

**23** 2 विहवंतु मारयन्, म्रन् 13 पइं मुइ त्वयि मृते सति

## 24

दुवई—अज्जु मिलंतु मच्छ मंदाइणि वहउ ससकपहुरा ॥
पइ मुइ खेयरिंद केह होसइ सा णवघुसिणपिंजरा ॥ छ ॥

णारउ णाउ आउ णासणविहि सीय णे हित्त हित्त परियणविहि ।
रामु ण कुद्धु कुद्धु जगभक्खउ लक्खणु ण भिडिउ भिडिउ कुलक्खउ ।
चक्कु ण मुक्कु मुक्कु अमसासणु त णउ लग्गउ लग्गु हुयासणु ।
वच्छु ण भिण्णु भिण्णु धरणीयलु रुहिरु ण गलिउ गलिउ सज्जणबलु ।
तुहु णउ पडिउ पडिउ कामिणिगणु तुहु ण मुओ सि मुउ विहलियजणु ।
चेट्ठ ण भग्ग भग्ग लंकाउरि दिट्ठि ण सुण्ण सुण्ण मंदोयरि ।
हा भायर किं ण किउ णिवारिउ किं महु तणउ वयणु अवहेरिउ ।
लक्खण राम काइ णउ मण्णिय किं सुग्गीव हणुव अवगण्णिय ।
दुज्जसकारिणि णयगुणवंतहु किं ण दिण्ण पणइणि मग्गंतहु ।
किह कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ तुज्झु वि मरणु केव संपण्णउ ।
हा पइ विणु मइ काइ जियंतें हा हउ कवलिउ किं ण कयंतें ।

घत्ता—कायर मब्भीसिवि अभउ पघोसिवि विजयसंखु पूरिवि लहु ॥
तामायउ लक्खणु राउ वियक्खणु सुग्गीउ वि हणुएण सहु ॥२४॥

## 25

दुवई—भासिउ राहवेण दहमुहु तुहु सोयहि किं विहीसणा ॥
आसु खगिंदवंदवंदारय विरइयपायपेसणा ॥ छ ॥

विलसियचंदसूरणक्खत्तइ एयहु को समाणु भुयणत्तइ ।
एक्कु जि णवर दोसु दमियारिहि जं अहिलासु गयउ परणारिहि ।
जइ ण वि किउ जिणधम्मुवएसणु वारिवि कैरुण रुवंतु विहीसणु ।
रामाएसें जगकंपावणु चउहिं जणहिं उच्चाइउ रावणु ।
होइ सुरिंदु वि गयगुणसारउ परयारेण सव्वु लहुयारउ ।
कंचणमइ विमाणि सण्णिहियउ पेयभूसणायारु वि विहियउ ।

---

24 १ A कहि २ A आउ णाइ ३ A णिहित्त ४ A णिय° ५ AP केम मरणु ६ P रामु
25 १ A विरइयणिच्चपेसणा २ A जेहिं ण किउ P जइ णहिं किउ ३ AP कलुणु ४ A हलुआरउ

---

24 1 मंदाइणि गङ्गा 3 *a* णारउ णाउ नारदो नागत, किं तु नाशविधिरागत 4 *a* जगभक्खउ यम 7 *b* विहलियजणु अर्थिजन 8 *a* चेट्ठ शरीरचेष्टा 11 *b* पणइणि सीता 14 मब्भीसिवि यूय भय मा कुरुतेत्युक्त्वा
25 7 *b* परयारेण परस्त्रीदोषेण 8 *b* पेयभूसणायारु मृतकशृङ्गाराचार

उब्भिय कयलिखंभ सुहसुंभइ णं मसाणघरकरणारंभइ ।
धरियइं उप्परि वण्णविचित्तइं पुक्खवेल्लिपत्ताइं व छत्तइं ।
पविलंबियउ पडायउ दीहउ णावइ सोयमहातरुसाहउ ।
पसरिय चंदोवय ण खंलयण थिय बंधव काला ण णवघण ।
बाहसलिलधारहिं वरसंति व तूरइ दुहभिण्णाइ रसंति व ।

घत्ता—हउ कट्ठें घडियउ चम्में मढियउ परकरताडणु ज सहमि ॥
णं एउ सुजुत्तउं पडहें वुत्तउ त दसासु महिवइ महमि ॥ २५ ॥

## 26

दुवई—पमहिं तेण मुक्कु किं वज्जमि वज्जेमि परणरिंदह ॥
लक्खणरामचंदसुग्गीवह णीलमहिंदकुंदह ॥ छ ॥

रत्तउ ण विरहग्गें तत्तउ ण रुयंति वित्थारियवत्तउ ।
बहुयउ काहलाउ तुरुतुरियउ सहु मुयंति जीउ ण तुरियउ ।
भणइ व संखु अणाहु ण णीवमि परसासाऊरिउ किं जीवमि ।
वंसु भणइ हउ काणणि पइसमि छिद्दवंतु मुइ सामि ण विरसमि ।
डज्झउ महलु कूरें गज्जइ पडुमरणि वि भोयणि णउ लज्जइ ।
कट्ठह मज्झि णिवेसिउ उत्तमु परकलत्तहरणें णासिउ कमु ।
दिण्णु हुयासु सिहालिउ वकइ दससिरदेहु छिवहु ण सकइ ।
ण पवणें कड्ढिज्जइ लग्गउ पहुउप्परि चडतु ण भग्गउ ।

घत्ता—जो सीयासावें णियमणकोवें दूसहविरहें जालियउ ॥
सो राउ हुयासें पेयपलासें जालकरग्गें लालियउ ॥ २६ ॥

## 27

दुवई—जाणिवि मुउ णरिंदचूडामणि सव्वगहिं समुग्गओ ॥
तहु सत्तच्चि सत्तधाऊहरु झ त्ति धग त्ति लग्गओ ॥ छ ॥

५ A दुज्जण ६ A त एउ ण जुत्तउ

**26** १ P किह २ P omits वज्जमि ३ P °सासाऊरिय ४ A सीयासोए ५ AP तावियउ ६ AP °करग्गहिं जालियउ, T लालिउ स्पृष्ट

**27** १ AP समग्गओ २ P °धाहुहरु

9 *a* सुहसुभइ सुखविध्वंसके 11 *b* °साहउ शाखा 14 कट्ठें काष्ठेन

**26** 5 *a* अणाहु अनाथो रावणरहित, *b* परसासाऊरिउ परश्वासपूरित 8 *b* णासिउ कमु नाशित' कुलक्रमो नीतिर्वा 9 *a* सिहालिउ वकइ ज्वालायुक्तो वक्रं गच्छति 11 सीयासावें सीताशापेन 12 पेयपलासें प्रेतपिशितभक्षकेण, जालकरग्गहि लालियउ ज्वाला एव कराग्रास्तै स्पृष्ट

**27** 1 सव्वगहिं सर्वस्मिन् शरीरे, समुग्गओ समुद्गत 2 सत्तच्चि अग्नि', धग त्ति प्रज्वाल्यमानः

वइरिविबिंबयु कालें कवइउ तिहुयणकंटउ अलणें वइउ ॥
तासु सरीरु तेण उवजीविउ तो[3] वि ण पोरिसेण अप्पु दीविउ ।
जं जासु वि त तासु जि छज्जइ करहचरणि किं णेउरु जुज्जइ ।
ण्हाइवि लयणहिं दिण्णउ पाणिउ दुत्थिउ बधुंविंदु[4] समाणिउ ।
एत्थंतरि असोयवणि पइसिवि रामाएसें देवि पसंसिवि ।
अगमयणलणीलविहीसहिं अंजणेयकिक्किंधणरेसिहिं[5] ।
पणविवि जणयवसुधरिधीयहि केसवविजउ समासिउ सीयहि ।
आणिय मिलिय[6] देवि बलहद्दहु अमरतरंगिणि णाइ समुद्दहु ।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धहु केवलणाणरिद्धि णं बुद्धहु ।
दिव्ववाणि जाणियपरमत्थहु[7] वरकइमइ ण पंडियसत्थहु ।
चित्तसुद्धि णं चारुमुणिंदहु णं सपुण्णकंति छणयंदहु ।
णं वरमोक्खलच्छि[8] अरहंतहु बहुगुणसपय ण गुणवंतहु ।
घत्ता—जं दिट्ठु समाहउ णियपइ राहउ त सीयहि तणुकंचुइउ ॥
पुलएण विसट्टउ उद्दु जि फुट्टउ पिसुणु व सयखंडइ गयउ ॥२७॥

## 28

दुवई—तोरणविविहदारपायारघरावलिसिहरसोहिए ॥
अरिवरपुरि पइट्ठ हरिहलहर धयमालापसाहिए ॥ छ ॥
मंदोयरि रुयंति साहारिवि इदइ सोयविसंठुलु[1] धीरिवि ।
बधव सयण सयल हक्कारिवि[2] णायरणरह संक णीसारिवि ।
मंति महंतमंति संचारिवि विग्घकारि सयल[3] वि णीसारिवि ।
पढमजिणाहिसेउ णिव्वत्तिवि होम विविहदाणाइ वत्तिवि ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि चिंतिवि समइ सव्वसामंत णियंतिवि ।
अवणिदविणपुरलोहु[4] विवज्जिवि गह बभण णेमित्तिय पुज्जिवि ।
पवरपुरिसपरिहास समीहिवि पालिवि धम्मु अधम्मडु बीहिवि ।
लोयविण्णहियइच्छियकामें रामोरामें[5] राए रामें ।

३ A तो उण ४ A बधुवग्गु ५ AP किक्किंधपुरेसिहि ६ AP देवि मिलिय ७ AP ण जगपरम° ८ A ण तिल्लोक्कलच्छि

**28** १ P भोयविसंठुलु २ AP वारिवि ३ AP विग्घकारि णीसेस णिवारिवि ४ A अवणि दविणु पुरलोहु, P अवणिदविणपरलोहु ५ A पुरि पइसेप्पिणु लक्खणरामें

5 *b* करहचरणि उष्ट्रपादे 15 समाहउ माधवसहित 16 विसट्टउ विकसित

**28** 3 *a* साहारिवि धीरयित्वा, *b* सोयविसंठुलु शोकेन शिथिल 7 *b* समइ स्वमते निजादेशे 9 *a* पवरपुरिसपरिहास समीहिवि नमहास्य चिन्तयित्वा, मम वचनमन्यथा मा भवतु, किं तु विभीषणस्य राज्यदाने सत्य वचो भवतीति भाव

घत्ता—पविमलणालियंमहिं कंचणकुंभहिं ण्हाणिवि पट्टबंधु विहिउ ॥
रणि मारिवि रावणु भुवणभयावणु रज्जि विहीसणु सणिहिउ ॥ २८ ॥

## 29

दुवई—इय को करइ भिडंइ वि मडगोंदलि भुवणगणमरावण ॥
छज्जइ पम कासु णिव्वहइ वि सुहिपडिवण्णपालण ॥ छ ॥

पइ रूढि पइउ गरुयत्तणु　　मेल्लिवि पउमु कासु सुयणत्तणु ।
कोल्हु देसु सो त पुरु परियणु　　त पणियगणकुलु पीवरथणु ।
ताइ आयवत्तइ वाइत्तइ　　जाणइ अपाणइ सुविचित्तइ ।
ताइ वणाइ अमरतरुगंधइ　　ताइ जि जाउहाणनृवचिंधइ ।
ते असिकर दुक्करकर किंकर　　ते हयवर ते गयवर रहवर ।
लंकादीउ त जि सो जलणिहि　　ते चामीयरभरिय महाणिहि ।
णिहिलइ हियवइ तणु व वियप्पिवि　　दहमुहाणुजायहु जि समप्पिवि ।
मेइणिसाहणि तिजगजयाणउ　　लक्खणरामहिं दिण्णु पयाणउ ।

घत्ता—ते रामजणद्दण दणुयविमद्दण परिभमंति भुवणयलइ ॥
आवाहियचलरह णावइ सभरह पुप्फयत गयणयलइ ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रावणणिहणण विहीसण
पट्टबंधो णाम अट्ठहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७८ ॥

---

६ P ण्हाविवि

**29** १ AP भिडेवि भड° २ AP°णिव° ३ A °णिव्वाहण ४ AP °पट्टबंधण

---

**29** 1 अरावण रावणरहितम्　2 सुहिपडिवण्ण° सुहृत्प्रतिपन्नम्　3 *a* रूढि प्रसिद्धि°, *b* मेल्लिवि पउमु राम मुक्त्वा　4 *b* पणियगण° वेश्या　6 *b* जाउहाणनृव° राक्षसनृपो रावण..　9 *b* दहमुहाणुजायहु विभीषणस्य　12 सभरह सनक्षत्ररयौ स्वेन नक्षत्रप्रच्छादकौ वा

## LXXIX

णिहणिवि भीमु रणि दुज्जउ रावणु मयमत्तउ ॥
महि हिंडतु पहु पीढइरि रामु संपत्तउ ॥ ध्रुवकं ॥

### 1

गिरि सोहइ हरिणा भउ जणंतु पहु सोहइ हरिणा महि जिणंतु ।
गिरि सोहइ मत्तमऊरणाउ पहु सोहइ णायमऊरणाउ ।
गिरि सोहइ वरवणवारणेहिं पहु सोहइ वारिणिवारणेहिं ।
गिरि सोहइ उड्डियबाणरेहिं पहु सोहइ खगधयवाणरेहिं ।
गिरि सोहइ णवबाणासणेहिं पहु सोहइ भडबाणासणेहिं ।
तहिं पुव्वकोडिसिल दिट्ठ तेहिं पुज्जिय वंदिय हरिहलहरेहिं ।
मतिहिं पउत्तु भो [5] धम्मरासि उद्धरिय तिविट्ठें एह आसि ।
एवहिं जइ लक्खणु भुयहिं धरइ तो देव तिखंडधरत्ति हरइ ।
तं णिसुणिवि पभणइ रामु एव अज्जु वि तुम्हहं मणि भंति केव ।
जाव वि रणि णिद्दलियउ दसासु जांव वि सिरि दिण्ण विहीसणासु ।
ताव वि तुम्हह संदेहबुद्धि लइ किज्जइ सव्वह हिययसुद्धि ।

घत्ता—जो अतुलइ तुलइ बलवंत वि रिउ विणिवायइ ॥
सो हरि कुलधवलु सिल एह किं ण उच्चायइ ॥ १ ॥

### 2

दढकढिणथोरदीहरकरासु दहवयणवालिजीवियहरासु ।
विहसिवि रामें लच्छीहरासु आएसु दिण्णु णियबंधवासु ।
ता भाइवयणतोसियमणेण उच्चाइय सिल लहु लक्खणेण ।

---

1 P पीयलइरि २ A उड्डिय° ३ AP सिलकोडिपुव्व तहिं दिट्ठ तेहि ४ P omits हरि° ५ A ण धम्मरासि ६ AP पुणरवि सिरि

2 १ A रामु

---

1 2 पीढइरि पीठगिरिं कोडिशिलाम् 3 *a* हरिणा सिंहेन, भउ भयम्, *b* हरिणा लक्ष्मणेन 4 *a* मत्तमऊरणाउ मत्ता मयूरा नागा सर्पाश्च यत्र, *b* णायमऊरणाउ ज्ञातो मयूना किनराणा उरोनादो हृदयध्वनिर्येन 5 *a a* °वणवारणेहिं वनगजै, *b* वारिणिवारणेहिं जलनिवारणैश्छत्रै 6 *b* खगधयवाणरेहि विद्याधरध्वजलिखितवानरै 7 *a* णवबाणासणेहिं नवै बाणवृक्षै असनवृक्षैश्च, *b* बाणासणेहि धनुर्भि 8 *a* पुव्वकोडिसिल पूर्वकोटिशिला इति नाम

2 2 *a* लच्छीहरासु लक्ष्मणस्य

पविउलभुयचालिय ण धैरित्ति णावइ तिखंडमहिरायवित्ति ।
णं रामहु केरी विमल कित्ति ण णिरु असज्झसाहणसंमित्ति ।
दीसंति लोयणयणइं सुहाइं भद्दियभुयदंडुद्धरिउ णाइं ।
उप्परि सीरिहि कसणायवत्तु ण अवंअलवेल्लिहि तणउं पत्तु ।
सोहइ सिलग्गु कण्हेण धरिउ बहुपोमरायकरजॉलफुरिउं ।
उययम्मि अरुणकिरणोहतंबु उययाचलभाणुहि णाइ बिंबु ।
वीरेहिं वि मुक्कउ सीहणाउ सउणदउ णामें अक्खु आउ ।
चक्किहि पय वंदिवि वइरितासि तें दिण्णु तासु सउणदयासि ।
घत्ता—लक्खणकयथुइहिं णरदेवहिं कण्हु पउत्तउ ॥
सजलहेमघडइं अट्ठुत्तरसहसें सित्तउ ॥ २ ॥

3

सचलिउ राउ अरितिमिरभाणु अणुंगग पुणु वि दिण्णउ पयाणु ।
कल्लोलल्लुलियझससुंसुमारु दियहेहिं पत्तु सुरसरिदुवारु ।
हयगयवरखधाइण्णजोहु थिउ काणणि बलु दूसोहसोहु ।
हरिणा रहु वाहिउ जलहिणीरि पायालमूलपूरणगहीरि ।
धणुगुणविमुक्कु सरु सुद्धिवतु सपाँयउ मागहु पय णवतु ।
तें देवहु दाणवमद्दणासु दिण्णउ अहिसेउ जणद्दणासु ।
कुंडलजुयलउ मणिकिरणणीडु ससिकंतु हारु मणहरु किरीडु ।
तहिं होंतउ गउ अणुजलहितीरु साहिउ वरतणु पणवियसरीरु ।
केऊरमउडकंकणपवित्तु चूडामणिकंठाहरणजुत्तु ।
तहिं लहिवि विणिग्गउ गउ तुरंतु सिंधुहि पइसरिवि पहासु जित्तु ।
सताणमाल सेयायवत्तु मुत्ताहलदामु मलोहचत्तु ।
पालेप्पिणु पुणु परियंलियगव्व साहिय वरुणासामेच्छ सव्व ।
घत्ता—गउ वेयड्ढिगिरि खगसेढिउ बे वि जिणेप्पिणु ॥
हयमायगवरखेयरकण्णाउ लएप्पिणु ॥ ३ ॥

२ P धरत्ति ३ AP सवित्ति ४ A जसजय° ५ AP जालजडिउ

3 १ P रामु २ AP अणुमग्गें ३ P °सुसुआरु ४ AP °गयरहखधा° ५ AP उववणि ६ A बलदूसोह° ७ AP सपाइउ ८ AP पावेप्पिणु गउ ९ A परिगलिय°

5 *b* असज्झसाहणसमित्ति असाध्यवस्तुन साधने समाप्ति परमोत्कर्ष 6 *b* भद्दियभुयदंडुद्धरिउ णाइ विष्णुभुजदण्डोद्धृत छत्रमिव 7 *a* सीरिहि बलभद्रस्य 8 *b* °पोमराय° तत्र गिरौ पद्मरागमणयो वर्तन्ते 11 *a* वइरितासि शत्रूणा भयानक , *b* सउणदयासि सौनन्दकनामा असिर्दत्त 12 लक्खणकयथुइहिं लक्ष्मणस्य कृतस्तुतिभि 12 सजलहेमघडइ जलभृतसुवर्णघटानाम्

3 3 *a* °खधाइण्ण° स्कन्धावतीर्णा 7 *a* °णीडु गृहम् 11 *b* मलोहचत्तु मलसमूहरहित • 12 *a* पालेप्पिणु कालक्षेपं कृत्वा

## 4

पुणु वसिकिउ सुरदिसि मेच्छखडु महिमडलि हिंडिवि रायदडु ।
गय अट्ठयहु बोचालीस वरिस तइयहु हरि हलहर दिब्बपुरिस ।
साहिवि तिखडमेइणि दुगिज्झ जयजयसद्देण पट्टु उज्झ ।
हरिवीढि णिवेसिवि वरजलेहिं हयतूरहिं गाइयमगलेहिं ।
मडलियहिं प मेहहिं गिरिंद अहिसित्त रामलक्खणणरिंद ।
जहिं दिव्वइ सत्थइ सचरति तहिं अवसें रणि अरिवर मरति ।
जहिं देव वि घरि पेसणु करति तहिं अवसें णर भयथरहरति ।
को वण्णइ हरिबलपवररिद्धि वापसिइ दिण्णी कासु सिद्धि ।
ज विजयतिविट्ठह तणउ पुण्णु त एयहं दोहिं मि समवइण्णु ।
हो पूरइ वण्णवि काइ एत्थु किं तुच्छबुद्धि जपमि णिरत्थु ।

घत्ता—सेविय गोमिणिइ रइलोहइ कीलणसीलइ ॥
रज्जु करत थिय ते बे वि पुरदरलीलइ ॥ ४ ॥

## 5

सुमणोहरणामि सयावसति अण्णहिं दिणि णदणवणवणति ।
सिरिसिरिहररामणराहिवेहिं सिवगुत्तु जिणेसरु दिट्ठु तेहिं ।
वदेप्पिणु पुच्छिउ परमधम्मु जिणु कहइ उयारवियारगम्मु ।
मिच्छत्तासजम चउकसाय छडतह सुहु रायाहिराय ।
एयहिं ओहट्टइ णाणतेउ प दुस्सहदुहमबधहेउ ।
बधेण कम्मु कम्मेण जम्मु जम्मेण दुक्खु सोक्खु वि सुरम्मु ।
इदियसोक्खें पुणु पुणु विसालु सपज्जइ जीवहु मोहजालु ।
मोहें मुज्झइ ससारि भमइ अण्णण्णहिं देहहिं देहि रमइ ।
णारयतिरिक्खदेवत्तणेहिं बहुभेयभिण्णमणुयत्तणेहिं ।
ससरइ मरइ णउ लहइ बोहि ण कयाइ वि पावइ जिणसमाहि ।

4 १ P रायचडु २ A reads *a* as *b* and *b* as *a* in this line ३ A भउ थर°, P भड थर° ४ P एवह

5 १ A सयवसति २ P ओयार° ३ A बहुभोय°

4 1 *b* रायदडु राजसैन्यम् 3 *a* दुगिज्झ दुर्ग्राह्या 4 *a* हरिवीढि सिंहासने 6 *a* सत्थइं शस्त्राणि 8 *b* वाएसिइ वागीश्वर्या सरस्वत्या 9 *a* विजयतिविट्ठह प्रथमबलकेशवयो 11 रइलोहइ रतिलोभिष्ठया

5 2 *a* सिरिसिरिहररामणराहिवेहि श्रीविष्णुश्रीरामाभ्याम् 6 *b* सोक्खु वि सुरम्मु कदाचित्सुख च रम्य भवति विषयज न त्वतीन्द्रियम्

सम्मत्तु ण गेण्हइ भवमूढु लोइयवेइयसमएहिं छूढु ।
आसंकंकंखविदिगिंछवंतु जह मिच्छादिट्ठि पसंस देंतु ।

घत्ता—चगउ परिहरइ ज णिंदणिज्जु तहिं भत्तउ ॥
राहव जीवगणु जगि पउरु विहुरु संपत्तउ ॥ ५ ॥

## 6

अणुदिणु परिणामहु जाइ लोउ खणि आणंदिउ खणि करइ सोउ ।
खणि खणि अण्णत्तहु जाइ केव सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव ।
उप्पत्तिविवित्तिपलएहिं गत्थु पेच्छहि अप्पउ पोग्गलपयत्थु ।
पज्जाउ जाइ दव्वु जि पयासु घडु मउडु सुवण्णहु णत्थि णासु ।
ज रुच्चइ त तहिं होउ बप्प णिज्जीवणिरण्णइ कहिं वियप्प ।
जो मणुयलोइ सो णत्थि सग्गि जो सग्गि ण सो पायालमग्गि ।
जो घरि सो किं णीसेसणामि जो गामि ण सो आरामथामि ।
एवत्थिणत्थिणिव्वूढसच्चु अरहंतें साहिउ परमतच्चु ।
जइ जगि सव्वत्थ वि सव्वु अत्थि तो किं गयणंगणि कुसुमु णत्थि ।
जइ एक्कु जि सयलु जि जगु णियाणि तो को णारउ को सुरविमाणि ।
को खंडिउ को वरइत्तु थक्कु सामण्णु अमरु कों कवणु सक्कु ।

घत्ता—जइ खणि खणि जि खउ सइबुद्धें जीवहु दिट्ठउ ॥
ता चिरु महिणिहिउ वसुसचउ केण गविट्ठउ ॥ ६ ॥

४ AP मूढु

6 १ AP अण्णण्णहु २ A मउडि ३ AP °विणिण्णय ४ AP णीसेसगामि ५ AP आरामि ६ AP एक्कु वि सयलु वि ७ AP सो

11 *b* लोइयवेइयसमएहिं छूढु लौकिकवैदिकमते क्षिप्त

6 2 *a* अण्णत्तहु अन्यत्वम्, *b* सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव अग्निना वर्तिसयोगेन गृहीतं तैलं यथाग्निर्भवति तथा जीवपरिणाम अन्यत्वं गच्छति 3 *a* °विवित्ति° ध्रौव्यम्, गत्थु ग्रस्त, *a* अप्पउ पुग्गलपयत्थु आत्मा पुद्गलपदार्थश्च 4 *a* पज्जाउ जाइ पर्यायो विद्यते, पयासु प्रकाश स्फुटम् 5 *a* जं रुच्चइ इत्यादि उत्पादादिरूपत्रयमध्ये जीवादिवस्तुनि यद्रूप रोचते विवक्षितुमिष्यते, *b* णिज्जीवणिरण्णइ जीवनिश्चयरहिते अन्वयरहिते, वियप्प उत्पादादिविकल्पा कुत्र जायन्ते 7 *a* णीसेसणामि सर्वपदार्थेषु, *b* आरामथामि आरामस्थाने 8 *a* एवेत्यादि एव द्रव्यक्षेत्रकालभावै रस्तिनास्तिताभ्यां निर्व्यूढ प्रमाणोपपन्न सत्य यस्य तत्त्वस्य 10 *a* णियाणि अवसाने 11 *a* खंडिउ मृत भार्य, वरइत्तु वर, 12 खउ क्षयो विनाश 13 वसुसचउ द्रव्यकुम्भ', गविट्ठउ दृष्ट

## 7

जइ जाणइ सो किर वासणाइ तो ताइ केम्ब खणघसणाइ ।
जइ इंदजालु तिहुयणु असेसु तो किं किर चीवरधरणवेसु ।
सिविणोवमु जइ णीसेसु सुण्णु तो गुरु ण सीसु णेउ पाउ पुण्णु ।
जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु सिवु णिक्कलु णिप्परिणामवंतु ।
सयलु वि ससारिउ गोरिकंतु णच्चइ गायइ तो किं महंतु ।
जो आहवि वइरिहिं मलइ माणु धणुगुणि संधिवि अग्गेयबाणु ।
पुरु विद्धउ जेण रएवि ठाणु किं तासु वयणु होसइ पमाणु ।
विणु वत्तारें सिद्धंतु केत्थु सिद्धंतें विणु किह मुणइ वत्थु ।
अप्पउ अंबरि संजोयमाणु कउलु वि भावइ मज्जु मुक्कणाणु ।
णिब्बेयणि सुसिरि सिवत्तु थवइ पसुमासु खाइ मज्जु सीहु पिवइ ।
परु मोहइ सइ तमणियरभरिउ इंदियवसु णिंदियसाहुचरिउ ।
णिवडइ रउद्दि घणि घणि तमंधि णारयहणहणरवि णरयरंधि ।

घत्ता—झायहि जिणधवलु अण्णेण ण दुक्किउ जिप्पइ ॥
करयलकंतिहरु पंकेण पंकु किं धुप्पइ ॥ ७ ॥

## 8

जइ काउ सरंतह जाइ गरलु तइ पावेण जि जणु होइ विमलु ।
जो सेवइ गुरु पाविट्ठु दुट्ठु देउ वि णिट्ठुरु दट्ठोट्ठु रुट्ठु ।
सो सइ जि पाव पावहु जि सरणु पइसउ ण लहइ संसारतरणु ।
सो[3] गुरु जो मित्तु व गणइ सत्तु सो गुरु जो मायाभावचत्तु ।
सो गुरु जो मुक्काहरणवत्थु सो गुरु जो महिमागुणमहंत्थु ।
सो गुरु जो तिणु कंचणु समाणु सो गुरु जो णिरहुप्पण्णणाणु ।

7 १ A णो पाउ २ A किं सो महंतु P कि तो महंतु A अग्गेउ बाणु ४ P पूरणु विद्धउ ५ A अंतरि ६ A मज्जु ७ A घणघणरउद्दि णिवडइ तमंधि ८ AP किह धुप्पइ

8 १ A गरुलु २ A दुट्ठुट्ठु ३ A omits this foot ४ AP गुणमहिमामहंतु. ५ A तणकंचणसमाणु

7 1 *b* ताईत्यादि तया वासनयापि किं क्षणविध्वंसनशीलया 2 *b* चीवरधरणवेसु बौद्धाना रक्तवस्त्रग्रहणवेष 3 *a* सिविणोवमु स्वप्नोपमम् 4 *a* जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु जिनदुजनानां निजसिद्धान्त बाधक वा, स्ववचनेनैव ते बाधिता इत्यर्थ 5 *a* सयलु सशरीर, गोरिकंतु पार्वतीभर्ता शिव 6 *b* अग्गेय° आग्नेय 9 *a* अप्पउ अंबरि संजोयमाणु परमब्रह्मदर्शनवशादशेषभेदविद्याविनाशादिति वेदान्तवादिन, *b* कउलु वेदान्ती 10 *a* सुसिरि आकाशे, *b* सीहु मद्यम्, 14 करयलकंतिहरु करे स्थित कर्दम हस्तकान्तिस्फेटक, धुप्पइ प्रक्षाल्यते

8 1 *a* काउ सरंतह काकं स्मरताम् 6 *b* णिरहुप्पण्णणाणु निःपापोत्पन्नज्ञान

णिच्चलखमदमसंजमसमेण गुरुरयणु भणिउ एयं कमेण ।
दूरुज्झियदुज्जयरायरोसु अरहंतु देउ परिहरियदोसु ।
तहु धम्मु अहिंसालक्खणिल्लु मयमारउ विप्पु वि होइ भिल्लु ।
अहवा सो भण्णइ सूणयारु जण्णें कहिं लब्भइ सग्गदारु ।

घत्ता—मेल्लिवि विसयविसु जिणभावें हियवउ भावह ॥
पालिवि जीवदय सग्गापवग्गसुहु पावह ॥ ८ ॥

## 9

त णिसुणिवि परिरक्खियमयाइं घरियेंइं रामें सावयवयाइं ।
सम्मइंसणविप्फुरियएहिं अवरेहिं मि भव्वपुंडरियएहिं ।
लक्खणहियवउ दुणियाणसहिउ तेण जि वेंउ तेण ण किं पि गहिउ ।
दसरहि मुइ णिहिय णिरूढसयरि सत्तुहण भरह साकेयणयरि ।
गय भायर वाणारसि तुरंत थिय रज्जु करंत हली अणंत ।
रामें सुउ जायउ विजयरामु सीयहि रूवें ण देउ कामु ।
अहिमाणणाणविण्णाणजुत्त अवर वि सजाया सत्त पुत्त ।
गोविंदहु णंदणु पुहइचंदु पुहइहि हूयउ पुहईसवंदु ।
अण्ण वि ण मत्तमहागइंद सुय संभूया जियरिउणरिंद ।
गुणगणरंजियभुवणत्तएहिं परिवारिय पुत्तपउत्तएहिं ।

घत्ता—थिय भुंजंत महि गउं कालु अकलियपरिवत्तउ ॥
एक्कहिं णिसिसमइ हरि फणिसयणि पसुत्तउ ॥ ९ ॥

## 10

पेच्छइ सिविणंतरि पयहिं मलिउ णग्गोहु दंतिदंतग्गदलिउ ।
कवलेंवि विडप्पें तिमिरजूरु कड्ढिवि पायालि णिहित्तु सूरु ।

---

9 १ P सरियइं २ AP वउ ३ A दसरहसुयविहिय° ४ AP बाराणसि ५ P अवर वि जाया तहु सत्त पुत्त ६ P गयउ ७ A अहियपरिच्चत्तउ ८ A फणिसयणयलि, P मणिसयणि

10 १ A कवलियउ

---

9 *b* मयमारउ मृगमारक 10 *b* जण्णें यज्ञेन

9 1 *a* परिरक्खियमयाइं रक्षितमृगाणि श्वापदवधरहितानि 3 *a* दुणियाणसहिउ दुर्निदानयुक्तम् 4 *a* णिरूढसयरि नृपु मध्ये रूढ प्रसिद्ध सगरो यत्र 11 अकलियपरिवत्तउ अकलिता असंख्याता अनवधारिता वा परिवर्ता यस्य 12 फणिसयणि शेषशयने

10 2 *a* विडप्पें राहुणा, तिमिरजूरु चन्द्र

पासायसिहरणिवडणु णियंतु　　उट्ठिउ महिवइ अंगाइं धुणंतु ।
अक्खिउ दुइलणु मायरासु　　ता भणइ पुरोहिउ दुक्कु णासु ।
जिह वज्जतरुवरु चूरिउ मएण　　तिह सिरिवइ भजेव्वउ गएण ।
ज अब्भपिसाए गिलिउ भाणु　　पाविवि पाविउ महिविवरठाणु ।
त सचियचिरसुकियावसाणु　　परिपुण्णउ वट्टइ आउमाणु ।
ज णिवडिउ वरधवलहरसिंगु　　त धुवुं पोमामुहपोमभिंगु ।
माइउ पावेसइ देव मरणु　　पइसेव्वउ जिणवरचरणसरणु ।
तवचरणु चरेव्वउ पइ रउद्दु　　लघेव्वउ भीसणु भवसमुद्दु ॥
त णिसुणिवि जयँभीमाहवेण　　पुरि अमयघोसु किउ राहवेण ।
अहिसिंचइ जिणबिंबइ जलेहिं　　दुद्धेहिं धवलधारुज्जलेहिं ।
दहिएँहिं कुंभपल्हत्थिएहिं　　वरकामिणिकरणिम्मत्थिएहिं ।

घत्ता—ण्हवियइ पुज्जियइ जिणवरपडिबिंबइ रामें ॥
भत्तिइ वंदियइ परिवड्ढियसुहपरिणामें ॥ १० ॥

## 11

पुरु घरु परिहाणु हिरण्णु धण्णु　　ओ[2] जं मग्गइ त तासु दिण्णु ।
संति वि[3] विरयतहं विहुरहम्मु　　ढुक्कउ चिरसंचिउ घोरकम्मु ।
पुण्णक्खइ दुक्खु दुपेक्खु देंतु　　हयपरबलु भुयबलु णिक्खवंतु ।
कइवयदिणेहिं सुहिदिण्णसोउ　　लच्छीहरगि सभूउ रोउ ।
उप्पाइयबंधवहिययसल्लि　　माहम्मि मासि दिणि अतिमिल्लि ।
कालें कवलिउ महिअद्धराउ　　ण हित्तउ कामिणिरइणिहाउ ।
णं णासिउ बंधवसोक्खहेउ　　अच्छोडिउ ण रहुवंसकेउ ।
ण मोडिउ सुरतरुवरु फलंतु　　उल्हविउ पयावाणलु जलंतु ।
रिउसीसणिवेसियपायपसु　　उड्डाविउ जगसररायहंसु ।
जहिं रावणु तहिं सो दुहपएसि　　उप्पण्णु चउत्थइ णरयवासि ।

२ P °णियडणु　३ A यमेण, P मएण　४ A °सुकिया°　५ AP धुउ　६ AP जिय°　७ A दहिएण
**11**　१ P परिहणु　२ AP ज जें मग्गिउ　३ A संतिहि　४ AP °रयणिहाउ　५ A °पयासि

5 *b* सिरिवइ लक्ष्मण, गएण गदेन रोगेण　6 *a* अब्भपिसाए राहुणा　7 *b* आउमाणु आयुप्रमाणम्　8 *b* पोमामुहपोमभिंगु लक्ष्मीमुखकमलभृङ्गो माधव　9 *b* पइसेव्वउ प्रवेश कर्तव्य　11 *a* जयभीमाहवेण जगति रौद्रसंग्रामयुक्तेन

**11**　1 *a* परिहाणु वस्त्रम्　2 *a* संति वि विरयतहं शान्तिमपि कुर्वताम्　विहुरहम्मु दुःखगृहम्　4 *b* रोउ रोग　5 *b* दिणि अतिमिल्लि पूर्णिमादिने　6 *b* रइणिहाउ रतिसमूह　8 *b* उल्हविउ विध्मापित　9 *a* °पायपसु पादरेणु

विहिया सोत्तिउं गुणणिहिगहीरु सोएण पमुच्छिउ रामु धीरु ।
सिंचिउ सलिलें माणवमहतु उम्मुच्छिउ हा भायर भणतु ।

घत्ता—हा दहमुहणिहण हा लक्खण हा लच्छीहर ॥
हा रयणाहिवइ हा वालिहरिणकंठीरव ॥ ११ ॥

## 12

धाहावइ सीय मणोहिरामु पक्कलउ छंडिउ काइं रामु ।
हा हे देवर महु देहि वाय पइ विणु जीवंतह कवण छाय ।
पूर्एप्पिणु दड्ढउ हरिसरीरु अवलंबिउ सीरें हियइ धीरु ।
करहयसिरु हाहारउ मुयतु संबोहिउ अंतेउरु रुयंतु ।
लक्खणसुउ णामें पुहइचंदु सइ अहिसिंचिवि किउ कुलि णरिंदु ।
सत्तहिं जणेहिं भीयासुएहिं ण समिच्छिय सिरि पीवरभुएहिं ।
लहुयारउ ताह पयग्गि णविउ अजियंजउ मिहिलाणयरि थविउ ।
साकेयणयरि सिद्धत्थणामि वणि परिभमंतचलभसलसामि ।
सीराउहेण भयमोहणासि तवचरणु लइउ सिवगुत्तपासि ।

घत्ता—तहिं रामेण सहु सुग्गीउ वि सुद्धविवेयउ ॥
हणुउ विहीसणु वि पावइयउ जायणिव्वेयउ ॥ १२ ॥

## 13

राए जाए इसिसीसएण तणयहं तउ लइउ असीसएण ।
सीयापुहईहिं सुयवइहिं पाय आसंघिय भावें चत्तराय ।
भुवणुद्धिउ तिट्ठावज्जियाउ जायाउ ताउ तहिं अज्जियाउ ।
पत्ता बेण्णि वि णिम्महियकाम सुयकेवलित्तु हणुयंतु राम ।
इयर वि संजाया रिद्धिवंत मुणिवर णिट्ठुरतवतावसंत ।
आहुट्ठसयाइं गयाइं तासु संवच्छराहं पालियवयासु ।
पच्चहिं वरिसेहिं विवज्जियाइं जइयहुं तइयहुं धुवु णिज्जियाइं ।
रामें चउकम्मइं घाइयाइं अमरहिं कुसुमाइं णिवेइयाइं ।

६ A सोहिउ

**12** १ P हा देवर महु दे देहि वाय २ A जूरेप्पिणु ३ AP सिवगोत्त ४ P अइसुविवेयउ

**13** १ AP मुक्कमाय २ AP भवणुय तिट्ठाणिज्जियाउ ३ AP धुउ

14 °हरिणकंठीरव मृगस्य सिंह

**12** 3 *a* पूएप्पिणु पूजयित्वा, *b* धीरु धैर्यम्

**13** 1 *b* असीसएण अशीत्यधिकशतेन 2 *a* सुयवइहि श्रुतमतयुक्ताया॰ आर्यायाः

उप्पण्णउ केवलु विमलणाणु　　दिट्ठउ तिहुयणु गयँणु वि अमाणु ।
खणि सुरयणु सम्पाँयउ णँवतु　　जय णव वड्ढ रहुवइ भणतु ।
घत्ता—एक्कु जि छत्तु तहु पोमासणु चमरइं चवँलइं ॥
देवहिं णिम्मियइं तारातारावइधवलइं ॥ १३ ॥

**14**

मुहुमूरतहु भववइरिवम्मु　　जणवइ साहतहु परँमधम्मु ।
छसयाइं सयद्धविमीसियाइं　　महियलि विहरतहु तहु गयाइं ।
समेयसिहरि सो रामभिक्खु　　हणुवतें सहु सपत्तु मोक्खु ।
अवर वि सुग्गीवविहीसणाइं　　चारित्तयत जे दिव्वँ जोइं ।
ते सयल भडारा वीयराय　　अणुदिसणिवासि अहमिंद जाय ।
सा सीय पुहइ सा विमलगत्तु　　पत्ताउ कप्पि कप्पामरत्तु ।
लच्छीहरु णरयहु णीसरेवि　　पावेसइ सिवपउ तउ चरेवि ।
भासति एव परमत्थवाइ　　सपय कासु वि णउ समउ जाइ ।
हरिणा समाण नृवखयणिसीइ　　के के ण खद्ध महिरक्खसीइ ।
घत्ता—सुँयरह गुरुवयणु मा लक्खणपर्थे वच्चह ॥
भरहणरिंदथुउ सिरिपुप्फयतु जिणु अचह ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयतित्थसभूयहँरिसेण
चक्कवट्टिरामबलएवलक्खणवासुदेवरँावणपडिवासुदेव
गुणकित्तण णाम एक्कूणासीमो परिच्छेओ
समत्तो ॥ ७९ ॥
॥ मुणिसुव्वयचरिय समत्त ॥

---

४ A सयलु वि ५ AP सपाइउ ६ A णमतु ७ AP धवलइ

**14** १ P परममग्गु २ AP दिहजोइ ३ AP °णिव° ४ A सुमहुर, P समरहु ५ A omits हरिसेणचक्कवट्टि° ६ AP omit °लक्खण° ७ AP omit °रावणपडिवासुदेव°

---

12 °ताराबइधवलइ चद्रवत् धवलानि

**14** 1 *a* भववइरिवम्मु भववैरिण स्थितिहेतुत्वान्मर्म कर्मोच्यते, *b* जणवइ जनपदे देशे 4 *b* जोइ योगिन 7 *b* सिवपउ मोक्षपदम् 9 *a* नृवखयणिसीइ नृपक्षयनिशया कालरात्र्या 11 अचह पूजयत

## NOTES

### LXIX

**1.** 2 हरिहलहरगुणपयोसु वं जायउ रामायणु The रामायण is the glorification of the virtues or qualities of हरि (वासुदेव) and हलधर (बलदेव) *4a* चिन्तावमि भरहम्महियम्हु, I (Poet) want to carry out the wishes of भरत, my patron. *6a* [illegible] कि णत्थि महु, I possess no material or facilities for undertaking the task of composing a रामायण *6b* किर कवण कीह चिरकइहिं बहुं, how can I compete with older poets? *7a* कइराउ सयंभु, the great poet स्वयंभू who wrote on the theme of रामायण had the help of a thousand friends *8a* चउमुहु, the great poet चतुर्मुख स्वयंभू as his name implies, had four mouths. *9a* महु एक्कु त पि मुहु खंडियउ, the poet पुष्पदन्त says that he has only one mouth as against four of चतुर्मुख, and that even this mouth is broken (खण्डित) Elsewhere पुष्पदन्त calls himself to be खण्ड or खण्डकवि, and mentions that his face or mouth was वक्र 13 सुकइपयासियमग्गि, on the path brightened by great poets like स्वयंभू and चतुर्मुख, or on the path, i e, सेतु, built or manifested by the good monkey, i. e हनूमान्.

**3** 3–10 These lines record some strange notions or superstitious beliefs about persons figuring in the रामायण King श्रेणिक asks गौतम इन्द्रभूति to explain to him the truth about them They are (1) रावण (दशमुख) has ten mouths or faces; (2) his son इन्द्रजित् was older in age than his father, or, in other words, इन्द्रजित्, though a son of रावण, was born before him, (3) रावण was a demon and not a human being, (4) he had twenty eyes and twenty hands and that he worshipped god शिव with his heads, (5) रावण was killed by the arrows of राम, (6) the arms of श्रीरमण, i e, लक्ष्मण, were long and unbending (थिर), (7) सुग्रीव and others were monkeys and not human beings, (8) विभीषण is still living or is a चिरजीविन्, (9) कुम्भकर्ण sleeps for six months and feels satiated only by eating one thousand buffalos. Those that are conversant with the Hindu version of the रामायण will see that except No 2, all other beliefs have some sort of support in the various versions of Hindu रामायण About No 2 I have not come across any support for it. But before we proceed further we have to note a basic difference in the conception of personalities of राम and लक्ष्मण with the Hindus and the Jainas राम, according to Hindu version and the Jain version is the elder of the two sons, राम and लक्ष्मण, of दशरथ, but राम who is the eighth बलदेव of the Jainas, has white complexion as against the dark complexion according to Hindus. On the other hand, लक्ष्मण who is the eighth वासुदेव of the Jains, has dark complexion as against white comple-

xion according to Hindus Besides लक्ष्मण, being a वासुदेव with the Jainas, kills रावण who is a प्रतिवासुदेव with them Other differences in the two versions will be noted as we proceed 11*a*–*b* All Jain versions known to us say, as here, that व्यास and वाल्मीकि are responsible for creating wrong notions about the personalities of रामायण It is clear from this statement that Jain poets, one and all, who tried their hands on the story of रामायण, have been acquainted with the versions of व्यास and वाल्मीकि, and think that they gave an altogether new interpretation of the lives of राम and लक्ष्मण

**4** 2–13 These lines mention the तृतीयभव of राम and लक्ष्मण In the city of रत्नपुर in the मलयदेश, there was a king named प्रजापति His queen, कान्ता by name, gave birth to a son who was called चन्द्रचूल (who is destined to be लक्ष्मण subsequently) विजय, the son of the king's minister, was a friend of चन्द्रचूल

**5** 5*b* कलहस्स ण चारुकरिणीइ, like a young elephant (कलह, कलभ) born of a beautiful she-elephant A merchant named गोत्तम had a son, श्रीदत्त by name, by his wife वैश्रवणा This श्रीदत्त was married to कुबेरदत्ता, daughter of कुबेर 10*b* ती सणिहा का कुबेराइदत्ताइ what lady (ती, स्त्री) is comparable (सणिहा, सनिभा) to कुबेरदत्ता in beauty ? चन्द्रचूल carried off this कुबेरदत्ता by force

**8.** 4*a* सिसु चवति गहिरु, the two boys, चन्द्रचूल and विजय said in deep voice, i e, full of repentance These two were destined to be लक्ष्मण and राम in their third subsequent birth

**9.** 9*a* अइरहसें, rashly, in haste

**10** 4*b* बालरिसि, the young monks चन्द्रचूल and विजय Of these चन्द्रचूल formed a निदान on seeing सुप्रभबलदेव and पुरुषोत्तम वासुदेव to enjoy prowess similar to theirs 9–10 विजय was born in the सनत्कुमार heaven and was called सुवर्णचूल, and चन्द्रचूल was born in the कमलप्रभ विमान and was named मणिचूल

**11** 11 कुवलयबधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ, although king दशरथ (णाहु) was a friend (बन्धु) to the whole earth, he was not a seat or source (आयर, आकर) of faults (दोस, दोष) like the moon who is a friend of night lotuses (कुवलय) and is the maker of night (दोषा)

**12.** Note that राम (in former births विजय and सुवर्णचूल) is the son of king दशरथ of वाराणसी (and not अयोध्या) by his queen सुबला (and not of कौसल्या) and that the day of his birth is फाल्गुनकृष्णत्रयोदशी, मघा नक्षत्र (and not चैत्र शुक्ल नवमी), and that लक्ष्मण (in former birth चन्द्रचूल and मणिचूल) is the son of

केकेयी ( and not of सुमित्रा ) and is born on माघ शुक्ल प्रतिपद्, विशाखानक्षत्र It is only subsequently that king दशरथ went over to अयोध्या as mentioned in 14 6*b* below

**16.** 1*a* ज जुविवि सम्गहु सयरु गउ, king सगर went to heaven by performing a sacrifice According to Jain version of the story of सगर there is no mention of this sacrifice 5*b* सिसु i e राम

**20** 10 पिंगलु, i e , मधुपिङ्गल, the son of तृणपिङ्गल and अतिथीदेवी In 22 3*b* he is called पिंगरिहि

**28** 10*a* णारउ अय जव तिवरिस चवइ, नारद says that अज means the जव ( यव ) corn three years old This is the famous explation of अज ( goat ) according to Jainas

**33** 8–9 These lines mention गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श etc , as meritorious acts according to superstitious beliefs, but the poet says that if they secure merit, a bull who touches the body of the cow and the crow that sits on the पिप्पल tree would be gods

## LXX

**1** 11*a–b* ए अट्ठम, these two sons of yours are the eighth बलदेव and वासुदेव, as I heard in the पुराणs and will occupy a place among the शलाकापुरुषs

**2** This कडवक and the two following give the history of the past life of रावण There was in the city of नागपुर a king called नरदेव He renounced the world and practised penance On seeing a विद्याधर he formed a निदान that he should have the fortune similar to that of विद्याधर He was then born as a god in the सौधर्म heaven King सहस्रग्रीव of the city of विद्याधरs, got somehow displeased with his relatives, quarrelled with them and shifted to त्रिकूटगिरि There he built the city of लङ्का After him came शतग्रीव and पञ्चाशद्ग्रीव His son was पुलस्ति whose wife मेघलक्ष्मी gave birth to दशग्रीव He married मन्दोदरी, the daughter of मय

**6.** 7*a–b* The line means that मणिवती got disturbed in her meditation on the बीजाक्षरमन्त्र, and thought that दशग्रीव, though a विद्याधर, had characteristics ( चिंध, चिह्न ) of a demon 8*a–b* मणिवती formed a निदान that he should be her father in her next birth, carry her off in the forest and die on her account This मणिवती becomes सीता in her next birth

**8.** 1*b* जं होते होसइ अवर सुय, if दसगीव is alive, you (मन्दोदरी) will have another daughter मारीच asked मन्दोदरी to abandon सीता as she was destined to bring calamity on the family

**9.** 11 रामणरामहं णाइं कलि, a source of quarrel between रावण and राम

**12** 3*a* ससुरणयरु i e, मिथिला, the city of राम's father in law

**13** 9*a* अवराउ सत्त कण्णाउ, Over and above सीता, राम was married to seven other girls 10*a* लक्खण was married to sixteen girls. Note that राम in the Jain mythology has eight wives and not one

**16.** 6*b* जाणेवा (ज्ञातव्या) For this form see हेमचन्द्र iv 438

## LXXI

**1** कहिं व भडणु एम भणंतु जि सञ्चरइ, नारद, wanders over the earth finding out places where there is, or has a chance of, a quarrel This characteristic of नारद is well known to Hindu Mythology Here he is approaching रावण to start the quarrel

**2** 6*b* पर पइ जिणिवि एक्कु जसु ईहइ, but one i e, राम, desires to obtain fame by conquering you

**5.** 6*a* सेलसिहरसंचालणचंडहिं, with my arms, terrific in shaking the mountain peaks This is a reference to the belief that रावण shook the कैलास mountain with his arms

**6–10.** These कडवकs refer to the description of the characteristics of ladies as mentioned in कामसूत्र of वात्स्यायन

**11** 7*a* चंदणहि (चन्द्रनखी), otherwise known as शूर्पणखा,

**15** 2*a* बउलु परिक्खइ पियतणुगंधें, a lady compares the scent of बकुल flower to see if it is similar to the scent of her body 11*a* सवहिं एह वि बोल्लण-सीली, now in this spring, this (cuckoo) also has become talkative

**18** 2*a* कंचुइ होएप्पिणु, assuming the form of a कंचुकिन् or rather कञ्चुकिनी, an old lady

**20.** 1*a* विहवत्तणि पुणु सिरु मुंडेव्वउ It appears that Jainism recommends the shaving of the head by widows

## LXXII

**1.** मुक्कदेसजइसंजमु, abandoning the restraint which a householder (देसजइ, देशयति, गृहस्थ) should practise, namely स्वदारसंतोष. रावण now starts in his पुष्पकविमान to carry off सीता against the rules of a Jain householder, for सीता is not his wife He is not still aware of the fact that सीता is his own daughter 19 दिट्ठउ तेत्थु etc रावण saw there the forest and also one more thing, viz, the bloom of youth of सीता The next कडवक compares these two in similar terms

**4** A fine description of the movements of an antilop

**5** *5a* कसणवाससोहियणियंबओ, who wore a blue or dark garment. बलदेव is called नीलाम्बर in Hindu as well as in Jain Mythology

**8** 11–12 These lines mean If I ( रावण ) touch this lady who is now helpless but chaste, the lore which enables me to move through the air ( अम्बरचारिणी विद्या ) will go away from me रावण was unwilling to dally with the unwilling सीता, as in that case he would lose all the prowess he had

**12** 4–6 These lines mention that रावण became an अर्धचक्रिन् about the time of the arrival of सीता at लङ्का

## LXXIII

**1** 3 एत्तहि etc Three things occurred simultaneously, viz, राम followed the deer in the forest, सीता was carried off, and the attendents of सीता were filled with grief on her account

**2** *3b–6b* It appears that the Jain society recommends the wearing of red-coloured saris for widows, breaking of bracelets, and not wearing ornaments like a necklace

**5.** *9a* According to the Jain version, दसरथ is still living when सीता was carried off by रावण. He saw a dream just at that moment that रोहिणी, the consort of the moon, was carried off by राहु, which dream indicated that a similar calamity had befallen राम

**6.** *11a* जणद्दणेण, by लक्ष्मण

**7.** *4a* बेण्णि खग i.e., सुग्रीव and हनुमत्, who were विद्याधरs and not monkeys

**8** 6*b* हनूमत् is in Jain Mythology the 20th कामदेव and hence he is mentioned as मयरकेउ (मकरकेतु) and by its synonyms Compare 25 9*b* below

**10** 3*a* सेस लेवि, having taken the शेषा, i e, flowers etc, offered to the deity When a devotee visits a temple, he takes home with him some portion of the निर्माल्य or ashes or some article dedicated to the deity

**15** 2 पावणि, i e, हनूमान् 12 सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउ ढकणु, broken earthen plate is placed as a cover to close the mouth of a golden vessel भिंगार is भृङ्गार, known as झारी in Marathi

**22** 12*a* ओलक्खिय पयजुयलछणेण, मन्दोदरी recognised सीता as her daughter by signs or marks on her feet

**24** 13*b* वाणरायारु, हनूमत् who was a विद्याधर, assumed the form of a monkey and stood before सीता This explains, according to Jain Mythology, the reason for the belief that हनूमत् was a monkey

**26** 8*b* गूढइ अहिणाणवयाइं देमि, I shall mention certain very confidential happenings between you and राम so that you will recognise me to have come from him This अभिज्ञान is supplied in the following lines of this कडवक and a few lines of the next कडवक

**28** 10*a*–*b* णियकुलु वि etc When fire burns its own race, i e trees or wood from which it is born, how can it forgive its enemy, i e, water ? Water is heated by fire on this account

**29** 13*b* ण दहमुहरमणहु कोसपाणु, as if सीता swore that she would never dally with रावण कोशपान is a शपथ or दिव्य, ordeal, which one solemnly undertakes Compare गाथासप्तशती, 448, सब्भासमए जलपूरिअजलिं विहडिएक्कवामअर, गोरीअ कोसपाणुज्जअ व पमहाहिव णमह

## LXXIV

**4.** 16 जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो जि धवलु, हनूमत् was again asked to go to लङ्का as a दूत, and the poet humourously compares him to a bull ( धवल ) that is yoked to a cart a second time According to Hindu Mythology अङ्गद was the दूत of राम

**6** 4*b* तिण्णि वि एयउ, i e, श्री, सीता and वसुधरा (पृथ्वी) as mentioned in 5 11 above, and 13 9*b* below

**8** 15 वलइयउच्छुधणु, God of love bears a bow made of sugar-cane

**15** 3*b* रत्तउ हयगीउ सयपहहि, a reference to अश्वग्रीव the first प्रतिवासुदेव who made love to स्वयप्रभा and was killed by त्रिपृष्ठ the first वासुदेव of the Jain Mythology

**16** 7*a* णील, one of the friends of सुग्रीव, *b* कुमुय another friend of सुग्रीव 9 and 10 mention कुन्द and नल who are allies of सुग्रीव

## LXXV

**1** 8*b* णिकुम्भु कुंभु, names of रावण's followers

**2** 9*b* महु समउ खगाहिउ एउ ताव, Let first वालि ( खगाहिउ ) come with me to लङ्का 10*b* करिवर महामेहक्खु देउ, Let him give me the excellent elephant called महामेघ

**3** 7*b* अणउत्तु वि, even though it is not expressly said

**4** 1*b* एक्कु जि सिहि अण्णु जि वायवेउ, there is already one calamity, viz, fire, and to add to it there comes the gust of wind 12 मइ कुइइ, when I am angry

**6** 10*b* किलिकिलिपुरिंदु, the lord of the किलिकिलिपुर i e, वालि

**9** 2*b* एवड्डु फुरणु, such valour or activity

## LXXVI

**2** 6*b* अज्जु कल्लि ढुक्कइ, will reach this place ( लङ्का ) today or tomorrow 8*a* विणविवसु, रावण was born in the विद्याधर race founded by विनमि ( विणवि ) who was the brother of नमि See MP Vol I, pp 121–137

**3** 5*a* वज्जावत्तसरासणहत्थहु, The name of the bow of राम is वज्रावर्त 9*a* पच्चयण्णु, the conch पाञ्चजन्य of वासुदेव, here of लक्ष्मण 14 कुम्भयण्णु महु बीयउ, रावण says to बिभीषण that if बिभीषण leaves him, he ( रावण ) will have कुम्भकर्ण to help him

**4** 5*a* तणुसीयइ, by a blade of grass one cleanses one's teeth The form तणु for तृण, is irregular

**6** 10*a* वाणरविज्जइ वाणर होइवि, All विद्याधरs assumed the form of monkeys and then visited लङ्का.

**9** 9*a* गमणें जासु होइ काली गइ, fire, the movements of which leave a black passage to smoke अग्नि is often called धूमध्वज

## LXXVII

**2** 8*b* चंदहासु, the sword of रावण 14 अम्हइं बलवंतहं हरिबलहं डरहुं, we are afraid of हरि ( लक्ष्मण ) and बल ( राम ) who are very strong

**3** 13 विहुरि वि धीरु, रावण was full of courage ( धीर ) even in adversity ( विहुरि, विधुरे सति, सकटकाले सति )

**6** 1 भुवणुत्तुरडिणिवणे किं हुओ णिग्घोसो, Is there a noise of falling of worlds standing one upon the other ? There are several भुवनs which stand one upon the other and thus form an उत्तुरडि, उतरड, as it is called in Marathi 6*b* वइवसु god of death ( यम )

**9** 5–17 A fine description of the dust raised by the fight

**13** 5*a* असिणिहसणसिहिजालउ, flames of fire produced from the clashing of swords 13*b* सीसक्कें सहुं सिरु, head along with the crown or cap ( शिरस्त्राण )

## LXXVIII

**1** 2 कण्हु, कृष्ण, i e., लक्ष्मण who has a dark complexion 15*a–b* विजयपर्वत् and अञ्जनगिरि are the names of elephants of लक्ष्मण and राम See also 3 4*b* and 3 11*a* below

**5** 11*a–b* पइं समुहु etc A warrior says to another warrior, "You have given your head ( as capital ) in paying the debt of your master, and are using your blood as interest on the capital "

**8** 3*a* धरियलोह तेण जि ते गुणचुय, the arrows are धरियलोह, i e , have an iron edge or have greed ( लोह, लोभ ) and therefore they are गुणचुय, discharged by bow-string ( गुण ) or are destitute of virtues ( गुण ).

**9** 21 ओत्थरिउ, arrived on the scene

**10** 14 बोल्लिउं पालेसमि, I shall keep my word

**11** 3*b* सखारु, jarring words, words mixed with salt as it were Compare क्षते क्षारनिक्षेपणम्

**13** 8*b* वीर पउम, राम who had a white complexion similar to that of a white lotus, is called पउम ( पद्म ) and पुराणs describing his story are called पद्मचरित, पद्मपुराण etc

**14**. 8*a–b* सरवरि etc. The line records two popular sayings that in a small lake a crab is called a जलचर although the term means मत्स्य, while in

a place where there are no trees, एरण्ड becomes a big tree Compare निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते

**15** 1 वेण्णि वि पीयवास, Both रावण and लक्ष्मण were yellow garments In Hindu mythology कृष्ण is called पीताम्बर

**16** 6*a* वीसपाणि, i e, रावण, although रावण according to Jain Mythology had only two aims, still he is called वीसपाणि owing to the influence of Hindu Mythology

**18** 1 महुमहणमहासुहडे, on the great warrior who killed मधु Note there are two प्रतिवासुदेवs, viz, मधु and मधुसूदन or महसूयण

**20** 14 भडभालविणिहयइ भवियव्वक्खरइ, writing about the future of warriors which were written on their forehead 15 जाइवि (याचित्वा), having obtained by begging

**21** 7*b* अगुलियउ भजइ राहवि, cracking of fingers on some one indicates disrespect for him बोटें मोडणें is found in modern Marathi 13*a* कण्णावरु इहु णाहु महारउ, this husband of mine has married me when I was quite young so our love is unbroken Compare य कौमारहर स एव हि वर :

**23** 4*a* अज्ज सरासइ सत्थु ण सुयरइ, today the goddess of learning (सरस्वती) will not remember or recite the शास्त्र, owing to the death of रावण रावण is known for his learning In Hindu Mythology he is the son of famous sage पुलस्त्य who is a Brahmin

**24** 3*a* णारउ णाउ आउ णासणविहि, It was not नारद who arrived (and induced your mind to carry off सीता), but it was your destiny bringing death upon you that had come Note that रावण made up his mind to carry off सीता on the mischievous advice of नारद 12*a* कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ, even hard adamant (वज्र) was bored by insects Death of रावण from the hand of लक्ष्मण is as unexpected as the boring of वज्र by insects

**25** 1 दहमुहु हुहु, राम says to विभीषण that he should now take the place of दशमुख (रावण) 6*b*–12*b* These lines describe the removal of the dead body of रावण, on a palanquin decked by columns of plantain trees, with umbrella held over it

**29** 3*b* मेल्लिवि पउमु काउ सुयणत्तणु, who but राम is so noble ?

# Notes

## LXXIX

**2** 11*a* सणंदयासि, a sword called सौनन्दक because it was a gift from सौनन्दय. Of the seven gems which a वासुदेव as अर्धचक्रिन् possesses, sword is one and it is called सौनन्दक as the गदा is called कौमोदकी. According to Jain Mythology वासुदेवs and बलदेवs have seven and four marks respectively They are given in the following verses:

असिः शङ्खो धनुश्चक्रं शक्तिर्दण्डो गदाभवत् ।
रत्नानि सप्त चक्रेशो रक्षितानि मरुद्गणैः ॥
रत्नमाला हलं भास्वद्रामस्य मुसलं गदा ।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृतेः ॥

गुणभद्र—उत्तरपुराण–62 148–149

**3** 8*a* तहिं होंतउ गउ, he went from that place Note the use of होंतउ with तहिं rather than तहा Compare हेमचन्द्र, iv 355

**6** 10*b* को णारउ को सुरविमाणि, who will, in that case, be born in hell and who will be born in heaven? 12 जइ खणि खणि जि खउ etc This is the famous doctrine of क्षणिकत्व of the Buddhists सइंबुद्धें, by self-enlightened Buddha.

**9** 6–9 These lines tell us that राम had eight sons विजयराम and others, and लक्ष्मण had several, पृथ्वीचन्द्र and others, from his wife पृथिवी.

**11** 4*b* लच्छीहरसि, in the body of लक्ष्मीधर, i e, लक्ष्मण